बापूके पत्र मीराके नाम

[१९२४ से १९४८]

अनुवादक

रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद

बापू अपनी सेवाग्रामकी कुटियासे बाहर निकल रहे हैं।

भूमिका

जब मै अपनी लेखनी अुठाकर अिन पत्रोकी भूमिका लिखनेकी कोशिश कर रही हू, तब बापूके असीम प्रेमकी कल्पना करके मेरा सिर श्रद्धासे झुक जाता है और मेरा हृदय भर आता है। मुझे जो कुछ कहना है, अुसे मै वाणीमे कैसे व्यक्त कर सकती हू? कअी सप्ताहसे मेरे मनकी यही हालत रही है, लेकिन आज ७ नवम्बर, १९४८ को मैने निश्चय कर लिया है कि अपनी लेखनीको हाथसे नीचे नही रखूगी। २३ वर्ष पहले आजके ही दिन सुबहके पौने आठ बजे मै साबरमती पहुची थी और बापूकी पुण्य अुपस्थितिमे मौजूद हुअी थी। अेक वर्ष हुआ अिसी दिन और अिसी समय मै सदाकी भाति बापूके पास अपने 'जन्मदिन' का आशीर्वाद लेने गअी थी।

अुनके पैरों पडकर मैने कहा "आज बाअीस वर्ष पूरे हो गये।"

बापूने मेरे सिर पर हाथ रखकर शातिसे अुत्तर दिया. "बाअीस वर्ष कोअी छोटी बात नही है।"

आज बापूके अुस कोमल हाथका प्रत्यक्षरूपसे अनुभव नही किया जा सकता। परन्तु अुनकी आत्मा तो मौजूद ही है। मैने अीश्वरके रूपमे बापूको देखनेकी कोशिश की है और अुनसे जन्मदिनका आशीर्वाद प्राप्त किया है।

बापू हमेशा हमसे यह कहा करते थे कि हमे अुन्हे गुरु नही समझना चाहिये; आजकल कोअी मनुष्य अुस पदके योग्य नही है और अीश्वर ही अेकमात्र सच्चा गुरु है।

"अुसको अपना गुरु बनाओ और अुससे तुमको कभी निराशा नही होगी।"

फिर भी बापू तो गुरुओके गुरु थे, क्योकि अुन्होने हमे यह शिक्षा दी थी कि अीश्वरको खोजो और केवल अुसी पर आधार रखो। यही वह केन्द्रीय अुपदेश है, जो अिन सारे पत्रोमे व्याप्त है।

यहा साहित्यिक शैली या दार्शनिक अुडानका प्रश्न नहीं है। यह तो अेक आध्यात्मिक पिताका अपने ठोकर खाते हुअे बच्चेको दिया हुआ अत्यन्त सादा, सीधा और प्रेमपूर्ण अुपदेश है। अिसमे कितना धीरज और कितना प्रेम प्रगट हुआ है! परमात्मा अुस प्रेमके योग्य बननेमे मेरा सहायक हो, यही मेरी सतत प्रार्थना है।

अिन पत्रोमे बापूके जीवनके पिछले बाअीस वर्षोका प्रतिबिब है। सबको दिखाअी देनेवाला भव्य और नाटकीय बाह्यजीवन नही बल्कि वह भीतरी व्यक्तिगत जीवन, जो बाहरी दुनियाके तमाम बखेड़ोसे प्रभावित हुअे बिना आध्यात्मिक खोजके अपने सतुलित और सीधे रास्ते पर चलता रहा। मैने बहुतसी सीधी-सादी दीखनेवाली बातोंको और पुनरुक्तियोको भी जान-बूझकर अिसलिअे नही छोडा है कि वे बापूके चरित्र पर प्रकाश डालती है। वे जीवनकी तथाकथित छोटी-छोटी बातोको कितना महत्त्व देते थे और जिन्हे छोटे लोग छोटे मामले कह सकते है, अुनका वे कितना आग्रह रखते और अुन पर कितनी शक्ति लगाते थे! बापू छोटीसे छोटी बात पर कितनी बारीकीसे ध्यान देते थे और छोटेसे छोटे आदमीकी भी कितनी प्रेमपूर्ण चिन्ता रखते थे! साथ ही अुनकी सत्यकी निर्मम खोजने समयके अपव्यय या भावुकतापूर्ण कमजोरीको अुनके लिअे असभव बना दिया था।

अितने वर्षोमे मेरे पास बापूके ६५० पत्र अिकट्ठे हो गये थे। अिस अमूल्य खजानेमे से चुने हुअे ये ३८६ पत्र यहा दिये गये है। गिरफ्तारियो और जेलयात्राओके दिनोंमे जब तलाशिया होती और कागज नष्ट कर दिये जाते, तब मुझे केवल बापूके पत्रोंकी ही चिन्ता रहती थी। जब कभी मुझे गिरफ्तारीकी निकट सभावना मालूम होती, तब मै अुन्हें किसी 'असदिग्ध'

मित्रके यहा या किसी अैसी सस्थामे रख देती, जहा तलाशी होनेकी कोअी संभावना न रहती। अिसके बाद पिछले तीन सालसे मै अुन्हे अेक छोटे टीनके बक्समे अपने साथ रखती हू। भगवानकी दयासे वे समयके हेरफेरसे बच गये है और अिस समय जब अतमे वे प्रकाशित हो रहे है, मुझे जबरदस्त राहत महसूस हो रही है। यद्यपि आध्यात्मिक विचार और मार्गदर्शनका यह भडार अेक ही व्यक्तिको मिला है, फिर भी वह सभीको प्राप्त होना चाहिये।

पृष्ठभूमि

पाठकोको पृष्ठभूमिकी और भी स्पष्ट कल्पना हो जाय, अिसके लिअे मै अपने जीवनकी अुन घटनाओकी रूपरेखा सक्षेपमे समझाअूगी, जो मुझे बापू तक ले आअी। चूकि मै अेक अंग्रेज देहाती घरमे पली थी, अिसलिअे ग्रामीण जीवनसे खूब परिचित थी। अिसके सिवाय, मुझे शुरूसे ही प्रकृतिका गहरा प्रेम मा-बापसे मिला था। पद्रह वर्षकी अुम्रमे मैंने पहले पहल बीथोवनका संगीत सुना। अुसी समय मुझमे दैवी शक्तिके प्रति जीती-जागती श्रद्धा जाग्रत हो गअी और अीश्वरकी प्रार्थनाने सत्यका रूप ले लिया। बीथोवनके सगीतने मुझे रोमा रोलाके पास पहुचा दिया और रोमा रोलाके जरिये मै बापूके पास आ गअी। ये सब बिलकुल आसान मजिले नही थी। अिसके विपरीत मुझे अशांति, अधकार, आशा और निराशा — सबमे से गुजरना पडा, तब कही मेरी अशात आत्मामे सत्यका शुद्ध प्रकाश प्रकट हुआ और अुसने मुझे अुद्दिष्ट स्थान पर पहुचाया।

कोअी शक्ति मुझे बराबर आगे धकेल रही थी। थोडे दिन तक तो मै अुसे न समझ सकी। लेकिन जब मुझे रोमा रोलाका परिचय हुआ, अुस समय तक यह शक्ति मेरे लिअे प्रत्यक्ष होने लगी थी और विलेन्यूमे हमारी पहली मुलाकातोके समयसे मुझे किसी असाधारण और मधुर सुखका अनुभव होने लगा। मुझे अैसा लगा कि कोअी चीज आ रही है। पर अिसकी जरा भी कल्पना नही थी कि वह क्या है? मै अितना

ही जानती थी कि जो कुछ होगा अच्छा होगा। जब रोमा रोलाने मुझसे बापूके बारेमे बात की और यह कहा कि अुन्होने अेक छोटीसी पुस्तक बापूके बारेमे लिखी है और वह छप रही है, तब भी मै अिससे अधिक नहीं समझ सकी कि मुझे वह पुस्तक जरूर पढनी चाहिये।

फिर वह दिन आया, जब पुस्तक प्रकाशित हुअी। म पेरिसके लैटिन क्वार्टरमे, जहा मै अुन दिनो ठहरी हुअी थी, प्रकाशककी दुकान पर गअी। दुकानकी सारी खिडकी अेक छोटीसी किताबसे भरी हुअी थी, जिसका मुखपृष्ठ नारगी रगका था और अुस पर काली स्याहीसे 'महात्मा गाधी' छपा हुआ था। मैने अेक प्रति खरीदी, अुसे अपने मकान पर ले गअी और पढने लगी। मै अुसे छोड न सकी। पढ़ती रही, पढ़ती रही, और ज्यो-ज्यो पढती गअी, त्यो-त्यो मेरे हृदयका प्रभात अधिकाधिक अुज्ज्वल होता गया। और जब मैने अुसे खतम किया अुस समय सत्यका सूर्य मेरी आत्मामे अपनी किरणे अुडेल रहा था। अुसी क्षणसे मैने जान लिया कि मेरा जीवन बापूको समर्पित है। जिस चीजकी मे प्रतीक्षा कर रही थी वह आ गअी है, और वह यही हैं।

मै सीधी लंदन पहुची और पी० अेण्ड ओ० के दफ्तरमे जाकर हिन्दुस्तानका जहाजी टिकट खरीद लिया। साहित्य भी जितना मुझे मिल सका, ढूढ निकाला और पढ़ डाला; बापूकी रचनाअे पढी, टैगोरकी रचनाअे पढी, भगवद्‌गीताके फ्रेंच अनुवाद पढे और अुपनिषदो तथा वेदोकी झाकी भी कर ली। लेकिन बहुत जल्दी मेरी समझमे आने लगा कि मेरा यह सोच लेना बेवकूफी है कि अिस तरह मै जल्दीसे बापूके पास पहुंच सकती हू। मै आध्यात्मिक और शारीरिक दृष्टिसे बिलकुल अयोग्य थी और मुझे पहले अपनेको कठोर तालीम देनेकी जरूरत मालूम हुअी। अिसलिअे मै पी० अेड ओ० के दफ्तरमे वापस गअी और टिकट बदलवाकर साल भर बादके लिअे जगह सुरक्षित करवा ली।

अब मै सपूर्ण और व्यवस्थित ढंगसे काम करने लगी।

पहले मैंने साबरमती आश्रमके नियमोका पूरी तरह अध्ययन किया। अुसके बाद अेक अेक करके अपने खानेकी चीजे बदलने लगी, यहा तक कि मेरा भोजन शुद्ध शाकाहारी वन गया। मैने पलथी मारकर जमीन पर बैठना शुरू कर दिया। आरभमे लगातार दस मिनट ही बैठ सकती थी, परन्तु सतत अभ्याससे मैं बिलकुल आरामसे बैठने लगी। मैंने अुर्दू पढना शुरू कर दिया। और पीजना, कातना और बुनना भी सीख ही लिया। यह मजबूरन अून पर ही करना पडा, लेकिन अिससे मेरा अभ्यास अच्छा हो गया। साथ-साथ साहित्यका अध्ययन भी जारी रहा। अिस तालीमके दिनोमे अखबारोमे खबर आअी कि बापूने हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे २१ दिनका अुपवास शुरू कर दिया है। जैसे-जैसे दिन बीतने लगे, अखबारोने कहना शुरू कर दिया कि बापू शायद बचेंगे नही। मैं व्यथित मनसे अीश्वरसे प्रार्थना करती थी। धीरे-धीरे दिन गुजरते गये। लेकिन मैंने अपनी तालीममे कभी ढिलाअी न आने दी। क्योंकि मैं जानती थी कि बापूका शरीर चला जाय, तो भी मुझे अुनका काम करनेके लिअे हिन्दुस्तान जरूर जाना है। २१ दिन अेक युगकी तरह बीते। परन्तु अन्तमे ये समाचार आये कि बापूका अुपवास सकुशल टूट गया है।

अुस वक्त तक मैंने बापूको अेक शब्द भी नही लिखा था। लेकिन अुपवासके सफलतापूर्वक समाप्त होने पर मेरा हृदय आनन्द और कृतज्ञतासे अितना भर गया कि मुझे लिखना ही पडा। भेटके रूपमे मैंने २० पाअुण्डका अेक चेक रख दिया। अिस पुस्तकके आरंभमे जो पोस्टकार्ड दिया हुआ है, वह अुस पत्रकी बापूकी भेजी हुअी पहुच है।

गरमीके महीनोमे मैंने अपना समय स्विस किसानोके साथ अुनके घासके खेतोंमें काम करनेमें बिताया, ताकि हिन्दुस्तानमे मेरे हिस्से जो काम आनेवाला था, अुसके लिअे शरीरश्रम करनेको मैं अच्छी तरह कस जाअू। जब मेरी साल भरकी तालीम लगभग पौनी समाप्त हो गअी, तब मैंने बापूको फिर लिखा। मैंने अपनी प्रगतिका विवरण भेजा, अपने

सूतके कुछ नमूने भेजे और यह पूछा कि क्या मै आशा रख सकती हू कि मुझे आश्रममे ले लिया जायगा? पहले पोस्टकार्डके बादका पत्र बापूका अुत्तर है। अुस समयसे मेरे आनन्दका कोअी पार नही रहा और मै आध्यात्मिक आनन्दमे लीन रहने लगी।

यह आशा की जा सकती थी कि मेरे माता-पिता मुझे स्वदेश न छोडनेके लिअे समझानेकी कोशिश करेगे। खास तौर पर असलिअे कि मेरे पिताजी जलसेनाके अेक सेनापति और ओीस्ट अिडीज स्क्वाड्रनके भूतपूर्व प्रधान सेनापति होनेके कारण अूचे ब्रिटिश अधिकारियोसे गहरा सम्बन्ध रखते थे और मेरी मातामे और मुझमे स्वभावकी मौलिक समानताके कारण गहरा स्नेह था। परन्तु किसी तरह अुन्होने समझ लिया कि मुझे प्रेरणा करनेवाली भावना आध्यात्मिक है और मेरे निर्णयके विरुद्ध अेक शब्द भी मुझसे नही कहा।

शरद ऋतुमे मै रोमां रोला और अुनकी बहनसे बिदा लेनेके लिअे अंतिम बार विलेन्यू गअी। फिर मै लदन लौट आअी और कुछ सामान बाधकर चल दी। विक्टोरिया स्टेशन पर अपनी मासे और पेरिसमें पिताजीसे जुदा हुअी और अीश्वरकी कुछ अैसी मरजी हुअी कि मै फिर अुनसे कभी न मिल सकी।

२५ अक्तूबर १९२५ को मै पी० अेंड ओ० कपनीके जहाज पर सवार होकर मार्सेलिजसे रवाना हुअी। समुद्रयात्रा आध्यात्मिक आनन्दका अेक दीर्घ स्वप्न था और हर रातको पूर्वमे अुगनेवाला चद्रमा महासागर पर अपना प्रकाश फैलाकर अेक अैसा गौरवमय रजतमार्ग निर्माण करता था, जो मुझे अपने पुण्यध्येयकी ओर ले जा रहा था।

१२ दिन बाद मै बम्बअीमे अुतरी और ७ नवम्बरको प्रात.काल ही रेल द्वारा अहमदाबाद पहुची। स्टेशन पर गाड़ीकी खिडकियोंसे मैत्रीपूर्ण चेहरोने अन्दर देखा और वस्तुस्थिति समझू अिसके पहले ही मै गाड़ीसे बाहर आ गअी और किसीने अपना नाम वल्लभभाअी

पटेल बताकर मुझे मोटरमे बिठा लिया। अेक दूसरे भाअी, जो बोले कि मै महादेव देसाअी हू, मेरा सामान संभालने वापस चले गये। मोटर चल दी। मैने अपने साथीकी तरफ देखा और सिर्फ अेक सवाल पूछा — आश्रम कितनी दूर है और हम वहा कब तक पहुच जायेगे? अुस दिनसे आज तक जब कभी सरदारको देखती हूं, मुझे भारी असमजसके वे क्षण याद आ जाते है। हमने साबरमतीका पुल पार किया और मैने फिर वही प्रश्न पूछा। अिसके बाद कुछ दूर पर खेत और मकान दिखाअी दिये और मैने फिर पूछा। मुझे शान्तिपूर्वक कहा गया कि अभी हम आश्रमसे थोडी दूर और है। मै अेकाग्र होकर आशा लगाये बैठी रही। अचानक मेरे साथी बोले: "वे थोड़ेसे पेड़ और अुनके आगे मकान दिखते है न? वही आश्रम है।" क्षण भरमें गाडी अेक बड़े अिमलीके पेड़के नीचे जाकर रुक गअी और मैं बगीचेकी अेक छोटीसी पक्की पगडडी पर चलने लगी। हम अेक छोटेसे फाटकमें से गुजरे, फिर दो सीढिया चढ़कर अेक बरामदेमे पहुचे और अेक दरवाजेमे से अेक कमरेमे गये। ज्यो ही मै अन्दर घुसी, अेक छोटेसे दुबले-पतले व्यक्तिको अेक सफेद गादीसे अुठकर अपनी तरफ बढ़ते हुअे मैने देखा। मै जान गअी कि वे बापू है, लेकिन मुझ पर श्रद्धा और हर्ष अितने छा गये कि मुझे अेक स्वर्गीय प्रकाशके सिवाय न तो कुछ दिखाअी दिया और न कुछ अनुभव हुआ। मै बापूके पैरोंमे पड गअी। अुन्होने मुझे अुठा लिया और गले लगाकर कहा: "तुम मेरी बेटी हो गअी।" और अुस दिनसे हमेशा अुन्होने मुझे बेटी ही माना।

*　　　*　　　*

मै अपने अुद्दिष्ट स्थान पर पहुच गअी थी, वह स्थान जहासे मुझे कार्यारभ करना था। पुराना जीवन अैसे ही खतम हो गया, जैसे कोअी पूर्वजन्मकी बात हो और मैने नया जीवन शुरू किया। और अुसी समयसे जीवनका असली संग्राम आरंभ हुआ। पुराने जीवनमे मै

अधकारमे अपना मार्ग टटोलती रही थी और अेक अैसी भीतरी प्रेरणा मेरा मार्गदर्शन करती रही जिसे मै समझा नही सकती थी। लेकिन अब मै प्रखर सूर्यप्रकाशमे आ गअी और सत्यका सीधी चढाअी-वाला तथा तग मार्ग मेरे सामने साफ दिखाअी दे रहा था। वह अूचा ही अूचा ले जानेवाला था; अितना सुन्दर और फिर भी चढनेमें अितना कठिन था!

मैंने असीम हर्ष और अुत्साहके साथ तीर्थयात्रा शुरू कर दी। मै असख्य बार फिसली हू और ठोकर खाकर गिरी हू। मुझे बहुतसी चोटें और घाव लगे है। मैंने अिस जीवन-पथको कडवे आसुओसे सीचा है। और अेक-दो बार बादल पहाड तक अुतर आये और मै रास्ता चूकते-चूकते बच गअी। परन्तु बापूके प्रेमने अन्तमे सुमार्ग दिखाकर मुझे अैसे अूचे अुद्यानमे पहुचा दिया है, जहा गिरिकी मधुर वायु अीश्वरीय शातिसे भरी हुअी है।

आश्रम, पशुलोक,
हृषीकेश

मीरा

पोस्टकार्ड

१

[अिस पत्र और अगले पत्र तककी घटनाओके लिअे देखिये भूमिका, पृष्ठ ५]

प्रिय बहन,

मैं आपसे क्षमा चाहता हूं कि आपको अिससे जल्दी न लिख सका। मै लगातार सफरमें रहा। आपने जो २० पाअुण्ड भेजे, अुनके लिअे आपका आभारी हू। यह रकम चरखेके प्रचारमे अिस्तेमाल की जायगी।

मुझे सचमुच खुशी है कि आपने अपनी प्रथम प्रेरणाको न मानकर यहाके जीवनकी तैयारी करनेके लिअे समय लेनेका निश्चय किया। अगर सालभरकी कसौटीके बाद भी आपको यहां आनेकी प्रेरणा हो, तो शायद आपका हिन्दुस्तान आना अुचित होगा।

रेलगाडीमे, आपका
३१-१२-'२४ मो० क० गाधी

कुमारी मैडिलीन स्लेड,
६३, बेडफोर्ड गार्डन्स,
कैम्पडेन हिल,
लदन, डब्ल्यू ८

२

लिखाया हुआ

१४८, रसा रोड
कलकत्ता,
२४ जुलाअी, १९२५

प्रिय बहन,

मुझे आपका पत्र पाकर खुशी हुअी। अुसका मुझ पर गहरा असर हुआ। आपने अूनके जो नमूने भेजे वे बढ़िया है।

आप जब आना चाहे खुशीसे आ सकती है। अगर मुझे मालूम हो जाय कि आप कौनसे जहाजसे आ रही है, तो जहाज पर आपको लेने कोअी आ जायगा और साबरमती आनेवाली गाडी तक आपको छोड़ जायगा। लेकिन अितना याद रखिये कि आश्रम-जीवन बहुत आरामका नही है। वह कठोर है। हरेक आश्रमवासी शरीर-श्रम करता है। अिस देशका जलवायु भी कम विचार करनेकी बात नही है। ये बाते मै आपको डरानेके लिअे नही, परन्तु सिर्फ चेतावनीके तौर पर लिख रहा हूं।

आपका
मो० क० गाधी

चूकि मेरे दाये हाथको आरामकी जरूरत है, अिसलिअे मै अपना पत्रव्यवहार लिखवाकर कर रहा हू।

*　　　*　　　*

कुमारी मैडिलीन स्लेड,
६३, बेडफोर्ड गार्डन्स,
कैम्पडेन हिल,
लदन, डब्ल्यू ८
अिंग्लैड

३

[बापू तीन दिनके लिअे आश्रमसे बाहर चले गये थे और मैने अपना फालतू वक्त अुनके लिअे अेक हिन्दुस्तानी खत तैयार करनेमे बिताया। अुसे मैने देवनागरी और अुर्दू दोनो लिपियोमे लिख डाला। आश्रममें पहुचनेके बाद मेरा बापूसे यह पहला वियोग था और अुससे मुझे भयंकर पीड़ा हुअी।

कानपुर काग्रेसमें जानेके लिअे मुझे गरम कपडोकी जरूरत थी। मैने जहाज पर अपने सारे अूनी वस्त्र छोड दिये थे, क्योकि वे मिलके कपड़ेके थे; और खादीके कपड़े पहने हुअे जहाजसे अुतरी थी। जिन्हे मैने पहले ही दिल्लीसे खादी मगवाकर लदनमें बनवा लिया था।]

प्रिय मीरा,*

तुम्हारी प्रेमपूर्ण भेट मिली। शकरलाल बैंकरने मुझे अिसके लिअे तैयार कर दिया था। अुन्होने मुझे कहा था कि तुम अपने कामसे मुझे आश्चर्यमे डालनेवाली हो। मैं समझ गया था। हिन्दी और अुर्दू दोनोकी लिखावट अच्छी है, मुझसे तो बेशक बेहतर है। और अैसा ही होना चाहिये। तुमने जिस विरासतके लिअे अपनी होनेका दावा किया है, अुसे अपव्यय करके अुडा न देना, बल्कि अुसे हजार गुना बढ़ाना।

तुम्हारी याद बराबर रही है। यह तीन दिनका वियोग अच्छा संयम है। तुमने अुसका बढिया अुपयोग किया है।

देवदास मुझे कहता है कि तुम्हारी आवाज अब फिर पूरी तरह पहले जैसी हो गअी है।

तुम मुझे कल अपने गरम कपड़ोके बारेमें सब हाल लिखना।

अीश्वर तुम्हे आशीर्वाद दे और अकल्याणसे बचाये।

सस्नेह,

४-१२-'२५

बापू

४

[फिर वियोग आया और बापूने मेरी पीडाको समझकर मेरे सामने वह परम सत्य रख दिया, जिसे मैं बरसोके बाद समझ पाअी हूं। जब-जब मेरी बापूसे जुदाअी होती थी, मुझे मर्मान्तिक पीडा हुआ करती थी; और अगर वियोग लम्बा होता, तो अन्तमे मेरा स्वास्थ्य गिर जाता था।

अिन दिनो बापू अपनी 'सत्यके प्रयोग' (आत्मकथा) नामक पुस्तक लिख रहे थे और वह अेक-अेक अध्याय करके 'यंग अिडिया' में

---

* बापूने मेरे पहुचनेके थोडे दिन बाद मेरा यह भारतीय नाम रख दिया था।

हर हफ्ते प्रकाशित की जा रही थी। बापू गुजरातीमे लिखते, महादेव अुसका अंग्रेजी अनुवाद करते और मै अुसे दुरुस्तीके लिअे देख लिया करती थी।]

चि०* मीरा,

मैंने आज अेक पोस्टकार्ड डाक निकलनेसे पहले लिखा है। यह मै बम्बअीमे डाकमे डलवानेको लिख रहा हू, जहाके लिअे मैं अभी रवाना हो रहा हू।

तुम्हारा हिन्दी पत्र बहुत अच्छा लिखा गया है। 'हस्पतालसे छोडेगा' नही, परन्तु 'छूटेगा' चाहिये। 'छोडेगा' सकर्मक क्रिया है और अिसलिअे अुसके पहले 'से' विभक्ति नही लगती, मगर 'छूटेगा' अकर्मक है अिसलिअे अुसके पहले 'से' लगता है।

मैं जानता हू तुम्हे वियोगका दुःख हो रहा है। तुम अुस पर विजय प्राप्त कर लोगी, क्योंकि अैसा करना ही होगा। यह थोड़े दिनका वियोग अुस लम्बे वियोगकी तैयारी है, जिसे मृत्यु लाती है। असलमे वियोग अूपरी ही है। मृत्युसे हम ज्यादा नजदीक आते है। क्या शरीर बाधा नही है — यद्यपि वह परिचयका साधन भी है?

* * *

सस्नेह,

देवलाली, १५-५-'२६

तुम्हारा
बापू

'आत्मकथा'का अध्याय अुसी समय डाकमे पड़ेगा, जिस समय यह पत्र पडेगा। तुम जैसे चाहो अुसे दुरुस्त कर देना और स्वामीको दे देना। टाअिप की हुअी प्रतिमें मेरी की हुअी शुद्धियां है। मूल प्रति भी तुम्हें भेजनेकी कोशिश करूगा।

बापू

---

* ७ वां पत्र देखिये।

५

[अुन दिनों वर्धामें विनोबाका अेक ब्रह्मचारी आश्रम था। वह अुसी स्थान पर था, जहां आजकल महिलाश्रम है। और बापू कांग्रेसके अधिवेशनमें जानेसे पहले हर साल वहां कुछ दिन आरामके लिअे जाते थे।]

वर्धा,
सोमवार, ६-१२-'२६

चि० मीरा,

मुझे अुम्मीद थी कि आज तुम्हारा पत्र आयेगा। तुम्हारे नाम मेरा यह दूसरा पत्र है। पहला कार्ड था। मैं देखता हूं कि अगर 'आत्मकथा' सोमवारको लिखी जाय, जैसा कि मैंने किया है, तो तुम्हारे पास भेजी जा सकती है। अिसलिअे यह लो अुसका अनुवाद। अिसे दुरुस्त कर देना और अुसी दिन डाकमें डाल देना। अुस सूरतमें वह समय पर पहुंच जायगा। अुसी दिन न देख सको तो सीधे स्वामीके पास भेज सकती हो। वह तुम्हारे पास बुधवारको पहुंचना चाहिये। और गुरुवारको भी डाकमें पड़ जाय, तो मुझे शनिवारको समय पर मिल जाना चाहिये। यहां य० अिं०* के लिअे अहमदाबादकी डाकका आखिरी दिन रविवार है। अब तुम्हें मालूम हो गया होगा कि तुम क्या कर सकती हो। यह बन्दोबस्त तब तक रहेगा जब तक मैं यहां हूं।

यह लो रोलाका खत। 'चिड़िया' ने मुझे अुसका अनुवाद कर दिया है। वह यह रहा। अगर तुम्हारे खयालसे यह ठीक हो तो तुम्हें मेरे लिअे फिरसे अनुवाद करनेकी जरूरत नहीं।

प्रेम,

बापू

---

* 'यंग अिंडिया'

६

[पूरा अेक साल साबरमती आश्रममे रह लेनेके बाद बापूने मुझे हिन्दी पढनेके लिअे कन्या गुरुकुल भेज दिया था। वह अुन दिनो दरियागज, दिल्लीमे था। साथ-साथ मुझे छात्राओंको पिंजाअी और कताअी सिखानी थी।]

चि० मीरा,

तुम्हारे दोनो पत्र मुझे अेक ही दिन मिले। मुझे खुशी हुअी कि तुमने पूरा हाल लिखा। यह आदत बनाये रखना। यहा घूमने जाते वक्त तुम्हारी याद आती है। हम अुसी पुराने रास्ते पर जाते है। मुझे आशा है कि तुम्हे मेरे दोनो पत्र मिल गये होगे। गौहाटी जानेके बारेमे अभी कोअी पक्की बात नही है। तुम हकीमजी* और मौ० मुहम्मदअलीसे मिले बिना न रहना। तुम्हे अुनकी पत्नी और लडकियोसे भी मिलना चाहिये।

सस्नेह,

वर्धा, ९-१२-'२६ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
कन्या गुरुकुल, दरियागज,
दिल्ली

७

वर्धा,
११-१२-'२६ (डाकखानेकी मुहर)

चि० मीरा,

तुम्हारे चारों पत्र मिल गये। दोकी पहुच मै पहले ही लिख चुका हूं।

---

* हकीम अजमलखा

मेरे खयालसे तुम्हे 'चि०' का अर्थ मालूम है। वह 'चिरंजीवी' का सक्षेप है और अुसका अर्थ है 'बहुत जीनेवाला'। यह आशीर्वाद घरके बडे लोग छोटोंके नामके पहले लगाते है।

मुझे तुम्हारे सारे पत्र पसन्द आये। मुझे खुशी है कि तुम्हें मुसलमान मित्रके यहा जानेका जल्दी ही मौका मिल गया।

*　　　　*　　　　*

तुम्हे चाहिये कि अपनी दिनचर्या मुझे लिखो और प्रार्थना, अध्ययन तथा भोजनका हाल बताओ। बताओ तुम क्या खाती हो? तुम्हारा पेट साफ रहता है? कितना दूध लेती हो? किस किस समय भोजन करती हो? वहा मच्छर है? घूमने नियमसे जाती हो? हिन्दी कुछ लिखती हो? कोअी तुम्हें पढाता है? तुम्हे फल क्या मिलते हैं?

शुद्ध किया हुआ अध्याय मुझे समय पर मिल गया। तुम्हें डाकका समय मालूम कर लेना चाहिये।

मैं अिसी महीनेकी २१ तारीखको वर्धा छोड़ दूगा। मोतीलालजीका आग्रह है कि मै गौहाटी जाअू। मुझे अुम्मीद है कि तुम्हे 'यग अिडिया' की अपनी प्रति नियमित रूपसे मिल रही होगी। न मिलती हो तो स्वामीसे पूछ लेना चाहिये और मृत्युजयको लिख देना चाहिये कि ध्यान रखे। मै मान लेता हू कि तुम्हें 'हिन्दी नवजीवन' भी मिल रहा होगा।

अुर्दू लिपिको भूल न जाना।

अमरीकी मा-बेटी अभी तक यही है। मेरा खयाल है कि मैंने अुनके आनेकी बात तुम्हे लिखी थी। बेटी अेक महत्वपूर्ण पाठशालामें शिक्षिका है। वे कल जा रही है। मेरे कारण जमनालालजीके यहां ४० मेहमानोसे ज्यादा हो गये है। बेचारी जानकीबहनकी* आफतकी कल्पना करो!

---

* जमनालालजीकी पत्नी

मेरी तंदुरुस्ती असाधारण तौर पर अच्छी है। सुबह-शाम नियमित व्यायाम होता है।

अिस पत्रके लिअे तुम यह शिकायत नही कर सकती कि छोटा है।

सस्नेह,

शनिवार

बापू

रोलाके पत्रका जो अंश तुमने अब दुरुस्त कर दिया है, अुसके सही होनेका मुझे यकीन नही था। अब पूरी तरह समझमे आने लायक बन गया। मूल वापस न भेजना। अपने कागजोमे नत्थी कर लेना।

बापू

श्रीमती मीराबहन,
कन्या गुरुकुल, दरियागंज,
दिल्ली

८

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

तुम्हारे सुखद पत्र मिलते रहे है। अभी तो लम्बा खत लिखनेकी कोशिश करनेकी हिम्मत नही कर सकता। जब रोलाको पत्र लिखूंगा, तो वह तुम्हारे मार्फत ही जायगा। मगर क्या तुम्हारे खयालसे लिखना जरूरी है? . . . तुम्हें दूर तक घूमने जाना चाहिये।

सस्नेह,

१९-१२-'२६

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबाअी,
कन्या गुरुकुल, दरियागंज,
दिल्ली

९

[बापू गौहाटी कांग्रेसमें थे।]

२७-१२-'२६ (डाकखानेकी मुहर)

दुबारा नही पढ़ा*

चि० मीरा,

तुम्हारे सारे प्रेमपत्र मुझे मिल गये। . .

तुम वहा सही काम कर रही हो। हर चीजको गौरसे देखो। जहां हो सके सुधार करो। जहा तुम लाचार हो जाओ वहा चुप रहो। तुम वहा विद्यार्थी बनकर ही गअी हो। तुम्हारा **काम** अपनी हिन्दी पूरी कर लेना है। तुम्हारे सिखाने और सुधार करनेका काम तो प्रासगिक है। . . . लेकिन अिसका अर्थ यह नही है कि तुमने अब तक जो कुछ किया है, अुसकी मै आलोचना कर रहा हू। यह तो केवल तुम्हे यही विश्वास दिलानेको है कि तुम बिलकुल ठीक कर रही हो।

खर्चके बारेमे क्षमा-याचना क्यों? हम किफायत जरूर करना चाहते है। मगर हम अपनेको अुन चीजोंसे वचित नही रखना चाहते, जिनकी हमे अपनेको सेवाके योग्य बनाये रखनेके लिअे जरूरत है। तुम्हे मालूम है कि जितने भी रुपयेकी जरूरत हो तुम श्री गाड़ोदियासे ले सकती हो।

'रीटा' अरीठा है, जो साबुनका काम देता है।

तुम्हें और बहुतसी मिस . . . मिलेगी। भगवान करे तुम्हारे सम्पर्कसे अुनकी आखे खुले। रायसीना+ बिलकुल वैसी ही है, जैसा

---

* बापूका नियम था कि वे अपने पत्रों पर हस्ताक्षर करते समय अुनके सिरे पर 'दुबारा नही पढ़ा' लिख दिया करते थे, अगर अुन्हे पढ़ जानेका समय न मिला हो।

+ नअी दिल्ली

तुमने अुसका वर्णन किया है। बल्कि अुससे भी खराब है। वह खूनसे सने हुअे रुपयोसे बनी है। खून दौरा करके पैरो तक पहुचे, अिसके बजाय वह सारा सिरके द्वारा ही चूस लिया जाता है। थोडे दिनमें मस्तिष्ककी सूजनका रोग और . . . हो जायगे!

यहांका दृश्य सुन्दर है। हमारी कुटिया विशाल ब्रह्मपुत्राके किनारे पर ही है। यहां नमी और ठड है, हवा बहुत चलती है। लेकिन तेज व्यायाम किया जाय, तो मौसम बहुत ही स्वास्थ्यप्रद है। मै आम तौर पर कांग्रेस-मंडप तक पैदल ही जाता हू —— अेक मीलसे कुछ अधिक ही है।

कल कलकत्तेके लिअे रवाना हो रहा हू। वहा चार दिन रहनेका अिरादा है।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
कन्या गुरुकुल, दरियागज,
दिल्ली

१०

-१२-'२६

चि० मीरा,

तुम्हारे दो और पत्र मिले। हा, तुम जब भी चाहो हरद्वार* जा सकती हो। अगर हिन्दी सीखनेमे सहायक न हो, तो कातना और पीजना सिखानेके लिअे तुम्हारा वहा+ ठहरना जरूरी नही है। चूकि अैसा नही मालूम होता कि तुम हिन्दीमे बहुत प्रगति कर रही हो,

---

* गुरुकुल कांगड़ी अुन दिनो गगा नदीके बाये किनारे अुसके मूल स्थान पर था।

+ कन्या गुरुकुल

अिसलिअे तुरन्त चल देना बेहतर है। तुम्हें अपनी तंदुरुस्तीको किसी भी सूरतमे खतरेमे न डालना चाहिये। अिसलिअे तुम खुद सोच करके जैसा अुत्तम समझो करो। . . .

हत्या* के बारेमे लिखे तुम्हारे पत्रसे मुझे दु:ख हुआ। . . .

तुम स्वामीजीके घर गअी थी ?

सस्नेह,

तुम्हारा

बापू

११

चि० मीरा,

तुम्हारे दोनो पत्र मिल गये। मै समझ गया तुम पर क्या बीत रही है। और अिससे मुझे खुशी है। मनुष्य कुछ भी करे तुम्हे तो अुनसे प्रेम करना ही है। अन्तमे तो आश्रम साबरमतीमे नही है, परन्तु अपने आपमे है। बुरेसे बुरे आदमीको भी हमे शुद्ध मानकर चलना चाहिये। सबके साथ समान व्यवहार करनेका, और विरोधी चीजोके अिस विश्वमें पानीमे कमलकी तरह अलिप्त रहनेका यही अर्थ है।

तुम्हारा कार्यक्रम समझमे आ गया। तुम अुसे पूरा कर सकती हो।

* * *

मै यह पत्र सोदपुरसे लिख रहा हूं, जो कलकत्तेका अेक अुपनगर है और जहा सतीशबाबूने खादीका कारखाना बनाया है। यह अेक महान प्रयत्न है। अिस पर लगभग ८०,००० रुपये लगे है।

---

* स्वामी श्रद्धानन्दजीकी हत्या।

तुम्हे भेजे गये कार्यक्रमके अनुसार हम कल कुमिल्ला जा रहे है। लेकिन आगेके लिअे यह ध्यान रखना अच्छा होगा कि जब शका हो तब पिछले पते पर पत्र लिखा जाय।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

३ जनवरी, '२७　　　　बापू

श्रीमती मीराबाअी,
कन्या गुरुकुल, दरियागज,
दिल्ली

१२

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला, या तुम्हारे पत्र मिले ? स्टेशन जानेका समय हो गया, फिर भी यह खत लिख रहा हू।

तुम्हे जो तरह-तरहके अनुभव हो रहे है अुन सबसे मुझे खुशी है। जब तक तुम अपना स्वास्थ्य और मानसिक सतुलन बनाये रखोगी, मैं तुमसे नाराज नही होअूगा। वैसे तो हम भूले करके ही सीखते है। मुझे मालूम नही कि तुमने कोअी भूल की है। परन्तु जहा भूल होनेका ज्ञान हो, वहा अधिकाश मामलोमे सुधार कर लेनेकी तैयारी ही काफी प्रायश्चित्त और अिलाज है।

काशीमे मुझे कीमती अनुभव हुअे, मगर अुनका वर्णन करनेके लिअे मेरे पास समय नही है।

सस्नेह,

बनारस या काशी,　　　　बापू
१०-१-'२७

[मुझे आज भी याद है कि यहां जो अुपदेश दिया गया है वह जब मैंने अुसे पढ़ा तभीसे कैसे सदाके लिअे मेरे हृदय पर अंकित हो गया था।

यह अुन पत्रोंमें से अेक है, जो मेरे साथ रहकर दीपस्तंभकी भांति वर्षोंसे मेरे मार्गको प्रकाशित करता रहा है।]

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिल गया, जिसमें तुमने हकीमजीके साथ मोटरमें घूमनेका वर्णन किया है। तुम ब्रजकिशनजीके यहां स्वादिष्ट भोजन खा लो या हकीमजीसे पान ले लो, अिसकी मुझे परवाह नहीं है। हकीमजीके तुम्हें पानके लिअे ललचानेसे मुझे दुःख हुआ। वह बुरी चीज है और अुन्हें तुम्हें हरगिज न देनी चाहिये थी। परन्तु रायें अलग-अलग होती हैं। स्पष्ट है कि वे अिसे निर्दोष समझते हैं। फिर भी स्वादिष्ट भोजन और पानका स्वाद लेनेको अुचित ठहरानेके लिअे तुमने जिस दलीलसे काम लिया है, वह मेरी रायमें दोषपूर्ण है। जिस चीजके लेनेकी जरूरत न हो या अिच्छा न हो, अुसका स्वाद हमें क्यों **जानना** चाहिये? क्या तुम्हें मालूम है कि हर तरहके पापाचरणको अुचित ठहरानेके लिअे यही दलील दी गअी है? यह वर्जित सेव* का लाखों बार दोहराया हुआ किस्सा है। जिस चीजको लेने या छूनेसे मुझे मना किया जाता है, अुसका स्वाद मुझे क्यों नहीं जानना चाहिये? मगर तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अगर मेरा तर्क तुम्हारी समझमें न आये, तो तुम्हें मुझसे धीरजके साथ बहस करनी चाहिये। अगर तुम मेरे तर्ककी कद्र करती हो, तो वह भविष्यमें चेतावनीका काम देनेके लिअे है। मगर अिसका परिणाम आत्मनिन्दा न होना चाहिये। अुसके लिअे कोअी कारण नहीं। घटना तो तुच्छ है।

---

* बाअीबलका आदम और अीवका प्रसिद्ध किस्सा।

परन्तु तुच्छ बातोमे भयकर सभावनाअे छिपी रहती है। अिसलिअे पिताने तुम्हें सावधान किया है।

*　　　　*　　　　*

यह पत्र मै चलती गाड़ीमे अपने मौनके दरमियान लिख रहा हू। मौन रातके नौ बजे खुलेगा।

सस्नेह,

१०-१-'२७　　　　बापू

*　　　　*　　　　*

तुम मेरा लिखा पढ सकती हो ?

श्रीमती मीराबाअी,
गुरुकुल कागडी, (हरद्वार होकर)
जिला बिजनौर

१४

[बापू दौरे पर थे।]

दुबारा नही पढ़ा

चि० मीरा,

कांगड़ीसे तुम्हारी दिलचस्प पुस्तिका मिल गअी। मैंने अुसे पूरी रफ्तारसे भागती हुअी मोटरमे पढ़ डाला। आराम बिलकुल नही मिल रहा है। लेकिन तुम्हारा यह खयाल ठीक है कि सारा दौरा स्फूर्तिदायक है। चम्पारनके साथ मेरी पवित्र स्मृतिया जुडी हुअी हैं। दरअसल चम्पारनने ही हिन्दुस्तानसे मेरा परिचय कराया। अिन हजारों भोलेभाले चेहरोंको किसी अवर्णनीय आशासे चमकते हुअे देखकर अपार हर्ष होता है। वे अपने पासके पैसे और रुपये झटसे निकाल कर दे देते है। परन्तु आलस्यको, जो अब अुनके स्वभावमे घुस गया है, वे आसानीसे नही छोड़ते। मगर अैसा महसूस होता है कि वह भी जा रहा है।

तुलसी मेहर* मेरे साथ है। तुम्हे अवश्य मालूम होगा कि हम नेपालके बहुत नजदीक है। जिन जगहोसे मै गुजरता हूं, अुन्हें तुम्हें अपने नकशेमें जरूर देख लेना चाहिये। तुलसी मेहर पहाड पर चले जानेसे पहले तुमसे मिलनेको बहुत अुत्सुक है। लेकिन अुनका खयाल है कि तुम बहुत दूर हो।

सरकारी महलमे अिक्के पर जाना बिलकुल तुम्हारे योग्य ही था। तुमने मित्रोके प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है।×

तुम वहाके नौजवानोके साथ आसपासके जगलोंमे घूम आना। अुन्होने तुम्हे जरूर बता दिया होगा कि वह स्थान श्रद्धानन्दजीने पसन्द किया था। गुरुकुलकी सारी कल्पना अुन्हीकी थी।

आज हम बेतियामे है। यह वही जगह है जहा मै लोगोके लिअे काम करते समय सबसे ज्यादा अरसे तक ठहरा था।

शायद तुम्हें मालूम होगा कि मै तुम्हारे अधिकाश पत्र आश्रम-वासियोके पढनेके लिअे वहा भेज देता हू। वे अितने सुन्दर है। . . . अगर आअिदा तुम चाहो कि अैसा न किया जाय तो मुझे बता देना। मै नही चाहता कि तुम अपने पर अिसलिअे रोक लगाओ कि और कोअी तुम्हारे पत्र देख लेगे। हमारा रवैया यह होना चाहिये: हम अपना हृदय वही अुड़ेल सकते है, जहा अैसा कर सकते है, परन्तु पानी जहां चाहे वहा बह सकता है। मगर सबके लिअे यह रवैया अपनाना या पसन्द करना भी आसान नही है। अिस बारेमे तुम्हारा जो खयाल हो मुझे बता देना।

तुम पहलेसे ज्यादा सशक्त हो रही हो?

तुम्हे चिन्ता न हो, अिसलिअे जान लो कि मै तुम्हे कमसे कम हर सोमवारको जरूर लिखा करूगा। डाक तुम्हारे पास कब पहुंचेगी, यह अिस पर निर्भर है कि मै कहा हूं। . . .

---

* नेपालके तुलसी मेहर साबरमतीमें मेरे पहले पिजाअी-शिक्षक थे।

× मै दो मुसलमान मित्रोके सम्बन्धमे गृह-सदस्यसे मिलने गअी थी। अुनसे मेरा परिचय बर्लिनमें हुआ था और वे अुस समय निर्वासित थे।

‘आत्मकथा’के अध्याय जैसे-जैसे तुम्हारे पास आते है, तुम अुन्हे दुरुस्त करती जाती हो। जब दौरा समाप्त हो जायगा, तब तुम्हारी की हुअी शुद्धिया देखनेमे आनन्द आयेगा।

सस्नेह,

बेतिया,
२४-१-’२७

तुम्हारा
बापू

१५

चि० मीरा,

तुम्हारे सब पत्र मुझे समय पर मिल गये। डाककी व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। अिस लगातार सफरके बावजूद कोअी चीज अिधर-अुधर नही हुअी।

हम आज रातको बिहार छोड़ रहे हैं। अिससे मुझे दुःख होता है। बिहारमे मेरे लिअे अजीब आकर्षण है।

मै सक्षिप्त पत्र ही लिखूगा। क्योकि जितना समय मेरे पास है, अुसमें मुझे बहुत लिखना है।

वहाके मुख्य मित्रोको जमा करके तुम नीचेका व्रत ले सकती हो, ताकि वे घबराये नही। केवल तीन बार ही भोजन करो और शामको ७ बजेके बाद खाना न खाओ। भाखरी* पर घी न चुपडा जाय। शाक नमकके साथ या नमकके बिना साधारण अुबला हुआ हो। बिना शकरका दूध हो, अेक बारमे दोसे ज्यादा तरकारियां न हो और तीनसे अधिक फल न हो। नीबू, शहद, शकर, नमक और सोडा डालकर पानी पीनेमे कोअी मर्यादा नही। फिलहाल यह व्रत २० मार्च तक रहे। दवाके तौर पर ली जानेवाली कोअी चीज अलग न मानी जाय। बीमारीकी हालतमे अिन सब बातोंमे फेरबदल हो सकेगा।

---

* घी और नमक डालकर बनाअी हुअी रोटी।

मेरे खयालसे अुपरोक्त प्रतिबन्धोसे सारा काम चल जायगा। अिस मियादको बढ़ाने न बढानेके बारेमे जब हम मिलेगे तब जरूर चर्चा करेगे।*

जब तक तुम अितनी मोटी न हो जाओ कि फुर्तीसे परिश्रम करनेके अयोग्य बन जाओ, तब तक यह चिन्ता करनेका कोअी कारण नही कि तुम जरूरतसे ज्यादा तदुरुस्त हो। अैसा होनेका कोअी खतरा नही है। परन्तु किसी भी सूरतमे व्रतसे कोअी दूरका अैसा खतरा भी नही रहेगा।

. . . अैसी हर चीजकी, जो हमें पसन्द न हो, आलोचना करनेसे स्वतत्र निर्णय करने या अुसे प्रगट करनेकी शक्ति मारी जाती है, खास तौर पर जब वह आलोचना प्रियजनोकी तरफसे होती हो। लेकिन मुझे खुशी है कि तुमने अपने आप भल सुधार ली। अितनी ही बात है कि तुम्हे अिन बातोंके बारेमे व्यर्थ परेशान नही होना चाहिये। आत्म-सुधारसे प्रफुल्लता आनी चाहिये।+

अब अिससे ज्यादा नही लिखा जा सकता, क्योंकि मुझे तीन मील पैदल चलकर स्टेशन पहुचना है। अब अितना ही वक्त है कि आरामसे गाड़ी पकड़ सकू।

सस्नेह,

३१-१-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
गुरुकुल कागड़ी,
जि० बिजनौर

---

* जहा तक मुझे याद है मैंने अिस भोजन सम्बन्धी व्रतको बापूकी अिजाजतसे अेक साल तक जारी रखा था और अुसके बाद मुझे सादे भोजनकी स्वाभाविक आदत हो गअी थी।

+ मेरे पहलेके अेक पत्रकी कोअी बात बापूको पसन्द न आने पर भी अुन्होने अुसकी आलोचना नही की थी।

१६

[हिसाब रखनेका काम हमेशा मेरे लिअे अेक हौवा रहा है। और अन्तमें मैंने यह कर दिया कि हर चीज लिख डालती और दूसरोंको दे देती, ताकि वे जमाखर्च करके बाकी निकाल ले।]

चि० मीरा,

कल मैंने अेक संक्षिप्त पत्र लिखा था।

तुम मुझे अपना हिसाब भेजनेकी चिन्ता न करो। तुम्हे अवश्य ही खर्चकी पाअी-पाअीका हिसाब रखना चाहिये और वह भी कागजके टुकड़ों पर नही, बल्कि अेक बाकायदा बनाअी हुअी हिसाबकी बहीमे। यह बहुत ही सीधा काम है। अुसमें जमा और नामेकी रकमें लिखी जाती है। नकद रुपया जितना मिलता है, वह किसीके नामे लिखा जाता है और जितना दिया जाता है वह जमा किया जाता है। असलिअे आअी हुअी रकमे नामेकी तरफ और खर्चकी जमाकी तरफ लिखी जाती है। वह अिस तरह:

तारीख	नामे	रकम	जमा	रकम
१२-८	आश्रमसे प्राप्त	१५०)	तागाभाडा	१।।)
			डाकखर्च	३।।)
		१५०)	बाकी	१४५)
				१५०)

अग्रेजी ढगसे तमाम रोकड़बहियां अिसी तरह रखी जाती है और तुम्हारी रोकड़बही ही है। खाताबहीमें रोकड़बही और रोजनामचाके अलग-अलग हिसाबोंकी सूची होती है। जहा नकद लेन-देन नही होता, वहां सब कुछ रोजनामचेमें लिखा जाता है। तदनुमार अुधारसे बिक्री हो या खरीद हो, तो वह रोजनामचेमे दर्ज होगी। व्यवहारमें सारा बहीखाता यही है।

यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पास वहा चरखा नही है। मुझे तुम्हे अपने जैसा सफरी चरखा देना पडेगा। मै खादी प्रतिष्ठानवालोसे कहकर तुम्हारे पास अेक चरखा भिजवा रहा हू। अगर तुम अिस पर अपने आप काम न कर सको, तो जब मै वहा आअूगा तब मुझे तुम्हे सिखाना पडेगा।

धुलिया बड़ी आरामकी जगह है। हमे अेक कार्यकर्ताके घर पर ठहराया गया है, जो चम्पारनमे काम करते समय मेरे साथ शरीक हो गये थे। और यहा भी अेक अैसे सज्जन रहते है, जिनका मुख शायद अेंड्रूजसे भी ज्यादा भोला और नम्रता लिये हुअे है। अकोला दूसरी अैसी ही जगह है। और अकोलासे मुझे मणिलालकी बहू मिली है। वह किशोरलालकी भतीजी है। १९ वर्षकी अुम्र है। शादी लगभग तुरन्त हो जायगी। जब मणिलाल दक्षिण अफ्रीका जायगा, तब वह अुसके साथ चली जायगी। वह अेक धर्मनिष्ठ घरानेकी लडकी है।

सस्नेह,

धुलिया, १४-२-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
कृष्ण निवास, कटरा खुशाल राय,
दिल्ली

१७

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

. . हमे लोगोको अुन्हीके पैमानेसे नापना चाहिये और यह देखना चाहिये कि अुस पर वे किस हद तक पूरे अुतरते है। तुम्हे अिस चेतावनीकी जरूरत नही है। लेकिन यह देखकर कि तुमने अपने लिअे अेक कठोर मापदड बना लिया है और तुम अजनबी वातावरणमें हो, मुझे यह चिन्ता है कि तुम्हारा संतुलन बाल भर भी न बिगड़े।

आज मुझ पर कामका अितना अधिक भार है कि अिससे ज्यादा नही लिख सकता।

सस्नेह,

शोलापुर, २१-२-'२७

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबाअी,
गुरुकुल कागडी,
जिला बिजनौर

१८

चि० मीरा,

तुम्हारे दोनो पत्र मिल गये।

यह प्रभातका समय है। मै बा, मणिलालकी पत्नी सुशीला, मणिलाल, रामदास, महादेव और पडितजीके साथ भुसावलमे अेक तीसरे दर्जेके डब्बेमे बैठा हू। पडितजी विवाहसस्कार कराने आये थे। शादी अत्यंत सादा ढगकी थी — कोअी भेट नही ली गअी, कोअी खर्च नही किया गया।

अेक दिन और मिल जाय, अिस खयालसे मैंनें अपने मौनमे सफर करनेका तय किया। मै तीसरे दर्जेमें यात्रा अिसलिअे कर रहा हू कि मुझे मणिलाल और अुसकी बहूके लिअे दूसरे दजका खर्च नही करना चाहिये, और यह मै चाहता नही कि परिवारमे शरीक होनेके पहले ही दिन अिस नवागतुकसे जुदा हो जाअू। और चूकि मेरे सामने आश्रममें आरामके लगभग छः दिन मौजूद है और यह तीसरे दर्जेका सफर आरामका है, अिसलिअे मुझे अुसकी परवाह नही। बल्कि मुझे वह पसन्द है।*

---

* अबसे बापू अधिकाधिक तीसरे दर्जेमें सफर करने लगे और अन्तमें वह अुनका अटूट नियम बन गया।

आश्रम पहुंचने पर मै 'आत्मकथा' में तुम्हारी की हुअी दुरुस्तियां पढ़ूंगा। मैंने पहले ही समझ लिया था कि जिन अध्यायोको तुमने पहले नही देखा है, अुनमे तुम बहुत सुधार करोगी*।

सस्नेह,

७–३–'२७

तुम्हारा
बापू

१९

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारे सब पत्र मिल गये। आश्रमके मेरे थोड़ेसे दिनोमे से यह अन्तिम दिन है। हम जल्दी ही मिलेगे, अिसलिअे तुम्हे लम्बा प्रेम-पत्र लिखनेका कोअी कारण नही। तुम्हे अपनी खोअी हुअी सेहत फिरसे हासिल कर लेनी चाहिये। . . .

मेरे लिअे १९ तारीखसे पहले वहा× अुपस्थित होना असंभव है, क्योकि मै अेक दलितवर्ग-सम्मेलन १७ तारीखको ही समाप्त कर सकूगा। अगर मै सम्मेलनकी तारीखे बदल सकता, तो आश्रममे अेक दिन खुशीसे कम ठहरता। मगर अुसकी कल्पना ही नही हो सकती थी। अब मैंने सुझाया है कि अगर अुन लोगोको दूसरे किसीसे न कराना हो तो हरद्वारमे प्रदर्शनीका अुद्घाटन बा या महादेवसे करा लें।

मुझे यह अुम्मीद जरूर है कि कलकत्तेसे चरखा आ गया होगा।

---

* डाककी कठिनाअियोके कारण कुछ अध्याय मेरे देखे बिना 'यग अिडिया' मे छप गये थे। मुझे पुस्तकके लिअे अुन्हे बादमे ठीक करना पडा था।

× गुरुकुलके दीक्षान्त समारोहमे।

क्या मैंने तुम्हे बता दिया कि मेरा वजन ५ पौंड और बढ गया है? जिस दिन मै यहा पहुचा, अुस दिन लगभग १०८ पौंड था। यह बहुत अच्छी बात है। आज शामको मेरी तुलाअी फिर होगी।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
गुरुकुल कागडी,
जिला बिजनौर

२०

[बापू गुरुकुल कागड़ीके दीक्षान्त समारोहमें आये और फिर थोडे दिन बाद चले गये। मै फिर लम्बे अरसेके लिअे अुनसे बिछुड गअी। मैंने बापूके साथ ही गुरुकुल छोडा, परन्तु रास्तेमें अुनसे जुदा हो गअी। क्योकि मुझे रेवाडीके भगवद्भक्ति आश्रममे हिन्दुस्तानीकी आगेकी पढ़ाअीके लिअे जाना था।

बापूके दौरे और कामका अुन पर जबरदस्त जोर पड रहा था। मुझे स्वयंस्फूर्तिसे अैसा लगा कि बापूका भयंकर स्वास्थ्यभग होनेवाला है। और अिससे यह नया वियोग असह्य हो गया। गाडीमें जब मैं रेवाडीका सफर कर रही थी, तब फूट-फूटकर रोनेसे मेरा गला रुंध गया। पांच दिन बाद वह तार आया, जो अिस पत्रके बाद दिया गया है।]

भरतपुरके बाद
गाडीमे
२२-३-'२७

चि० मीरा,

आजकी जुदाअी दुःखपूर्ण थी, क्योंकि मैंने देख लिया कि मै तुम्हें पीड़ा पहुचा रहा हू। फिर भी, यह अनिवार्य था। मै चाहता हू कि तुम सम्पूर्ण स्त्री बन जाओ। मेरी अिच्छा है कि तुममे स्वभावकी कोअी वक्रता बाकी न रहे। सारा अनावश्यक संकोच मिट ही जाना चाहिये। आश्रम तुम्हारे घरका केन्द्र है। मगर सयोगवश तुम जहां कही रहो, वही तुम्हारा घर बन जाना चाहिये। हम जिन लोगोके सम्पर्कमें आयें

अुन पर भार बने बिना हमे जिन चीजोकी जरूरत हो, वे अुनसे लेनी ही चाहियें। हमे अुनके साथ अेकता महसूस करनी चाहिये। और मैंने पता लगाया है कि जाने-अनजाने किसीसे कुछ लिये बिना हम कभी नही देते। अेक हद तक सकोच मै सबमे चाहता हू। मगर वह संकोच आत्म-संयमका परिणाम होना चाहिये, भावुकताका नही। तुम्हारा संकोच भावुकताके कारण है। वह मिटना ही चाहिये। मैंने सोचा था कि मै तुम्हारा ध्यान अिस तरफ दिलाअू। लेकिन मैंने देख लिया कि मुझे और ठहरना चाहिये था। खैर, वह तो हो गया।

घबराहटको जरूर निकाल डालो। तुम्हे मेरे शरीरसे मोह हरगिज न होना चाहिये। शरीररहित आत्मा तो हमेशा तुम्हारे साथ ही है। और वह अुस शरीरबद्ध दुर्बल जीवात्मासे अधिक है, जिसके साथ शरीरकी सारी मर्यादायें लगी हुअी है। शरीररहित आत्मा सम्पूर्ण है और अुसीकी हमे आवश्यकता है। यह हम तभी अनुभव कर सकते है, जब हमे अनासक्तिका अभ्यास हो। अिसे प्राप्त करनेका अब तुम्हें प्रयत्न करना चाहिये।

अगर मै तुम्हारी जगह होअू, तो अिसी तरह अपना विकास करू। मगर तुम्हे अपने ही रास्ते विकास करना चाहिये। अिसलिअे मैंने अिस पत्रमे जो कुछ कहा है, अुसमे से जो तुम्हारे दिल व दिमागको न जचे अुसे छोड देना। कुछ भी हो जाय, तुम्हे अपने व्यक्तित्वको अवश्य कायम रखना चाहिये। जब अैसा करना तुम्हारा धर्म हो, तब मेरी बात न मानना। क्योकि यह सभव है कि तुम्हारे प्रति पूरा प्रेम होने पर भी मै तुम्हारे बारेमे गलत खयाल बना लू। मै नही चाहता कि तुम यह समझो कि मुझसे कभी भूल हो ही नही सकती।

सस्नेह,

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबाअी,
भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा
रेवाडी

२१

[यह वही स्वास्थ्यभग था, जहासे बापूके रक्तचापकी बात मालूम हुअी। बेशक रक्तचाप तो कुछ समय पहलेसे ही था, मगर बापूकी अथक और प्रसन्नचित्त होकर काम करनेकी असाधारण शक्तिके कारण वह मालूम नही हुआ था।]

तार

भेजनेका स्थान: निपानी ता० २७-३-'२७

मीराबाअी, भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा, रेवाडी।

बापू मिर्गीके हमलेसे बाल बाल बचे। तेज रक्तचाप अब भी है। डॉक्टर अिसका कारण हदसे ज्यादा काम और स्नायुओकी थकावट बताते है और पूरे आरामकी और कमसे कम गरमीके मौसममे सब कार्यक्रम रद्द कर देनेकी अुनकी सलाह है। २८ तारीखको बेलगांवके लिअे रवाना हो रहे है।

महादेव

२२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र और तार भी मिल गया। तुम्हे घबराना हरगिज नही चाहिये। किसी न किसी दिन तो शरीर टूटने ही वाला था। तुम मेरे शरीरको भूल ही जाओ। वह तुम्हारे लिअे सदा नही रह सकता। तुम्हे अपने सामने पड़ा हुआ काम करना चाहिये। मुझे और ज्यादा नही लिखना चाहिये। कही डॉक्टर या आसपासवाले नाराज न हो जाय। मेरे खयालसे मुझे जितने आरामकी आवश्यकता है अुतना ले रहा

डू। लेकिन मै शरीरका बहुत ज्यादा लाड़-प्यार नही कर सकता। तुम वचन दो कि चिन्ता नही करोगी। अपने काममें डूब जाओ।

सस्नेह,

१-४-'२७ (डाकखानेकी मुहर)

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबहन,
भगवद्भक्ति आश्रम,
रेवाडी (बी. बी सी आओी. रेलवे)

२३

चि० मीरा,

तुमने तो मुझे पत्र लिखनेकी जिम्मेदारीसे मुक्त कर दिया, मगर मै तुम्हे हर सोमवार लिखनेकी खुशीसे वचित नही रहना चाहता। प्रेम-पत्र लिखना अेक मनोरजन है, न कि अैसा काम जिसे टालनेके लिअे कोओी बहाना ढूढना पडे। अभी कमजोरी तो है, मगर तबीयत पहलेसे अच्छी है।

डॉ० महेता बम्बओीसे शरीरकी जाच करने यहां तक आये थे। अुनकी जोरदार राय है कि अगले कुछ महीनोके लिअे दौरेका काम बिलकुल छोड देना चाहिये। वे बिस्तर पर पड़े-पड़े पढनेसे या कभी-कभी स्नेहियोको पत्र भी लिखनेसे मना नही करते। अगर मै पूरा आराम लू, तो अुनका खयाल है कि मेरी खोओी हुओी शक्ति बहुत कुछ वापस आ जायगी। मगर अितनी ताकत मुझमे कभी नही आ सकेगी कि अैसा थकानेवाला दौरा कर सकू, जैसा कि पिछले महीनेकी २५ तारीखको अेकदम बन्द हो गया। देखेंगे। अगर दौरा रद्द करनेका अंतिम निर्णय हो गया, तो मै अपना आराम आश्रममे आकर लूगा। मै आज

या कल निर्णय कर लूगा। अधिक संभावना यही है कि दौरा रद्द हो जायगा। फिर भी मै अगले सप्ताह मंगलवारसे पहले नही निकलूगा।

लेकिन तुम्हे ये दौरे* क्यो हो रहे है? क्या केवल आध्यात्मिक पीड़ा ही है या आबहवाका भी अिससे कोअी वास्ता है? अगर ठडे जलवायुकी तुम्हे आवश्यकता हो, तो तुम्हे जरूर बाहर चले जाना चाहिये। वहाका जलवायु तुम्हे कैसा लगा? . . .

सस्नेह,

४-४-'२७ बापू

श्रीमती मीराबहन,
भगवद्भक्ति आश्रम,
रामपुरा,
रेवाडी

२४

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्र मिले। अवश्य ही तुमने मेरे सामने अपनी सारी आत्मा अुड़ेलकर बिलकुल ठीक किया। मैं तुमसे सर्वथा सहमत हू कि हमें अेक सगठन पैदा करना है, और अिसलिअे कामका कोअी तरीका होना चाहिये। लेकिन शायद मेरे प्रति तुम्हारे स्नेहमे अुन लोगोके प्रति, जिन्होने दौरोंका प्रबन्ध किया, अधीरताका आभास है। किन्तु जो चेतावनी मिली है, अुससे सभी लाभ अुठायेगे। अिस अत्यन्त रमणीय वातावरणमे जितने भी आरामकी जरूरत है मै ले रहा हू। और जब मुझे मैसूर ले जायगे, तब और भी आराम कर लूगा। आराम आश्रममे नही लेना है। डॉ० महेताका आग्रह है कि कोअी ठडी जगह चुनी जाय। और मुझे वहीं रहना है, जहां मुझे अप्रैलमें दौरा करना था।

---

* मेरे हृदयमे संघर्ष चल रहा था।

मेरी लिखावटसे तुम समझ सकती हो कि मै दिनोदिन सशक्त होता जा रहा हूं। कल मै काफी घूमा। यह तो हुअी अपनी बात।

घोड़ेकी सवारीका तुम्हारा यह विचार मुझे पसन्द है। अिससे तुममे ताकत आयेगी और तुम गांवोमे जाकर ग्रामीण जीवनको कुछ-कुछ देख सकोगी। तुम्हारे लिअे ठीक जीन मंगवा दी गअी है? तुम्हे देहाती हिन्दीके सभी प्रकार समझनेकी कोशिश करनी चाहिये। मुझे तब तक सन्तोष नही होगा, जब तक तुम हिन्दीमे अितनी पारंगत न हो जाओ कि देहातियोंकी हिन्दी समझ और बोल सको। भय-भीत न होना। तुम्हे अपने कामसे प्रेम है, अिसलिअे सब ठीक हो जायगा। मै अधीर नही बनूगा। परन्तु तुम्हारे कामके लिअे हिन्दीका ज्ञान आवश्यक है। अिसलिअे अुसे जानने और बोलनेका हर मौका ढूढते रहना। तुम्हारे आसपास जो कुछ हो रहा हो, अुस सबको समझनेका आग्रह रखना।

*　　　*　　　*

सस्नेह,

बापू

महादेव और देवदास खादी-फेरीके लिअे निकल गये है।

११-४-'२७

श्रीमती मीराबहन,
भगवद्भक्ति आश्रम,
रेवाड़ी

चि० मीरा,

आज अुपवासके दिन मुझे तुम्हारे अुस पत्रकी, जिसमें बीथोवन* के अुद्धरण दिये गये हैं, पहुच लिखनी ही चाहिये। ये अुद्धरण अच्छी आध्यात्मिक खुराक हैं। मैं नही चाहता कि तुम अपना सगीत या अुसकी रुचि भूल जाओ। जिस चीजका तुम पर अितना ऋण है, अुसे भूल जाना निर्दयता होगी। ×

महाराजजी और सब मित्रोको अुनके कृपापूर्ण निमत्रणके लिअे धन्यवाद देना। लेकिन अभी तो मुझे मैसूरमे नदी पर्वत पर ही जाना होगा। मै जानता हू कि वहा आ सकू तो मुझे पूरा सुख मिलेगा।

हमने यहा बादशाही ठाटसे सप्ताह + मनाया। अेक चरखा रोज १६ घंटे चालू रखा गया। अुस पर ४ फुटके ३००० तारसे ज्यादा सूत प्रति दिन तैयार हुआ। लगभग सभीने ६ और १३ तारीखको अुपवास रखा।

मुझे आशा है कि तुम्हारे और भी पत्र यहा आयेंगे।

काकाने रोलाके पत्रके तुम्हारे अनुवादकी अेक प्रति भेजी है। अनुवाद सचमुच बहुत अच्छा है। मूल अिससे अच्छा नही हो सकता।

मुझे खुशी है कि तुम वहा कमिश्नरसे मिल ली। तुम्हे अपने कियेका — अेक भंगीकी गोद बैठनेका — फल मिल रहा है। तुम्हे भूल जाना चाहिये कि **तुम क्या थीं**। तुम्हे यही समझ लेना चाहिये कि **तुम क्या हो**। ये बेचारे सरकारी कर्मचारी सचमुच नही जानते कि जब वे तुमसे मिलते है तब वे कहा खडे है। वे तुम्हारी पिछली बातोको भूल नही सकते और कुदरती तौर पर घबरा जाते है। तुम्हें

---

* जहा तक मुझे याद है, मैंने रोमा रोला रचित 'लाअिफ ऑफ बीथोवन' के अुद्धरण दिये थे, और अेक चीज जो मैंने दी थी वह थी बीथोवनका आदर्श वाक्य: "कष्ट द्वारा आनन्द।"

× भूमिकाका पृष्ठ ५ देखिये।

+ राष्ट्रीय सप्ताह

अुन्हे निश्चिन्त कर देना पडेगा। कहते है कि जब ब्रिटेनके मौजूदा राजा नाविकके रूपमे भरती हुअे, तो अुनके साथ वैसा ही बर्ताव किया गया था ओर दूसरे नाविकोकी तरह अुन्हे भी नाश्तेमे काली काफी और काली रोटी दी जाती थी। यह तो अुस मामलेकी सबसे छोटी बात थी। अुन्हे साधारण नाविक ही समझा गया था। अिसी तरह अेक दिन तुम भी मामूली देहाती लडकी ही समझी जाओगी। वह तुम्हारे और मेरे दोनोके लिअे गर्वकी बात होगी।

सस्नेह,

१३-४-'२७ बापू

श्रीमती मीराबहन
भगवद्भक्ति आश्रम,
रामपुरा, रेवाड़ी

२६

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्र मिल गये। तुम्हे अपने पर हदसे ज्यादा कामका बोझ नही डालना चाहिये। अगर पढानेसे तुम पर बहुत बोझ पड़ता है, तो अुसे जरूर कम कर देना चाहिये और अिसी तरह सीखना भी। तुम्हें अपने आसपासके लोगोको साफ बता देना चाहिये कि तुम्हारी शारीरिक शक्ति कितनी है। तुम्हे अपनी तदुरुस्ती किसी भी कारणसे गिरानी न चाहिये। क्या तुम्हे अुपयुक्त फल और दूध मिल जाते है ?

मेरा काम मजेसे चल रहा है। पिछले दो दिनसे मै सुबह-शाम दोनों समय घूमने जाता हू और अिससे मुझे कोअी हानि नही हुअी। तुम्हे मालूम है कि मैने अेक फलके बजाय शाक शुरू कर दिया है और भाखरी ले रहा हू।

हम अम्बोलीसे आज रवाना हो रहे है और सब कुशल रही तो कल बेलगांवसे चल देगे। अगले दो महीने तक पता रहेगा : नन्दी पर्वत, मैसूर।

अिस स्थानको छोड़ते समय मुझे दुःख हुअे बिना नही रहेगा। यह जगह ही रमणीय है। परन्तु मुझे अिस स्थानसे ममत्व अिस कारण हो गया है कि यहांके राजाका चरित्र अनोखा है। जहा तक मुझे मालूम हुआ है, वे आदर्श राजा हैं। वे अपने निजी खर्चके लिअे रियासतकी आमदनीमें से अेक बधी हुअी रकम लेते है। वे अपनी प्रजासे खुलकर मिलते-जुलते है और अपने १२५ गावोमे से हरअेकमें गये है। वे सयमी जीवन व्यतीत करते है और अुनकी पत्नी अुनके योग्य है। मै अुनसे कअी बार मिला हू और अुनके स्पष्ट और सरल व्यवहारसे मुझे खुशी हुअी है। अिसी कारण मै अिस स्थानको अितना अधिक पसन्द करता हू। मगर हमे जो बातें पसन्द होती है, अुन्हे हम सदा ही नही कर सकते। हम कुछ घटेके भीतर रवाना हो जायगे।

मै नये चरखेकी रिपोर्टकी आशा रखता हू। . . .

सस्नेह,

१८-४-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी
रेवाडी

२७

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारे चारो पत्र मिल गये, जिनमे से तीन तो कल अिकट्ठे ही आये।

१९ तारीखको बेलगावसे रवानगीका जो तार भेजा गया था, वह तुम्हे जरूर मिल गया होगा।

तुम्हारे अेक पत्रसे कल मुझे प्रेरणा हुअी कि तुम्हे तुरन्त तार दे दूं कि नन्दी चली आओ। लेकिन मैंने अपने पर सयम रखा। दूसरे दो पत्रोमें कम विषाद था। फिर भी अगर वियोग असह्य हो अुठे, तो तुम्हे मेरे अुत्तर या प्रेरणाका अिन्तजार किये बिना ही चले आना चाहिये। अपने आसपासके

लोगोके प्रेमसे तुम्हे सचमुच बल मिलना चाहिये और वहा रहनेकी प्रेरणा मिलनी चाहिये। वहाके लोगोके स्नेहका वर्णन करनेवाला तुम्हारा पत्र अत्यन्त मर्मस्पर्शी है, फिर भी अगर तुम वहा शातिसे न रह सको तो अफसोसकी बात होगी। मगर कोअी भी अपना स्वभाव अचानक नही बदल सकता, और अगर अपनेको शात रखनेकी तुम्हारी कोशिश बेकार रहे, तो तुम्हे वहाके मित्रोको साफ-साफ कह देना चाहिये और जरा भी सकोच न रखकर यहा चले आना चाहिये। **किसी भी हालतमें** वहा अपना स्वास्थ्य न बिगाड लेना। अपने स्नायुओ पर अितना जोर डालनेकी हरगिज कोशिश न करना कि स्वास्थ्य बरबाद हो जाय।

आज यहा छठा दिन है। मुझे अभी तक यहाका जलवायु अनुकूल नही आया है। अम्बोलीमें जो अुत्साह और बल महसूस होते थे, वे यहा नही रहे। परन्तु डॉक्टर मुझे यकीन दिलाते है कि अन्तमे नन्दी अम्बोलीसे जरूर अधिक लाभदायक सिद्ध होगा। अुनका कहना है कि यह रक्तचापवालोके लिअे आदर्श स्थान है। चिन्ता या परेशानीके लिअे कोअी भी कारण नही है।

चूकि तुम दोनों अुपवासोको भूल जानेके कारण अितनी परेशान थी, अिसलिअे अुपवास करके तुमने अच्छा किया।* अिसमे सन्देह नही कि जब स्नायुओ पर जोर पड़ रहा हो, तब शरीरकी दृष्टिसे भी अुपवास करना अच्छी चीज है। मूर्च्छा आनेसे पहले मैंने अुपवास कर लिया होता तो बेशक अच्छा रहता। अुस दिन कामका भयकर जोर पड़ रहा था। लेकिन यह तो बात हो जानेके बाद सयाना बनना हुआ। हा, मेरी अुस मूर्खतापूर्ण भूलसे कोअी दूसरा लाभ अुठा सकता है। मै अिसे मूर्खतापूर्ण अिसलिअे कहता हू कि मुझे मालूम था कि जोर पड रहा है; और अैसी परिस्थितिमें अुपवास करनेका लाभ भी मै जानता था। मगर शैतान हमारे पीछे हमेशा लगा रहता है और हमारी कमजोरसे कमजोर

---

* राष्ट्रीय सप्ताह ६ अप्रैलको शुरू होता है और १३ को खतम होता है, मगर मै अुसके पहले और आखिरी दोनो दिन अुपवास करना भूल गअी थी।

हालतमें हमें पकड़ता है। अुसने मुझे दुर्बल और ढीला पाया और धर दबाया। अिसलिअे तुम्हारे अुपवाससे मुझे परेशानी नही होती। केवल यह जान लो कि वह कब करना और कैसे करना चाहिये।

तुम्हे अपनेको फौलादी दिलका बना लेना चाहिये। हमारे कामके लिअे यह जरूरी है।

भगवान तुम्हारे सहायक हो।

सस्नेह,

नन्दी पर्वत (मैसूर) बापू
२५-४-'२७

श्रीमती मीराबाअी
भगवद्‌भक्ति आश्रम,
रामपुरा, रेवाडी

२८

चि० मीरा,

फिलहाल जितने पत्र लिख सकू लिखना ही चाहिये। कलके पत्रके तुम्हारे जवाबकी प्रतीक्षा अुत्सुकतापूर्वक करूगा। तुम्हे प्रसन्नचित्त हो जाना चाहिये।

अगर वहा बढ़अी हो तो तुम्हे सफरी चरखा सुधरवा लेना चाहिये। जहां तुम खुद सुधार सकती हो, वहा तुम्हे स्वय ही सुधार लेना चाहिये। तुम वहाके मित्रोसे आवश्यक औजार माग सकती हो या कुछ खरीद सकती हो। वे हमेशा सुविधाजनक होते है।

कलसे आज शक्ति अधिक मालूम हो रही है। सुब्बिया डाकके लिअे अिन्तजार कर रहा है।

सस्नेह,

मंगलवार, तुम्हारा
२६-४-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
भगवद्‌भक्ति आश्रम,
रामपुरा, रेवाड़ी

२९

दुबारा नही पढ़ा

चि० मीरा,

तुम्हारा प्रसन्नतापूर्ण पत्र मिला। अगर तुमने जो कुछ लिखा हैं अुसका अेक-अेक शब्द समझ सकती हो तो तुम्हारा सारा दु ख मिट जाय और मेरी चिता भी। हम सचमुच अपने कार्यके द्वारा और कार्यमे ही जीते हैं। अगर हम अपने नाशवान शरीरोंका अस्थायी साधनोके तौर पर अुपयोग न करके अपनेको अुनके साथ अेकरूप कर देते है, तो अुन्हीके द्वारा नष्ट हो जाते है।

मै जितना ही अधिक वस्तुओको देखता और अध्ययन करता हू, अुतना ही मेरा यह खयाल पक्का होता जाता है कि वियोग और मृत्युका शोक शायद सबसे बड़ा भ्रम है। यह समझ लेना ही कि यह भ्रम है अुससे मुक्त होना है। आत्माकी न मृत्यु है और न वियोग। लेकिन दु खकी बात तो यह है कि यद्यपि हम अपने मित्रोसे अुनके भीतर रहनेवाली आत्माके कारण ही प्रेम करते है, फिर भी आत्मा पर जो क्षणभगुर आवरण रहता है अुसके नाश पर हमें दुःख होता है। होना यह चाहिये कि सच्ची मित्रताका अुपयोग पिंड द्वारा ब्रह्माडको प्राप्त करनेके लिअे किया जाय। अभी तो अैसा लगता है कि तुमने सत्यको देख लिया है। वह सदाके लिअे कायम रहे।*

* * *

सस्नेह,

२७-४-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी
रेवाड़ी

---

* मैंने सत्यको अपनी बुद्धिसे जान लिया था, परन्तु हृदय अुसके बाद भी कअी वर्ष तक पिछड़ता रहा।

३०

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हारा ताजा पत्र और भी प्रसन्नतापूर्ण है। मुझे आशा है आगे भी यही हाल रहेगा। मै तो आज तुम्हे हिन्दीका अेक कार्ड भेज ही रहा था कि डाक निकल गअी। यह पत्र डाक मिलनेके बाद और साथ ही डाक निकलनेके बाद लिखा गया है, क्योंकि डाक मिलनेसे पहले डाक चली जाती है।

मैंने यहा खुराकमे थोड़ीसी तबदीली कर दी है। अुसे अेक मशहूर डॉक्टरने, जो पास ही रहते है, पसन्द कर लिया है। मै अब कच्चा दूध लेता हू और कभी-कभी अुसमे थोड़ासा नीमकी पत्तियोका रस मिला लेता हू। फिलहाल चपातिया और तरकारिया छोड़ दी है, जरूरत हुअी तो ये दोनो चीजे फिर लेने लगूगा। मूर्च्छाके बाद अब पहली बार रक्तचापमे कमी दिखाअी देती है। पहलेसे मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी है।

शेष महादेवके द्वारा।

सस्नेह,

२८-४-'२७ बापू

२९ ता० को सुबह

* * *

मुझे खयाल होता है कि मै तुम्हारे अेक पत्रमें पूछे गये अेक सवालका जवाब देना भूल गया हूं। तुम्हारे व्रतका अर्थ बेशक यह है कि तुम्हारा आखिरी भोजन शामके सात बजे या सूर्यास्तसे पहले समाप्त हो जाना चाहिये, फिर व्रत चाहे जो भी हो। अिसलिअे तुमने

ठीक अर्थ लगाया है। व्रतोके बारेमे नियम यह है कि जब शका हो, तब अपने विरुद्ध अर्थ लगाओ यानी अधिक प्रतिबन्धके पक्षमें लगाओ।*

बापू

श्रीमती स्लेड + को मेरी चिन्ता करनेके लिअे मेरी तरफसे धन्यवाद देना।

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
भगवद्भक्ति आश्रम,
रामपुरा, रेवाडी,
(बी. बी. अेण्ड सी. आअी. रेलवे)

३१

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

मैंने तुम्हे हिन्दीमे अेक पोस्टकार्ड लिखा था, सिर्फ यह बतानेके लिअे कि मुझे तुम्हारा हर समय खयाल रहता है और यह जाननेके लिअे कि तुम मेरी हिन्दी पढ और समझ सकती हो या नही। घबराना मत। तुम्हे हमेशा हिन्दीमे लिखनेका मेरा अिरादा नही है। लेकिन मेरी हिन्दी तुम समझ सको, तो मै कभी-कभी तुम्हे अपने अतिरिक्त पत्र हिन्दीमे जरूर लिखना चाहता हू — यानी अगर तुम्हे यह विचार पसन्द हो तो ही, अन्यथा नही।

अब तुम्हारे अशान्तिप्रद तारके बारेमे। पता नही मैंने अपने पत्रोमे अैसा क्या लिख दिया, जिससे तुम्हे यह तार देना पडा। तुम्हे कल्पना भी नही हो सकती कि मैंने कितनी शक्ति फिरसे प्राप्त कर ली

---

* अिन तमाम वर्षोमे यह दूसरा दीपस्तभ रहा है। अिससे जहा शका होती है वहा न केवल अुपवासोमे बल्कि सब बातोमे पथ-प्रदर्शन मिलता है।

+ मेरी माता।

है। मैंने अिस सप्ताह 'न० जी०'* के लिअे चार लेख लिखे है। 'य० अि०' के लिअे पिछले सप्ताहमे तीन लिखे थे। असलमें मैं अिन पत्रोके लिअे अब लगभग सदाकी भाति ही काम कर रहा हू। और प्रेमपत्र लिखनेका भी काफी काम कर लेता हू।

मगर यह सब कलकी डॉक्टरी परीक्षाके परिणामकी तुलनामे कुछ भी नही है। खूनका दबाव १८८ से घटकर १५५ रह गया और मेरी अुम्रके लिअे १५५ से १६० साधारण है। पिछले तीन दिनसे तीस-तीस मिनिट करके रोज दो बारमे अेक मीलसे ज्यादा घूम लेता हू। यह अम्बोलीसे अधिक है। अिसलिअे अब मेरी तदुरुस्तीके बारेमे चिन्ताकी कोअी बात नही है। अब नन्दी छोडनेका कोअी प्रश्न नही हो सकता। जब तक पहलेवाली ताकत — अगर आ सके तो — न आ जाय तब तक या जब तक नन्दीका मौसम, जो जुलाअीके करीब पूरा होता है, पूरा न हो जाय तब तक नन्दी छोडनेका विचार करना बेवकूफी होगी।

तुम्हारे तारसे मैं देखता हूं कि शान्ति प्राप्त हो जानेके तुम्हारे पहलेके पत्रके बावजूद घडीकी सुअी फिर पीछे सरक गअी है और तुम्हें फिर अशान्ति हो रही है। अिससे मुझे आश्चर्य नही होता। अगर हमारे शान्तिके क्षण स्थायी हो जाय, तो फिर और कुछ करनेको नही रह जाता। दुर्भाग्य या सौभाग्यसे हमे बहुतसे अुतार-चढाव पार करने पड़ते है, तब कही सच्ची शान्ति प्राप्त होती है।

अिसलिअे मैंने तुम्हे स्वतंत्रता दे दी है कि जैसा चाहो करो। बेशक यह बेहतर होगा कि तुम शान्त रहकर वही ठहरो। अिसमें भी सन्देह नही कि अगर शान्ति न रहे तो तुम जरूर चली आओ। अितना ही है कि फसला कुछ भी करो, परन्तु अुसमे मेरे स्वास्थ्यका प्रश्न न आने देना। कारण तुम अगर यहां आ गअी, तो जैसा तुमने मुझे कागड़ीमे

---

* 'यंग अिडिया' का गुजराती साथी 'नवजीवन'।

देखा था और जैसा मै अब हूं अुसमे तुम्हे बहुत कम फर्क दिखाअी देगा। अिसलिअे अपने दिलमे गहरा गोता लगाकर देख सको, तो देखो कि तुम कहा हो और वैसा ही करो। अिसकी परवाह न करो कि मै तुमसे क्या करवाना चाहता हू। या दूसरी तरह कहा जाय तो मैं चाहता हू कि तुम्हारी अन्तरात्मा जैसा कहे वैसा करो।

सस्नेह,

नन्दी पर्वत, २-५-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
रेवाड़ी

३२

चि० मीरा,

तुम्हारा मधुर तार और पत्र मिला। पतन तो हुआ।* लेकिन मै घबराया नही। मुझे मालूम है कि तुम अुठनेके लिअे ही गिरी हो। जब अुन्नत घड़िया हमारे जीवनका स्थायी अग बन जाती है, तब हमे और किसी चीजकी जरूरत नही रहती। अिसलिअे हवामानके गिरनेकी खबर सुननेके लिअे मै तैयार था। जब आना हो चली आना। अितना ही है कि पूरी तरह सोच-विचार किये बिना कुछ न करना।

अब मै लगभग अपनी मामूली चालसे घूमता हू। चार दिन पहले मै जितना चक्कर लगाता था, वह दुगुना कर दिया गया है। बराबर प्रगति हो रही है। अब हर बार यह आशा न रखना कि मैं तुम्हे यह कहू कि मेरा काम ठीक चल रहा है। जब कोअी रुकावट होगी, तो तुम्हे मालूम हो जायगा।

---

* बुद्धिसे समझ लेने पर भी हृदयने मेरा साथ नही दिया था।

अीश्वरके लिअे अखबारो पर कभी निर्भर न रहा करो। खबरें सीधी ही प्राप्त करो।

सस्नेह,

तुम्हारा

७-५-'२७ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
रेवाड़ी

३३

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

आशा है अिन दिनोमे मेरे लिखे हुअे तमाम पत्र तुम्हे मिलते रहे होगे। औसतन् शायद अेक पत्र हर दूसरे रोज लिखता रहा हू।

तुम्हारा दूसरा पत्र मिल गया। मै देखता हू कि तुम्हें अपना संतुलन फिरसे प्राप्त करनेमे कुछ समय लगेगा। जब तक तुममे लचक बनी हुअी है, तब तक मुझे अुतार-चढावकी चिन्ता नही है। मेरी अपनी राय यह है — तुम्हारे लिअे मेरे पास, जहा भी मै रहू, आना अुसी वक्त बिलकुल कुदरती होगा, जब तुम अपना निश्चित कार्य पूरा कर लो। मामूली आदमी अपना ही बनाया हुआ कार्यक्रम छोड़ नही सकता। लेकिन अगर तुम्हारी भावना बहुत तीव्र हो जाय और तुम्हारे स्नायुओ पर दबाव रहने लगे, तो तुम्हारी पढाअी पूरी न होने पर भी तुम्हें आ जाना चाहिये।

स्वाभाविक तौर पर मुझे यह चिन्ता है कि तुम अपनी पढाअी पूरी कर लो। मै यह मानना नही चाहता कि यह काम तुम्हारे बूतेका नही है। लेकिन तुम्हारी पढ़ाअी या और किसी तैयारीसे तुम्हारा स्वास्थ्य मेरे लिअे अधिक कीमती है।

मेरी तदुरुस्तीके खयालसे तुम्हे मेरे पास आनेका विचार हरगिज नही करना चाहिये। क्योकि वह अच्छी है और तुम्हारे आ जानेसे भी मेरी अिससे बेहतर देखभाल नही हो सकती।

अगर मुझे तुम्हारी सेवाकी जरूरत हुअी, तो मै तुम्हे तार दे दूगा। लेकिन अैसा होगा नही, क्योकि हर किसीसे सेवा ले लेनेकी मेरी आदत पड गअी है और मै अपनी जरूरतके अनुसार नअी नर्से तैयार कर लेता हूं। यहा मेरी आवश्यकतासे अधिक सेवा करनेवाले है। अिसलिअे यदि किसी निजी सेवा करनेकी आशासे आओगी, तो तुम्हें बेकारी महसूस होगी और तुम जम्भाअिया लेती रहोगी।

अब प्रत्यक्ष सम्पर्ककी जरूरतकी बात ले। मेरा अपना मत यह है कि वह शुरूकी अवस्थाओमे जरूरी होता है। और बादमें वह सम्पर्क मिलजुल कर काम करनेसे होता है। तुम मेरे कामको अपना ही समझकर करनेसे रोज मेरे सम्पर्कमे आती हो। और वह सम्पर्क मेरे अिस भौतिक शरीरके नाशके बाद भी रह सकता है, रहना चाहिये और रहेगा। मै जीवित रहूं या मर जाअू, तो भी तुम मेरे सम्पर्कमे हो और रहोगी। और मै तुम्हे अैसी ही बनाना चाहता हू। तुम मेरे पास मेरी खातिर नही, बल्कि मेरे अुन आदर्शोकी खातिर आअी हो, जिन पर मै यथाशक्ति अमल करता हू। तुम **अब तो** जान गअी हो कि मैने जो आदर्श रखे है, अुन पर मै कहा तक चलता हू। अब यह तुम्हारा काम है कि अुन आदर्शोका हिसाब लगा लो और जितनी पूर्णतासे अुनका पालन करनेकी शक्ति अीश्वरने मुझे दी है अुससे अधिक पूर्णताके साथ अुनका पालन करो। जो अैसा करेगा वही मेरा प्रथम वारिस और प्रतिनिधि होगा। मै चाहता हू कि तुम प्रथम रहो। अिसका और नही तो यही कारण है कि तुमने दूरसे मेरा अध्ययन करके मुझे अपनाया है। और काम करते हुअे भगवान हमे निकट ला दे तो अच्छा ही है, लेकिन समान अुद्देश्यकी पूर्तिमे वह हमे अलग-अलग रखे तो भी अच्छा है।

मगर यह तो आदर्श सलाह हुअी। अिसे सुन और समझ लेनेके बाद तुम्हे स्वतन्त्रता है कि जो चाहो सो करो। अगर तुम्हारा जी बसमे न रहे तो जरूर आ जाओ, और यह न समझना कि मै नाखुश हो जाअूगा। मै नाराज तब होअूगा जब तुम अपने प्रति हिंसा करोगी और बीमार पड़ोगी।

सस्नेह,

रविवार, ८-५-'२७

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
भगवद्भक्ति आश्रम,
रामपुरा, रेवाडी

३४

चि० मीरा,

मुझे दो पत्र और मिले। यह क्या बात है कि अलग-अलग तारीख लगे हुअे और अलग-अलग लिफाफोमें रखे हुअे पत्र अुसी दिन मिलते है?

मुझे आज और कुछ नही कहना है। मुझे खुशी है कि तुमने अपनी समता फिर पूरी तरह प्राप्त कर ली है।

*　　　*　　　*

वालुजकर और गगाबाअी क्यो आये है? अुन्हे मेरा आशीर्वाद कहना। तुम्हारी खातिर मुझे खुशी है कि वे वहा है।

सस्नेह,

सोमवार, ९-५-'२७

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबाअी,
भगवद्भक्ति आश्रम,
रेवाड़ी

चि० मीरा,

फिर तुम्हारे दो पत्र अेक ही दिन मिले। मालूम होता है तुममे स्थिरता आ गअी है। अिससे मुझे हर्ष है। लेकिन जब भी तुम अस्थिरता अनुभव करो, मुझे बता देनेमें सकोच न रखना। क्योकि अब तुम्हें अनुभवसे मालूम हो गया है कि मै धीरज रखूगा। मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता अिसकी है कि तुम जैसी नही हो वैसी दीखनेकी कोशिश न करो। तुम जैसी हो वैसी ही स्वीकार करना और तुम्हे जैसी बनना चाहिये वैसी बननेमें मदद देना मेरा धर्म है। यह तभी हो सकता है जब तुम्हे मेरी तरफसे डरनेका कोअी कारण न मिले। अिसीलिअे मैंने तुमसे अेक बार कहा था कि मै तुम्हारे लिअे केवल पिताका स्थान ही नही, बल्कि माका स्थान भी लेना चाहता हूं।

जब तक डी० सी० तुम्हारे पत्र पर ध्यान देता है, अुसका पिण्ड न छोडना। अुसकी तमाम शकाओ और प्रश्नोका नम्रतासे अुत्तर देना। अगर तुम्हे हमारे यहाके चडस और रामचन्द्र कोष* का फर्क मालूम हो तो अुसे बता देना; और यह भी बता देना कि चरखा केवल अेक अुद्योग ही नही, परन्तु राष्ट्रका मुख्य अुद्योग क्यो है।

मेरे वहा आनेके बारेमे अब भी कुछ गलतफहमी मालूम होती है। मै दो कारणोसे वहा आनेको अुत्सुक हूं। मैंने अुस स्थानके बारेमे बहुत कुछ सुना है, अिसलिअे अुसे देखना चाहता हूं और तुम्हारे साथ रहना चाहता हू। मगर नही जानता कब आ सकूगा। सभवत. अभी चार महीने और मै दक्षिणको नही छोड सकूगा। मगर घटनाओके बारेमें पहलेसे कुछ अन्दाज लगानेसे कोअी लाभ नही।

मै सकुशल हू।

सस्नेह,

१२-५-'२७

बापू

---

* यह अेक आविष्कार है जो रामचन्द्रन् नामक अेक भाअीने बैलोकी सहायतासे कुअेका पानी निकालनेके लिअे किया है।

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे खयालसे अब तुम्हे अस्पतालसे मुक्त रोगी घोषित किया जा सकता है। और अिसलिअे अब तुम्हे प्रेमपत्र भेजनेके मामलेमे मै जरा निश्चिन्त हो गया हूं।

मै बराबर प्रगति कर रहा हू। आज बगलोरके डॉक्टर आये थे और अुन्होने रक्तचाप सिर्फ १५० और साधारण हालत बिलकुल अच्छी पाअी। वे चाहते है कि मै अब अधिक खाअू। देखूगा अिस दिशामे क्या हो सकता है। मै रोटी और साग न लेनेको तो अिसलिअे विवश हुआ हू कि मैने अुन्हें बहुत भारी समझा। अब मुझे अेक और प्रयत्न करना पडेगा। लेकिन अिसमे कोअी शका नही कि मै पहलेसे अच्छा हो जाअूगा।

मै देखता हू कि तुम अपने काममे अुन्नति कर रही हो। वहा कितनी स्त्रियां और कितनी लडकिया है? पुरुष ओर लडके कितने है? जब सभव हो मुझे आश्रम और आश्रमवासियोंकी साधारण कल्पना कराना।

मालूम नही तुम्हे किसीने बताया है या नही कि कुछ समयसे साबरमतीमे हम लोगो पर चोरोंकी बहुत अधिक कृपा रहने लगी है। अेक बार तो अुनसे अुलझकर हमारे चौकीदारने बुरी तरह चोटें खाअी हैं। अिससे जाग्रत होकर मुझे हमारे कर्तव्यका भान हुआ। और मैने सोचा कि यह पहरा देनेका काम **हमारा** अुतना ही बडा कर्तव्य है जितना कि सम्मिलित भोजनालयका। अिसलिअे मैने सुझाया कि हमें स्वय ही अपने चौकीदार और चौकिदारिने बन जाना चाहिये और यह कोशिश करनी चाहिये कि चोरोको मारपीटकर आश्रमसे निकाल देनेके बजाय, अगर वे हमारे हाथोमे पड जाय तो, अुनसे यह गलत रास्ता छुड़वाये; और

अैसा हम अुनसे मार खानेकी जोखिम अुठा कर भी करें। यह सुझाव मान लिया गया है और आजकल तीससे अधिक स्वयसेवक यह काम कर रहे है, जिनमें पाच स्त्रिया भी है। यह अच्छा प्रारभ है।

सम्मिलित भोजनालय दिनोदिन सुधर रहा है। शकरन अेक आदर्श मुखिया और रसोअिया साबित हुआ है। भोजनालयमे २० से ज्यादा आदमी खाते है। तुम लौटोगी तब यह सब देखकर तुम्हे आनन्द होगा।

सस्नेह,

नन्दी पर्वत, १६-५-'२७

तुम्हारा

बापू

३७

चि० मीरा,

सप्ताह भरमे मैंने तुम्हे कोअी पत्र नही लिखा, यद्यपि मुझे तुम्हारे अनेक पत्र मिले है। और फिलहाल प्रति सप्ताह अेकसे ज्यादा पत्र लिखनेका विचार नही है। मै य० अि०, न० जी० और गीता* के कामके लिअे अपनी शक्ति बचा कर रखना चाहता हू। मै आजकल गीता पर पहलेसे कमसे कम पाच गुना अधिक परिश्रम कर रहा हू। सभव हुआ तो अनुवाद अगस्तके अन्तसे पहले खतम कर देना चाहता हू। और अिस आरामके अरसेमे य० अि० और न० जी० पर अधिक ध्यान देना चाहूगा। हा, पत्रोके कालम भरनेकी कोअी जिम्मेदारी नही समझूगा। लेकिन जरूरत हुअी या तुम्हे फिरसे वही दौरे होने लगे, तो अवश्य ही तुम्हे अिससे ज्यादा पत्र लिखूगा। लेकिन अब वे दौरे नही होगे।

मुझे खुशी है कि तुमने भग नही ली। वह लगभग शराबके बराबर ही बुरी है। कुछ भी हो, तुम यह याद रखना कि हकीमजीके दिये हुअे पानकी बात पर मैंने तुम्हे क्या लिखा था — किसी भी

* गुजराती अनुवाद।

वस्तुको अुसके गुण-दोष जाने बिना हरगिज न खाओ। जहा शका हो वहा परहेज करो और जरूरत हो तो मुझसे पूछ लो। . .

रोलाके तुम्हारे नामके पत्रका तुम्हारा अनुवाद मिलनेकी प्रतीक्षामे हू।

दोपहरके खानेमे रोटी या भाखरी ओर अेक शाक फिर लेने लगा हू। आज पाचवा दिन है। अभी तक कोअी बिगाड नही हुआ है। घुमाअी भी पहलेसे अच्छी हो रही है।

सस्नेह,

२३-५-'२७

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबाअी,
रेवाडी

३८

नन्दी पर्वत,
२८ मअी, १९२७

चि० मीरा,

तुम्हारे दोनों पत्र और तार भी मिल गया। जवाब देनेमे दो दिनकी देर न हो, अिसलिअे मै लिखवा रहा हू। जहा तक हो सके, मौनके समयके सिवाय खुद पत्र न लिखनेका नियम मै तोड़ना नही चाहता। तुम्हारे दोनो पत्र बढ़िया है। अब मै पहलेसे आश्रमको कही अधिक अच्छी तरह समझ पाया हू। लगभग अैसा ही लगा जैसे मै वहा खुद जाकर देख आया हू। तुम्हारा वर्णन अपने ढगका अनोखा है और अुसका अुपयोग वालुजकरके पत्रसे और बढ़ गया है।

तुमने अच्छा किया कि अलग-अलग दलोके गुण-दोषोकी तुलनामें न पड़ी, और मुझे पूरी आशा है कि तुम्हे पसन्द न आनेवाली तुलनाअें सुनकर भी तुम स्थिरचित्त रहोगी। जो तुलना करते है वे अीमानदारीसे

अैसा करते हैं। वे यह नही जानते कि तुलनाअे करना अनुचित है। और अीमानदारीसे रखे जानेवाले विचारोको प्रगट होते सुनकर अशात होनेमे क्या लाभ है?

*　　　　*　　　　*

अवश्य ही हमारा सूत्र यह रहा है कि हिन्दी पहले और दूसरी सब चीजे बादमे। . . . अैसी असख्य चीजे है जिन्हे तुम हर जगह करके लाभ अुठा सकती हो। और धार्मिक भावना होनेकी सच्ची कसौटी यह है कि मनुष्य अैसी बहुतसी चीजोमें से, जो सभी थोडी-बहुत 'ठीक' है, जो सबसे ज्यादा 'ठीक' हो अुसे चुन सके। भगवद्‌गीताके अेक श्लोकका यही अर्थ है, जिसमे कहा गया है: "पर-धर्म कितना ही बडा हो तो भी अुसका पालन करनेकी अपेक्षा स्वधर्मका पालन करते हुअे मर जाना ज्यादा अच्छा है, फिर वह कितना ही छोटा क्यो न हो। और अिसलिअे मुझे जरा भी सन्देह नही कि जिस अेक चीजके लिअे तुमने साबरमती आश्रम छोडा है, अुसकी जरा भी कुर्बानी या अुपेक्षा करनी पडे, तो अुन बहुतसी चीजोकी तरफ, जिन्हे तुम आसानीसे कर सकती हो, ध्यान न देनेका तुम्हे हक होगा। और अगर वहा या और किसी जगह तुम अिसलिअे अनचाही मेहमान बन जाओ कि तुम अुस अेक चीजका आग्रह रखती हो, तो यह तुम्हारे लिअे अुस स्थानको छोड़ देनेकी काफी चेतावनी है। और जब तुम्हे अिस तरहकी जोरदार पुकार महसूस हो, तब तुम और किसी भी प्रस्तावको हरगिज न सुनना। मगर अिस तरहकी तीव्र और जबरदस्त अिच्छा भीतरसे होनी चाहिये। मुझे तुम्हे हरगिज नही अुकसाना चाहिये। मैं अुकसाअूगा भी नही। तुम जितनी भी प्रगति कर सकोगी, चाहे वह कितनी ही धीमी क्यो न हो, अुससे मुझे पूरा सन्तोष होगा। तुम जिस ढगको अुत्तम समझो अुसीसे अपनी हिन्दी सीख लो। और अगर तुम्हे यह मालूम हो कि हिन्दीके साथ-साथ दूसरे अनेक काम करनेसे तुम्हारे चित्तको शान्त रखनेमे और अधिक सहायता मिलती है, तो अुन्हें

करने लग जाना। अिसलिअे हमेशा यह न सोचती रहो कि मुझे क्या पसन्द होगा, बल्कि जो तुम अपने खयालसे अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बिगाडे बिना आसानीसे कर सकती हो वही करो। और अपनी योजनाको पूरा करनेमे जब तुम्हे मेरी सहायता या सलाहकी जरूरत हो तो फौरन ले लेना। . .

सस्नेह,

तुम्हारा
बापू

३९

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्रोका और तारका जवाब मेने खासा लम्बा भेजा था। तुम्हारे तारके सिलसिलेमे तुम्हारा पत्र मुझे नही मिला है। अिस तरह लिखवानेसे मै थके बिना काफी काम निपटा लेता हू, क्योकि यह काम मै लेटे-लेटे करा सकता हू।

सभव है कुछ दिनोमे ही हम लोग बगलोर चले जाय, क्योकि यहा हवा बहुत चलने लगी है ओर जलवायु मेरे लिअे अधिक ठंडा मालूम होता है। मुझे अभी भी तेजीसे नही घूमना चाहिये। अिसलिअे तुम अब बगलोरके पतेसे पत्र लिख सकती हो। बहुत करके पता कुमार पार्कका होगा। बगलोर शहर लिखना, क्योकि छावनी और शहर दो बिलकुल अलग विभाग है, और 'शहर' न लिखा जाय तो चिट्ठिया पहले छावनी जाती है। सारे भारतवर्षमे जहा छावनी भी हो यही हाल है।

जहा तक स्वास्थ्यका सम्बन्ध है, कोअी नया समाचार देनेको नही है। मेरा खयाल है मैने तुम्हे लिख दिया था कि मै भाखरी और अेक साग फिर लेने लगा हू।

सस्नेह,

नन्दी, २९-५-'२७ बापू

[अब मैंने रेवाड़ीका भगवद्‌भक्ति आश्रम छोड दिया था और म बापूसे बंगलोरमें मिलकर आनेके बाद और अपना हिन्दी अध्ययन जारी रखनेके लिअे विनोबाके वर्धा आश्रममे जानेसे पहले कुछ समय साबरमती आश्रममे बिता रही थी।]

४-७-'२७

चि० मीरा,

मुझे आज तुम्हारा पत्र मिलनेकी आशा थी। लेकिन अभी तक नही मिला। अेक और डाकसे मिलनेकी जरासी सभावना है। मुझे आशा है कि तुम्हारी गाडीमे बहुत भीड़ नही रही होगी और तुम्हे गुटकलमे कोअी दिक्कत नही हुअी होगी।

तुमने कितना अच्छा कहा था! तुम जुदा हो रही थी, मगर और भी निकट आनेके लिअे। यह बिलकुल सच है। तुम्हारा अुस समय आना और जाना दोनों ही ठीक थे।

मेरे बिदाअीके शब्द याद रखना। दो महीनेमे हिन्दी समाप्त कर लेनेके प्रयत्नमे तुम अपनेको या स्वास्थ्यको ही समाप्त मत कर लेना। आशा तो यही रखनी चाहिये कि तुम हिन्दी पूरी कर लोगी। लेकिन पूरी न हो तो कुछ परवाह नही। तुम्हारा काम केवल कोशिश करना है। और वर्धामे जब तक परिस्थिति तुम्हे मजबूर न करे, तब तक सिर्फ हिन्दी बोलनेकी प्रतिज्ञा न लेना। अुसके बिना कुछ बिगडेगा नही। तुम्हे यह सोचनेकी जरूरत नही कि मुझे क्या पसन्द होगा। अिस तरहके मामलोमे मेरी राय या अिच्छाका विचार करनेका कोअी प्रश्न नही होना चाहिये। आखिर तो सवाल हिन्दी **सीखनेका** अुत्तम तरीका चुननेका है। जो तरीका तुम्हे अनुकूल पड़े वही तुम्हारे लिअे अुत्तम है, और कोअी नही।

सस्नेह,

४-७-'२७

बापू

अुद्घाटनकी विधि कल किसी कठिनाअीके बिना पूरी हो गअी। मैंने परिश्रमको अच्छी तरह सह लिया। डॉक्टर बादमें आये और अुन्हें यह देखकर सन्तोष हुआ कि नाडीमें कोअी फर्क नहीं पड़ा। आशा है तुम अपना कब्ज यहीं छोड़ गअी।

बापू

अिसे डाकमें डालनेके लिअे देनेके तुरन्त बाद तुम्हारा सुन्दर पत्र* मिला, जिसकी आशा मुझे थी। वह पूरी तरह समझमें आता है। बहुत थोडी भूलें हैं। जब जब चाहो लिखती रहो।

श्रीमती मीराबहन,
सत्याग्रह आश्रम, साबरमती

बा०

४१

चि० मीरा,

तारके बादका तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें मेरा हस्बमामूल साप्ताहिक पत्र जरूर मिल गया होगा। मैंने वर्धा भी अेक पोस्टकार्ड भेजा है। मगर वह तो तुम्हें यही कहनेके लिअे कि मैंने मुख्य पत्र साबरमती भेजा है। मुझे खुशी है कि तुमने वहीं ठहरने और डॉक्टरकी रिपोर्ट लेनेका निश्चय किया। अगर हमें कुदरतके सारे कानून मालूम हो जायं या मालूम हो जानेके बाद हममें अुनका मन, वचन और कर्मसे पालन करनेकी शक्ति आ जाय, तो हम स्वयं अीश्वर बन जायं और दूसरा कुछ भी करनेकी आवश्यकता न रह जाय। स्थिति यह है कि हम अुन कानूनोंको शायद ही जानते हैं और अुन पर चलनेकी ताकत भी हममें थोडी ही होती है। अिसीलिअे रोग और अुसके सारे परिणाम होते हैं। अतः हमारे लिअे अितना काफी है कि हम समझ लें कि हर रोग कुदरतके किसी अज्ञात कानूनके भंगका ही परिणाम है और कानूनोंको जाननेकी कोशिश करें और अुन पर चलनेकी शक्तिके लिअे

* हिन्दीमें।

प्रार्थना करे। अिसलिअे रोगके समय हृदयसे प्रार्थना करना काम भी है और दवा भी है।

कल और दिन भर परिश्रम करना पडा और अुसे बहुत ही अच्छी तरह, पिछले रविवारसे भी ज्यादा अच्छी तरह, मैंने बरदाश्त किया। तुम्हारे हिन्दी पत्रोको पानेकी मुझे बहुत जल्दी नही है।

सस्नेह,

९-७-’२७

बापू

४२

कुमार पार्क,
बगलोर, १७ जुलाअी ’२७

चि० मीरा,

*   *   *

मेरी जानकारीके लिअे जरूर लिखो कि कताअी, प्रार्थना और भोजनालय वगैरामे कुछ भी सुधार करनेके बारेमे तुम्हारे क्या सुझाव है। तब अगर तुमने जल्दबाजीमे राय बनाअी होगी तो अुसे मै दुरुस्त कर सकूगा और अगर तुम्हारी राय मुझे मजूर हुअी तो मै सुधार सुझा सकता हू।

हमे अुस वक्त कड़ीसे कड़ी आलोचना करनेका अधिकार मिल जाता है, जब हमारे पडोसियोको हमारे प्रेमका और हमारी ठीक रायोका विश्वास हो जाता है और जब हमे यह यकीन हो जाता है कि हमारी राय न मानी गअी या अुस पर अमल नही किया गया तो हमें जरा भी अशाति नही होगी। दूसरे शब्दोमे आलोचना करनेके अधिकारके लिअे हममे स्पष्ट समझ और पूरी सहिष्णुताकी प्रेम-शक्ति होनी चाहिये।

*   *   *

सस्नेह,

बापू

दुबारा आधा ही पढा

चि० मीरा,

मैंने तुम्हे कल अेक पत्र भेजा है। अिसलिअे आज बहुत नही लिखना चाहता।

*　　　*　　　*

तुम वहा अपने स्वास्थ्यके साथ प्रयोग न करना और जरूरी खुराक लेना। जितने फलोकी तुम्हे आश्रमकी आदतके अनुसार जरूरत हो मगवा लेना और अगर कोअी तुम्हारे लिअे फल भेजे तो जितनोकी तुम्हे जरूरत हो अुतने रखकर बाकी भोजनालयमे यानी विनोबाके पास भेज देना। यह न सोचना कि तुम्हे अुनकी जरूरत है अिसीलिअे औरोको भी है। दूसरोको जवारकी जरूरत है, लेकिन तुम्हे तो नही है। यह कदाचित दुर्भाग्यकी बात है कि फल सयोगवश व्यजन भी है और खुराक भी। अितना काफी है कि हम व्यजनोको भी दवाके तौर पर अुचित मात्रामे ही लेना सीख ले और फिर अपना जी कडा करके खा ले, भले दूसरोको वे न भी मिले। अिस स्थितिके चारो तरफ खतरे अितने स्पष्ट है कि बतानेकी आवश्यकता नही है। लोगोने जरूरतके बहाने अपने लिअे पापाचरण तककी गुजाअिश बना ली है। लेकिन हम अपने पर सतत नजर रखे, तो हमे अिन दुष्परिणामोका अन्देशा रखनेकी जरूरत नही है। खतरे तो जिधर जाय अुधर ही मौजूद है। मगर कुछ भी हो जाय, हमे तो अपने मूल स्वभाव पर ही चलना चाहिये।

यह पत्र जितना मै चाहता था अुससे बडा हो गया।

सस्नेह,

मै बिलकुल अच्छा हो गया हूं।

बापू

१८-७-'२७

श्रीमती मीराबहन,
सत्याग्रह आश्रम

४४

७-९-'२७

चि० मीरा,

मै तुम्हारे तारोकी अुत्सुकताके साथ बाट देखता हू और वे आते भी है, मगर अुनमे तुम्हारे स्वस्थ* हो जानेकी खबर नही होती। लेकिन हमे शिकायत न होनी चाहिये। हमे बीमारीसे भी फायदा अुठाना चाहिये और अुसे खुशी-खुशी सहन करना चाहिये। तुम्हारा अन्तिम तार अभी आया है। अुससे अितना ही पता चलता है कि शायद बुखार काबूमे आ गया है। हमे आशा रखनी चाहिये कि अैसा ही होगा। मुझे कअी बार तुम्हे तार देनेका खयाल आता है, परन्तु मेरा दिल कहता है कि मुझे हक नही है। मेरी प्रार्थना और शुभ कामना सदा तुम्हारे साथ है।

गीताका यही अुपदेश है कि 'सुख-दु ख दोनोमे समान रहे।'

सस्नेह,

बापू

४५

[मलेरियाके सख्त हमलेके बाद मै तदुरुस्ती सुधारनेके लिअे पूना जा रही थी।]

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

मुझसे कल तुम्हे बधाअीका तार दिये बिना नही रहा गया। ये दिन जरा चिन्ताके ही रहे। यद्यपि मैंने तुम्हे बहुत नही लिखा और

---

* मुझे बडे जोरका मलेरिया हो गया था। मेरा तापमान १०५ से भी अूपर पहुंच गया था।

तार नही दिया, फिर भी मेरी आत्मा तुम्हारे आसपास मडराती और तुम्हारा पहरा देती रही है। मै जानता था कि मे तुम्हे रोज अेक तार भेजू तो तुम्हे अच्छा लगेगा। लेकिन मैने विचार किया कि मुझे नही भेजना चाहिये। अिन कसौटी करनेवाले दिनोमे पत्र लिखना लगभग असभव रहा।

लोग मुझे अितने ही समय छोडते है कि मेरे सामने जो कार्यक्रम है अुसे निपटा सकू। विविध श्रोता-मडलियोंके आगे मै अपनी आत्मा अुडेल रहा हू। अिसके बाद और किसी कामके लिअे मेरे पास बहुत कम शक्ति बच रहती है। अिसके अलावा मिस मेयोकी पुस्तकको पढनेका और अुस पर भारी लेख लिखनेका काम भी आ पडा है।

परन्तु यह जानकर मुझे सबसे बडी राहत मिली कि जमनालालजी तुम्हारे साथ है। अीश्वर-कृपासे अब सकट खतम हो गया दीखता है। यह अच्छी कसौटी रही।

और रामनाम! अगर वह तुम्हारे लिअे जीवित सत्य बन गया है, तो बेशक बडी बात हुअी। लेकिन जब तुममे और शक्ति आ जाय, तब मुझे अपने अनुभव बताना। मुझे अुन सबकी जरूरत है और मै यह भी जानना चाहूगा कि तुम्हे सन्निपात या मूर्च्छा क्यो होती थी। बेशक, अकसर हमे कारण मालूम नही होता। अब तुम धीरे-धीरे चलो। जितने आरामकी जरूरत हो अुतना लो। अपने पर निगाह रखना और भोजनमे कोअी परिवर्तन आवश्यक हो तो कर लेना। तिल्ली बढ जानेका कारण खोजना। जब तक अिच्छा हो पूना ठहरना। जिस सुविधाकी तुम्हे जरूरत हो माग लेना। जो बात किसी औरसे न कह सको वह मुझे बता देना। मेरा काम ठीक चल रहा है। राजगोपालाचारी मेरी अुतनी ही रक्षा कर रहे है, जितनी अेक मनुष्यके लिअे करना शक्य है। मुझे बचानेकी कोशिशमे वे अपनेको खपा रहे है। और मै जानता हू कि अितना परिश्रम अुनके लिअे बहुत ज्यादा है, लेकिन मै दखल नही देता। अगर अीश्वरको अिस दौरेका पूरा होना मजूर है, तो अुसके

लिअे जिन्हे हानिसे बचाना जरूरी है अुन्हे वह बचायेगा। अिसलिअे तुम्हे मेरी कोअी चिन्ता नही करनी चाहिये।

अगर तुम चाहो तो यह पत्र माताजीके पास भेज देना।

सस्नेह,

१२-९-'२७ बापू

श्री मीराबहन,
ठि० सेठ जमनालाल बजाज,
कालबादेवी रोड, बम्बअी

४६

[जब मै पूनामे थी अुन दिनों लगातार समाचार आ रहे थे कि बापूको दक्षिण भारतके दौरेमे बड़ा परिश्रम हो रहा है। यह मुझसे सहन नही हुआ, अिसलिअे मै अुनसे मिलने गअी थी।]

चि० मीरा,

यहा पहुचने पर मै तुम्हे प्रेम-सन्देश भेजे बिना न रह सका। तुम्हे जाने देनेके बाद मुझे बडा दु:ख हुआ। मैने तुम्हारे साथ बहुत कठोरता की, लेकिन मै दूसरा व्यवहार नही कर सकता था। मुझे आपरेशन करना था और अुसके लिअे मै कठोर बन गया। आशा है अब सब काम शातिसे चलेगा और तुम्हारी सारी कमजोरी चली गअी होगी।

तुम्हारे जो दो पत्र नही मिले थे, वे अभी आ गये है। लेकिन अुनकी बात फिर करूगा। डाकका समय हो चुका है, फिर भी यह पत्र लिख रहा हू। तुम मेरी चिन्ता किसी भी कारण न करना।

सस्नेह,

२८-९-'२७ बापू

श्रीमती मीराबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

४७

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

यह सिर्फ यही बतानेको लिख रहा हूं कि तुम्हारा खयाल मेरे दिलसे हट नही सकता। सख्त आपरेशनके बाद हर डॉक्टर ठंडक पैदा करनेवाला मरहम लगाता है। यह मेरा मरहम है। . .

सस्नेह

२९-९-'२७ बापू

श्रीमती मीराबहन,
सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

४८

चि० मीरा,

तुम्हारा पोस्टकार्ड और रेलमे लिखा हुआ पत्र मिला। तुम्हारे पत्रकी अुत्सुकता जितनी अिस बार रही अुतनी कभी नही रही थी, क्योंकि कठोर आपरेशनके बाद मैंने तुम्हे बहुत ही जल्दी भेज दिया था। मगर तुम्हे भेज देना अुस आपरेशनका ही अेक भाग था। बेचारा अण्णा भी मुझे कहता है कि तुम अुदास थी। वह चाहता है कि मैं तुम्हे तसल्ली दूं। जमनालालजी कहते है कि मुझे तुम्हे अपने साथ रखना चाहिये था। खैर, तुम्हे अुन सबके डर झूठे साबित कर देना है और बिलकुल स्वस्थ और प्रसन्न रहना है। तुम कल रातको मुझे सपनेमे दिखी और जिन मित्रोंके पास तुम भेजी गअी हो अुन्होने मुझे खबर दी कि तुम्हे बेहोशी हो गअी, मगर कोअी खतरा नही। अुन्होने कहा, "आपको चिन्ता करनेकी जरूरत नही। जो कुछ अिन्सान कर सकता है, वह सब हम कर रहे है।" और अिस सपनेसे जब मैं जागा तो मेरा मन अशांत था और मैंने प्रार्थना की कि भगवान तुम्हे हर तरहकी हानिसे बचाये। और तुम्हारे पत्रसे मुझे बडा आनन्द मिला।

तुम्हारा कोओी अपमान नही हुआ। तुम पर कोओी पहरा नही है। छगनलाल और कृष्णदास तुम्हारी सेवा करनेवाले और तुम्हें आराम देने-वाले है। मै जानता हू कि तुम्हारी घबराहट दूर हो जायगी। हिन्दीका भूत अब तुम्हे नही सतायेगा। यद्यपि अब तक तुमने बहुत कुछ हिन्दी सीख ली है, परन्तु तुम्हे हिन्दीका अेक शब्द भी बोलना न आये तो मुझे परवाह नही। अिस प्रकार अिस मामलेमे भी निराशाका कोओी कारण नही। तुम्हारी शारीरिक शक्तिमे बेशक मेरा विश्वास हिल गया है, परन्तु प्रेम विचलित नही हुआ। चूंकि तुम सच्चा प्रयत्न करनेवाली हो, अिसलिअे तगडापन आ ही जायगा।

सुरेन्द्रजीका सुझाव है कि तुम्हे अलग खाना बनाना चाहिये। जरूरत हो तो अैसा कर लेना। किसी भी बातके बारेमे तबीयत पर बहुत जोर न पडने देना।

सस्नेह,

२ अक्तूबर '२७ — बापू

श्रीमती मीराबहन,
साबरमती

४९

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

यह तूतीकोरिनसे लिख रहा हू। मैंने तुम्हारी तरफसे कुछ न कुछ समाचारोकी आशा रखी थी। मुझे आश्रमसे खबर मिली है कि तुम वहां सकुशल पहुच गअी हो। परमात्मा तुम्हारा कल्याण करे।

सस्नेह,

६-१०-'२७ — बापू

श्रीमती मीराबहन,
साबरमती

५०

चि० मीरा,

मैं तुम्हे हर रोज पत्र नही लिखूगा, क्योकि मेरा खयाल है कि तुम्हे किसी ठडक पहुचानेवाले मरहमकी जरूरत नही है। अिस वक्त तक घाव जरूर अच्छा हो गया होगा। और आश्रमसे आये हुअे तुम्हारे पत्रसे मुझे तसल्ली हो गअी है।

हा, तुम गोशालाका या दूसरा जो भी काम पसन्द हो कर सकती हो। तुम्हारी खुराकका क्या हाल है? . . .

सस्नेह,

८-१०-'२७

बापू

५१

चि० मीरा,

* * *

अिसमे सन्देह नही कि मुझे आरामकी आवश्यकता है। मगर मुझे आराम देगा कौन? क्या हमें जो कुछ चाहिये वह सब मिल जाता है? मिल जाय तो हमारी श्रद्धाका अुपयोग ही क्या रह जाता है? अितना जान लेना काफी है कि अीश्वरकी मर्जीके बिना पत्ता भी नही हिलता। अगर हमारा अुस पर भरोसा हो तो वह संभाल लेगा। लेकिन हमारा भरोसा अुन लोगोका-सा न होना चाहिये, जो रुपयेसे मिलनेवाली तमाम सार-सभाल रखनेके बाद अुस पर भरोसा करते है। यह सच है कि हमे कुछ तो अपनी सभाल रखनी ही चाहिये। परन्तु श्रद्धालु लोग अपने स्वभावके प्रति हिसा नही करते और असाधारण सावधानी रखकर अैसे अुपाय नही करते, जिनके करनेका आम लोगोंके पास साधन नहीं होता। अिसलिअे सूत्र यह है कि जितनी कम चिन्ता की जाय अुतना अच्छा और अुचित प्रयत्नसे छोटेसे छोटे आदमीको भी जितना नसीब हो सके अुससे

अधिक अुपाय न किया जाय। अिस पैमानेसे नापा जाय तो जो चिन्ता मैं खुद अपनी रखता हू और जो दूसरे लोग मेरी रखते है, वह बहुत ही अधिक है और अीश्वरमें श्रद्धा होनेके मेरे दावेसे असगत है। अिस प्रकार तुम देखोगी कि अिस दिशामे मै जो कुछ करता हूं, वह सब मुझे बहुत अधिक दिखाअी देता है; और मुझे कअी बार महसूस होता है कि अगर कुछ समयके लिअे मेरी अुपेक्षा की जा सके तो बड़ा लाभ हो। अभी तो मुझे रूअीके पहलोमें लपेटकर रखा जाता है।

बहुत सभव है कि अेक बार फिर बीचमे ताता टूटे और मुझे अेक-दो दिनके लिअे दिल्ली जाना पडे। शायद दिन भरमे मुझे मालूम हो जायेगा।

सस्नेह,

२४-१०-'२७ बापू

श्रीमती मीराबहन,
साबरमती

५२

चि० मीरा,

यह पत्र चलती हुअी और हिलती-डुलती रेलगाड़ीमे लिखा जा रहा है। और आज लिखनेका काम कतअी करनेको जी नही चाहता। अिस समय शामके चार बजे है, तब मैने सोमवारके पत्र लिखने शुरू किये है। मै आज काफी सोया हू और अुतना ही दो मित्रोकी बात सुननेका काम किया है।

मै चाहता हू कि गोशाला और पिजरापोलमे तुमने जो कुछ देखा वह ओर . . .* के नाम मुझे बताओ। लेकिन शायद जवाब देनेके

---

* पढा नहीं गया।

लिअे तुम्हे मुश्किलसे अितना समय मिलेगा कि वह मेरे पास दिल्लीमें पहुच जाय। क्योकि अगर वाअिसरॉयके साथ मेरा काम दो तारीखको पहली ही मुलाकातमे खतम हो गया, तो मुझे आशा है कि मैं अुसी दिन साबरमतीके लिअे रवाना हो जाअूगा। देखे क्या होता है ? मुलाकातसे बहुत आशा रखनेका कोअी कारण नही, लेकिन अिस बिना पर मैं प्रस्तावको नामजूर नही करूगा।

सस्नेह,

सोमवार बापू

८३

[मैं खादीकार्यके सिलसिलेमे बारडोली आश्रम गअी थी। यह बात प्रसिद्ध बारडोली सत्याग्रहके दिनोकी है।]

चि० मीरा,

मुझे खुशी है कि बुखारने तुम्हारा पिड छोड दिया। तुमको सशक्त बनना ही चाहिये और मुझे अपना वजन लिख भेजना चाहिये। तुम वहाँ वल्लभभाअीके अधिकारमे हो। अगर अुन्हे तुम्हारी जरूरत हो तो तुम वहा रहकर जिस हद तक वे चाहे लडाअीमे भाग ले सकती हो। अगर तुम्हे वहा शुरूमे तय किये हुअे कार्यक्रमसे ज्यादा ठहरना हो, तो तुम जब चाहो अपना सामान ले जानेके लिअे आ सकती हो।

सस्नेह,

११-५-'२८ बापू

श्रीमती मीराबहन,
बारडोली

५४

[मै साबरमती लौट आअी थी और बापू बारडोलीमे थे।]

लिखाया हुआ

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली, १०-८-'२८

चि० मीरा,

*   *   *

कल हमारे यहा स्वराज्य आश्रममे अेक बडी बहादुर नौजवान लड़कीकी मौत हो गअी। वह कल बिलकुल अच्छी थी और अपने पिता*से मिलनेके लिअे आअी थी, जो साबरमती जेलमे है और छूटने ही वाले है। अुसके पेटमे बड़े जोरका दर्द अुठा। डॉक्टर निदान नही कर सके। वह तड़के ही शातिसे मर गअी। अिसलिअे शरीरसे तो मै अपना आजका कार्यक्रम पूरा कर रहा हू, लेकिन भीतर ही भीतर यमराजसे बाते कर रहा हू और अपने लिअे मृत्युका अर्थ और भी स्पष्ट कर रहा हू।

शेष मिलने पर।

सस्नेह,

बापू

५५

[बापू साबरमतीमे थे और मै खादीकार्यके लिअे दौरे पर गअी हुअी थी।]

दुबारा नही पढा

२७-१०-'२८

चि० मीरा,

कुसुमको मलेरिया हो जानेके कारण मै रातके २॥ बजेसे लिख रहा हूं। अिस समय कअी लोग बीमार पड़े है। छगनलाल जोशीका सारा

---

* अेक किसान सत्याग्रही।

परिवार बीमार है; नारणदास फिर बीमार हो गये, बा पर बुरी बीती; प्यारेलाल पडा है; छोटेलालको फिर खतरा हे, बलिष्ठ सुरेन्द्र भी नही बचा। और लोगोका अुल्लेख करनेकी जरूरत नही है। स्टेन्डेनाथको मुझे भूलना नही चाहिये। अुस पर बुरा हमला हुआ। अिसलिअे तुम कल्पना कर सकती हो कि मुझ पर क्या बीत रही है। महादेव बारडोलीमे है।

खैर, अिस सूचीके बावजूद अीश्वर मुझसे काम लेना चाहता है और मुझे काफी स्वस्थ रख रहा है। लेकिन कौन जाने . . ?

हालचाल ठीक है। बछडा-काण्ड* पर मुझे बहुत ध्यान देना पडा है। अुससे बहुत लाभ हुआ क्योकि अुससे लोगोको विचार करनेकी प्रेरणा मिली।

---

* साबरमती आश्रमकी गोशालामे अेक छोटा बछड़ा बीमार हो गया था। अुसका रोग असाध्य था और वह कअी दिन तक लाचार और अत्यन्त पीड़ित होकर अेक करवटसे पडा रहा। बापूने निश्चय किया कि अुसे कष्टपूर्ण जीवनसे मुक्त कर देना अुसके प्रति अत्यन्त दयाका काम होगा। परन्तु वे नही चाहते थे कि आश्रमवासियोकी मजूरी हासिल किये बिना यह कदम अुठाये। दो तीन दिन तक खूब चर्चा होती रही। बा और काशीबहनको बछड़ेके प्राण लेनेका विचार सहन नही हुआ। अिस पर बापूने कहा, "तो तुम दोनो गोशालामे जाकर बछडेकी अैसी ही सेवा करो, जैसी अपने बच्चेकी करती हो।" वे गअी और बछड़ेके पास घटो बैठी रही। अुसका कष्ट और अुसे निवारण करनेमे अपनी असमर्थता देखकर अुन्हे यकीन हो गया कि बापूका कहना सही है। अुन्होने और अुनके जैसे विचारवाले दूसरे सभीने अपना विरोध वापस ले लिया। अिसके बाद सेठ अम्बालाल साराभाअीसे कहा गया कि जो कमसे कम कष्टप्रद मृत्यु हो सकती है अुसका अिन्तजाम कर दें। तदनुसार वे अपने परिवारके डॉक्टरको लेकर खुद आये। बापू, गोशालाके

(यहा मुझे प्रार्थनाके लिअे रुक जाना पडा)

४–१५ बजे शामको

हरजीवन कोटकने श्रीनगरसे साथवाला तार भेजा है। अगर तुम नेपाल नही जाना चाहो, तो मै चाहूगा कि तुम वापस चली आओ और काश्मीर देख आओ। तुम्हे अुसे वहाके पहाड़ों और वहाके खादी-कार्य दोनोकी खातिर देख लेना चाहिये।

आज पडित मोतीलालजी यहा है।

मुझे आशा है कि नवम्बरके अतिम सप्ताहमे म वर्धा जाअूगा।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
खादी कार्यालय,
मुजफ्फरपुर,
बिहार

व्यवस्थापक और मै अुनके साथ गोशालामे वहा गये जहा बछडा पड़ा हुआ था। बापू झुक गये और थोडी देर तक अुसकी अगली टांग धीरेसे पकडे रहे। अिसके बाद डॉक्टरने अेक सुअी लगाअी और खेल खतम हुआ। बापूने अेक कपडा लेकर चुपकेसे बछडेके मुह पर डाल दिया और हम सब चुपचाप चले आये। अिसके बाद हफ्तो बापू पर अिस विषयके कडे पत्रोकी वर्षा होती रही।

५६

२९-१०-'२८

चि० मीरा,

जब तक तरकारी काटनेके लिअे तैयार की जा रही है, तब तक थोडासा वक्त है।*

*　　　*　　　*

छोटेलालजीकी रोटी बहुत प्रगति कर रही है ओर भोजन बनानेका काम बहुत सादा हो गया है।+ लेकिन यह तो जब लौटोगी तब तुम खुद देख लोगी।

तुम देवदास और जामिया मिलियाके साथ सम्पर्क रखना।

सस्नेह,

बापू

मुझे तुम्हे यह बताना न भूलना चाहिये कि मैंने अपनी रूअी खुद धुनना शुरू कर दिया है। मैंने मध्यम पीजनसे आरभ किया है।

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
खादी भडार,
मुजफ्फरपुर, बिहार

---

* सम्मिलित भोजनालयके लिअे तरकारिया काटने-सवारनेके काममे बापू भाग लिया करते थे।

\+ छोटेलालजी अीटोका चूल्हा बनानेमें सफल हुअे थे और अुन्होने खमीरका अुपयोग किये बिना डबल रोटी तैयार करनेकी कला सीख ली थी।

लिखाया हुआ

सत्याग्रह आश्रम
साबरमती, ३१-१०-'२८

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्र अेक ही साथ मिले, अेक आश्रमके बारेमें और दूसरा तुम्हारी मेरठ-यात्राका वर्णन करनेवाला। मैने तुम्हे मुजफ्फरपुरके पते पर दो पत्र भेजे है, अेक रविवारको और दूसरा सोमवारको।

पता नही आश्रमके बारेमे समाचार अखबारोमे कैसे प्रकाशित हुअे। कुछ भी हो, अधिकाश बिलकुल गलत है। अगर कोअी जबरदस्त परिवर्तन होता तो मै तुम्हे जरूर लिखता। अखबारमे मैने नाम बदलने तककी चर्चा नही की, क्योकि महादेव और दूसरे लोगोकी बडी अिच्छा थी कि मै नामके परिवर्तनकी भी अखबारोमे घोषणा न करू। पर अब तो मुझे अैसा करना ही पडेगा।* परन्तु अुद्योग-मन्दिरकी कमेटी ब्रह्मचर्यके नियमको ढीला नही करेगी। अिस प्रकार ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी बुनियादी नियम और दूसरे सारे बुनियादी नियम ज्योके त्यो रहेगे। अिसी तरह सम्मिलित भोजनालयमे कमसे कम अेक साल तक तो कोअी फेरबदल नही होगा। अेक सालके बाद ही अुस वक्त तकके अनुभवके आधार पर सम्मिलित भोजनालयके सवाल पर पुनर्विचार हो सकेगा। भोजनालय मजेसे चल रहा है।

मेरठ गाधी आश्रमवाले २१ नवम्बरको होनेवाले अेक मेलेके अवसर पर धुनाअी और दूसरी क्रियाओका प्रदर्शन करना चाहते है। अगर

---

* अिस समय साबरमती आश्रममे बडी खलबली मची हुअी थी। बापूने आश्रमवासियोंके सामने यह बात रखी थी कि आश्रमका जीवन अितना आदर्श नही है कि अुसका नाम सत्याग्रह आश्रम रखना अुचित हो।

तुम नेपाल नही जा रही हो, तो शायद यह अच्छा होगा कि तुम लौट आओ और अिन लोगोंको भरसक मदद देकर बादमे काश्मीर चली जाओ। और सब बातोको छोड़कर भी मै चाहूगा कि तुम काश्मीर हो आओ। और वह भी तभी तक जब तक वहा कुछ खादीकाम हो रहा है। अिस प्रदर्शनकी व्यवस्थाके काममे तुम देवदास, रसिक और नवीनसे सहायता ले सकती हो। अुस सूरतमे यहासे किसीको भेजनेकी आवश्यकता नही पड़ेगी; और चूकि अिस वक्त हमारे पास आदमियोकी भयकर कमी है, आश्रमसे किसीको भेजनेमे बड़ी दिक्कत रहेगी। फिर भी मेरठवालोको मदद देनेकी मेरी बड़ी अिच्छा है। मेरे विचार तो तुम्हे मालूम हो ही गये, अब जैसी तुम्हे सुविधा हो वैसा ही करना। मैंने मजुमदारको कोअी आशा नही दिलाअी है। अुन्होंने पत्र लिखा है।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबहन,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

५८

चि० मीरा,

तुम्हारा रुक्का मिला। कल क्रिसमस है। अगर क्रिसमस तुम्हारे लिअे कोअी विशेष स्मृति और विशेष अर्थ रखता हो, तो भगवान करे तुम्हे अुस दिन जीवनकी वास्तविकताओका शुद्ध और अधिक ज्ञान हो। तुम्हारा हृदय मजबूत है और अिसलिअे तुम्हारा सब तरहसे भला ही होगा। मुझे मालूम है कि तुम्हें वर्धामें सुख और शांति मिली। और तुम्हे अिस स्थितिमे देखकर मुझे खुशी हुअी।

ज्यो ही मै स्टेशन पहुंचा, मोतीलालजीने मेरे लिअे काम तैयार कर रखा था। अिसलिअे मै रातको ही कात सका।

सस्नेह,

२४-१२-'२८

बापू

५९

प्रिय मीरा,

तुम अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना और अुसके लिअे जिस चीजकी आवश्यकता हो अुससे कभी वंचित न रहना। भोजनालयमे वहाके शोरसे तुम्हारे दिमाग पर जोर पडता हो, तो वहा भी कामके लिअे जानेकी जरूरत नही। हर हालतमे तुम्हे अपने बूतेसे बाहर कभी नही जाना चाहिये। यह भी सत्यका भग है। और मेरे तुमसे दूर होनेके बारेमे तो तुम्हे चिन्ता करनी ही नही है।

फिलहाल अिधरके कोअी समाचार नही है। वल्लभभाअी अच्छे है। अभी तक अुन्हे पूना जानेका बुलावा नही आया।

सस्नेह,

बापू

६०

[बापू साबरमतीमें थे और मै शांतिनिकेतन हो आनेके बाद बिहार लौट आअी थी।]

दुबारा नही पढा

१४-१-'२९
(मौनवार)

चि० मीरा,

तुम्हारे सारे प्रेमपत्र मिल गये। मुझे सचमुच खुशी हुअी कि तुम्हे कविवर और अुनकी महान कृति पसन्द आयी। तुम्हारे पत्रोसे मुझे शाति मिली। मैने अुन्हे महादेवके पास भेज दिया है, क्योकि मै जानता हू कि वे अुन्हें अच्छे लगेगे। मै चाहूगा कि तुम वहा फिर जाओ और अगर तुम्हे पसन्द हो तो घर लौटनेसे पहले जाओ।

जब तक तुम मुझसे लम्बे पत्रोकी आशा नही रखती, तब तक मुझे सन्तोष है। लेकिन मुझे बचानेके लिअे तुम्हे अपने पत्रोको छोटा करनेकी आवश्यकता नही। मुझे तुम्हारे पत्र अच्छे लगते है। अुनसे मुझे अुपयोगी समाचार मिलते है और वे तुम्हारी तबीयतके अुतार-चढ़ावका नकशा भी है। . .

यहांके हालचाल ठीक है। भोजनालयमे पहलेसे अच्छी व्यवस्था है। रोटी लगभग सम्पूर्ण हो गअी है। छोटेलाल रोटी बनानेके बारेमें अधिक सही जानकारी लेकर लौटे है। सुरेन्द्र भी कुछ दिनोमे वापस आ जायेगे।

मै यहासे अिसी महीनेकी ३१ तारीखको सिन्धके लिअे रवाना हो रहा हू और १५ फरवरीको लौटूगा। तुम्हे सिन्धके खजूर समय पर मिल जायगे।

मैने खोया हुआ वजन फिर पा लिया है और आधा पौड बढा लिया है। कल ९५॥ पौड था। फलोका स्थान टमाटरने ले लिया है। नीबू भी नही लेता।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
खादी भडार,
मुजफ्फरपुर, बिहार

६१

पोस्टकार्ड

२-२-'२९

चि० मीरा,

असाधारण सर्दीके कारण सिन्धके लोगोने मुझे दो दिन रोक दिया। * अिसलिअे कार्यक्रम दो दिन बादका समझना चाहिये। रसिक × दिल्लीमे खतरनाक बीमारीमे पडा है। बा और कान्ति वहां गये हैं। वह पाच दिनसे बेहोश है। जैसी ओश्वरकी अिच्छा होगी वही होगा। मैं अिस महीनेकी १५ तारीखको मन्दिर लौट आअूगा। हम सब तीसरे दर्जेमे सफर कर रहे है। पाखाना खराब है और तो सब बातें ठीक हैं। प्रो० कृपालानी मेरे साथ है।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
खादी भण्डार,
÷छटवन
पोस्ट छोटाअीपट्टी (बिहार)

---

* साबरमतीमे।

× बापूका पोता, हरिलालका छोटा लडका।

÷ मैने अुत्तर बिहारके अेक छोटे गावमे रामदेवबाबूकी और राजेन्द्रबाबूके मुजफ्फरपुर आश्रमके कुछ नौजवानोकी मददसे खादीका काम शुरू किया था।

चि० मीरा,

मैं बिलकुल सयोगसे ही ३ बजे रातसे जाग रहा हू। अब सुबहके पाच बजनेको है और मैंने अुद्योग-मदिरकी डाक लगभग पूरी कर दी है।

मैंने फिर तीसरे दर्जेमे सफर किया। कोअी दुर्घटना नही हुअी और न कोअी अुल्लेखनीय असुविधा हुअी। और मेरी मानसिक शाति तो बढी ही। दूसरे दर्जेमे सफर करते हुअे मेरे जीको कभी शाति नही रहती।

रसिकके बारेमे तुम्हें देनेको कोअी और समाचार नही है। कराचीमे आया हुआ कोअी तार मुझे नही मिला और अिस पत्रके डाकमे पडनेसे पहले आज मुझे कोअी खबर नही मिलेगी। डाक सुबह ९ बजे वन्द होती है।

क्या मैंने तुम्हे लिख दिया था कि अु० म० मे पिछले सप्ताह अितनी ठड पडी कि बाल्टियो और छोटे हौजका पानी जम गया? थर्मामीटरमे टेम्परेचर २८ डिग्री हो गया था, जो साबरमतीमे पहले कभी नही सुना गया था। हमारे यहा तरकारियो और कपास वगैराकी बहुत बढ़िया फसल थी। बेचारे सोमाभाअीने अिस काममे अपनी जान लडा दी थी। खैर, अिस भयकर पालेमे लगभग सब कुछ बरबाद हो गया, यहा तक कि पपीतेका सुन्दर बगीचा भी नष्ट हो गया। सारा खेत रोता-सा नजर आता है। अुसकी ओर देखा नही जाता। फिर भी अिस दुर्घटनाकी तहमे प्रकृतिका कोअी शुभ हेतु है, जिसे हम देख नही सकते परन्तु पूर्ण श्रद्धासे मानते है। हा, श्रद्धा अदृष्ट और अदृश्य वस्तुओका प्रमाण है।

मुझे आशा है कि अब तुम्हारी तदुरुस्ती पूरी तरह सुधर गअी होगी। यह मान लो— नही मानोगी? — कि तुम्हारे शरीरकी

कुछ मर्यादाअे है और जो चीजें अुसे कायम रखनेके लिअे जरूरी हो वे आग्रहपूर्वक ले लिया करो। यों ही समझ लो कि यह तुम्हारी धरोहर है और अेक सरक्षकके नाते अुसके सुखका खयाल रखना तुम्हारा धर्म है। अवश्य ही तुम शरीरका लाड-प्यार न करो। अुसे अपने विकासके लिअे अीश्वरकी तरफसे मिली हुअी थाती समझो और तब अुसकी प्रारभिक आवश्यकताअे पूरी करना अुचित ही नही, बल्कि तुम्हारा फर्ज होगा।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

४-२-'२९　　　　बापू

हा, तुमने युरोप-यात्राके बारेमे मेरा लेख पढा होगा। क्या तुम सहमत नही हो? रोलाको लिखना।

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

६३

जैकोबाबाद

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारे तमाम पत्र मिल गये। और वे सब अच्छे है। तुम्हारे २ तारीखवाले अतिम पत्रसे मुझे तुम्हारे अब तकके कामका पूरा ब्यौरा मिलता है। बहुत सुन्दर व्यवस्था है। अितना ही है कि परिश्रमसे अपना स्वास्थ्य न बिगाड लेना। अति न करना। अगर पौने चार बजे प्रात कालसे शुरू होनेवाले अिस सारे कठोर कार्यक्रमको बरदाश्त कर सको, तो अिससे अच्छा और क्या हो सकता है? लेकिन अिससे तुम पर बहुत जोर पडता दीखे, तो अुसे बदलकर आसान बना लेनेमें हिच-किचाहट न रखना।

*　　　　*　　　　*

मालूम होता है रसिक नही बचेगा। अभी तक वह बेहोश और लाचार पडा है। यह भयकर बात है। अिस दु:खात नाटकका नायक देवदास है। वह अुसकी सेवा कर रहा है और जो लोग दिल्ली गये हैं अुन्हे सिर्फ देखते रहने दे रहा है। अब रसिककी मौसी वहा चली गअी है। अुसे हरिलालके बच्चो पर बडा प्यार है।

मेरी तबीयत अच्छी है और मै परिश्रमको बिना कठिनाअीके बरदाश्त कर रहा हूं। अलबत्ता अभी तक भोजनमे दूध नही ले रहा हू। प्रवासमे नारंगी ले रहा हू, बाकी सब खुराक तो साबरमती जैसी ही है। ठड सहन हो रही है।

सस्नेह,

७-२-'२९ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

६४

चि० मीरा,

अभी तार मिला है कि रसिक कल चल बसा। हमारे लिअे अीश्वरकी मर्जी ही कानून है। मेरा दैनिक कार्य निर्विघ्न चल रहा है। मुझे जो भी दु:ख हो रहा है वह स्वार्थवश है। मैंने बडी आशाअें बांधी थी कि रसिक अिस शरीर द्वारा बहुत कुछ करेगा। लेकिन भाग्यमे अैसा नही लिखा था। रसिककी आत्माको सद्गति प्राप्त हुअी है, क्योकि पिछले दो मासमे अुसकी बडी कायापलट हो गअी थी।

मै बुधवारको हैदराबाद पहुच रहा हू। वहासे शुक्रवारको सुबह चल दूगा और दिन भर मीरपुरखास रहकर शामको साबरमतीके लिअे नही, दिल्लीके लिअे गाड़ी पकड़ूंगा। वहा अेक दो दिनके लिअे मोतीलालजीको मेरी जरूरत है। मगलकी रातको मदिर पहुचनेकी आशा रखता हू। लेकिन मुझे पता नही है। तुम कुछ भेजना चाहो, तो रविवार और मंगलवारके बीच पं० मोतीलाल नेहरू, क्लाअिव

स्ट्रीट, नअी दिल्लीके पते पर भेजना अच्छा होगा। अभी तुम्हे अिससे ज्यादा लिखनेका समय नहीं है। तुम्हारे पत्र अच्छे और जानकारी देनेवाले रहे है। मै जान-बूझकर रसिकके बारेमे तुम्हे तार नही दे रहा हूं। हम काम करते रहे।

सस्नेह,

लरखाना, ९-२-'२९

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

६५

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारे सब पत्र मिल गये। यह पत्र नअी दिल्लीमें लिख रहा हू। मंदिर जानेके लिअे कल रवाना हो जाअूगा। मदिरसे बहुत करके पहली मार्चको रगूनके लिअे चल दूगा और २७ मार्चके करीब साबरमती लौट आअूगा। बर्माका पता है: ८, पैगोडा रोड, रगून, मार्फत डॉ० महेता।

तुम्हारे सब पत्रोसे बहुत तसल्ली मिल रही है। स्पष्ट है कि तुम्हारा काम फलफूल रहा है। जब तुम्हारा यह खयाल हो जाय कि तुम अुसके बारेमे किसी हद तक निश्चयपूर्वक कह सकती हो, तब मैं य० अिं० मे अुसका हाल छापना चाहूगा। लेकिन मुझे बहुत जल्दी नही है। मुझे नरम तकुओके बारेमे अपनी प्रगतिके समाचार देना। मैने अिस बातकी चर्चा केशुसे की तो अुसे यकीन नही हुआ। अगर सब आश्रमवासी आश्रमके समय पर काम करनेकी आदत सीख ले तो अच्छी बात है।

मेरे भोजनके प्रयोगमे अब तक जो सफलता मिली है, अुस पर डॉ० असारीको बड़ा आश्चर्य है। मेरा वजन न घटे तो अुसके बारेमें

अुन्हे परवाह नही है। देवदासने शोकको अद्भुत रूपसे सहन किया है। बा और काति अभी यही है। बहुत करके वे कल मेरे साथ जायगे।

सस्नेह,

१८-२-'२९ बापू

पुनश्च :

हां, तुम्हे 'आत्मकथा'की दुरुस्तियां जल्दी करनी है। अेड्रूज आजकल न्यूयार्कमे है और ग्रेग भी वही है।

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
आश्रम, छटवन,
पोस्ट छोटाअीपट्टी (बिहार)

६६

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारे जानकारी भरे पत्र रोज मिल जाते है। तुम्हारे काममें अेक बडे भविष्यकी सभावना भरी है। यह अच्छी बात है कि तुम कमसे कम विरोधके मार्ग पर चल रही हो। योगेन्द्रबाबूकी पत्नीके प्रवेशसे तुम्हारा छोटासा आश्रम काम करनेके लिअे अच्छा नमूना बन जाता है।

*　　*　　*

सस्नेह,

सोमवार, २५-२-'२९ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
आश्रम, छटवन,
पोस्ट छोटाअीपट्टी (बिहार)

६७

दुबारा नही पढ़ा

कलकत्ता,
४ मार्च, '२९

चि० मीरा,

अिस पत्रसे मालूम हो जायगा कि मै कहांसे लिख रहा हू।

कल मै तुमसे काफी दूर चला जाअूगा। मेरी तीसरे दर्जेकी मुसाफिरी अेक तरहकी धोखेबाजी होती जा रही है। दिल्लीसे मुझे और मेरी मंडलीको अेक पूरा डिब्बा दे दिया गया था। अिस तरह दूसरे दर्जेसे भी ज्यादा आजादी थी और सारी मंडलीके साथ होनेका मुझे सन्तोष था। वियोगसे मुझे दु ख होता था। साथ रहनेसे मुझे आनन्द होता है।

मेरा खयाल है कि मदिर प्रत्यक्ष प्रगति कर रहा है। सम्मिलित भोजनालय अधिकाधिक लोकप्रिय बनता जा रहा है और मै नहीं समझता कि साल खतम होने पर कोअी भी अुसे भंग करना चाहेगा। लेकिन देखे क्या होता है।

मेरे बारेमे चिन्ता न करना। रगूनसे सप्ताहमे तीन बार डाक आती है। अिसलिअे मुझे आशा है कि मै तुम्हे सप्ताहमे तीन बार लिखूगा। . . .

अबसे कुछ समय बाद तुम मुझे अपने कामके बारेमें संक्षिप्त विवरण भेजना न भूलना। मै चाहता हू कि नरम तकुओके बारेमें तुम अपनी निश्चित राय दो और धुनकीमे जो सुधार हुअे है अुनका वर्णन लिखो। साथ ही तुलना करके संक्षेपमे यह भी बताओ कि अच्छी धुनी हुअी पूनियों और पहले जैसी पूनियोके परिणामोमे क्या फर्क है?

मुझे अुम्मीद है कि तुम अिन प्रत्यक्ष अनभवोका रोजनामचा रख रही हो। मै चाहता हू कि तुम यह प्रयोग वैज्ञानिक ढगसे करो।

मै यह भी चाहता हू कि तुम समय-समय पर मुझे सुबह और शामकी प्रार्थनाके बारेमे और जो भजन तुम वहा गाती हो अुनके बारेमे लिखती रहो। और खुराकके बारेमे तुम अपने अतिम फेरबदल भी मुझ बताती रहो। मै तुम्हारे प्रयोगको अधिकाधिक महत्त्व दे रहा हू। क्योकि मै जानता हू कि तुम अिन बातोके बारेमे निश्चित रहती हो और आसानीसे अपने आपको धोखा नही दोगी।

मै कच्चे भोजन पर अधिकाधिक लौट रहा हू। प्रवासके दिनोमे मैने कच्ची भाजी कटवाकर रोटीके साथ ली। अिस प्रकार पकी हुअी चीज सिर्फ रोटी ही थी। फल अब फालतू पदार्थ बनते जा रहे है। कच्ची हरी भाजी सस्ती पडती है और पूरी तरह फलोका स्थान ले रही है। गोभी, करमकल्ले या और किसी भी भाजीसे काम चल जाता है। जब तरकारीको कच्ची हालतमे खाया जाता है, तो बहुत थोडी मात्रासे जरूरत पूरी हो जाती है।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
आश्रम, छटवन,
पोस्ट छोटाअीपट्टी (बिहार)

६८

१६-३-'२९

चि० मीरा,

अिसके बाद बर्मासे तुम्हे भेजनेको सिर्फ अेक ही डाक और रहेगी। बादकी डाक मुझे वापस कलकत्ते ले जायगी। थोडासा कुनैन रोज ले लेती हो यह अच्छा है। जब तुम्हारी तबीयत अच्छी हो, तब भी कभी-कभी पूरा या आधा अुपवास रखनेकी आदत डाल लो। कभी-कभी घी और कभी-कभी दूध छोड दिया करो। कभी-कभी रसवाले फल लिया करो। अिस प्रकार संभव है तुम्हे बुखार न आये।

मुझे अुम्मीद है कि मैं यहा अेक लाख रुपयेके लगभग अिकट्ठा कर लूंगा। व्यापारकी मन्दीके अिस जमानेमे अितना रुपया दे देना बर्माके लिअे कम नही होगा।

मुझे कअी बार अैसा लगा कि तुम अिस तरहके दौरेमे साथ होती तो अच्छा होता। लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि जो काम तुम कर रही हो, वह अिससे कही अधिक महत्वपूर्ण है। अगर भगवान तुम्हे तंदुरुस्ती देगा, तो तुम खुद अिन स्थानोका सफर करोगी। और अुस समय तुम अधिक अच्छी तैयारीके बाद करोगी। जो तालीम और अनुभव तुम प्राप्त कर रही हो, वे मेरे चल बसनेके बाद अमूल्य साबित होगे।

नरम तकुओके बारेमें तुमने जो लिखा है, अुसे मैंने लक्ष्मीदासके पास भेज दिया है। तुम्हारी दलील मुझे जरूर जचती है। मगर मेरे मनमें हमेशा प्रश्न अुठता है — 'तो फिर मगनलालने, जिसने नरम तकुओंसे काम शुरू किया था, सख्त तकुओंका आश्रय क्यो लिया ? जो बात तुम्हारे ध्यानमे आअी, वह लक्ष्मीदासके ध्यानमे क्यों नही आअी ?' लेकिन बेशक, तुम्हारे आविष्कारको न माननेके लिअे यह कोअी कारण नही है। यह कारण तो अत्यन्त सावधानीकी आवश्यकताके लिअे है।

मैंने आश्रममे स्त्रियोको रखनेके बारेमे भी तुम्हारे कथनको ध्यानमें रख लिया है। अिन सब मामलोमे तुम जितना धीरे-धीरे चलना चाहो, चलो। और किसी चीजके बारेमे तुम्हे खुद विश्वास न हो या शका भी हो, तो अुसकी हरगिज कोशिश न करना। 'धीरे परन्तु निश्चयके साथ चलनेसे ही जीत होती है।'

अेड्रूज अभी तक अमेरिकामे है। ग्रेगने मुझे लिखा है कि अुनका हाल अच्छा है। . . . अे० मैकमिलन कपनीके लिअे 'आत्मकथा' का सक्षिप्त सस्करण तैयार करेंगे।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
आश्रम, छटवन,
पोस्ट छोटाअीपट्टी (बिहार)

६९

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

आज मौनका दिन है और मै अुस किलेकी छायाके नीचे लिख रहा हू, जहा भारतके अेक सबसे बडे सपूत, तिलक,को जिन्दा गाडकर रखा गया था। लालाजी * को भी बरसो × तक माडले दुर्गमे बन्द रखा गया था। यद्यपि मै यह पत्र मौनके दिन लिख रहा हूं, फिर भी मै डाकको नहीं पकड सका। मुझे डाकके समय बहुत नीद आ रही थी। लेकिन शनि-वारको रवाना होनेवाली डाकसे मैंने तुम्हें अेक पत्र भेजा है। यह पत्र अुसी डाकसे रवाना होगा, जो मुझे कलकत्ते ले जायगी।

---

* लाला लाजपतराय।

× बापूको नीद आ रही थी, जिससे अुन्होंने महीनोके बजाय बरसों लिख दिया।

रंगूनमें आजके दिन भारतीय डाक मिलती है। अगर तुम्हारी कोअी डाक हुअी तो मुझे रगूनमे बुधवारको जब मै वहा पहुचूगा मिल जानी चाहिये।

यह दिलचस्प दौरा खतम होने आ रहा है। डॉक्टर महेतासे बिछुडनेका मुझे दु.ख होगा। मै देख रहा हू कि यहा रहूं तो अुन्हें आराम दे सकता हू। लेकिन यह अेक निजी विशेषाधिकार है, जो मुझे न भोगना चाहिये।

यद्यपि कुछ फेरबदल करनेकी जरूरत पडी है, फिर भी अिस दौरेमें मेरी तबीयत अच्छी रही। ठडके शक्तिवर्धक मौसमकी तरह आजकल हाजमा साथ नही देता। यहाका जलवायु कुदरती तौर पर नमीवाला है।

तुमको अब मेरा शेष कार्यक्रम मालूम हो गया है। मै २६ तारीखको तुम्हे तार भेजनेका खयाल रखूगा। मै अेक्सप्रेससे, जो दो बजे दिनको हावडासे चलती है, रवाना होनेकी खूब कोशिश करूगा।

सफरमे आज पहली बार मैने काफी धुनाअी की। रोज करना मुझे बहुत अच्छा लगेगा। . . .

अभी अिससे अधिक नही, क्योकि मुझे अेक सभामें जाना है।

सस्नेह,

माडले, १८-३-'२९

तुम्हारा
बापू

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

७०

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

हम कलकत्तेके नजदीक पहुच रहे हैं। यह पत्र मैं २३ तारीखको शामके खानेके बाद लिख रहा हू। मुझे डेकका असली अनुभव अिसी बार हुआ। पिछली दफा अुन्होने मुझे अलग कर दिया था और यह आग्रह रखा था कि मैं दूसरे दर्जेका स्नानघर काममे लू। यह अनुभव मैं य० अि० मे बयान करनेवाला हू।

दूधरहित भोजनसे अब भी मेरा काम चल रहा है।

*　　　*　　　*

बर्मामे डेढ लाखसे अूपर चन्दा हो गया।

मुझे आशा है कल तुम्हारे बहुतसे पत्र मिलेंगे। कल राजेन्द्रबाबूसे मिलनेकी भी अुम्मीद है।

सुरेन्द्रका चर्मालय प्रगति कर रहा है। अुन्हे बराबर अनुभव प्राप्त हो रहा है। . . .

*　　　*　　　*

सस्नेह,

२३-३-'२९　　　बापू

अरोंडा जहाज पर

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

७१

मोरवी, १ अप्रैल, १९२९

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

मुझे खुशी है कि तुम अिमारतको बढा रही हो। अगर तुम्हारे साथ ज्यादा लोग रहने लगे, तो तुम्हे अधिक स्थानका बन्दोबस्त करना ही पडेगा।

जब हाजमेमे जरासी भी गडबड़ हो तो हमेशा भोजन छोड़ दो। कमजोरीकी हरगिज परवाह न करो। जब तुम भोजन कर सकोगी, तो फिर शक्ति आ जायगी। परन्तु जब शरीर पचा नही सकता, तब तो भोजनसे ही कमजोरी हो जायगी।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
छटवन आश्रम,
पोस्ट छोटाअीपट्टी, बिहार

७२

लिखाया हुआ

साबरमती, ३-४-'२९

चि० मीरा,

तुम्हारे और पत्र मिले। मुझे खुशी है कि तमाम मरीज तुम्हारे पास सहायताके लिअे आ रहे हैं। तुम्हे मालूम है कि क्या करना चाहिये। यह पत्र मैं तुम्हे दवाओके बारमे सही रास्ते लगा देनेके लिअे लिख रहा हू। हिन्दुस्तानके गावोके लिअे अण्डीका तेल और

अीसपगोल्का चूर्ण भी महगी चीजे है। अिग्लैड या जर्मनीमे बने हुअे अीसपगोल्के चूर्णके बजाय अैसी देशी औषधिया है, जिन्हे तुम्हे अिस्तेमाल करना चाहिये। तुम्हे अीसपगोल ही काममे लेना चाहिये। वह बिलकुल कारगर है और हरअेक गावमे मिल सकता है। वह अेक डठलके रूपमे मिलता है और डठलसे चिकनी वस्तु मिलती है। अुसे तोला भर लेकर सिर्फ थोडेसे गरम दूधमे मिलाकर रातको सोते वक्त या अुससे भी बेहतर तडके ही चार बजे दे दिया जाय, तो बीमारको साफ दस्त हो जाता है। यह सस्ता तरीका है। वह पानीमे भी दिया जा सकता है। सनायकी पत्तिया भी होती है, जो अीसपगोलसे भी सस्ती होती है और हर जगह मिलती है। सनायकी पत्तिया पीसकर या काढेके रूपमे दे सकती हो। तुम वैद्य-हकीमोको भी पकड सकती हो, जो थोडे बहुत अीमानदार और भले हो और अुनकी मददसे ये बहुत सादा दवाअे प्राप्त कर सकती हो। मुझे अन्देशा है कि अेक चीज अैसी है जो तुम्हे रखनी पडेगी, और वह है मलेरियाके रोगियोके लिअे कुनैन। लेकिन यह सब बात तो यो ही कह दी है। मै तुम पर अनावश्यक बोझ नही डालना चाहता। और शायद तुम यह न चाहोगी कि अिन दवाओके अध्ययनके लिअे, चाहे वह अध्ययन कितना ही अूपरी हो, समय देनेमे तुम्हारा ध्यान बटे। अिसलिअे तुम अपनी ही बुद्धिसे काम लो और जो तुम्हे शक्य मालूम हो वही करो।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबहन,
बिहार

७३

हैदराबाद (दक्षिण)
७-४-१९२९

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मुझे बम्बअीमे मिला। बेजवाडा भेजा हुआ तुम्हारा पत्र पता बदलकर मेरे पास यहा हैदराबाद भेज दिया गया है। यहासे मै आज शामको रवाना हो रहा हू।

तुम्हारा आखिरी पत्र अशातिप्रद है। तुम्हे समय-समय पर बुखार आ ही जाता है। अिसकी चिन्ता तो न करो, मगर अुपेक्षा भी न करो। अगर वहा तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नही रह सकता, तो तुम्हे जलवायु बदल ही लेना चाहिये। कुछ दिन कुनैन लेना अच्छा हो सकता है। तुम्हे नीबू पटना या कलकत्ता जहासे भी मिल सके मगा लेने चाहिये।

मुझे आशा है कि तुम मच्छरदानी नियमपूर्वक काममे ले रही हो। अगर तेल माफिक न आता हो तो न लो। अगर तुम्हे अच्छा घी न मिल सके, तो मै तुम्हारे लिअे भेज सकता हू। सार यह कि तुम्हे अपने शरीरको धरोहर समझकर अुसके लिअे जिस चीजकी भी जरूरत हो ले लेनी चाहिये।

हा, नरम तकुओके लिअे गुजरातमे मेरे सिवाय तुम्हारा कोअी समर्थक नही है। लेकिन अगर मेरी वकालतका आधार अज्ञान है, तो मैं वकालत अिसलिअे करता हू कि यह चीज मुझे पसन्द है।

मिलनेवाले मेरा अिन्तजार कर रहे है।

मै श्रीमती नायडूके घर पर हू।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबहन,
छटवन आश्रम,
पोस्ट छोटाअीपट्टी,
बिहार

७४

८-४-'२९

चि० मीरा,

कल मैने हैदराबाद (दक्षिण)मे तुम्हे अेक पत्र भेजा। म बेजवाडाके नजदीक जा रहा हू, मगर अभी भी अुससे दूर हू। हम अेक छोटे गावमें है, जहा तारघर नही है। डाक बेजवाडासे यहा लाअी गअी है। अत. मुझे तुम्हारे दो पत्र, दूसरा और तीसरा, मिले है। अगर तुम पूरी तरह अच्छी नही हो सकती, तो तुम्हे जलवायु परिवर्तन कर ही लेना चाहिये। तुम किसी समुद्रतट पर या पहाड पर जा सकती हो।

अगर तुम जून तक चला सको, तो शायद मेरे साथ अल्मोडा चल सकोगी। जहा तक मुझे मालूम है, जूनमे अलमोडेका कार्यक्रम रहेगा। तुम्हे दूसरे दर्जेमे सफर करना पड़ेगा। अिस कमजोर हालतमे तुम्हे तीसरे दर्जेमे बैठानेमे मुझे डर लगेगा।* मगर यह सब तो हवाअी किले बाधना हुआ। तुम्हारे लिअे तुरन्तकी चीज तो यह है कि अच्छी हो जाओ। फलो पर खुले हाथो खर्च करना सच्ची किफायत है। तुम ताजे फलोके बिना स्वास्थ्यकी रक्षा नही कर सकती। नीबू फलोका राजा है। डॉ० रजबअली मुझे कहते थे कि अेक नीबू छ नारगियोके बराबर है। मुझे अिस पर विश्वास है। मगर तुम्हें जो भी फल पसन्द हो लेना ही चाहिये। कच्ची हरी पत्तिया अच्छी हैं, मगर अुन्हे थोड़ा थोडा ही लेना चाहिये। अेक बारमे तोले भरसे अधिक नही और वह भी यदि पेटमें गड़बड़ न होती हो। शायद तेल भी तुम्हे अनुकूल नही पड़ता। तुम्हे मुख्य ध्यान कोअी सस्ती खुराक खोजनेका नही रखना है, बल्कि हर

---

* मुझे मलेरियाका बुरा दौरा हुआ था। गावमे बाकायदा संक्रामक रोग फैल गया था और शायद ही कोअी घर अैसा बचा होगा जिसमे अेक-दो आदमी बुखारमे न पड़े हो।

साल पहाड पर जानेकी आवश्यकता पडे बिना देहातमे रह सकनेका रखना है। अिसलिअे तुम्हारा ध्यान अपने प्रयोगको सफल बनाने पर केन्द्रित होना चाहिये, भले ही खर्च कुछ भी हो जाय। ज्यो ही मै किसी तारघरवाले स्थान पर पहुचूगा, त्यो ही तुम्हे तार दूगा। दोनो ही तरफ तारघर न होना कैसी बढिया बात है! मै जानता हू कि मुझे तार देनेकी जरूरत नही है। अगर मैं सचमुच गरीब होता, तो तार नही दे सकता। अगर मै अधीर न होअू और अीश्वर पर पूरा भरोसा रखू, तो मुझे तार नही देना चाहिये। मगर मै यत्रवत् आचरण नही करूगा। जब अुतनी श्रद्धा आ जायगी, तब मै तार देनेका विचार छोड दूगा। फिलहाल अितना काफी है कि यद्यपि तुम्हारी बीमारीके बारेमे पत्र आते है और यहा कोअी तारघर नही है, फिर भी मुझे क्षोभ नही होता।

मालूम होता है कि मेरी खुराक, तीसरे दर्जेके सफर और सतत कार्यसे मेरा स्वास्थ्य बढ रहा है। मुझे खुद आश्चर्य है कि अभी तक मेरा शरीर टूट क्यो नही गया। अलबत्ता, मैं बीच-बीचमे खूब आराम ले लेता हू और जब जीमे आये तभी नीद ले लेनेकी बढिया तरकीब मुझे बचा रही है। सच तो यह है कि जब तक अीश्वर मेरे शरीरकी रक्षा करना चाहता है, तब तक वह मुझे बचाता है। जिस क्षण अुसकी जरूरत पूरी हो जायगी, अुस क्षण मेरी कोअी सावधानी मुझे नही बचा सकेगी।

हा, नकशेमे बेजवाडा देख लेना। पाच-छ जिलोका दौरा करना है।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबाअी
बिहार

चि० मीरा,

मैंने तुम्हे कल पत्र दिया है। आज मैंने लगभग पूरे समाचार तारसे भेजे है। मुझे खुशी है कि अभी तो तुम्हारा सकट टल गया। परन्तु रोगके ये दौरे तुम्हारे लिअे अैसी चेतावनी हे, जिसकी तुम अुपेक्षा नही कर सकती।

हा, मुझे रोलाके पत्रका अनुवाद जरूर मिल गया, — मेरे खयालमे अहमदाबादमे मिला, कलकत्तेमे तो हरगिज नही। मुझे अुम्मीद है कि मै तुम्हारे पास जवाब भेजूगा और तुम अुसे अनुवादके साथ भेज देना।

तुम अपने शरीर या मस्तिष्क पर बेजा जोर न डालना।

मै अब भी तुम्हे कोअी निश्चित कार्यक्रम देनेमे असमर्थ हू। स्वागत-समिति अभी तक निश्चय नही कर पाअी है कि वह मुझे कहा-कहा ले जायगी। अिसलिअे मुख्य स्थान बेजवाडा ही रहता है।

सस्नेह,

९-४-'२९

बापू

६ तारीखका तुम्हारा अुपवास बुखारके कारण नही हुआ। मैं अिसलिअे न कर सका कि कामकी व्यग्रतामे याद ही नही रहा, हालाकि पहले मुझे अुसका खयाल था। बुरी तरह दौडधूप चल रही है। यह भुलक्कडपन अच्छा लक्षण नही है।

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

७६

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। चूकि कोअी तार नही आया है, अिसलिअे मै मान लता हू कि बुखारका थोडासा बढ जाना क्षणिक ही था। खबरदार, अधिक परिश्रम न करना। मेरी तबीयत अभी तक अच्छी है।

सस्नेह,

१०-४-'२९ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

७७

चि० मीरा,

मुझे सदा तुम्हारा ध्यान रहता है। शरीरके अितने दुबलेपनसे काम नही चलेगा। अपनी बडी कायाके सहारेके लिअे तुम्हारे शरीर पर काफी मास होना ही चाहिये। हा, जल्दबाजीकी जरूरत नही है। आग्रह करके अपने लिअे अेक कमरा जरूर ले लो, ताकि चाहो तो अुसमें अपनेको बन्द कर सको।

सस्नेह,

१२-४-'२९ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
बिहार

७८

चि० मीरा,

तुम्हारे दोनो पत्र मुझे मिल गये। तुम्हे म वचन देता हू कि अगर मुझे कुछ हो गया, तो तुम्हे तारसे समाचार मिल जायगे। अिसलिअे जब तक मेरी ओरसे पुष्टि न हो जाय, तब तक तुम्हे तमाम अफवाहोको निराधार समझकर माननेसे अिनकार कर देना चाहिये।

तुम्हारा फर्ज अपने शरीरको फिरसे बनाना और हो सके तो अुसे रोगोके लिअे अभेद्य करना है। मगर अिस बातकी भी चिन्ता नही होनी चाहिये। लोगोकी जो हालत तुमने बयान की है, वह मेरे लिअे नअी बात नही है। लेकिन अुनकी स्थिति सम्बन्धी मेरी अधीरता अब तुम्हारी समझमे आ रही है।

आज अिससे अधिक नही। मुख्य केन्द्र अभी बेजवाडेमे ही है।

सस्नेह,

१५-४-'२९

बापू

आज मैं मछलीपट्टम्मे हू।

श्रीमती मीराबाअी,
छटवन, बिहार

७९

तार

२०-४-'२९

मीराबाअी, खादीभंडार, मधुबनी

तुम्हारा तार मिला। कमजोरी बनी रहती हो तो तुम्हे अम्बालालके कारखानेमे या जहा अुचित हो तुरन्त चले जाना चाहिये। राजेन्द्रबाबूसे सलाह ले लो और वे न हो तो लक्ष्मीबाबूसे ले लो। अन्तिम निर्णयकी खबर बेजवाडे भेजो।

बापू

८०

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

यह दुर्भाग्य है कि आश्रम * की जड जमनेसे पहले ही तुम्हे अुसे भग करना पड रहा है। मगर तुम अपनी स्वाभाविक मर्यादाओके विरुद्ध काम नही कर सकती। बोया हुआ बीज अवश्य फलेगा। तुम्हे अपनको खपा नही देना चाहिये। मिलने पर अधिक चर्चा करेगे।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

२०-४-'२९　　　　बापू

श्रीमती मीराबाअी,
ठि० बाबू राजेन्द्रप्रसाद,
पोस्ट जीरादेअी (बिहार)

८१

तार　　　　२५-४-'२९

मीराबाअी, खादी भडार, मुजफ्फरपुर

खुशी है कि तुमने आश्रमकी चिन्तासे अपनेको मुक्त कर लिया। क्या तुम अम्बालालके कारखानेमे जा रही हो? अुत्तर तारसे बनूकुके पते पर दो।

बापू

---

* छटवन केन्द्र।

८२

लिखाया हुआ

तूनी, २ मअी, १९२९

चि० मीरा,

अिच्छा होते हुअे भी मै तुम्हे अिन दिनो पत्र नही लिख सका हू। मेरे पास जो समय बचता है, अुसे मै बाकी बचे हुअे कामको निपटानेमे लगाता हू।

साथमे रोलाके नाम मेरा पत्र है। अिसे अनुवाद करके भेज देना। हा, तुम चाहो कि मूलमे मुझे सुधार करने चाहिये तो दूसरी बात है।

आशा है अब तुम्हे मेरा विस्तृत कार्यक्रम मिल गया होगा और तुम्हे ठीक-ठीक मालूम रहेगा कि अिस महीनेकी २८ तारीख तक मै किस दिन कहा रहूगा। मुझे मुजफ्फरपुरसे तुम्हारी तरफसे कुछ न कुछ समाचार मिलनेकी अुत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा रहेगी। मै यह अितमीनान कर लेना चाहता हू कि तुम अपनी शक्ति पुन प्राप्त करनेके रास्ते पर निश्चित रूपमे लग गअी हो।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबहन,
ठि० खादी भडार,
मुजफ्फरपुर

८३

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र और तार दोनो मिल गये। अुत्तरमे 'नही' लिखते हुअे मझे दु:ख होता है। मै अेक स्थान पर मुश्किलसे दो रात रहता हू। गरमी दिन पर दिन बढ रही है। मेरे सिवाय और किसीके लिअे न कोअी आराम है, न खानेका पूरा प्रबन्ध है। और चूकि मै दूध नही लेता, अिसलिअे क्वचित् ही अच्छा दूध मिलता है। चूकि मैने अपनी

फलोंकी आवश्यकता कम कर दी है, अिसलिअे नारगिया भी नही होतीं। अैसी स्थितिमे तुम्हे अपनी मौजूदा हालतमे यहा लाना अत्यन्त जोखमकी बात है और अिससे स्वागत-समिति पर अत्यधिक भार पड जायगा। समितिको मोटरकी भी व्यवस्था करनी पड़ती है। हमारे दौरेका सबसे कठिन भाग नेलूरसे शुरू होगा। तुम्हे जितनी सुविधाअे मिलनी चाहिये, वे सब मै अपने आसपासके तमाम लोगो पर अनावश्यक भार डाले बिना नही पा सकता। मुझे यकीन है कि तुम अैसा करना नही चाहोगी। अिसलिअे तुम २३ मअी तक धीरज रखो। अुसके बाद मै खुशीसे तुम्हे सभाल लूगा। अिसका यह अर्थ नही कि खुद मुझे कोअी असुविधा होती है। अितने अधिक लोग मेरी खबर रखते है और अिससे भी बडी बात तो यह है कि मै खुद अपनी जरूरते आग्रहपूर्वक पूरी करा लेता हू। मुझे अपना स्वास्थ्य बरबाद न करके दौरा पूरा कर लेना हो, तो मुझे अैसा करना ही चाहिये। अिसलिअे मेरे लिअे तुम्हे जरा भी चिन्ता करनेकी जरूरत नही। मेरी तदुरुस्ती बहुत अच्छी है। लेकिन मै लोगोके लिअे काफी बड़ा निवाला हू। अिस समय सब लोग प्रतीक्षा कर रहे है कि मै सफरके लिअे तैयार हो जाअू ।

सस्नेह,

५॥ बजे प्रात , ५-५-'२९ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
खादी भडार,
मुजफ्फरपुर, बिहार

८४

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

मै आबादीसे दूरके अेक स्थानमे परवेके नीचे हू। परन्तु हवा गरम चल रही है। और हमे ८० मीलकी यात्रा पर ५॥ बजे रवाना हो जाना है। अिमाम साहबके स्वास्थ्यने लगभग जवाब दे दिया है। वे किसी तरह गाडीको चला रहे है। प्रभावतीको भी गरमी महसूस हो रही है। मै प्रार्थना कर रहा हू कि अिन आखिरी दस दिनोमे हम टिके रहे। आशा है रुके रहनेके आघातके असरसे अब तुम मुक्त हो गअी होगी। बम्बअीका मिलन और भी सुखद होगा। मै खुद बहुत अच्छी हालतमे हू, क्योकि मुझे जो जरूरत होती है अुसे पूरी करनेका आग्रह रखता हू।

सस्नेह,

११-५-'२९ बापू

श्रीमती मीराबाअी,
सदाकत आश्रम,
पोस्ट दीघाघाट,
पटना

८५

चि० मीरा,

मुझे अुम्मीद है कि तुम्हारे पास जो ब्यौरेवार कार्यक्रम भेजा गया था, वह तुम्हे जरूर मिल गया होगा। आज तुम्हारा कोअी पत्र नही आया। आशा है विद्यापीठमे तुम्हारे पास खूब अनुकूल कार्य होगा।

डी लिगटकी दूसरी खुली चिट्ठी य० अि० मे छप चुकी है। अुसके अुत्तरमे लिखे मेरे लेख पर तुम्हारी आलोचना जानना चाहता हू। मैने

अपने खानेमे परिवर्तन किया है। अुसका वर्णन अिसलिअे नही कर रहा हूं कि हम जल्दी ही मिलेगे। यह परिवर्तन मैने केवल प्रयोगके तौर पर अिसलिअे किया है कि वह मुझे पसन्द है और मुझे अैसा आदमी मिल गया है जिसे अिस चीजका पूरा ज्ञान है। अलबत्ता, अिसमे कोअी चिन्ता करनेकी बात नही है। अगर यह मुझे माफिक नही आया तो छोड दूगा।

सस्नेह,

बापू

नेलूर, १३-५-'२९

श्रीमती मीराबाअी,
सदाकत आश्रम,
पटना (बिहार)

८६

[कामके भयकर बोझके कारण बापूकी तदुरुस्ती सम्बन्धी चिन्ता मेरे लिअे फिर असह्य हो गअी थी और मै दौडकर अुनके पास चली गअी थी। और अुन्होने मुझे फिर झिडकी लगा दी थी, जिससे सदाकी भाति ही मेरा दिल टूट गया था।]

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

हमारी गाडी दो घण्टे लेट होनेके कारण सारे कार्यक्रममे गडबड हो गअी। मेरे तीसरे पहरका आराम छोड देनेसे और स्नानको रातके मुकामके लिअे स्थगित कर देनेसे वह कुछ ठीक हो गया। मैने कताअी ९-३० पर खतम की। अब रातके लगभग दस बज रहे है। मगर मै यह पत्र लिखनेसे पहले नही सो सकता।

यह भूमिका तुम्हे यह बतानेके लिअे है कि मुझे दिन भर तुम्हारा खयाल आता रहा है। चूकि अब तुम मुझसे दूर हो, अिसलिअे तुम्हे दुःख पहुचानेका मुझे और भी अधिक दुःख हो रहा है। कोअी जालिम आज

तक असा नही हुआ, जिसे दूसरोंको दिये गय कष्टका मूल्य न चुकाना पडा हो। किसी प्रेमीने कभी पीडा पहुचाकर अुससे कम पीडा नही सही है। मेरा यही हाल है। मैंने जो कुछ किया वह अनिवार्य था। अितना ही है कि मुझे क्रोध न आता तो अच्छा होता। लेकिन जिनमे मुझे सबसे ज्यादा मुहब्बत होती है, अुनके प्रति मेरी कठोरता असी ही है। लेकिन जब तुम मुझसे दूर हो, तो मुझे तुम्हारी असाधारण भक्तिके सिवाय और किसी बातका खयाल नही आ सकता। भगवान या तो जिसे मै तुम्हारा मोह समझता हू वह दूर कर दे या मेरी समझकी आखे खोल दे और मुझे अपनी भूल दिखा दे।

तुम्हे स्वस्थ रहना है।

सस्नेह,

बादा, २०-११-'२९

बापू

श्रीमती मीराबहन,
सदाकत आश्रम,
पटना

८७

चि० मीरा,

तुम्हारे तीन पत्र मिले। मेरा वजन १००$\frac{1}{2}$ पौड निकला। तुम्हारा लिखा हुआ * आखिरी वजन ८९ पौड १५ तोला था। अिसलिअे वृद्धि खालिस ग्यारह पौडकी हुअी। कोअी बुरा सौदा नही हुआ। और भी सब हालचाल ठीक है।

सस्नेह,

साबरमती, २६-११-'२९

बापू

श्रीमती मीराबाअी,
खादीभण्डार,
मधुबनी (बिहार)

* मै अेक रजिस्टरमे बापूका वजन लिखा करती थी।

८८

[पिछले और अिस पत्रके बीचमे साबरमती आश्रममे अेक अैसा काल आया, जो कभी नही भुलाया जा सकता। बापू आनेवाले राष्ट्रीय सग्रामके लिअे हम सबको अच्छी तरह तैयार करनेमे अपना सारा समय और शक्ति लगा रहे थे। अुस समय सग्राम अनिवार्य हो गया था। आश्रम अपनी प्रवृत्तियो और नैतिक बलके शिखर पर पहुच गया था। बापू हर रोज सुबह और शामकी प्रार्थनामे बोलते थे और वायुमडल अेक अूचा अुठानेवाली प्रेरणासे भर गया था। जिस दिन बापू समुद्र तट पर नमक तैयार करके नमक सत्याग्रहकी लड़ाअी छेडनेके लिअे प्रसिद्ध दाडीकूच पर आश्रमसे रवाना हुअे, अुसके दूसरे दिन यह पत्र लिखा गया था। अहिसाके जिस प्रदर्शनका बापूने जिक्र किया है, वह था हजारो नर-नारियोकी जबरदस्त भीड जो रातोरात अहमदाबादसे निकल आअी और सुबह तक आश्रमके चारो ओर जागरण करती रही। यह अफवाह लगातार फैल रही थी कि सरकारने बापूको गिरफ्तार करनेका निश्चय कर लिया है। लेकिन भक्तोकी अिस विशाल मेदिनीके बीच ब्रिटिश सरकार भी अुन्हे पकडना पसन्द न करती। मेरे खयालमे बापू ही अेक अैसे आदमी थे, जो अुस रात सोये, और अुन्होने अुस मधुर निद्राका आनन्द लिया, जो अुन्हे कभी धोखा नही देती थी। दूसरे दिन प्रातःकाल जब बापू अपने अनुयायियोके छोटेसे दलके साथ कूच पर रवाना हुअे, तो यह विशाल मानवसमूह कअी मील तक अुनके साथ गया।]

चि० मीरा,

जब तक समय* है, तुम्हे पत्र लिखने चाहिये और वह भी पूरी तरह या जितना समय मिले अुतनी पूरी तरह। कलका प्रदर्शन

---

* बापूकी गिरफ्तारीसे पहले, जिसकी हर घड़ी आशका रहती थी।

अहिसाकी विजय थी। मै जानता हू कि अिस सग्राममे हर जगह और हर समय अैसा नही होगा, परन्तु यह अेक महान और अच्छा प्रारभ हुआ।

तुम धीरज रखना, किसी बातकी चिन्ता न करना और अुन लोगोके प्रति अुदार बनना जो तुम्हारी अिच्छानुसार न करे। तुम्हारा मुख्य काम स्त्रियो और बच्चोमे है।

निगाह रखना कि रेजीनाल्ड* अपनी सभाल रखे और जल्दबाजीमे कुछ कर न बैठे।

हर बात पूरी तरह व्यवस्थित होनी चाहिये।

तुम्हारा रोजनामचा पूरा रखा जाय।

और मेरी चिन्ता न करना। जब तक भगवानको मेरी जरूरत है, वह मुझे तदुरुस्त रखेगा।

सस्नेह,

१३-३-'३० बापू

८९

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला और वे फूल भी, जो मुझे ढूढ निकालनेको जद्दोजहद कर रहे थे। अब तक तो मेरी थकान स्वास्थ्यप्रद ही दिखाअी दे रही है। अिससे मै अेक बारके बजाय दो बार दूध और खूब फल ले सकता हूं। पिछले पाच दिनकी थकानके कारण आज दिनभरमे पाच बार सोया। मुझे आशा है कि मै अगले सप्ताहकी कूचके लिअे या और जो कुछ मेरे भाग्यमे लिखा है अुसके लिअे पूरी तरह तैयार रहूगा। अिसलिअे तुम मेरी चिन्ता न करना। मै देख रहा हूं कि तुम्हे अपनी शक्तिका भान हो रहा है। यह सग्राम हम सबके लिअे सचमुच

* रेजीनाल्ड रेनाल्ड्स।

अीश्वरकी देन साबित हुआ है। यह शुद्धिकी क्रिया है और अैसा ही होना भी चाहिये। हममे ढिलाअी हरगिज न आये।

सस्नेह,

१७ मार्च, १९३०

बापू

९०

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

य० अि० मे मैने तुम्हारे बारेमे कुछ लिखा है। अुसे देख लेना।

तुम्हारा ताजा समयपत्रक बताना। . . . क्या स्त्रियोकी प्रार्थना रोज हो रही है?

मै अपनी यात्रा सचमुच बहुत अच्छी तरह कर रहा हू। लेकिन पन्द्रहसे ज्यादा आदमी असमर्थ हो गये है। अुन्हे आशा है वे कल तक बिलकुल अच्छे हो जायगे। वे सब भड़ौचमे है, जहा हम कल प्रात काल पहुचेगे।

अब मुझे नीद आ रही है।

सस्नेह,

त्रेलमा, २५-३-'३०

बापू

९१

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

मेरा स्वास्थ्य बढिया मालूम होता है। मेरा वजन दो पौड बढ गया है। सभीका बढा है। हमारी तुलाअी भड़ौचमे हुअी थी।

सस्नेह,

बापू

९२

चि० मीरा,

मुझे पेंसिलमें पत्र लिखनेसे घृणा है। लेकिन यह खत मैं प्रार्थना-भूमि पर और लोगोंके आनेकी प्रतीक्षा करता हुआ लिख रहा हूं। ४ बजकर २० मिनट होने ही वाले हैं।

* * *

अब रेजीनाल्डका क्या हाल है?

मैं अेक स्थानसे दूसरे स्थान घूम रहा हूं और कताओ पर ध्यान केन्द्रित कर रहा हूं। कताओके बिना विदेशी वस्त्रका बहिष्कार अेक जाल हो जायगा। और कताओको सार्वत्रिक बनानेवाली अेकमात्र वस्तु तकली है। अिसलिअे तुमसे वहां ज्यादा खादी तैयार करनेके लिअे जो कुछ हो सके करना।

मैं तुम्हारे ही बारेमें तुम्हें अेक कतरन भेज रहा हूं।

सस्नेह,

२१-४-'३०

बापू

स्याहीवाला भाग प्रार्थनाके बाद लिखा गया था।

९३

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारा पत्र अभी-अभी अुस डाकसे मिला है, जिसमें महादेवके बारेमें समाचार आये हैं।

* * *

मैं आखिरी कार्रवाओकी कल्पना कर रहा हूं, जिसमें निर्णयात्मक कदम अुठाना अनिवार्य हो जाय। मगर यह सब ओश्वरके हाथमें है।

सस्नेह,

बापू

९४

प्रिय मीरा,

यह अेक ही पंक्ति तुम्हारे लम्बे प्रेमपत्रकी पहुंच स्वीकार करनेके लिअे लिख रहा हूं। अब रातके दस बजनेको है, अिसलिअे फिलहाल राम राम।

सस्नेह,

बापू

मौन दिवस या रात्रि? मौन आधी रातको टूटेगा।

९५

[गिरफ्तारी हो गअी]

चि० मीरा,

जेलसे लिखनेको पहला पत्र तुम्हारा ही ले रहा हूं और वह भी मौनवारको।

मैं बिलकुल प्रसन्न हूं और आरामकी कमी पूरी कर रहा हूं। यहां रातें ठंडी हैं और चूंकि मुझे बिलकुल खुलेमें सोनेकी अिजाजत है, अिसलिअे मुझे ताजगी देनेवाली नींद आती है। भोजन लेनेकी पद्धतिमें जो परिवर्तन किया गया है, अुसके बारेमें तुम मेरे सामान्य पत्रसे जान लेना।

चरखा अितना ध्यानपूर्वक भेजा गया है और अुसके साथ सामान अितनी होशियारीसे बांधा गया है कि तबीयत खुश हो गअी। सुपरिन्टेंडेंटने कहा है कि पींजन लानेवाले भाअियोंके हाथसे रास्तेमें खो गअी है। अुसकी मुझे बहुत जल्दी नहीं है, क्योंकि तुमने पूनियां काफी मात्रामें भेज दी हैं।

. . . मैं तकलीको जितना समय दे सकता हूं दे रहा हूं। मैं देखता हूं कि अुस पर मेरी कोअी गति नहीं है। घण्टेभरमें मुश्किलसे तीस तार निकलते हैं। पहले दिन मैंने कोअी सात घण्टे दिये, तब कहीं १६० तार निकले। यह काम पूरा होनेके बाद मैं बिलकुल थक गया। मुझे गति बढ़ानेकी कला सीखनी ही पड़ेगी। . . .

आशा है तुम्हे माताजीसे अुनके स्वास्थ्य और दूसरी बातोंके अच्छे समाचार मिले होंगे।

जेलके सब कर्मचारी मेहरबानी और ध्यान रखते हैं।

सस्नेह,

यरवदा, १२-५-'३० बापू

मेरा विश्वास है कि मुझे आश्रमकी डाक मिल सकेगी। अिसलिअे तुम आश्रमकी डाकके साथ साप्ताहिक पत्र भेज सकती हो।

९६

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हे मेरा पिछले मौनवारका पत्र मिल गया होगा। मेरे खयालसे वह शुक्रवारको ही डाकमे पडा था। यह पत्र अुससे जल्दी जाना चाहिये। अिस समय रविवारकी शामके ८ बज चुके है। आम तौर पर मै रविवारको तीसरे पहर ३ बजेसे मौन लेता हू।

मेरे यहाके जीवनके बारेमे तुम्हे मेरे सामान्य पत्रसे मालूम होगा। मै दुगुनेसे भी ज्यादा सूत कातने लगा हू। चरखे पर कोअी ४०० तार और तकली पर ५५ से ६० तार निकलते है। अिस सारे सूतको अच्छी तरह भिगोकर और अच्छी तरह बन्द करके रखा जाता है। चरखेके सूतकी ७५ तारोकी ५ लटिया रोज रखी जाती है। तकलीके सूतकी अेक लटी लगभग १६० तारकी होती है। तुम्हे यह जानकर खुशी होगी कि मै कितना मजबूत सूत कात रहा हू। सारा काम रोज छ. घण्टे ले लेता है। मुझे समयके बारेमे शिकायत नही है। मै अिस बार पढ़ाअी बहुत नही कर रहा हू। पिछली बारकी तरह मै बहुतसी पुस्तकें भी जमा नही करना चाहता। सभव हो तो मै कताअीमे पूर्णता हासिल कर लेना चाहता हू। थोडे ही दिनोमे मुझे पीजना पड़ेगा। अभी मेरे पास दस दिनकी पूनिया और है। . . .

लटकती है। बाससे दो रस्सिया लटकती है। मैने अुन दोनोको जोड दिया है और मै जुडी हुअी रस्सियो पर पतली डोरी अिस तरह लगा देता हू.
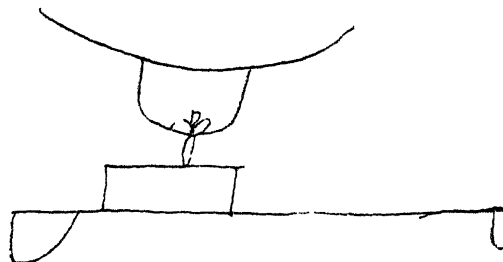
बासकी चीजे सीधी खडी नही रहती परन्तु घूम जाती है। अलबत्ता, दीवारसे वे रुक जाती है। लेकिन मेरे खयालसे अगर रोकनेवाली दीवार न हो, तो भी अुन्हे घूमना बिल्कुल न चाहिये। मैने जो वर्णन किया है, अुसे तुमने समझ लिया हो और अुसमे कोअी त्रुटि हो तो मुझे बताना।

तुम्हारी तकली अच्छी बनी है, लेकिन वह बारीक कताअीके लिअे बहुत भारी है। मुझे कोअी शका नही कि अिसके लिअे बास ही सही चीज है। मेरी गति अब पहलेसे अच्छी है। मैने आज डेढ घण्टेमे ६५ तार काते है — यह मेरे लिअे बुरा नही। जब मेरी घबराहट मिट जायगी और मै टूटनेके डरके बिना तार निकालूगा, तब मेरी गति और भी बढ जायगी।

भजनावलिका अेक श्लोक रोजाना अनुवाद करनेका मेरा काम जारी है। काश मै अधिक कर सकता। लेकिन कताअी और धुनाअीके बाद ज्यादा समय बचता ही नही। और अब मुझे सीनेकी मशीनके लिअे समय निकालना पडेगा। तुम्हारे आनेमे मुझे खुशी हुअी।

सस्नेह,

२५-५-'३० बापू

यरवदा आनन्दभवन

तकुअेकी गिर्री ढीली हो जाय, तो अुसे सख्त कैसे बनाती हो?

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

कअी सप्ताहके बाद फिर आश्रमके पत्र लिखनेको कलम अुठा रहा हू। मुझे मालूम हो गया था कि जो पत्र मैंने तुम्हारे पास भेजे थे और अिसी तरह जो पत्र आश्रमसे मेरे पास भेजे गये थे वे रोक लिये गये है। अैसी सूरतमे मैं लिखना नही चाहता था। अब रास्ता काफी साफ हो गया दीखता है, यद्यपि मुझे सारे साप्ताहिक पत्र अभी तक नही मिले है और मुझे पता है कि कुछ रोक लिये गये है। वे बच्चोके है। मैं अुन्हे प्राप्त करनेकी कोशिश कर रहा हू — मुझे कमसे कम कभी-कभी तो याददिहानिया होती ही रहनी चाहिये कि यह जेल जीवन है।

जब तक मौजूदा कठिनाअी दूर नही हो जाती, तब तक मुलाकातें नही की जा सकती। अगर सम्मानपूर्ण शर्तो पर मुलाकाते नही हो सकती, तो हमे पत्र लिखकर ही सन्तोष कर लेना चाहिये, यदि पत्र-व्यवहार अिज्जतके साथ जारी रखा जा सके। अिसलिअे अगर तुम्हे मेरे पत्र नियमित न मिले, तो समझ लो कि मैं कैदी हू। अगर मैं सचमुच बीमार हुआ, तो दीवारे बोल अुठेगी। पिछली बारकी तरह खुद अधिकारी ही घोषणा कर देंगे, और जब कभी तुम्हे अफवाहे सुनाअी दे, तब तुम अुनसे हमेशा पूछताछ कर सकती हो और मुझे आशा है कि वे तुम्हे फौरन सूचना कर देंगे। लेकिन मैं अुम्मीद रखता हू कि जहा तक पत्र लिखनेका सम्बन्ध है, रास्ता साफ रहेगा। अभी तो मामूली कब्जके सिवाय मेरे स्वास्थ्यमे कोअी खराबी नही है। किसी भी किस्मकी चिन्ताके लिअे कोअी कारण नही है।

तुम्हारा ताजा यानी ९ तारीखका पत्र मिल गया था। अुसके बाद कोअी पत्र नही। पीजनके बारेमे तुमने जो सूचनाये दी है, वे बिल्कुल अच्छी और बिलकुल काफी है। फिर भी मैंने अुसे अुलटी

लटका दी है, और वह भलीभाति काम कर रही है। खुद पीजन पर कोअी ध्यान नही देना पडा है। मेरे पास जितनी रूअी थी सब पीज ली ह। तान अभी तक जरा भी खराब नही हुअी है। मने नीमके पत्ते अिस्तेमाल नही किये, परन्तु अिमलीसे मिलते-जुलते किसी और ही पेडके पत्ते काममे लिये है। वे ठीक काम दे रहे है। पूना आनेवाले किसीके भी हाथ अेक मेर रूअी भेज देना। बहुत जल्दी नही है। मेरे पास कमसे कम १५ जुलाअी तक चलने लायक पूनिया ह। तब तक मुझे पीजनको छूनेकी जरूरत नही है। जब मुझे जरूरत होगी तो तुम्हारी सूचनाओके अनुसार पीजनके सामानको फिरसे जमा लूगा।

तकुअे पर गिर्रीको ठीक तरह लगानेके बारेमे भी म समझ गया। लेकिन यहा भी प्रकृतिने मुझ पर कृपा की है। मने गिर्रीको अपने ही ढगसे ठीक कर लिया और वह बिलकुल स्थिर हो गअी है। अगर गडबड हुअी तो तुम्हारा नुस्खा आजमाअूगा।

तुमने अपने कामके बारेमे जो कुछ लिखा है, वह सब मेरे ध्यानमे है। तुम्हे अीश्वर जैसा रास्ता बताये वैसा ही अपनी शक्तिके अनुसार करो। भगवान तुम पर दया रखे। और बाते सामान्य पत्रसे जान लेना।

सस्नेह,

२२-६-'३०

बापू

९९

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला।

मेरा खयाल है कि अब आश्रमके पत्र मुझे और मेरे पत्र तुम सबको नियमपूर्वक मिला करेगे। शर्त यह है कि दोनो तरफसे कोअी राजनीतिकी चर्चा न की जाय। लेकिन तुम्हे फिर विक्षेप मालूम हो तो समझ लेना कि कोअी बाधा अुपस्थित हो गअी है।

मुझ खुशी ह कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा है। अितना ही है कि तुम्हारा वजन कमसे कम जितना होना जरूरी है, अुससे घटना नही चाहिये। तुम्हारे शरीरके लिअे वह ११६ पौड तो होना ही चाहिये।

हा, मे कुछ सिलाअी नियमपूर्वक कर लेता हू। अलबत्ता, यह सब जेलका काम है। जब मथुरादासने खादीको सस्ती करनेके लिअे यह सुझाव रखा, तो मुझे अुसकी तरफ आकर्षण हुआ। मैंने सोचा मै यहा मशीन पर अभ्यास करूगा। . . .

चूकि अब मुझसे मुलाकात करनेवालोके आनेकी सभावना नही है, अिसलिअे बेहतर है तुम तीन पौड रूअी मेरे पास भेज दो। . . काकासाहबको भी पूनियोकी आवश्यकता होगी। रूअीको कागजमे लपेटकर बादमे टाटमे सी देना। यह सुझाव खादीको बचानेके लिअे दिया गया है।

सब भाअी-बहनोको मेरा प्यार।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, ३०-६-'३० बापू

१००

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मुझे ज्योका त्यो और समय पर दे दिया गया। अब दोनो ही तरफ पत्रोके जल्दी दे दिये जानेमे किसी कठिनाअीकी सभावना नही है।

मुझे खुशी है कि लदनसे तुम्हे अच्छी खबर मिली है। मालूम होता है ऑपरेशन पूरी तरह सफल हुआ।* पश्चिमके चीरफाडके आविष्कारो और अुस दिशामे सर्वागीण प्रगतिके लिअे मैंने अुसकी सदा तारीफ की है।

तुम्हारी खुराककी सूचीमे तुमने मुझे यह नही बताया कि तुम घी कितना ले रही हो और नारगिया ले रही हो या नही। घीकी तुम्हें

---

* मेरी माका ऑपरेशन हुआ था।

जरूरत है और सतरोकी भी। मै चाहता हू कि अिन दो चीजोको न छोडो या न घटाओ।

अगर तुमने रूअी अभी तक नही भेजी है, तो अब तुरन्त भेज देनी चाहिये। मै तुम्हे लिख चुका हू कि १५ जुलाअी आखिरी दिन है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आजकल ३७५ तार कातनेसे जरा थकान लगती है। अिसका कारण खोज रहा हू। अैसी हालतमे तकलीका अभ्यास बहुत मन्द हो गया है।

मेरे पास शिकायते आअी है कि मेरे पत्रोके अश प्रकाशित नही होते। अिसलिअे तुम साधारण ढगके अश फिर प्रकाशित करना शुरू कर सकती हो। मैने अिसकी चर्चा सुपरिन्टेडेटसे कर ली है। लोगोको मेरे पत्रोमे से कुछ भी देखनेको न मिलेगा, तो अुन्हे तीव्र असन्तोष होगा।

अभी तक मुलाकातोके बारेमे कुछ भी तय नही हुआ है।

जिन लोगोको म पत्र नही लिखता, परन्तु जिनका खयाल मुझे बराबर रहता है, अुन सबको मेरा प्यार।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, ७-७-'३०

बापू

१०१

[मैने बिहारके नमूनेका अेक चरखा तैयार किया था और अुसे यरवदा जेल ले गअी थी, क्योकि मै जानती थी कि न समझाअुगी तो बापूको अुसे फिट करनेका तरीका समझनेमे कठिनाअी होगी। लेकिन अैसा सभव नही हुआ और बापूने मेरे पास सुपरिन्टेडेटके दफ्तरमे निम्नलिखित रुक्का भेजा।]

चि० मीरा,

मुझे दु:ख हो रहा है। परन्तु मुझे अिस सुखमे वचित ही रहना होगा, यदि मुझे अपने व्यवहारमे सगतता कायम रखनी है। चरखा

वगैरा छोड जाओ। जैसा मुझसे हो सकेगा मै अुससे काम ले लूगा। अैसे ही अवसरो पर हमारी परीक्षा होनी है।

भगवान तुम्हारी रक्षा करे।

सस्नेह,

बापू

१०२

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

मुझे अिससे पीडा हुअी कि तुमसे मिलनेमे अिनकार करना पड़ा। लेकिन मैने ठीक किया, अिसका सबूत दूसरे दिन सुबह मिल गया। सरकारने मेरा प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया है। अिसलिअे अब कोअी मुलाकात नही हो सकती। अपने दृष्टिकोण पर जोर देना मेरे लिअे अशोभनीय होगा। अुन्हे कैदियोको हरेक सुविधा देनेसे अिनकार करनेका हक है, जैसा कि अेक सदी पहले या अुसके बहुत बाद तक दुनिया भरमे किया जाता था। यह काफी है कि पत्रव्यवहारकी अिजाजत है। लेकिन तुम समझ लो कि यह भी निश्चित नही है। वे किसी भी क्षण पत्रव्यवहार रोक सकते है या न मानने लायक शर्ते लगा सकते है। त्यागसे हमारा लाभ ही है। अिसलिअे मुलाकातोके अिस तरह बन्द होने पर कोअी दुख होनेकी जरूरत नही है। आत्माका आत्मासे मिलन होना अधिक अच्छा है। अिस सुखद मिलनको ससारकी कोअी सत्ता नही रोक सकती।

अब तुम्हारी छोडी हुअी भेटोकी बात ले। मै देखता हू कि छोटीसे छोटी बात पर भी तुमने असाधारण ध्यान रखा है। मैने नये चरखेसे तुरन्त काम लेना शुरू कर दिया था। अिसलिअे काम लेनेका यह दूसरा दिन है। आज रविवार है और मेरा मौन शुरू हो चुका है। लेकिन जहा यह प्रेम गहरा है, वहा अिसमे अुतना ज्ञान नही है

जितना हो सकता है। तुम्हारे चरखेसे थकान कम नही हुअी। जैसा मैंने मथुरादासको समझाया था, थकान लगभग अेक ही आसनसे पाच घण्टे बैठे रहनेसे होती है। अगर मैं घण्टे कम कर सकू और अुतना ही सूत कात लू तो दूसरी बात है। यह अिस नये चरखेसे नही होता दीखता। अभी तो नया चरखा चलानेमे बाअी भुजा पर जोर पडता है। क्योंकि अिसमे भुजाको अपनेसे दूर घुमाना भी पडता है और अुठाना भी पडता है। अुधर पेटी चरखेमे भुजा जमीनके साथ आडी रहती है और अपनी ही तरफ घूमती है। अिसके सिवाय मैं न कहू तो तुम्हारे पास अैसे मामलेके लिअे देनेको और कुशल कारीगरोंसे लेनेको समय कहा है? अपनी चिन्ता मुझे खुदको ही रखने देना और अपनी आवश्यकताअे प्रगट करने देना चाहिये। तीसरे, मैं पेटी चरखेके बराबर बारीक तार भी अिस पर नही निकाल सका हू। नतीजा यह है कि ड्योढी पूनिया काममे लेनी पडती है — जो राष्ट्रीय अपव्यय है। खैर, आलोचना तो काफी हो चुकी। जो चीज अितने प्रेमसे पगी हुअी आअी है, अुसे मैं यो ही नही छोड दूगा। अिसलिअे मैं अिस चरखेको अिस्तेमाल करता रहूगा और तुम्हे समय-समय पर समाचार देता रहूगा। चमरखो और धुरीके लिअे तुम कौनसा तेल काममे लेती हो? मालको राल कितनी बार लगाती हो?

तकलिया मैंने चलाकर देख ली। ये अुतनी अच्छी नही है, जितनी मेरी यहा बनाअी हुअी है। टिकिया बहुत बडी है और बास अच्छी तरह साफ नही किया गया है। डडीकी मोटाअीमे और टिकियाके घेरेमे कोअी अनुपात मालूम होता है। अगर वजन कम हो तो अुसकी कमी टिकियाको मोटी करके पूरी करनी चाहिये। अबकी बार जब तुम तकली बनाओ, तो अिन बातोंका ध्यान रखना और मुझे अपनी राय बताना।

मेरी तदुरुस्तीके बारेमे कोअी नअी खबर नही है। वजन स्थिर है। दौरेमें अपने शरीरके साथ खिलवाड न करना।*

---

* मैं अखिल भारतीय खादी प्रवास पर रवाना हो रही थी।

मै भजनोके अनुवादमे अधिक समय लगा रहा हू। सस्कृत श्लोक पूरे कर लिये है और अब भजनोके पीछे पडा हू।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, २०-७-'३० बापू

१०३

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे चरखेको अब भी चला रहा हू। अब अुससे कम जोर पडता है। मालने बिलकुल तग नही किया। अिस बातमे तुम्हारा चरखा ज्यादा अच्छा है। जितना चाहिये अुतना बारीक सूत कातनेमे अब भी कठिनाअी होती है। मैं अिसे आसानीसे नही छोडनेवाला हू। गति अब भी थोडी है। आज पहली बार ६५ मिनटमे १५४ तार निकले। मेरे लिअे यह अुत्साहवर्धक है। सफरी चरखे पर मेरी गति, जब वह लगातार चलता था, अेक घटेमे २०० तार तक पहुच गअी थी।

तुम्हारे लिअे भजनोका अनुवाद करनेमे मुझे बडा आनन्द आता है। क्या मैंने अपना प्रेम स्नेहकी कोमल और शीतल बौछारोकी अपेक्षा गर्जन-तर्जनमे ही अधिक प्रगट नही किया है? अिन नाराजगियोकी स्मृतिसे केवल तुम्हारे लिअे ही अनुवाद करनेका यह आनन्द और भी बढ जाता है। लेकिन अुसमे समय लगनेवाला है। आज मैंने १०वा भजन पूरा कर दिया है। श्लोकोमें मुझे बहुत वक्त लग गया। भजन मैं नित्य अेकके हिसाबसे कर रहा हू। अभी तो लगभग १७० और बाकी है। अिसलिअे अभी तो गीता तक पहुचनेकी बहुत सभावना नही है।

तुम्हारे ज्वरसे अशाति होती है। तुम पर अभी तक परिवर्तनोका बहुत जल्दी असर होता है। अपनी सभाल जरूर रखो और जरा भी जरूरी मालूम हो तो दूसरे दर्जेमे सफर करनेमे सकोच न करना। मैं अिस सप्ताहके पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूं।

सस्नेह,

२७ जुलाअी, १९३० बापू

१०४

चि० मीरा,

अिस सप्ताह मैं संक्षेपमें ही लिखना चाहता हूं। अिसका कोअी खास कारण नहीं है। असल बात यह है कि सामान्य पत्र काफी लम्बा है।

मुझे विश्वास है कि सारे सफरमें तुम्हारा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा रहा होगा।

*　　　*　　　*

चरखा पहलेसे अच्छा चला है। आज मेरी गति फी घण्टे १६० तारसे अूपर पहुंच गअी। मैंने पीजनको फिरसे लगा लिया है और वह पहलेसे अच्छा काम दे रही है। मुझे अधिकाधिक अनुभव हो रहा है कि कताअीकी गति बढ़ानेके लिअे अच्छी पूनियां अनिवार्य हैं। आश्चर्यकी बात है कि हर छोटी-छोटी बात पर ध्यान देना कितना महत्त्वपूर्ण है।

तंदुरुस्ती बिलकुल अच्छी है।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, ४-८-'३०　　　　बापू

१०५

चि० मीरा,

पटनासे भेजा तुम्हारा प्रेमपत्र मिला। तुम्हारे अनुभव कीमती हैं। आशा है पेचिशके चिन्ह बिलकुल मिट गये होंगे।

मैं नये चरखे पर ही काम कर रहा हूं। गति अुतनी ही है। लेकिन मैं अिसे छोड़ूंगा नहीं। यह कीमती वस्तु हाथ लगी है।

भजनोंका अनुवाद घड़ीकी सुअीकी तरह नियमपूर्वक चल रहा है। लेकिन मैं अुन्हें ज्यादा समय नहीं दे सका हूं। अिसलिअे समयकी मर्यादा वही है, जो मैंने किसी पिछले पत्रमें लिखी थी।

*　　　*　　　*

मेरा वजन दो पौंड घट गया है, परन्तु चिन्ताका कोअी कारण नही। कब्ज बना रहने लगा अिसलिअे दूधकी मात्रा घटानी पडी। अगर पहले जितना ही दूध फिर ले सकू तो जल्दी ही वजन बढ जायगा। स्वास्थ्य बिगाड लेनेसे वजन घटा लेना अच्छा है। शक्ति अुतनी ही है। यह खबर प्रकाशनके लिअे नही है। तुम्हे मैने सत्यके खातिर दे दी है। अपने स्वास्थ्यके बारेमे तुम्हे बता देना मेरा धर्म है, अिसलिअे मुझे वजन घटनेकी बात तुमसे छिपानी नही चाहिये।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, १०-८-'३०

बापू

१०६

चि० मीरा,

आश्चर्य है कि तुम्हारा पत्र हिलती हुअी रेलगाडीमे लिखा हुआ होने पर भी अच्छी तरह पढा जा सकता है। अगर तुमने मेरा ध्यान न दिलाया होता, तो मुझे कुछ भी फर्क मालूम न होता।

मेरा खयाल है कि सफरी चरखे पर अब मेरा काबू हो गया है। मुझे आशा है कि अबसे मेरी गति ज्यादा बढ जायगी। अभी तो मैं अेक घण्टेके करीब बचा लेता हू और पहलेसे बहुत कम थकान मालूम होती है। मगर तुम्हारी मेहनत बेकार नही गअी। काकासाहब गाडीव* को काममे ले रहे थे। लेकिन अुससे अुन्हे सन्तोष नही हुआ। और वे अेक लटी यानी १६० तार भी हमेशा नही निकाल सकते थे। तुम्हारे चरखे पर अुन्हे २ घण्टेमे अेक लटी कर लेनेमे कोअी कठिनाअी नही होती। कमसे कम अितना समय चरखेको देना अुनका फर्ज है।

---

* वह मूल रूप जिससे वर्तमान पेटी चरखेका विकास किया गया है। जिस पेटी या सफरी चरखेका बापूने हवाला दिया है, वह पेचीदा चीज थी। अुसमे खडे ढगका लचकीले तारका चक्र था।

दूसरे दर्जेमें जाकर तुमने अच्छा किया। जब तीसरे दर्जेमें सफर करना स्पष्ट रूपसे असंभव हो या लगभग असंभव हो, तो दूसरे दर्जेमें करनेमें कोआी नुकसान नहीं हो सकता और शर्म तो हो ही नहीं सकती।

*　　　*　　　*

सस्नेह,

बापू

१०७

चि० मीरा,

मुझे पिछले सप्ताहमें भी संक्षेपमें लिखना पड़ेगा। रातके ठीक १० बज रहे हैं, जो मेरे लिअे असाधारण बात है। और जैसा कि मेरा कर्तव्य है, अगर मुझे समयकी पाबन्दी रखनी है तो यह आखिरी रात है। परन्तु कुछ अधिक कहनेका भी नहीं है।

कलसे मैं फिर सफरी चरखे पर कातने लगा हूं। थकान तुरन्त कम हो गअी और अुतने ही समयमें सूत भी कुछ अधिक निकला — यद्यपि बहुत ज्यादा तो नहीं। लेकिन मैं जानता हूं कि अिस पर मेरा सूत ज्यादा निकलेगा। मैंने समझ लिया कि जिस अुद्देश्यसे तुमने अपना चरखा मुझे भेजा, वह अुससे पूरा न होता हो तो अुसीको चलानेका आग्रह रखना प्रेमका गलत प्रदर्शन है। अितनी ही बात थी कि मैं अुसे पूरी परीक्षाके बिना छोड़ना नहीं चाहता था। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है, परन्तु वजन अब भी गिरता जा रहा है। परन्तु अिसकी कोअी चिन्ता नहीं। ज्यों ही कब्ज काबूमें आ जायगा, वजन बढ़ जायगा। मुझे अिस सप्ताह बढ़नेकी आशा है।

सस्नेह,

यरवडा मंदिर, १८-८-'३०　　　बापू

१०८

चि० मीरा,

तुम्हारा मद्रासकी यात्राके दरमियान लिखा हुआ प्रेमपत्र मिल गया। आशा है अिस यात्राकी थकान तुम्हारे लिअे बहुत अधिक साबित न होगी। तुम्हारे वर्णन सभी कीमती हैं। हा, मेरे लिअे नेहरुओकी* मुलाकातका समय कठिन था। ३७५ तार मै मुश्किलसे कात सकता था, और अुतना काते बिना मुझे बहुत ही दु ख होता। . . पीजन पूरी तरह काम दे रही है। अिससे मुझ पर जोर नही पड रहा है। काका-साहब पूनिया बना देते है। अुन्हे अभी धुनना सीखना है और अुनका विचार जल्दी ही शुरू कर देनेका है। भजनोका अनुवाद पहलेकी तरह नियमित किन्तु धीरे-धीरे हो रहा है। और अिससे ज्यादा काम करनेका तुरन्त कोअी सयोग मुझे दिखाअी नही देता। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। वजन घटता-बढता रहता है। २-३ पौड वजन जो घट गया मालूम होता था, अुसमे से अेक पौड पिछले सप्ताह फिर बढ गया है। शक्तिमे कोअी कमी नही आअी है। यहाका पानी भारी है, अिसलिअे कब्जका थोड़ा अुपाय करनेकी जरूरत रहती है।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, २४-८-'३० बापू

तुम्हे यह जानकर खुशी होगी कि तात अेक बार भी नही टूटी है।

---

* समझौता करनेकी दृष्टिसे सरकारने पडित मोतीलाल नेहरू और जवाहरलालजीको कुछ दिनकी चर्चाके लिअे स्पेशल ट्रेनमे नैनी जेलसे यरवदा जेल भेज दिया था।

चि० मीरा,

निरुपुरमें लिखा तुम्हारा पत्र मिला। हमारी मधिवार्ताका सारा हाल अब तुम्हें मालूम हो गया है। मैंने यहां जितना वजन खो दिया था, अुतना वापस प्राप्त कर लिया है। पिछले शुक्रवारको मेरा वजन १०८ पौंड था। मैंने सूखा मेवा भी छोड़ दिया है। अभी खट्टे नीबू चल रहे हैं। सूखे मेवेकी बजाय मैं तरकारी ले रहा हूं। शकरकन्द और कच्चे टमाटर स्थायी शाक हैं। शकरकन्द भून लिये जाते हैं। अेक हरी भाजी अुबाल ली जाती है। आम तौर पर वह गोभी या कद्दू या अैसी ही कोअी चीज होती है। वजनके वापस बढ जानेका कारण यही परिवर्तन मालूम होता है। और अब मुझे कब्जकी चिन्ता नहीं रहती है। अगर यह फेरबदल अन्तमें सफल साबित हो जाय, तो खर्चा बहुत कम हो जायगा। देखना चाहिये। फल न लेनेके बारेमें मैंने कोअी कड़ा नियम नहीं बनाया है। परन्तु अभी तो अिससे कुछ भी कमी नहीं मालूम होती, बल्कि स्वास्थ्य कुछ बढा ही है।

चरखे पर मेरा काबू बढता जा रहा है। अब थकान महसूस नहीं होती। मैं देख रहा हूं कि अगर तार निकालते समय पूनीके सिरे पर ध्यान रखा जाय और फिर जब तार तकुअे परसे कूकड़ी पर ले जाया जा रहा हो तब तकुअेकी नोक पर ध्यान रखा जाय और फिर जब वह कूकड़ी पर आ जाय तब अुस पर ध्यान रखा जाय, तो तार नहीं टूटता, बशर्तेकी पूनी अच्छी हो। मुझे आशा है कि मैं थोड़े ही दिनोंमें गति काफी बढा लूंगा। अब भी पहलेसे ज्यादा है। परन्तु सुधारकी बहुत गुंजाअिश है। बहरहाल अभी तो और अध्ययनको छोड़कर मैं सारा ध्यान चरखे पर ही लगा रहा हूं। . . .

आशा है तुम्हें कहीं न कहीं कुछ आराम मिला होगा। भागदौड़ न करना।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, ७-९-'३० बापू

११०

चि० मीरा,

तुम्हारा कोयम्बतूरका पत्र मेरे सामने है। यह मार्केकी बात है कि तुमने अिस जबरदस्त भागदौडके बीच भी कुल मिलाकर अपना स्वास्थ्य अितना अच्छा रखा। जिस मानसिक शातिकी मै आशा रखता हू, अुसका यह अेक चिन्ह है। मै देख रहा हू कि माल और अुसके ठीक तरहसे लगानेका गति और अच्छी कताअी दोनोमे बहुत सम्बन्ध है। मेरा काम चल रहा है। मै हरगिज निराश नही हू। असाधारण थकान मिट गअी है। अिसलिअे चरखेके बारेमे किसी चिन्ताकी जरूरत नही। काका तुम्हारा चरखा चला रहे है। अभी वे ८० तार फी घटेसे ज्यादा नही कात सकते।

घुमाअी अभी तक सीमित रखनी पडती है। लेकिन मेरी तदुरुस्ती बिलकुल अच्छी है। चरखे और अुसके विचारसे समय जल्दी-जल्दी व्यतीत हो जाता है। और दिनभरके कामके बाद मुझे अच्छी नीद आ जाती है, जो मेरे लिअे भोजनसे भी बढकर है। मैने ६५वे भजनका अनुवाद पूरा कर लिया है, लेकिन अभी दिल्ली दूर है। मुझे अेकमे ज्यादा श्लोक करनेका समय क्वचित ही मिलता है। और रोज अेक करनेमे अभी तक चूका नही हू। अिसलिअे यद्यपि प्रगति बराबर हो रही है, फिर भी है बेशक धीमी।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, १८-९-'३०

बापू

१११

चि० मीरा,

तुम्हारा कलकत्तेका पत्र मिला। तुम्हे भाति-भातिके अनुभव हो रहे है।* सत्यके शोधक अिन सबसे लाभ अुठाते है। आशा है जो थोडीसी बीमारी तुम्हे हुअी, वह केवल क्षणिक वस्तु थी और तुम जल्दी अच्छी हो गअी होगी। मै आशा करता हू कि तुम्हे जिस आरामकी जरूरत थी वह मिल गया। मै दिन-दिन सफरी चरखेमे कुछ न कुछ सुधार कर रहा हू और वह मुझे दिन-दिन पहलेसे कम तग करता है। आश्चर्यकी बात है कि जब हमारे पास कोअी सम्पूर्ण यत्र नही होता बल्कि अपने हाथोकी कारीगरीको मदद देनेवाला अेक साधन-सा होता है तब कितनी छोटी-छोटी बातो पर ध्यान देना होता है। परन्तु चरखे पर जितना अधिक काबू होता है, अुतना ही कातनेमे आनन्द अधिक और थकान कम होती है। काका अभी तक तुम्हारे चरखेसे भिडे हुअे है। अुन्हे बहुतसी पिछली अुपेक्षाकी पूर्ति करनी पडेगी। अुनका कहना है कि वे कतवैया यही बने है। पहले वे कातते थे, परन्तु कतवैया नही थे।

---

* मै बुखारकी हालतमे कलकत्ते पहुची थी। स्टेशन पर अेक बडी और अुत्तेजित भीड प्रतीक्षा कर रही थी, परन्तु कोअी मेरे पास पहुच भी नही सका था कि अेक अग्रेज पुलिस कर्मचारी धक्का देकर गाडीमे घुस गया और अुसन मुझ पर अेक हुक्म तामील किया कि मेरे स्वागतके लिअे महिलाओका जो जुलूस निकलनेवाला था अुसमे मै शरीक न होअू। मैने समझाया कि मुझे हुक्मको तोडना पड़ेगा और अुसने समझाया कि अुस सूरतमे लाठी चार्ज होगा। दोनों बाते हुअी और मुझे गिरफ्तार करके पुलिसकमिश्नर सर चार्ल्स टेगर्टके पास ले गये। लगभग आधे घंटेकी बातचीतके बाद अुन्होने मुझे छोड़ दिया। अिस बीच शहरमे बड़ी हलचल रही।

तुम मेरा मतलब समझती हो? अेक आदमी बढ़अी न हो तो भी मेज बना सकता है। तरकारियोंका परिवर्तन जारी है। अिससे न तो कोअी रुकावट हो रही है न कोअी ज्यादा प्रगति दिखाअी देती है। मैं अिस प्रयोगको पूरी तरह आजमाना चाहता हूं। डॉक्टर महेताने सन्देश भेजा है कि कब्ज शायद शकरकन्दसे होता हो। अिसलिअे आजसे मैंने शकरकन्द छोड़ दिये हैं। टमाटर और अेक हरी तरकारी रोज लेता हूं।

तुम जहां भी हो मित्रोंसे मेरा प्यार कहना।

सस्नेह,

यरवडा मंदिर, २२-९-'३०

बापू

११२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मुजफ्फरपुरमें पूरे चार दिनका आराम भी तुम्हें नहीं मिला या तुमने नहीं लिया। अबकी बार तुम्हारे वजनपालनके बारेमें मैं आग्रह रखूंगा। सेवाभावसे आराम क्यों नहीं लेना चाहिये? अलबत्ता, अिसका दुरुपयोग आसानीसे किया जा सकता है और अकसर किया जाता है। लेकिन यह कोअी कारण नहीं कि अीमानदार लोग अीमानदारीसे आराम क्यों न लें, ताकि वे अधिक सेवाके योग्य रह सकें। मैं अिसे ज्यादा बुरा नहीं तो आत्मवंचना जरूर मानता हूं, जब कोअी शख्स यह कहता है कि मैं सेवामें अपनेको मिटा रहा हूं। क्या अीश्वर अैसी सेवाको स्थिरता और अनासक्तिके साथ की गअी सेवासे ज्यादा अच्छी समझता है? शरीर अेक यंत्रकी तरह है, जिसे पूरा काम देनेके लिअे अच्छी तरह रखनेकी आवश्यकता है। लेकिन सुरक्षित अेकांतवासमें अुपदेश काफी हो गया। अितनी बात मुझे जरूर लगती है कि मुझे आवश्यक आराम लेनेमें शर्म नहीं आअी। मेरे आसपासके लोग मेरे सम्बन्धमें अिससे अुलटा मानते हैं। अिसका कारण आरामके कानूनके बारेमें अुनका

अज्ञान है। ठीक ढगसे और अुचित समय पर लिया गया आराम कहावतके अनुसार फटे कपडेमे समय पर टाका लगाने जैसा ही है।

*　　　　*　　　　*

मै कताअी और पिजाअी दोनोमे अूचे दर्जे पर पहुचना चाहता हू। कोअी वजह नही कि मै फी घटे १६० तार पर ही रुक जाअू। अब मुझे विश्वास हो गया है कि मै और तरक्की कर सकता हू। मेरे लिअे यह भगवानका काम है। अगर अुसकी मर्जी होगी तो वह मुझे शक्ति और योग्यता दे देगा। .

मेरा वजन १०३ और १०४ के बीचमे है। भोजन लगभग वैसा ही है।

सस्नेह,

२८-९-'३०　　　　बापू

११३

चि० मीरा,

यह पत्र मै मौन लेनेके बाद लिख रहा हू। अभी तुम्हारा चित्र और लोगोके साथ 'टाअिम्स अिलस्ट्रेटेड वीकली' मे छपा हुआ देखा। तुम तकली पर कात रही हो और तदुरुस्त दिखाअी देती हो। फिर मैने 'बम्बअी क्रानिकल' मे देखा कि तुम स्त्रियोके जुलूसमे थी और अुनकी सभामे बोली। तो तुम फिर मेरे घरके पास आ गअी और शायद यह पत्र तुम्हे आश्रममे मिलेगा।

. . . मद्रासमे तुम कहा ठहरी थी?

पिछले सप्ताह, अपना चरखा काकाको देकर मैने सोचा था कि मै अपना सूत निश्चित मात्रामे तुम्हारे चरखे पर कात लूगा। मैने बडी कोशिश की, परन्तु मै अुसे चला न सका। तकुआ घूमा ही नही। मालने काम नही दिया या क्या कारण हुआ, यह मै समझ नही सका। मगर वह घूमता ही नही था। फिर मैने सूरतके गाडीवका विचार किया।

अुसे मैंने गैरमामूली तौर पर कारगर पाया। पिछले दो दिनसे मैं अुस पर अपना पूरा सूत कात लेता हू और वह भी बिलकुल ठीक समयमे और जरा भी थके बिना। अुसने मुझे मुग्ध कर लिया है और मैं चाहता हू तुम भी अुसे आजमाओ। असलमे यह गरीबोंका चरखा है। अिसका आविष्कारक कोअी यन्त्रशास्त्री नही है। पता नही अुसने अिसकी खोज कैसे कर ली। लेकिन अिसके हरअेक भागसे, मेरी रायमें, गरीबोंके लिअे चिन्ता जाहिर होती है। अुसकी कीमत १।। रुपया है, मगर मुझे यकीन है कि वह केवल आठ आनेमे बनाया जा सकता है। हिन्दुस्तानमें चलनेवाला यह सबसे हलका चरखा है। अुसके लिअे कमसे कम ध्यानकी जरूरत होती है। जितने चरखोंकी मुझे जानकारी है, अुन सबमें यह सबसे कम जगह घेरता है। अुस पर छोटा बच्चा भी काम कर सकता है। अगर टिकिया और तकुअे जमा करके रखे जाय, तो ये चरखे रोज हजारों तैयार किये जा सकते है। अिसकी बनावट सादगीकी मूर्ति है। अिस पर कुदरती तौर पर बारीक तार निकलता है। मेरा पहला ही तार ३० नंबरसे अूपरका निकला था। और मेरा खयाल है कि वह गतिमें भी हर चरखेसे मुकाबला कर सकता है। अुसमे कुछ सुधारोंकी गुंजाअिश है और वे लागतमे अेक पैसा भी बढाये बिना किये जा सकते है। मैंने दो सुधार किये है और अुनसे अिसकी लागत घट जायगी। मूल चरखेमें चमरखे लकडीके थे, जिनसे शोर होता था। मैंने अुन्हें हटाकर नारियलकी रस्सीके लगा दिये जो कमरेमें से अुठाअी गअी थी। मैंने तकुअे परकी काचकी झनझनानेवाली बत्तियां तोड डाली है और तकुअेको जगह पर रखनेके लिअे थोडासा सूत लपेट दिया है। अिसमे शोर बिलकुल नही होता। यह अेक अैसे आदमीकी राय है, जिसने अिस चरखेको अभी-अभी अपनाया है और पिछले चार दिनमे ही आजमाया है। अिसलिअे अुसमे सुधारकी जरूरत हो सकती है। परन्तु यह अैसा मामला जरूर है, जिसकी श्रद्धालुओंको निष्पक्ष जांच करनी चाहिये। मैं आविष्कारकको लिखकर कुछ सुधार सुझा रहा हू और केशूको भी लिख रहा हू कि वह भी जांच

करके परीक्षा कर ले और अगर मेरी प्रारंभिक राय जरा भी ठीक हो तो अुसमें सुधार करे। और भी खूबियां है। मगर अुनका वर्णन मुझे नहीं करना चाहिये, क्योंकि मुझे अभी और बहुतसे पत्र लिखने है। अगर तुम सोच सको कि तुम्हारे चरखे पर तकुआ क्यों नहीं घूमता तो मुझे लिखना।

* * *

हम दोनोंकी तदुरुस्ती बहुत अच्छी है। मेरा वजन कुछ बढा ही है। शाकका प्रयोग सफल हुआ दीखता है और यह जानकर मुझे प्रसन्नता होती है कि सूखा मेवा भी अुडा देनेसे खर्च बहुत कम हो जाता है। तरकारियोंमें मैं दो दिनसे पालक ले रहा हू, जिससे दस्त अपने आप हो जाता है। कभी-कभी शकरकन्द ले लेता हू। आशा है तुम्हें अब तक मेरे तमाम पत्र मिल गये होंगे। मैं किसी भी हफ्ते लिखे बिना नहीं रहा हू।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, ५-१०-'३०

बापू

११४

चि० मीरा,

आशा है तुम्हें गड़बड़में पड़े हुअे पत्र मिल गये होंगे। मुझे विश्वास है कि अुन्हें बीचमें नहीं रोक लिया गया होगा, परन्तु अेक स्थानसे दूसरे स्थान पर भेजनेमें देर हुआी होगी। स्पष्ट है कि जिसे तुम मेरी 'झिडकी' कहती हो, वह बिलकुल अुचित थी, क्योंकि तुम जर्जर स्थितिमें लौटी हो। सबसे बड़ी बात यह हुआी कि तुम अेक बुरी दुर्घटनाकी शिकार बनी। अब अपना वचन पूरा करके पूरा आराम लो। यह जानकर मुझे बडी राहत मिली कि तुम सरदारसे मिलती रहती हो। अिससे मालूम होता है कि तुम्हारी तबीयत सफर करने लायक है। मैं अभी तक गाडीव चरखे पर ही काम कर रहा हू और मेरा आनन्द बना हुआ है, बल्कि कुछ बढा ही है। अब मैं शास्त्रीय ढंगसे कात रहा

हू, यानी तार निकलनेके रास्तेमें गज भरका कपडा बिछाकर। मैं अेक मिनटमें ८ तार निकाल सकता हू और अेक तार कमसे कम दो फुटका होता है। अिसका अर्थ यह हुआ कि फी घटे २४० तार या ३०० गज सूत कतता है। अलबत्ता, अेक घटेमें अितना हो नही पाता। लेकिन अिसका कारण गाडीवका कोअी दोष नही है। कम सूत निकलनेका कारण तो तारका टूटना और अुससे समयका बरबाद होना है। लेकिन जबसे ध्यान लगानेका तरीका अख्तियार किया है, तार बहुत कम टूटते है। अिसलिअे मेरी गति बहुधा २०० गज फी घटे तक पहुच जाती है, जो मेरे लिअे बहुत अच्छी है। गाडीवके बारेमे मेरे विचार अभी कुछ भी प्रकाशित न करना। म अुन लोगोकी रिपोर्ट चाहता हू, जो आश्रममें प्रयोग करे। सबसे अधिक मुझे तुम्हारी रिपोर्ट चाहिये, अगर तुम्हारे पास अिसका प्रयोग करनेके लिअे अवकाश हो और रुचि हो। मैं जानता हू कि मेरी तरह तुम सबके पास ये प्रयोग करनेके लिअे समय नही है। अिसलिअे अुतना ही करना जितना सभव हो और तभी करना जब तुम अिसे जरूरी समझो। मेरे पास और कोअी काम नही है, अिसलिअे बहुत सभव है कि किसी अैसी चीजके गुण मुझे अधिक दिखाअी देते हो, जिसकी मैंने पहले अपेक्षा की हो और अब अुससे पहलेकी अपेक्षा सन्तोष मिल रहा हो।

पिछले दो दिनसे मं फिर द्राक्ष और खजूर लेने लगा हू, सिर्फ यह देखनेको कि मुझे जो सर्दी हो गअी है अुसका तरकारियोसे तो सम्बन्ध नही है। सयोगमे हो या और कोअी बात हो, मगर आज वह लगभग मिट गअी है। बहरहाल, तबीयत बिलकुल अच्छी है। वजन १०८ पौड है।

सस्नेह,

१२-१०-'३० बापू

आज मैंने १००वा भजन पूरा कर लिया है। हिन्दुस्तानी भजनोंमें अब केवल दोका अनुवाद करना बाकी रहा है। अिसका अर्थ यह हुआ कि अिस कामको मैंने लगभग आधा पूरा कर लिया है।

चि० मीरा,

बम्बअीसे भेजा तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे यह जानकर खुशी हुअी कि तुम्हारी तबीयत पहलेसे अच्छी है। तुमने जिस मनःस्थितिका वर्णन किया है, वह हरगिज न होने देनी चाहिये। अगर अनासक्त होकर काम करो, तो किसी भी बातके लिअे तुम भागदौड न करोगी और न अपने मन पर किसी बातका भार पडने दोगी। जब किसी सुपुर्द किये हुअे या अुठाये हुअे काममे हम अपना सारा हृदय लगा देते है, तो हम परिणाम अीश्वर पर छोड सकते है। तब कोअी भागदौड और कोअी चिन्ता नही रह सकती। राजा जनककी कथा तुम्हे मालूम है। वे कर्तव्यकी मूर्ति थे। अुनकी राजधानी जल रही है, यह अुन्हे मालूम था। लेकिन किसीने अुन्हे अिसकी खबर दी। अुनका अुत्तर यह था 'मेरी राजधानी जल जाय या बच जाय, अिसकी मुझे क्या चिन्ता!' अुन्होने अुसे बचानेकी भरसक कोशिश की थी। घटनास्थल पर अुनके जाने और वहा धूमधाम करनेसे आग बुझानेवालोका और दूसरोका ध्यान बट जाता और कुछ खराबी ही होती। वे भगवानके प्रतिनिधि मात्र थे। अुस हैसियतसे अुन्होने अपना भाग अदा कर दिया था और अिसलिअे वे शात और निश्चिन्त थे। अिसी तरह अगर हम भरसक अपना कर्तव्य कर चुके, तो हमारा काम बने या बिगडे, हम भी शात और निश्चिन्त हो सकते है, हमे होना चाहिये।

गाडीव* अब भी मुझे हर्ष और सन्तोष दे रहा है। अभी तक कोअी चीज टूटी नही है। जहा मुझे पहले पाच घटे लगते थे, वहा अब मै अपना काम तीन घटेके भीतर ही अच्छी तरह समाप्त कर लेता हू। तकलीके× सिवाय तीसरे पहरको अब कोअी काम नही रहता। अतः

* अेक नये प्रकारका चरखा।

× हाथका तकुआ।

दूसरे कामके लिअे वक्त रहता है। अगर गाडीवसे तुम्हे उतना ही सन्तोष मिलता हो जितना मुझे मिलता है, तो यात्रामें अुसे ले जा सकती हो। मेरे पास जो नमूना है, अुसकी लागत अेक रुपया है। अिसमें तकुअे और चरखेके पट्टेमे पेटी है और पट्टेकी अेक बाजूमे तकुआ रखनेका अत्यन्त सादा अुपाय भी शामिल है। कीमत और सादगीमे अिस चरखेकी कोअी बराबरी नही कर सकता। . .

सस्नेह,

यरवदा मदिर, १९-१०-'३०

बापू

११६

[मैं साबरमती आश्रम लौट आअी थी।]

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र और बिहारी चरखेको चलानेके बारेमे विस्तृत सूचना मिल गअी। तुम्हारे बताये अनुसार मैंने सब बाते की, सिवाय अिस बातके कि माल कहासे पलटे। मुझे मालूम नही कि वह चरखेके पट्टेके नजदीकसे नजदीक पलटे या दूरसे। किन्तु मै अेक और प्रयत्न करके देखूगा कि वह चलता है या नही। कमसे कम चलना तो चाहिये। अिधर गाडीव बराबर सन्तोष दे रहा है। . .

मुझे खुशी है कि तुम अभी तो दौरे पर नही जा रही हो। तुम्हे अपना शरीर फिरसे बना लेना चाहिये। हम दोनोकी तबीयत अच्छी रहती है। पिछले गुरुवारको मेरा वजन १०५ था और काकाका ११७। मैंने तरकारिया काफी कम कर दी है और खजूर फिर लेने लगा हूं। अभी और फेरबदल होगे।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, २६-१०-'३०

बापू

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे ख्यालमें जो गाडीव मुझे मिला है, अुसमें कोअी खास बात नहीं है। अुससे जितना कष्ट तुम्हें हुआ, अुतना ही काकाको हुआ। मैंने खराबीका पता लगा लिया, अुसे दूर कर दिया और अुसके बाद अुसने मुझे अेक बार भी तंग नहीं किया।

मेरे खयालमें अधिकांश वस्तुओंकी तरह चरखोंके बारेमें भी यह सही है कि जो चरखा अेकके अनुकूल हो यह जरूरी नहीं कि वह और सबके भी अनुकूल हो। विशेषज्ञोंको अलग-अलग किस्मोंके मूल्य ठीकठाक कर लेने पडते हैं। हम कार्यकर्त्ताओंको अुससे सन्तोष होना चाहिये, जिस पर कमसे कम कष्टसे अधिकसे अधिक काम हो सके। अगर मुझे आवश्यक यंत्र-शिक्षा मिली होती या अिस कलामें मेरी प्रतिभा होती, तो मुझे धुनाअी और कताअीमें और पीजन, चरखे और तकलीकी परीक्षा करनेमें निष्णात बननेमें बडी खुशी होती। मगर मुझे यही समझना चाहिये कि यह महत्त्वाकांक्षा मेरे लिअे निषिद्ध है, यद्यपि मैं खोज नहीं छोड़ूंगा। यहां खोज मेरे लिअे स्वधर्म है।

लम्बा हो या छोटा, मुझे आशा है कि कमसे कम अेक भजन रोज कर लूंगा। मराठी भजन मैंने काकाकी सहायतासे पूरे किये। बंगाली भजन भी शुरू कर दिये थे। परन्तु काकासे यह जानकर कि अुन सबका अनुवाद स्वयं कविवरने किया था या अुनकी निगरानीमें हुआ था, मैंने प्रयत्न करना भी पाप समझकर छोड दिया। अिसलिअे अब केवल ४२ भजन ही और रह गये हैं। मराठी भजन बहुत छोटे होनेके कारण कभी-कभी हर रात तीन भी कर लेता था। ४२ दिन बीतनेसे पहले पहले खतम कर लेनेकी आशा रखता हूं।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, ६-११-'३०　　　　बापू

११८

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे खुशी है कि तुम फिर पहलेकी-सी हालत महसूस कर रही हो। यह न समझना कि गाडीव चरखा तुम्हे आजमाना ही है। मुझे मालूम है कि तुम्हे बहुतसे काम करने पड़ते है और नियमित चलनेवाला चरखा होने पर शायद तुम अपना कताअी-यज्ञ बिना किसी झझटके पूरा कर सकोगी।

अेड्रूजसे मेरा प्यार कहना। मै अुन्हे रस्मी पत्र लिख सकता हू। परन्तु मै केवल रस्मी पत्र अुन्हे नही लिखना चाहता। अिससे तो यही अच्छा होगा कि मेरा मौन ही अुनसे बात करे। हृदयके प्रवाहके लिअे अकसर कलम बाधक नही तो अनावश्यक जरूर होती है।

महादेवको बहुत परिश्रम नही करना चाहिये। मैने अिस बारेमे अुसे सख्त पत्र लिखा है। मगर जब कभी वह अपने स्वास्थ्यके बारेमे लापरवाही करे, तब अुसे डाट दिया करो। मेरी सर्दी बिलकुल मिट गअी थी और अिसीलिअे मैने पिछले सप्ताह जब तुम्हे पत्र लिखा, तब मुझे अुसका खयाल तक नही आया। हा, आजकल तो खजूर और तरकारिया मिलाकर लेता हू, तरकारिया बहुत कम मात्रामे। सर्दी न हुअी होती तो तरकारियोसे मेरा काम मजेसे चल रहा था। अिस सप्ताहमे मै तुम्हे अिससे ज्यादा वक्त नही दे सकता।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, ७-११-'३० बापू

आशा है भजन मै अनुमानसे भी जल्दी पूरे कर लूगा।

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। गीताके अध्यायों पर मेरी टीकाके अनुवादकी व्यवस्था बिलकुल अच्छी है। मैं अिस सम्मिलित कार्यकी प्रतीक्षा करूंगा। अुन अध्यायोंमें मैं अपना हृदय अुंडेलना चाहता हूं। अिसका अर्थ होगा तुम्हारे लिअे और ज्यादा काम, और वह तुम्हारा बहुतसा समय ले लेगा। परन्तु मैं जानता हूं कि अुसमें तुम्हें थकान महसूस नहीं होगी, क्योंकि अुस कार्यमें तुम्हें प्रेम है।

यह लो, अिस बार तुम्हारे पास भेजनेको अंड्रूजका पत्र भी है। मुझे सीधा लिखे बिना अुनसे रहा नहीं गया। अन्तमें मैंने अुन्हें कुछ पंक्तियां भेज ही दीं। जब तक केशू गांडीव पर पूरा काबू न पा ले और तुम्हें चलती हुआी हालतमें अेक चरखा न दे दे, तब तक तुम अुसके लिअे समय न लगाना। मुझे तो वह नये-नये आनन्द देता ही रहता है। गतिचक्रकी मूल मालको आखिर छोड़ना पड़ा, क्योंकि अुसे कसनेके लिअे अुसे और ज्यादा नहीं काटा जा सकता था। वह काफी मजबूत और मोटी होनी चाहिये। हाथकती मालोंमें अुतनी मोटी मेरे पास थी नहीं। तुम जानती हो, मैंने अिन छोटी-छोटी चीजोंका बनाना न सीखकर कितनी बुरी गफलत की है। और अिस बात पर मैं तुला हुआ था कि माल हाथकी बनी हुआी ही होनी चाहिये। पहली कोशिशमें मुझे पूरे दो घंटे लगाने पड़े। वह सफल हुआी और अिसीलिअे हुआी कि छोटीसी ही माल बनानी थी। दूसरी कोशिशमें मेरा मुश्किलसे आधा घंटा खर्च हुआ होगा। आकस्मिक आवश्यकताके लिअे मुझे दूसरी भी बना लेनी पड़ी। और वह आवश्यकता भी तुरन्त हो गआी, क्योंकि जिन मूल धागोंसे मैंने माल बनाआी थी वे कमजोर थे। अब मैंने जरूरी मजबूती लानेके लिअे कितने ही धागोंको जल्दीसे बल लगानेकी अेक तरकीब

सोच ली है। अिसलिअे मेरे तीसरे प्रयत्नमें और भी कम समय लगेगा। और अिस बीचमें मैं हाथ-कती मजबूत डोरियोंके छोटे-छोटे टुकडे जमा कर रहा हू। अिन्हें मैं तकुअेके नीचे डालनेकी डोरिया वगैराके काममें ले सकता हू। अिन सब बातोंमें मुझे आनन्द और विश्राम मिलता है, क्योंकि अिनसे चरखे पर अधिक काबू प्राप्त होता है। . . यह तफसील मैंने तुम्हें अिसलिअे बताअी है कि तुम्हें अपने आनन्दका हिस्सेदार बनाअू। चरखा, तकली और धुनकी मेरे लिअे बडे आकर्षण हो गये हैं। मुझे अुनसे थकान ही महसूस नहीं होती। रोज अिच्छा होती है कि अिन्हें देनेको मेरे पास और अधिक समय हो। मैं चाहता हू कि तीनों पर अधिक काम हो सके। लेकिन मैं बडा अनघड, अहमक और मन्द हू। कुछ भी हो, मुझे लगता है कि बुढापेकी जडताके कारण ही मैं अधिक काम नहीं कर पाता। मेरा खयाल है कि मुझमें वह कुशलता नहीं है। मुझे यही जानकर सन्तोष होता है कि अिस हालतमें अीश्वर मेरी अिस छोटीसी भेटको ही अुत्तम समझकर स्वीकार कर लेगा।

अगर जाडेमें ठंढे पानीमें स्नान बरदाश्त कर सको, तो अिससे अधिक शक्तिवर्धक और क्या हो सकता है? प्रकृतिके विरुद्ध कोशिश न करना। अगर फौरन गरमी महसूस न हो, तो तुम फिर गरम पानीसे ही नहाने लग जाना। अुस प्रतिक्रियाके लिअे शर्त यह है कि खाली हाथोंसे जोरके साथ मालिश की जाय। मुझे १९१४ में लंदनमें छातीके दर्दके अुस कमबख्त दौरेके बाद ही ठंडे जलमें स्नान करना अफसोसके साथ छोडना पडा था। तुम्हारी खुराक बिलकुल अच्छी है। घी अधिक लेनेकी जरूरत हो सकती है। अनुभवने बता दिया है कि तुम्हें शक्ति, गरमी और वजन कायम रखनेके लिअे काफी मात्रामें घीकी आवश्यकता है।

*　　　*　　　*

ये चाचा, जिन्होंने शादी की है, क्या जरा अधेडसे नहीं है, जो बहुत विद्वान होकर भी हिज्जोंकी गलतियां करनेमें तो तुमसे होड लगाते

है? तो अपनी जन्मतिथि* के अनुसार तो तुम कुछ ही वर्षकी बच्ची हो!! अिसलिअे तुम्हारी आयु अभी बहुत बाकी है।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, १३-११-'३०

बापू

१२०

चि० मीरा,

फिर बुखार आ गया यह बुरी बात हुअी। लेकिन मेरे विचारसे अिसकी चिन्ता करना बेकार है। तुम्हारे शरीरमें जरूर जहर है। वह जरासा बहाना मिलते ही गडबड कर देता है। आअिन्दा जहा कारणका पता लग सके लगाकर अुससे बचनेकी कोशिश करो। अगर आरामकी ही जरूरत हो और आश्रममें न ले सको, तो जहा तुम्हारे खयालसे मिल सके वहा जाकर ले लो। तुम बीजापुर भी जा सकती हो। वहा छगनलाल है। या अैसी ही किसी और शात जगह चली जाओ। अेक सप्ताहके आरामसे भी तुम ठीक हो सकती हो।

तुम्हे यह जानकर खुशी होगी कि मैंने बिहारी चरखेको चला दिया है। मैंने तुम्हारी हिदायतो पर अमल किया और वह चलने लगा। चमरखो पर ध्यान देनेकी जरूरत थी । अेक और खुशखबरी। तुम जो तकलिया यहा छोड गअी थी अुनमें से अेकको पिछले तीन दिनसे आजमा रहा हू। अिससे मुझे अुस तकलीसे भी ज्यादा सन्तोष मिल रहा है जो मैंने बनाअी थी और जिस पर मै कात रहा था। मेरी तकलीका मुह भद्दा बना है। तुम्हारी तकलीका कही ज्यादा अच्छा है। गीताके पहले अध्यायके अपने सारका अनुवाद मैंने आज पढा। मुझे अुसमें तुम्हारा हाथ दिखाअी देता है। भावार्थकी काफी रक्षा हुअी है।

सस्नेह,

२३-११-'३०

बापू

---

* ७ नवम्बर १९२५। देखिये भूमिका पृष्ठ ३

चि० मीरा,

यह २९-११-'३० को प्रातःकालीन प्रार्थनाके बादका समय है। काफी ठंड है। लेकिन मैं प्रार्थनाके बाद और ५॥ बजेके बिगुल पर सैरको निकलनेसे पहले कुछ लिखनेका काम करता हूं।

प्रसन्नताकी बात है कि तुमने पत्र लिखा तब तुम्हारी तबीयत पहलेसे अच्छी थी। स्वास्थ्यरक्षाके मामलेकी तरह हर बातमें दरअसल हम बार-बार भूलें करके और अुनसे लाभ अुठाकर सीख सकते हैं। यह तुम्हें चेतावनी देनेके बजाय अपनी भूल स्वीकार करनेकी भूमिका है। गत गुरुवारको मुझे अचानक सख्त पेटका दर्द हो गया। मैं अुसे टाल सकता था, मगर बेवकूफीसे न टाल सका। तुम्हें मालूम है कुछ दिनसे मैं दही पर रह रहा हूं। वह अच्छा माफिक आया था। हां, दस्त तो अेनीमासे ही होता था। लेकिन जैसा तुमने देखा, वजन बढ़ रहा था और अन्यथा भी मेरा स्वास्थ्य ठीक था। अिसलिअे मैंने दही जारी रखा और वह भी गाढ़ा हिस्सा। अिससे अेनीमाके बावजूद कब्ज बढ़ गया। यह कमसे कम दही बन्द कर देनेके लिअे या अिससे भी बेहतर अेक दिनके लिअे भोजनमात्र छोड़ देनेके लिअे काफी चेतावनी थी। अैसा मैंने नहीं किया और दिनभर कष्ट पाया। मैंने खुद ही कै की। और खाया-पिया निकल गया, तो कुछ ही घंटोंमें दर्द मिट गया। दूसरे दिन द्राक्षके पानीके सिवाय कुछ नहीं लिया और वजन तो ३ पौंड घट गया, लेकिन मैं बिलकुल अच्छा हो गया। मेरा सदा यही हाल होता है। स्पष्ट है कि ९५ से अूपर मेरे वजनका कोअी ठिकाना नहीं और बहुत करके वह जहरीले माद्देसे बनता है। मैंने यह भी निश्चय कर लिया कि हो सके तो कब्जसे पिण्ड छुड़ा लूं। अिसलिअे मैंने दही अब भी बन्द कर रखा है। (लो बिगुल हो रहा है और फिलहाल लिखना बन्द करता हूं।) शामके ८ बजे फिर लिख रहा

हू। और आजकल अुबली हुआी पत्तिया, टमाटर और खजूर या द्राक्ष लेता हू। दस्त अपने आप हो जाता है, शक्ति बनी हुआी है और वजनमे और कमी नही हुआी है। कल मैंने शकरकन्द और आज १२ बादाम भी लिये। अिस परिवर्तन पर किसीके चौकनेकी जरूरत नही। अगर मुझे बराबर कमजोरी महसूस हुआी या वजन घटता रहा, तो फिर फौरन दूध लेने लगूगा और दूधके अुपवासके कारण तबीयत और भी अच्छी हो जायगी। अिसके विपरीत यदि परिवर्तन माफिक आ गया तो और भी हर्षका कारण होगा। अिसलिअे तुम सब अिस परिवर्तन पर खुशी मनाना। अगर यह चल गया तो ठीक है। न चला तो भी ठीक ही है। मै कोअी जोखम नही अुठाअूगा।

तो काका चले गये और जाते समय रो दिये। हम अेक-दूसरेके बहुत निकट आ गये थे। अुनके जानेके बाद दो घंटेके भीतर मेरे पास प्यारेलाल भेज दिये गये और कुदरती तौर पर अुन्होने मेरा काम सभाल लिया। मैंने अुन्हे तुम्हारे चरखे पर बैठाया। अुन्होने ८३ तार काते। वह जैसा मैंने ठीक करके रखा था लगभग वैसा ही चलता रहा। अब हमने मोढियेमे कुछ सुधार कर लिये है। जब मै यह पत्र लिख रहा हू, तब प्यारेलाल अैसे ही अेक सुधारमे लगे हुअे है। किसी न किसी तरह मुझे चरखा और अुसीकी तमाम बातोका खयाल रहता है। गाडीवमे भी बहुत सुधार हो रहा है। सुधरे हुअे चरखेको कल आजमानेकी आशा रखता हू। अुसमे खिसकाया जा सके अैसा पहिया और खिचावके लिअे स्प्रिग लगाअी जायगी। अगर वह अच्छी तरह चला, तो सूत जरूर ज्यादा निकलेगा। तकली पर धीरे-धीरे मेरा काबू होता जा रहा है। तुम्हारी तकली पर मेरी गति ८७ तार फी घटे तक पहुंच गअी है। परन्तु विनोबा कहते है कि मुझे पहले लोहेकी तकलीको आजमाना चाहिये। अुन्होने मुझे दो तकलिया भेजी है और मै अुनमे से अेक तकली पर काम करनेकी कोशिश कर रहा हू। जिस परिणामकी आशा रखी जाती है, वह अभी मुझे मिला नही है। लेकिन दिन-दिन

मेरा विश्वास बढता जा रहा है और मुझे आशा है कि मै तकली पर फी घटे जल्दी ही १०० तार निकालने लगूगा। . .

सस्नेह,

बापू

पुनश्च

प्यारेलालने बिहारी चरखे पर अच्छी शुरुआत की थी। परन्तु अुसमे सफलता नही मिली। मैने दूसरा गाडीव ठीक कर दिया और वह बिना किसी बाधाके मजेसे चलने लगा। सुपरिन्टेडेटकी मेहरबानीसे मैने गाडीवमे अपने सुधार करवा लिये है। आशा है वह अच्छी तरह काम देगा। मैने अुसे अभी चलाकर देख लिया है — रातके ८ बजकर ४५ मिनट। १-१२-'३०। भोजनका प्रयोग जारी है।

बापू

१२२

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

आश्रमकी डाक कल शामको मिली। अुसमे तुम्हारा अशातिप्रद पत्र भी है। अुससे चिन्ता तो नही होती, परन्तु विचारके लिअे सामग्री मिलती है। अिस स्वास्थ्यभंगका क्या कारण है? बहरहाल, तुम्हे पूरा आराम **लेना ही चाहिये**। तुम्हे मन और शरीर दोनोको विश्राम देना ही चाहिये। अिसलिअे धीरे चलो। गीताका छठा अध्याय पढ लो। योग धीरे-धीरे करना चाहिये। जो काम हम कर रहे है वह योग ही है। मुझे रोज अेक कार्ड डाल दिया करो।

सस्नेह,

४-१२-'३०

बापू

१२३

चि० मीरा,

मैंने तुम्हारा पत्र आखिरके लिअे जान-बूझकर अिस आशासे रख लिया है कि मैंने तुम्हे गुरुवारको जो पोस्टकार्ड लिखा था और जो तुमको, आशा है, समय पर मिल गया होगा, अुसका जवाब मुझे सोमवारके पहले या सोमवारको मिल जायगा। अुसमे मैंने तुम्हारे स्वास्थ्यका हाल पूछा था। यह कब्जका बना रहना चिन्ताकी बात है। मुझे अुम्मीद है कि जब यह पत्र तुम्हारे पास पहुचेगा, तब तक कब्जके दौरेका सारा असर मिट जायगा। मैंने तो थोडे दिनके लिअे प्रोटीनवाली खुराक छोडकर ही अपने कब्जसे पिंड छुडा लिया। अब मैं बादामके जरिये प्रोटीन ले रहा हू। अगर फिर दूध न शुरू करना पडे, तो मुझे बडी खुशी होगी। अभी थोडी कमजोरी मालूम होनेके सिवाय परिणाम सुन्दर रहा। बादाम मैं बडी सावधानीके साथ ले रहा हू। और केवल हरी तरकारियो और लगभग आधी छटांक बादाम पर शक्ति कायम नही रख सकता। मै आधी छटाक पिछले दो दिनसे ही लेने लगा हू। मुझे कोअी अन्न लेना पडेगा। अभी मैंने निश्चय नही किया है कि क्या लू। बाजरी या ज्वार जिसकी भी रोटी जेलमें बनती हो अुसीको आजमाना चाहता हू। अगर वह अनुकूल आ जाय तो मेरी समस्या सन्तोषप्रद रूपमे हल हो सकती है। लेकिन जल्दबाजी नही की जायगी और दुराग्रह तो होगा ही नही। ज्यो ही मुझे जरूरत महसूस होगी, फिर दूध लेने लगूगा।

अगले दस दिनोमे भजनावलिका अनुवाद पूरा कर लूगा। अिससे मुझे बड़ा आनन्द मिला है। अपने कामसे मुझे सन्तोष नही है। अिसके सिवाय कि यह प्रेमका काम है, अुसमें और कोअी गुण नही है — साहित्यिक गुण तो है ही नही। लेकिन अिससे तुम्हे भजनोंका अर्थ जाननेमें सहायता मिलेगी, और यही मेरा अुद्देश्य था। और जब

यह काम पूरा हो जायगा, तो आशा रखता हू कि दूसरा शुरू कर दूगा, अर्थात् गुजराती गीताकी भूमिकाका अनुवाद। मेरा विचार श्लोकोका अनुवाद करनेका नही है। परन्तु मै मौजूदा अनुवादोमे से अेकको पढ जाअूगा और जहा वह मेरे अनुवादसे भिन्न होगा वहा अुसे लिख दूगा। और हाशियेकी तमाम टिप्पणियोका अनुवाद कर दूगा। अिससे मेरा काम सरल हो जायगा और बहुतसा परिश्रम बच जायगा। यह काकाको भी पढा देना। अुन्हे अिस प्रस्तावमे दिलचस्पी होगी।

गाडीवमे आशासे कही अधिक सुधार हो गये हं। अब वह हलका चलता है। पहले जो खिचाव नही था वह भी आ गया है। लेकिन मै सुधारोका वर्णन करके तुम्हे थकाअूगा नही। अुनका वर्णन केशूके पत्रमे कर रहा हू। मुझे विश्वास है कि गतिमे अब अिससे दूसरा कोअी चरखा बढ नही सकता। लेकिन अभी अुसकी परीक्षा होती है। मै जानता हू कि मेरे आश्वासनसे अधिक सूत पैदा नही होगा।

तुम्हे अपनेको खूब आराम **देना ही चाहिये।** और तनावमे काम नही करना चाहिये। वह चरखेके लिअे तो अच्छा है, परन्तु अिन्सानोके लिअे अच्छा नही है।

सस्नेह,

८-१२-'३०

बापू

१२४

१३-१२-'३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पोस्टकार्ड यथासमय मिल गया। तुम्हारी तरफसे और कोअी समाचार न मिलनेका अर्थ मै यह समझता हू कि तुम्हारी तबीयत फिर पहले जैसी ही हो गअी है। हर बीमारीके बाद तुम जल्दी अच्छी हो जाती हो, क्योकि चिकित्सा प्राकृतिक की जाती है। परन्तु हर बीमारीके बाद शरीरको पूरा आराम न दिया जाय और मनको

तनावसे राहत न मिले, तो बादमे कमजोरी रहनेकी परम्परा पड जाती है। मेरे खयालसे मानसिक काबू सबसे कठिन है। अिसके लिअे अुत्तम अुपाय गीताका अभ्यास है। जब-जब मनको आघात लगता है, तभी अभ्यासमे असफलता रहती है। अच्छी और बुरी खबर दोनो ही तुम परसे अिसी तरह गुजर जानी चाहिये, जेसे बतखकी पीठ पर पानी। जब हम कोअी समाचार सुने तब हमारा कर्तव्य अितना ही पता लगा लेना है कि किसी कार्रवाअीकी जरूरत है या नही, और अगर है तो परिणामसे प्रभावित या अुसके प्रति आसक्त हुअे बिना प्रकृतिके हाथोमे साधन बनकर कर्म करे। अगर हम यह याद रखे कि किसी परिणामको लानेमे अेकसे अधिक साधन अिस्तेमाल किये जाते हे, तो अिस अनासक्तिकी वैज्ञानिक आवश्यकता प्रतीत होती है। यह कहनेका साहस कौन करेगा कि 'मैंने किया है'? मे जानता हू यह सब तुम्हे मालूम हे। फिर भी मै अिस सत्यको जोरके साथ कहता हू ताकि दिमागसे वह हृदयमे अुतर जाय। जब तक वह केवल दिमागमे रहता है, तब तक वह अुस पर निरा बोझ बना रहता है। दिमागकी मानी हुअी सचाअीको फौरन दिलमे अुतार लेना चाहिये। जब अैसा नही होता है तब वह बेकार जाती है और फिर वह जहरीला मवाद बनकर दिमागमे पडी रहती हे। जो चीज दिमागको जहरीला बनाती है, वह सारे शरीरको जहरीला कर देती है। अिसलिअे दिमागको अिस तरह अिस्तेमाल करनेकी जरूरत है, मानो वह केवल डाक-घर है। जो कुछ अुसमे आता है वह या तो फौरन कार्रवाअीके लिअे दिलके सुपुर्द कर दिया जाता है, या वहा भेजनेके लिअे अयोग्य समझा जाकर अुसी वक्त फेक दिया जाता है। दिमागके अच्छी तरह यह काम न कर सकनेके कारण ही लगभग तमाम शारीरिक खराबिया होती है और मानसिक थकान भी होती है। अगर दिमाग सिर्फ अपना काम करता रहे, तो कभी दिमागकी थकावट होनेकी जरूरत नही है। अिसलिअे जब कभी हमे बीमारी होती है, तब आम तौर पर खाने-पीनेकी ही भूल नही होती बल्कि दिमाग भी ठीक तरहसे काम नही करता। स्पष्ट है कि गीता-

कारने यह बात समझ ली थी। और अुसने ससारको रामबाण औषधि यथासभव स्पष्ट भाषामे बता दी। अिसलिअे जब कभी कोअी चीज तुम्हारे मनको कुतरने लगे, तो तुम्हे गीताके मुख्य अुपदेश पर ध्यान लगाना चाहिये और अुस बोझको अुतार फेकना चाहिये। हमे आशा रखनी चाहिये कि अैसा भयकर कब्ज फिर कभी न होगा।

* * *

मेरा दूध छोडनेका प्रयोग जारी है और अभी तक कोअी दुष्परिणाम नही हुआ है। वजन और तीन पौड घट गया है, लेकिन ताकत वैसी ही है। वजन कम होनेका अेक कारण यह है कि अन्न और बादामकी मात्रा बढानेके बारेमे मै बहुत ही फूक फूककर कदम रख रहा हू। बादाम वही ३ तोला लेता हू और बाजरी और ज्वारकी भाखरी आध पाव । यानी ११ बजे और ५ बजे दो दो तोलेके करीब। मेरा वजन जल्दी ही बढ सकता है। बहरहाल, आते बहुत ही अच्छी तरह काम कर रही हैं। मै तुमसे बिलकुल सहमत हू कि अेनीमाकी आदत बुरी चीज है और अुससे पिड छूट सकता हो तो छुडा लेना चाहिये। तुम्हे याद होगा कि जैसे वर्धा जाने पर मैने दूध छोड दिया था और मेरा अेनीमा छूट गया था, अुसी तरह दूध छोडनेसे यहा भी अेनीमा छूट सका है। मौजूदा खुराकमे वर्धाके भोजनसे थोडा परिवर्तन है।

तुम जब कभी बीमार हो जाओ, तब साप्ताहिक पत्रके दिनकी प्रतीक्षा किये बिना ही मुझे तुरन्त लिख देनेमे सकोच न करना।

सस्नेह,

बापू

१२८

शामके ४–३० बजे

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्रसे मेरे स्वास्थ्यके बारेमे अैसी चिन्ता प्रगट होती है, जिसकी बिलकुल जरूरत नही। गुरुवारको जो वजन लिया गया था, अुससे डेढ पौडकी वृद्धि जान पडती है। यह सात दिनमे बहुत अच्छी वृद्धि है। मुझे कोअी कमजोरी भी महसूस नही होती। मै अपनी दो घटेकी तकली कताअी आम तौर पर खडे-खडे करता हू और कोअी खास थकान मालूम नही होती। तकली खतम करनेके बाद अभी-अभी यह पत्र लिखने बैठा हू। पिछली बार की हुअी तमाम भूलोसे बच रहा हू। सारा भोजन यानी तरकारी और रोटी अच्छी तरह पकाया जाता है। रोटी जब मुझे मिलती है, तो दुबारा सेकी जाती है। तुम्हे याद होना चाहिये कि पिछली बार सारा भोजन मय अन्न और दालके कच्चा था।* सच तो यह है कि मै आजकल लगभग वे ही चीजे ले रहा हू, जो कच्चा अन्न शुरू करनेसे पहले ले रहा था। फर्क अितना ही है कि गेहूके स्थान पर बाजरा या ज्वार ले रहा हू। शायद यह सुधार हुआ है। अेक दफे खौलता हुआ पानी, नीबू और नमक ले रहा हू। अिस सारे प्रगट सुधारके बावजूद अगर मुझे दस्तकी कोअी अनियमितता, कमजोरी (लगातार) या वजनकी लगातार कमी, अिन तीनोमे से कोअी चीज दिखाअी देगी तो मै फिर दूध लेने लगूगा। लेकिन अभी जब तदुरुस्ती अच्छी मालूम होती है, तो मुझे अपने आपको दूध छोडने और बाजरे या ज्वारकी रोटी लेनेके सुखसे वचित नही करना चाहिये। और यह बात भी है कि मुझे अिन रोटियोका स्वाद पसन्द है। अिस

---

* मैने अेक पत्रमे बापूको याद दिलाया था कि पहले अुन्होने साबरमती आश्रममे जब भोजनका अेक प्रयोग किया था, तो अुसके बाद अुन्हें पेचिशका सख्त दौरा हुआ था।

विस्तृत स्पष्टीकरण और वर्णनसे तुम्हे और दूसरे भाओी-बहनोको पूरा सन्तोष हो जाना चाहिये और भविष्यके लिअे कोअी चिन्ता न रहनी चाहिये।

मेरी रायमे जहा तक तुम्हारा सम्बन्ध है, जहा तुम्हारे खानेकी चीजो पर निगाह रखना जरूरी है वहा यह कहना भी जरूरी है कि तुम्हारा मुख्य रोग मानसिक है। मन पर जरासा दबाव पडते ही तुरन्त तुम्हारे शरीर पर अुसकी प्रतिक्रिया होती है। यह चिन्ताका रोग तुम्हे मिटा देनेका प्रयत्न करना चाहिये। 'किसी बातकी चिन्ता न करो।' 'खेतकी नलिनियोको देखो। न वे मेहनत करती है, न कातती है, फिर भी सुलेमान अपने पूर्ण गौरवमे भी अिनमे से अेककी भी बराबरी नही कर सकता था।' पता नही मैंने ठीक अुद्धरण दिया है या नही। बहरहाल, नलिनिया मेहनत नही करती, कातती नही, अैसा केवल अूपरसे दिखाअी देता है। असलमे वे दोनो काम करती है। लेकिन अितने स्वाभाविक रूपमे करती है कि हम अुनकी परिश्रमपूर्ण कताअीको देख नही पाते। अगर वे परिश्रम न करें तो मुरझा जाय। बात अितनी ही है कि अुनमे हमारी तरह अहंकार और अिसलिअे आसक्ति, पसन्दगी और नापसन्दगी नही है। लेकिन जब हम अुनकी तरह अनासक्त होकर मेहनत करेंगे, तो हमारी मेहनत दिखाअी नही देगी और अिसलिअे शरीर पर अुसका बुरा असर नही होगा। (शामके साढे सात बजे) तुम्हे, मुझे और हम सबको यह सुखद स्थिति प्राप्त करनेके लिअे ज्ञानपूर्वक और विचारपूर्वक प्रयत्न करना है। नही तो हमारा गीता पढना बेकार है।

खबरदार! स्टोवसे अपनेको जला न लेना। तुम जानती हो यह स्टोव काममे लेकर किस प्रकार गुजराती स्त्रिया जल चुकी हैं। ढीली ढाली साड़ियोसे, खास तौर पर स्टोव सुलगाते समय, जलनेकी बहुत संभावना रहती है। चूकि वह फर्श पर रखा जाता है, अिसलिअे स्त्रियोको झुकना पड़ता है और अुठती हुअी लपट साड़ीकी किसी तह या

खुले पल्लेको आसानीसे पकड लेती है। असलिअे तुम्हारे लिअे समझदारीकी बात यह होगी कि स्टोवको किसी धातुकी पडतवाली तिपाअी पर रखो। फिर तुम्हारे छोटेसे कमरेमे जगह भी तो बहुत थोडी है। बहरहाल, मैने तुम्हे चेतावनी दे दी। अब तुम सावधानी रखनेके लिअे जो मुनासिब समझो करना।

*　　　　*　　　　*

हा, मैने गीताके अपने अनुवादकी भूमिकाका पहला भाग अभी पूरा कर लिया है। मुझे आशा है कि कमसे कम अेक पैरा रोज कर दूगा। अगर कर सका तो भूमिकामे ज्यादा दिन नही लगेगे।

नये गाडीवमे लगभग वे सारे सुधार हो गये है जो मैने सोचे थे। दोनो मालोके लिअे दो स्प्रिग है। वह बाजेकी तरह काम कर रहा है और बहुत कम ध्यान देनेकी जरूरत होती है। ये सुधार करवानेके लिअे मै सुपरिन्टेडेट और अेक साथी अग्रेज कैदीका आभारी हू। वह होशियार कारीगर है और अिस काममे बहुत दिलचस्पी रखता है। अुसने मोढियेमे स्प्रिगको मौलिक ढगसे लगाया है। कल्पना अत्यन्त सादी और अुतनी ही कारगर है। लेकिन मुझे अिस विषय पर तुम्हे और अधिक नही रोकना चाहिये।

मुझे खुशी है कि तुमने सुरेन्द्रको सभाल लिया है। अुनका अिस तरह शरीरकी अुपेक्षा करना भारी अपराध है। सन्त फ्रासिस अपने शरीरको गधा कहते थे, फिर भी अुसकी कुछ सभाल रखते थे। और आखिर तो गधा बहुत ही अुपयोगी और धीरजवाला जानवर है। यह गधाभाअी भी अगर ठीक ढगसे रखा जाय और न अुसका लाड़-प्यार किया जाय और न लापरवाही की जाय, तो अुतना ही अपयोगी हो सकता है।

और यह लो प्रातकालकी प्रार्थनाका पहला श्लोक:

‘प्रातकालके समय मै अपने हृदयमे स्फुरित होनेवाले आत्मतत्त्वका स्मरण करता हू, वह सद्रूप, ज्ञानरूप और सुखरूप है, वह परमहसोंकी अतिम गति है, वह चतुर्थ अवस्था रूप है, वह स्वप्न, जाग्रति

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। अिस बार मुझे बहुत सक्षेपमे लिखना पडेगा, क्योकि डाक दो दिन देरसे आअी। अिसलिअे मै दूसरे श्लोकके अनुवादसे शुरू करता हू. 'जो मन और वाणीके लिअे अगोचर है, जिसकी कृपासे चतुर्विध वाणी प्रकट होती है, जिसका वर्णन वेदोने भी 'नेति नेति' कहकर ही किया है, अुस ब्रह्मको मै सुबह अुठकर भजता हू। ऋषियोने अुसे देवोका देव, अजन्मा, पतनरहित और सबका आदि कहकर पुकारा है।'

मै नही मानता कि अिसका अर्थ समझानेकी जरूरत है। भूमिकाका अनुवाद तेजीसे हो रहा है। और चूकि शुक्रवार तक आश्रमकी डाक नही आअी थी, अिसलिअे मैने फालतू वक्त अधिक पैरोका अनुवाद करनेमे लगा दिया। फल यह हुआ कि अब केवल दस ही और रह गये है। अुसके बाद सोचूगा कि गीता पर जो टिप्पणिया मै आश्रमवासियोके लिअे लिखता हू, अुनका अनुवाद कर सकता हू या नही। अभी तो तकली पर १०० तार कातनेमे बहुत समय लग जाता है, परन्तु अब मुझे गतिमे वृद्धि दिखाअी दे रही है। गाडीव पर मेरी गति आज पहलेसे बढ गअी है। यानी ४० मिनटमे १६९ तार निकाले। अिसका मतलब ६० मिनटमे २५५ हुअे। मुख्यत यह गति सुधारोके कारण हुअी है। अगर प्रगति होती रही, तो मुझे लिखनेके कामके लिअे कुछ समय और मिल सकता है क्योकि अभी तो अधिक सूत कातनेके बारेमे मै लालची नही बनना चाहता। जब तक मेरी गतिमे स्थायी रूपसे वृद्धि नही जान पडेगी, मै चरखे पर ३०० और तकली पर १०० तार ही कातता रहूगा।

मुझे पूरा भरोसा था कि तुम्हे अपनी विदेशी डाक मिल जायगी।

मेरी तदुरुस्ती खूब अच्छी है। अुसके बारेमें सामान्य पत्रमे अधिक लिखा है। . . .

सस्नेह,

२९/३०-१२-'३०

बापू

चि० मीरा,

प्रात:कालकी प्रार्थनाके पहले श्लोकके दो अनुवाद, जो तुमने मुझे भेजे है, मैने पढ लिये है। व्यवहारके लिअे और शायद अर्थ बतानेकी दृष्टिसे मुझे अपना अनुवाद अधिक पसन्द है। अगर तुम्हे कही कोअी कसर दिखाअी दे तो मुझे बताना। दूसरे श्लोकका अनुवाद मैने पिछली डाकसे तुम्हारे पास भेजा है। तीसरा यह है।

'अधकारसे परे, सूर्यके समान, पूर्ण, शाश्वत आधार, पुरुषोत्तम नामसे विदित, परमात्म तत्त्वको मै सुबह अुठकर नमस्कार करता हूं। अुस अनन्त स्वरूपके अन्दर यह सारा जगत अुसी तरह दिखाअी देता है, जैसे रस्सीमे साप।'

कल्पना यह है कि विश्व नित्य होनेके अर्थमे सत्य नहीं है, वह अैसी चीज भी नही है जिससे मोह रखा जाय और न अिसलिअे डरनेकी ही चीज है कि वह अीश्वरकी सृष्टि माना जाता है। सच तो यह है कि वह अुसी तरह हमारी कल्पनाकी सृष्टि है जैसे रस्सीमे साप दिखाअी देता है। असली विश्व तो असली रस्सीकी तरह है ही। दोनो ही हमको तब दिखाअी देते है जब पर्दा अुठ जाता है और अधकार मिट जाता है — तुलना करो 'और प्रात.काल होते ही वे फरिश्ता सूरते मुस्कराती है, जिनसे मुझे बहुत समयसे प्रेम रहा है और जो कुछ अरसेसे गुम हो गअी है।' ये तीनो श्लोक साथ-साथ चलते है और मेरे खयालसे शकरके बनाये हुअे है। तुम शंकरको जरूर जानती होगी, नही जानती? ५ दिन बाद मै भूमिकाका अनुवाद खतम कर लूगा। मेरा सुझाव यह है कि मै श्लोक और भजन तुम्हारे पास भेजता रहूं और साथ साथ जो टिप्पणियां मुझे सूझें वे भी भेजता रहू। तुम अपने ही सन्तोषके लिअे गीताकी साप्ताहिक टिप्पणियोंका अनुवाद जो कोअी तुम्हे मिल जाय अुसीकी मददसे करती रहो। मै जिस योजना पर चल रहा हूं, वह अच्छी तरह विचारी हुअी है। यानी सारी गीताके अनुवादको टिप्पणियोके मेरे अनुवादकी दृष्टिसे

देख लिया जाय। अिस प्रयत्नका कोअी अैसा अच्छा परिणाम निकल सकता है, जिसका आज हमें ज्ञान नही है। अगर मैं साप्ताहिक टिप्पणियोका अनुवाद शुरू कर दू, तो अूपरवाली योजना बिलकुल ठप हो सकती है। यह ठीक नही। मेरे भोजनके प्रयोगका सारा हाल तुम नारणदाससे जान लेना। अिस आश्वासनसे कि जरूरत मालूम होते ही मैं फिर दूध लेने लगूगा, चिन्ताका तमाम कारण मिट जाना चाहिये।

सफरी चरखेसे, मेरा खयाल है, तुम्हारा मतलब खादी प्रतिष्ठानके बने हुअे पेटी चरखेसे है। कुछ भी हो, तुम्हारी गति बेशक बहुत अच्छी है। जब तक काका कोअी बात न बता दे, गाडीव तुम्हारे दिमागसे निकल जाना चाहिये।

* * *

रोमा रोलाके स्वास्थ्यका हाल जानकर दुःख हुआ। अुन्हे मेरा नमस्कार जरूर लिखना और कहना कि मुझे अुनका अकसर खयाल आता रहता है और मैं प्रार्थना करता हू कि मानवजातिकी सेवाके लिअे वे चिरायु हो।

* * *

सस्नेह,

३-१-'३१ बापू

१२८

७ जनवरी, १९३१

चि० मीरा,

यद्यपि हमेशाकी तरह अभी तक आश्रमकी डाक नही मिली है, फिर भी समयकी तगीसे बचनेके लिअे मैं चिट्ठिया अभी शुरू कर देता हूं। यह लो चौथा श्लोक:

'समुद्र जिसके वस्त्र है, पर्वत जिसके स्तनमडल है और विष्णु जिसका स्वामी है, अैसी हे पृथ्वी माता, तुझे मैं नमस्कार करता हूं। मेरे पैर तुझे छूते है; मेरे अिस अपराधको क्षमा कर।'

पृथ्वीको नमस्कार करके हम पृथ्वीकी तरह ही नम्र बनना सीखते है या हमे सीखना चाहिये। जो प्राणी अुसे रौदते है, अुनका भी वह पालन करती है। अिसलिअे वह विष्णुकी पत्नी होने लायक ही है। मेरी रायमे यह कल्पना सत्यके विरुद्ध नही है। अुल्टे, वह सुन्दर है और ओीश्वरकी सर्वव्यापकताके विचारसे पूरी तरह सगत है। अुसके लिअे कोअी वस्तु जड नही है। हम तो मिट्टीके ही बने हुअे है। मिट्टी न हो तो हम भी न हो। मै ओीश्वरको पृथ्वीके द्वारा अनुभव करके ओीश्वरके साथ अधिक निकटता अनुभव करता हू। पृथ्वीको नमस्कार करनेमे मै ओीश्वरके प्रति अपना ऋण फौरन महसूस करता हू। और अगर मै अुस माताका सपूत हू, तो मै तुरन्त अपनेको मिट्टी बना लूगा और न केवल छोटेसे छोटे मानव प्राणियोके साथ ही, बल्कि सृष्टिके निम्नतम जीवोके साथ भी आत्मीयता स्थापित करनेमे खुशी मानूगा, क्योकि मिट्टीमे मिल जानेकी जो अुनकी गति है वही गति मेरी भी होगी। और अगर अिस भौतिक शरीरके बिना केवल जीवका विचार किया जाय, तो मै अपनेको अविनाशी समझता हू, सृष्टिका निम्नतम प्राणी ठीक अुतना ही अविनाशी है, जितनी मेरी आत्मा है।

अतिसारका यह दौरा मेरे लिअे निश्चित रूपसे ओीश्वरीय देन है। अिससे मुझे कोअी कष्ट नही हुआ और न मेरा काम रुका। तथापि अिसने मुझे कुछ पाठ पढा दिये है। मै अनुभव करता हू कि मै खानेमें लालच किया करता हू। बाजरा और ज्वार मेरे लिअ नये खाद्य है। मझे अुन्हे बहुत थोडी मात्रामे लेना चाहिये था और कभी कभी छोड देना चाहिये था। जाहिर है कि मेरे लिअे रोज अेक भाखरी बहुत अधिक थी। लेकिन मैने अैसा नही किया। मैने सोचा कि वजनकी कमी जल्दीसे पूरी कर लूगा। मै जी भर कर खाना जानता ही नही, चाहे मै कितना ही — यानी अपनी मर्यादाके भीतर — खा लू। मै हमेशा खाली पेट अुठता हू। अिसलिअे मै अपनी भूल हो जानेके बाद अुसे समझता हूं। दूसरी बात यह है कि करीब करीब हर चीज मेरे

लिअे स्वादिष्ट होती है। मैने बाजरा और ज्वार कैदी भाअियोके साथ काफी अेकता अनुभव करनेके लिअे शुरू किये थे। लेकिन मेरे लिअे ये भाखरिया निश्चित रूपसे स्वादिष्ट थी। अैसे मिश्र सयोगोमे सयम रख सकना ही नही, बल्कि कम खाना भी कठिन कार्य है। हलके बदन-वाले लोगोके लिअे भी अैसा जान पड़ता है कि कभी-कभी और कमसे कम महीनेमे अेक बार अुपवास कर लेना अच्छी चीज है। परन्तु अिसे 'सकट काल' कहा जा सके, तो मालूम होता है कि मैने अुस पर काबू पा लिया है। मै अिस प्रयोगको बिलकुल तो बन्द नही कर रहा हू, परन्तु जैसी जरूरत मालूम होगी समय समय पर अुसमे संशोधन कर लूगा। तुम जानती हो कि मैने कल दही लिया था। ग्यारह बजे तबीयत बिलकुल अच्छी होनेके कारण मैने दो बार भुने हुअे बादाम बारीक पीसकर और द्राक्ष भिगोकर लिये। आज (बुधवार) की स्थिति यह है। यह पत्र ६ दिन बाद डाकमे पडेगा। आगेकी घटनाये तुम्हे अिस पत्रसे या सबके नामके पत्रसे मालूम होगी। अितनी तफसील अिसलिअे लिख रहा हू कि तुम्हे और दूसरोको निश्चिन्तता रहे। यह जानकर कि मेरे स्वास्थ्यमे जरासी गडबड़ होने पर तुम सब लोग चिन्तामे पड जाते हो, मुझे अुस गडबड़से भी ज्यादा चिन्ता हो जाती है। मेरे लिअे भोजनके प्रयोग कतअी छोड देना बहुत बुरा होगा। यह मेरी खोजका अेक अग है। परन्तु बुराअी प्रयोगमे नही है, बुराअी मेरे अन्दर है। मैने भोजनको शुद्ध और सादे रूपमे दवाके तौर पर लेनेकी कला नही सीखी। अिसका अर्थ होता है, जिव्हा पर सम्पूर्ण विजय। अभी मै अिससे बहुत दूर हू। मेरा विश्वास है कि मुझे यह विजय प्राप्त हो जाय, तो दूध छोड़ देनेका काम आसान हो जायगा। मुझे जरा भी शका नही है कि दूध स्वस्थ मनुष्यका खाद्य नही है। जब मै तदुरुस्त था तब दूधके बिना छः साल तक रहा हू। वह स्वास्थ्य मैने अपनी बेवकूफीसे बिगाड लिया। अुस मूर्खताका परिणाम मिटानेके लिअे, मैने अपने प्राण देनेके बजाय दूध लेना शुरू कर दिया। और सदा आशा रखी कि लड-झगड़कर फिर अिससे पिड छुडा लूगा।

यह लड़ाअी जारी रहनी चाहिये। हर बार पराजय मुझे नम्र बनाती है, शुद्ध करती है और नये-नये दृष्टिकोण अुपस्थित करती है। पराजयके साथ लड़ाअी करनेकी प्रेरणा और भी तीव्र होती है। अुसके जारी रहनेसे मुझे शाति मिलती है। सिविल सर्जन कर्नल स्टील हर पखवाड़े मुझे देखने आते है और मेजर मार्टिन आज ही आये थे। अुन्होने पहली बात यह कही कि मै गैरमामूली तौर पर अच्छा दिखाअी दे रहा हूं। और यह भी लगभग तीन दिनके अुपवासके बाद। अुनका कहना सही था। अिस 'सकट'के कारण मेरी तबीयत पहलेसे खराब नही हुअी। अिसलिअे और वैसे भी किसी बातकी चिन्ता न करना।

१२-१-'३१

पत्रको जहा मैने ७ तारीखको छोड़ा था वहीसे लेता हू। मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी मालूम होती है। दस्त फिर बिलकुल नियमित होने लगा है। मेरा भोजन सुबह पानीमे घोली हुअी बादामकी लुगदी और खजूर, दुपहरको दही और खजूर और शामको पानीमे घोली हुअी बादामकी लुगदी और खजूर है। साढे सात बजे सुबह गरम पानी, नीबू और नमक और डेढ बजे दुपहरको ठडा पानी, नीबू और सोडा लेता हू। . . .

अिस बारेमे भी कोअी नअी खबर देनेको नही है। सावधान, स्वास्थ्यकी अिन गडबडोके बारेमे कोअी बात प्रकाशित न करना। क्योकि जनता अुन्हे बढ़ाचढा कर समझ लेगी, अनावश्यक घबराहट पैदा होगी और सरकार पर अनुचित दोषारोपण होगा। कमसे कम अिस मामलेमे अुसे कुछ भी दोष नही दिया जा सकता।

तुम्हारा पत्र और पोस्टकार्ड मिल गये। अीश्वरको धन्यवाद देना चाहिये कि रोला खतरेसे बाहर हो गये। अभी ससारको अुनकी बहुत वर्षो तक जरूरत है। जहा तक हमे दिखाअी देता है, अुनका काम पूरा नही हुआ है। अुन्हे मेरा सस्नेह वन्दे लिखना और कहना कि अुन्हें थोडे समय तक जरूर बने रहना चाहिये।

भूमिकाका अनुवाद दो दिन पहले ही समाप्त हो चुका और अभी कोअी और काम हाथमें नही लिया है। मूल योजनाको हाथमे लेनेकी जीमे आती है। आश्रमकी डाक पूरी करनेके बाद सभव है कल कोअी निश्चय कर लू।

*　　　　*　　　　*

गुप्तताके बारेमे तुम्हारे प्रगट किये हुअे विचारोमे कुछ गडबड़ मालूम होती है। अगर कोअी कसाअी मुझसे पूछे कि गाय किधर गअी है, तो अुसे बता देना हरगिज़ मेरा धर्म नही है। मै अुसे गलत रास्ता भी न बताअू और न यह बताअू कि गाय कहा गअी। अितना ही नही, मैं गायको छिपा भी सकता हू। अैसा करना सचमुच मेरा धर्म होगा। अिस दृष्टातसे हम परिस्थितिके अनुसार अपना आचरण निश्चित कर सकते हैं।

सस्नेह

१२-१-'३१

बापू

तोतारामजीके बागवानीके प्रेमका तुम्हारा वर्णन मनोहर है। मैं चाहता हू कि कुछ नौजवान अुनसे यह कला सीख ले। तुम्हे नारणदाससे अिसकी चर्चा करनी चाहिये।

१२९

१४-१-'३१

चि० मीरा,

फिर तुम्हारे ही पत्रके साथ आश्रमकी चिट्ठिया शुरू करता हू। और वह भी प्रात.कालीन प्रार्थनाके ठीक बादमे। पाचवा श्लोक यह है:

'जो मोगरे, चन्द्रमा या बर्फके हार जैसी गौरवर्ण है, जो श्वेत वस्त्र पहने हुअे है, जिसके हाथ वीणाके सुन्दर दंडसे सुशोभित है, जो सफेद कमल पर विराजमान है, ब्रह्मा, विष्णु और महेशसे लेकर सभी देवता जिसकी नित्य स्तुति करते है, वह समस्त अज्ञान और जड़ताका नाश करनेवाली देवी सरस्वती मेरी रक्षा करे।'

१८-१-'३१

मेरे लिअे यह विचार बहुत सुन्दर है। विद्याका अर्थ अवश्य ही ज्ञान है। तीनो प्रकारकी यानी बर्फ, चन्द्रमा और फूलकी सफेदीका और सफेद पोशाक और श्वेतासनका आशय यह है कि ज्ञान या विद्याका संपूर्ण शुद्धि अेक अनिवार्य अंग है। अिन श्लोको और अैसे ही दूसरे श्लोकोंके गहरे अर्थकी खोज करने पर तुम्हे पता चलेगा कि कोषके अेक रूखेसूखे शब्दके बजाय हरेक गुणको मूर्तरूप देकर सजीव सत्य बना दिया गया है। ये काल्पनिक देवता हमारी पाचों अिन्द्रियोंसे जाने जानेवाले कथित सत्य पदार्थोसे अधिक सत्य है। अुदाहरणके लिअे, जब मै अिस श्लोकका पाठ करता हू, तो मुझे कभी खयाल नही होता कि मै किसी काल्पनिक चित्रसे बात कर रहा हू। अिसका पाठ अेक आध्यात्मिक क्रिया है। जब मै अिस क्रियाका बुद्धिसे विश्लेषण करता हूं, तब मुझे मालूम होता है कि देवी कोअी काल्पनिक प्राणी है। परन्तु अिससे प्रार्थनाके समय अिस पाठके महत्त्वमे कुछ भी अन्तर नही पड़ता। अगर ये सब बाते साफ तुम्हारी समझमे न आये तो नि.संकोच होकर मुझसे पूछते रहना चाहिये। तो तुम फिर प्रवास करने लगोगी। मै अितना ही कह सकता हू कि 'अति न करना और सहनशक्तिसे अधिक परिश्रम न करना।'

मैने सुरेन्द्रके बारेमे तार दिया था। अुन्होने अुपवास अवश्य छोड़ दिया होगा। मै बिलकुल अच्छा हू। अभी तक मैने शाक या रोटी लेना फिर शुरू नही किया है। मालूम होता है बादाम, खजूर और थोडासा दूध या दही और नीबूसे मेरी तदुरुस्ती बिलकुल ठीक रहती है। लगभग दो घटे खडे खडे तकली कात सकना मेरे लिअे कम बात नही है। और लगभग दो घंटे कोअी सहारा लिये बगैर चरखे पर बैठता हू। अिसमे धुनने और पूनियां बनानेका लगभग पौन घटा और जोड दो।

सस्नेह,

बापू

१३०

[म फिर खादीके दौरे पर थी।]

चि० मीरा,

आज फिर प्रार्थनाके बाद बुधवारका प्रात काल है। अगर पिछले सप्ताहकी तरह आज भी सौभाग्य हुआ, तो आज सुबह ८ बजेके करीब मुझे डाक मिल सकती है। परन्तु साप्ताहिक पत्रोको शुरू कर देनेसे पहले तुम्हारे लिअे श्लोक (अिस बार दो होगे) नकल कर देनेमे मुझे आनन्द आता है। तो यह लो, छठा और सातवा श्लोक और साथ ही तत्काल लिखी गअी टिप्पणिया .

> ६ 'जिनका मुख टेढा है, जिनका शरीर विशाल है, करोडो सूर्यके बराबर जिनकी काति है, अैसे हे गणेशजी मेरे सारे शुभ कर्मोमें मुझे निर्विघ्न करो।'

टिप्पणी यह अीश्वरके लिअे ओकारके रूपमे कहा गया है, अिसका टेढा मुख और बडा शरीर देखो। अिसकी गूढ महत्ता अुपनिषदोमे वर्णन की गअी है।

> ७ 'गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है और गुरु ही महादेव है, गुरु साक्षात् परब्रह्म है, अैसे श्री गुरुको मै नमस्कार करता हू।'

टिप्पणी: यहा अवश्य ही मतलब आध्यात्मिक गुरुसे है। यह कोअी यात्रिक या कृत्रिम सबन्ध नही है। गुरु असलमे यह सब कुछ नही है। परन्तु अुस शिष्यके लिअे वह सब कुछ है, जो अुसमें पूरा संतोष अनुभव करता है, जो अुसमें सम्पूर्णताका आरोपण करता है, जिसे अुस गुरुने सजीव अीश्वरमें सजीव श्रद्धा प्रदान की है। अैसा गुरु कमसे कम आजकल तो क्वचित ही मिलता है। अिसलिअे अुत्तम बात यही है कि स्वयं अीश्वरको ही अपना गुरु समझा जाय या श्रद्धापूर्वक अैसे गुरुकी प्रतीक्षा की जाय।

अिन टिप्पणियोसे अधिक और किसी टीकाकी आवश्यकता नही जान पडती।

आगेके अनुवादके बारेमे निश्चय हो गया। मुझे अपने ही सन्तोषके लिअे अनुवाद शुरू कर देना चाहिये। कोअी जल्दीका रास्ता अन्तमे लम्बा साबित होगा। प्रारभ करनेके बाद रुकना नही होगा। अिसलिअे जब तक कामका मौजूदा दबाव बना हुआ है, तब तक शुरुआत करनेमे मुझे डरसा लग रहा है। डर सच्चेकी अपेक्षा मानसिक अधिक है। परन्तु मन सत्य पर हावी हो जाता है।

*　　*　　*

२५-१-'३१

सिधसे तुम्हारा पत्र मिला। दूसरे अध्यायका अनुवाद बढिया है। मै दो शुद्धिया सुझाअूगा। पहले पृष्ठ पर मै 'खयाल' के बजाय 'कमजोरी' रखूगा और सातवे पृष्ठ पर 'वेदानुयायी' के स्थान पर 'वेदके अक्षरोका अनुसरण करनेवाले' पसन्द करूगा। दूसरी शुद्धि बहुत महत्त्वपूर्ण है, पहली अुतनी नही है। गीताके अनुयायी वेदोके भी अनुयायी है। ये लोग आत्माका अनुसरण करते है। लेकिन वेदके अक्षरोका अनुसरण करनेवाले, जैसा कि अिस नामसे ही अर्थ निकलता है, अक्षरो पर जाते है। मै नही जानता कि मुझे तुम्हारी भेजी हुअी टिप्पणिया लौटानी थी या नही। मै तुम्हारा पत्र दुबारा नही पढूंगा, परन्तु तुम्हारा पत्र आने तक तुम्हारी टिप्पणियोको सुरक्षित रखूगा। तुरन्त प्रकाशित करनेके लिअे अुनकी अब जरूरत नही रही। यद्यपि यह कभी भी प्रकाशित करने लायक है, बशर्ते कि अुसमे वह महत्वपूर्ण शुद्धि हो जाय। पुनर्जन्मके बारेमे तुमने जो लिखा है, सही है। यह प्रकृतिकी कृपा है कि हमे पूर्वजन्मोंका स्मरण नही है। हमने जो असख्य जन्म लिये है, अुनकी तफसील जाननेसे फायदा भी क्या है? अगर हम स्मृतियोका अैसा भयकर भार ढोते रहे, तो जीना दूभर हो जाय। ज्ञानवान मनुष्य बहुतसी बाते जानबूझकर भूल जाता है, ठीक अुसी तरह जैसे अेक वकील मुकदमो और अुनकी तफसीलको मुकदमोके खतम होते ही भूल जाता है। हा, 'मृत्यु केवल निद्रा और विस्मृति है।' मेरा स्वास्थ्य बिलकुल अच्छा है। अपनी शक्ति देखकर

तो मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है। मेरा खयाल है कि जब मं आश्रममें था, तब खड़े खडे दो घटे तक तकली नही चला सकता था। गुरुवारको मेरी तुलाअी हुअी थी और मेरा वजन ९८ पौड था। अेक सप्ताहमे २॥ पौड बढ़ा। यह बडी सफलता है। मै पिछले पाच दिनसे तरकारी, डबल रोटी, बादाम (लुगदी), खजूर और कुछ नीबू पर रह रहा हू। खजूर मुख्यतः सुबह लेता हू। डबल रोटीके टुकडे करके अच्छी तरह सेक लिये जाते है। मुझे दूध या दहीकी जरूरत महसूस नही हुअी। होगी तो कुछ भी ले लूगा। अिस प्रकार तुम देखोगी कि चिन्ताका कोअी कारण नही है। सभव है मुझे समय समय पर दूध या दहीकी मात्राकी जरूरत पड जाय। अगर पड गअी तो जैसे दवा लेता हू, वैसे यह भी ले लूगा।

सस्नेह,

२५-१-'३१ बापू

१३१

[पिछले पत्र और अिस पत्रके बीचके महीनोमे बडी-बडी घटनाये हो चुकी थी। बापू जेलसे छोड़ दिये गये थे, पडित मोतीलाल नेहरू चल बसे थे, गाधी-अर्विन समझौते पर हस्ताक्षर हो गये थे और कराची काग्रेस हो चुकी थी।]

चि० मीरा,

तुम्हारे प्रेमपत्र नियमित मिलते रहते है। मंने ध्यानमे रख लिया है कि तुम मुझसे १६ तारीखको बम्बअीमें अवश्य मिलोगी। भडोंचकी मुलाकात रद्द हो गअी। अिसलिअे मैं अिस महीनेकी १५ तारीखको अहमदाबादसे चलूंगा। अिसलिअे संभव है कि तुम अुसी गाड़ीसे जाओगी जिससे मैं जाअूगा। मै पहली डाकगाड़ीसे रवाना होअूगा।

यह पत्र तुम्हें ठीक अुसी दिन मिलेगा, जिस दिन तुम कराचीसे रवाना होगी। रोमा रोलाने अम्बालालभाअीको तार देकर तुम्हारे और

मेरे स्वास्थ्यके बारेमे पूछताछ की थी। मालूम होता है संवाददाताओने गडबड़ की थी। अुन्होने अुत्तरमे तार देकर बता दिया था कि हम दोनो आनन्दमें हैं। पता नही तुम्हे अपनी माताजीकी तरफसे कोअी समाचार मिले या नही। कुछ भी हो, अुन्हे व्यर्थ ही कअी दिनो तक चिन्ता रही होगी। छोटी चेचकसे तुम्हारा शरीर और भी शुद्ध हो जायगा।*

मैंने तुम्हे नही बताया कि मेरा रक्तचाप १६० से नीचे पाया गया, जो पिछली बारसे बेहतर है और नाडिया भी बिलकुल अच्छी है। डॉ० अे० का खयाल था कि दोनोमे ही बिगाड़ हुआ होगा। बेशक, अभी तक मै दुर्बल हू और काम करनेकी रुचि नही होती। लेकिन यह तो स्वाभाविक है। कराचीकी भयकर थकान अभी तक नही मिटी है।

* * *

सस्नेह,

बापू

१३२

चि० मीरा,

तुम दिमागमे बसी हुअी हो। अिधर अुधर देखता हूं और तुम्हारी याद आती है। चरखा खोलता हू तो तुम्हारा स्मरण होता है। अिसी तरह और बातोमे भी। मगर फायदा क्या? तुमने ठीक किया। तुमने अपना घर, अपने प्रियजन और ससारकी प्रियसे प्रिय वस्तुअे छोडी हैं। अिसलिअे नही कि मेरे शरीरकी सेवा करो, परन्तु अिसलिअे कि मै जिस काममे लगा हू अुसमे सहायक बनो। जब तक तुम अपना प्रेम मेरे शरीर पर व्यर्थ खर्च कर रही थी, मुझे महसूस होता था कि मैं गबन कर रहा हू। और मैं जरासे बहाने पर अुबल पडता था। अब जब तुम मेरे पास नही हो तो तुम्हे अिस तरह भयंकर झिडकियां

---

* मैं कराची काग्रेसकी छावनीमे छोटी चेचकसे बीमार हो गअी थी और मुझे बुखारके अस्पतालमे जाना पडा था।

लगानेके लिअे मेरा गुस्सा अपने आप पर निकल रहा हैं। लेकिन मैं जब तुमसे सेवा लेता था, तब क्रोधसे जल रहा था।* तुम मेरे कार्यकी प्रसन्नतापूर्वक सेवा करके मेरी सच्ची सेवा करोगी। "बच्चो, खुश रहो। बेकार रज न करो।"

सस्नेह,

२४-६-'३१

बापू

१३३

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हारे सब पत्र मिल गये। माताजी धीरे धीरे जा रही हैं। अन्त जल्दी ही हो जाय तो अच्छा है। शरीर कामका न रहा हो, तो अुसे छोड देना बेहतर है। अपने प्रियजनोको अधिकसे अधिक समय तक भौतिक शरीरमे देखनेकी अिच्छा स्वार्थपूर्ण अिच्छा है और वह कमजोरीसे या शरीरके नष्ट हो जानेके बाद आत्माके अस्तित्व पर श्रद्धा न होनेसे पैदा होती है। रूप सदा बदलता रहता है, सदा नष्ट होता रहता है; अुसके भीतर रहनेवाली आत्मा न कभी बदलती है न नष्ट होती है। सच्चा प्रेम वह है जो शरीरके बजाय अुसके भीतर रहनेवाली आत्माके प्रति रखा जाय और जो यह जरूरी तौर पर अनुभव करे कि असख्य शरीरोंमे रहनेवाली जीवात्माअे अेक ही है। अब तुम समझ जाओगी कि मै तुम्हे **अिस वक्त** लंदन जानेका प्रलोभन क्यो नही दे रहा हूं। लेकिन तुम जानती हो कि अैसा करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है, अगर तुम्हारा प्रेम तुम्हें अुधर

---

* भयंकर सघर्ष चल रहा था। मैं भी गुस्सेसे जल रही थी, क्योकि मुझे महसूस हो रहा था कि बापू क्रुद्ध हो गये हैं। यह अेक अवसर अैसा था, जब मैं किसी न किसी तरह बापूसे जुदा होकर चली गअी थी।

जानेको मजबूर करता हो। अगर तुम्हे वहा जानेकी प्रबल प्रेरणा हो जाय, तो अिसमे कोअी बुराअी नही है।

*   *   *

सस्नेह,

बोरसद, ६-७-'३१

बापू

१३४

चि० मीरा,

सदाकी तरह बम्बअीमे भी मुझे पत्रव्यवहारके लिअे समय नही मिला। अिस बार भी साढ़े चार बजे सुबहसे काम शुरू हुआ और रातके ११ बजे तक चलता रहा। अुस वक्तसे पहले मैं कभी नही सोया। फिर भी तदुरुस्ती बिलकुल अच्छी रही।

आज हम तड़के ही सूरत पहुच गये थे। मुझे घटे भरसे ज्यादा नीद आ गअी और अुससे आराम मालूम पड़ता है। मुझे अकेला छोड़ दिया गया है। मौसम ठडा है। आकाशमे बादल छाये हुअे है। ताजी और ठडी हवा बराबर चल रही है। अलबत्ता, बम्बअीमे भी यही हाल था। पता नही तुम्हारा क्या हाल है और फादर अेल्विन आश्रमके जीवन और जलवायुको कहा तक सहन कर रहे है।

हम आज रातको शिमला जा रहे है।* बा मेरे साथ होगी। मै नही समझता कि शिमलेमे मुझे तीन दिनसे ज्यादा देने पडेगे। वहा मुझे निश्चित मालूम हो जायगा कि हमे लदन जाना है या नही।

लो, यह महादेव तुम सबके समाचार लेकर आ गये है और यह पत्र यही रुक गया है।

तो माताजी चल बसी। तुम्हारे पत्रकी हर पक्तिमे छिपे हुअे शोकको मैंने पहचान लिया। आखिर तो हम अिन्सान ही है। शोकको छिपानेका सामर्थ्य अुसे मिटानेकी पहली सीढी है। भगवान तुम्हे वह

* बापूके गोलमेज परिषदमे जानेके सवाल पर लॉर्ड विलिंग्डनसे चर्चाके लिअे।

शक्ति दे। जहा तक खुद माताजीका सम्बन्ध है, तुम्हारे कहनेके अनुसार यह अच्छी खबर है। जिनसे तुम्हे अितना प्रेम था अुनकी मृत्युसे भविष्यके प्रति और सब प्राणियोकी अेकताके प्रति तुम्हारी श्रद्धा बढनी चाहिये। अगर यह अेकता सत्य न होती, तो हमे अपने प्रियजनोकी मौतको भूल जानेकी ताकत न मिली होती। अिस अवसानसे तुम्हे सेवाके लिअे आत्मसमर्पण करनेकी अधिक प्रेरणा भी मिलनी चाहिये।

पता नही तुम्हे जो खजूर चाहिये थे वे मिले या नही। मगर तुम अुनके वशीभूत न होना। मेरा अनुभव है कि अुनके बदलेमे द्राक्ष लेना बुरा नही है।

सस्नेह,

बापू

१३५

लिखाया हुआ

शिमला,
१९ जुलाअी, १९३१

चि० मीरा,

हमेशाकी तरह ही गुजरातसे बाहर मुझे चिट्ठिया लिखनेका समय नही मिलता। और शिमलेमे बम्बअीसे जरा ही अच्छा हाल है। यद्यपि यहा मिलनेवालोकी अुतनी भीड नही है, फिर भी अिमर्सनके पास हर वक्त हाजिर रहने और गृहसदस्य तथा वाअिसरायसे अलग-अलग और बेहद लम्बी मुलाकातोके बाद मुझे और किसी कामके लिअे वक्त ही नही मिलता। दो बार तो मुझे शामका भोजन भी जल्दी-जल्दीमे खतम करना पडा।

मैंने तुम्हारी सलाहके अनुसार भूमिकाको 'पुस्तकालय'मे पढा। मूल बहुत अच्छा होना चाहिये। रोमा रोला जो कुछ लिखते है अुस सब पर बहुत अधिक परिश्रम करते है, यह देखकर आश्चर्य होता है। यह भूमिका अुस रूपरेखाकी तरह है, जो अुन्होने पहले लिखी थी।

अिसमें अुनकी अब तककी राय आ गअी। तुम्हारा अनुवाद बिलकुल सुपाठ्य है। अुसे कअी जगह थोडा ठीक करनेकी जरूरत अवश्य है, परन्तु मुझे अुससे यह समझनेमे कठिनाअी नही होती कि मूल कैसा होगा। तुम्हारे अनुवादकी तारीफ यह है कि वह मूलके अनुसार है।

तुमने बताये है अुन कारणोसे तुम निश्चित रूपसे यह जाननेके लिअे स्वाभाविक तौर पर अुत्सुक हो कि हम लदन जा रहे है या नही। लेकिन मुझे डर है कि शिमला-यात्रा खतम होने पर भी शायद मै किसी फैसले पर न पहुच सकू। बहुतसी कठिनाअिया और बाधाअे है। मेरे खयालसे मैंने अधिकारियोंको स्पष्ट कर दिया है कि अगर वर्तमान असन्तोषजनक स्थिति बनी रही तो मै नही जा सकता। परन्तु अधिकारियोको शायद सन्तोष करानेमे कठिनाअी या अनिच्छा भी हो सकती है। मैंने आशा रखी थी कि आज रवाना हो सकूगा। लेकिन मगलवार या बुधवारसे पहले शायद अैसा न हो सके। अिस देरकी मुझे चिन्ता नही है, क्योकि यह मेरे भाग्यमे ही लिखी है। जो अपने जीवनको गीताकी शिक्षा पर चलाना चाहे, अुसे अक्षरशः अिस सिद्धात पर चलना पडेगा कि "कलका विचार ही न करो"। अिसलिअे तुम रोमा रोला और अपनी बहन दोनोको बता दो कि अिधर सब कुछ अनिश्चित है और लदनके लिअे रवाना होनेके बारेमे बहुत पहलेसे निश्चित खबर देना बडा कठिन है। अुचित यही है कि जब तक हम सचमुच जहाजमे बैठ न जाय, तब तक हमारी आशा न रखी जाय।

आशा है अब तुम्हे बिलकुल शाति हो गअी होगी और तुमने समझ लिया होगा कि शरीरके नष्ट होने पर प्रियजन अधिक सच्चे रूपमें जीवित रहते है और हमारे प्रेमको भी ज्यादा सच्चा बना देते है, क्योकि तब वह निःस्वार्थ होता है और सारे प्राणियों पर बट जाता है। किसी भी मित्र या रिश्तेदारकी मृत्युसे हमारा विश्वप्रेम बढना चाहिये।

सस्नेह,

बापू

१३६

चि० मीरा,

मेरा टाअिप किया हुआ पत्र तुम्हे कल मिल गया होगा। मुझे कुछ सन्देह है, क्योकि वह अैन वक़्त पर भेजा गया था। मैंने आशा लगा रखी थी कि आज तुम्हारा पत्र मिलेगा। फादर अेल्विनकी बीमारीसे मुझे चिन्ता हो रही है। मुझे विश्वास है कि अब वे पूरी तरह अच्छे हो गये होगे। अुन्हे बहुत ज्यादा काम नही करना चाहिये। जुलाअीमे अहमदाबादमे गरमी पडना असाधारण बात है। आशा है अब वहा वर्षा हो गअी होगी। बुधवारसे पहले रवाना हो सकनेकी कोअी अुम्मीद दिखाअी नही देती। अुस दिन भी रवाना हो सके तो गनीमत ही समझो।

सस्नेह,

बापू

१३७

चि० मीरा,

हम सूरतमे है। अिस समय सुबहके लगभग ५।। बजे है। प्रार्थनाके बाद मैंने नीद लेनेकी कोशिश की, मगर मच्छरोके मारे नीद नही आअी। हर दस पाच मिनटके बाद हल्की हल्की झडिया लगी रहती है। हम सुबह आठ बजेके करीब बारडोलीके लिअे गाडी पकडेगे। शायद दो रोज मुझे वहा ठहरना पडे। बादमे बोरसद जायेगे। शिमलामे सब कुछ अनिश्चित था। लदन जानेकी सभावना मुझे पहलेसे भी कम मालूम होती है। मै सरकारसे सच्चा सन्तोष प्राप्त नही कर सका। बातचीत आसानीसे तोड़ी जा सकती थी। लेकिन किसी भी तरह सभव हो तो मै तोडना नही चाहता। अगले चद दिनोमे फैसला हो जायगा। बारडोलीका बहुत बुरा हाल है।*

---

* सरकार द्वारा गाधी-अर्विन समझौते पर ठीक ठीक अमल नही हो रहा था।

कल दिल्लीमे मेरा वजन लिया गया था। वहा मै कुछ घटे ठहरा था और अुस दरमियान डॉ० असारीके यहा गया था। सुबह खाली पेट मेरा वजन ९५।। पौड निकला। हो सके तो मुझे दूधकी मात्रा बढानेकी कोशिश करनी चाहिये। और सब बातोंमे स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

वियोगके कारण तुम्हे झुझलाना नही चाहिये। आशा है फादर अेल्विन बिलकुल अच्छे होगे।

सस्नेह,

सूरत, २४-७-'३१ बापू

बारडोली पहुचने पर तुम्हारा पत्र मिला। माताका तुम्हारा वर्णन हूबहू और मर्मस्पर्शी है। मुझे भय है कि लदन जानेकी शायद ही कोअी सभावना हो। आज मैने सरकारको अतिम पत्र भेज दिया है। ये सब बाते खानगी है।

१३८

लिखाया हुआ

बारडोली,
२५ जुलाअी, १९३१

चि० मीरा,

समयाभावके कारण कल तुम्हे बहुत नही लिख सका। अभी मै कुछ मिनट बचा सकता हू, अिसलिअे बाकीका हिस्सा लिख देना चाहिये। अगर तुम्हे रज हो तो मुझसे छिपानेका कोअी कारण नही। बौद्धिक विश्वास होते ही ये चीजे तुरन्त नही मिट जाती। हृदय पर बौद्धिक विश्वासका असर बहुत धीरे धीरे होता है। अिसीलिअे गीताके बारहवे अध्यायमे और अुस जीवनग्रन्थमे दूसरी कअी जगह जो आचरण बताया गया है, अुसके अभ्यासकी जरूरत है। अगर तुम शोकवश न हो जाओ और फिर अस्थिर न हो जाओ तो काफी है। लेकिन मै तुम्हे बता चुका

हू कि जब-जब दु ख असह्य हो जाय, मेरे पास दौड़कर चले आनेकी तुम्हे स्वतत्रता है। मुझे यह अच्छा नही लगेगा। लेकिन मै अुसके लिअे तैयार हू। अुससे मुझे आघात नही लगेगा और न मै तुम पर वचनभगका दोष लगाअूगा। अिसलिअे तुमको निश्चिन्त होकर अपना आचरण करना चाहिये। और अुसे तुम्हारे अन्तरको कुतरने नही देना चाहिये। तुम कमजोरी पर विजय प्राप्त करनेका भरसक प्रयत्न करती हो और दिन दिन यह अनुभव करती जाती हो कि यह कमजोरी है और तुम्हारे विकासके लिअे निश्चित रूपसे जरूरी नही है, यह काफी है।

मैने कलेक्टरको अेक ताकीदी पत्र बारडोलीमे होनेवाली असह्य घटनाओके बारेमे भेजा है। अगर सन्तोषजनक अुत्तर मिला, तो लदन जानेकी कुछ सभावना हो सकती है। अगर अुत्तर असन्तोषजनक आया, जैसा कि बहुत सभव है, तो लदन जानेकी बात अपने दिमागमे से बिलकुल निकाल देना। अगर अतिम क्षणमे जाना ही पडा तो भी क्या हुआ? काफी खादी ली जा सकती है और तुम्हारे लिअे जो कुछ तैयारी करनी हो प्यारेलाल और मै दोनो मिलकर कर सकते है। हम आसानीसे अेक सिगर मशीन अुधार ले सकते है। चद घटोकी मेहनतसे तुम्हारे लिअे जरूरी कपड़े* तैयार हो सकते है। और हमारे पास काफी कपड़ा हो तो बाकीका काम लदनमे किया जा सकता है। जरूरत तो अहिसक × चमडेकी अैसी चप्पलोकी, जो मोजेके साथ पहनी जा सकती है, और स्लीपर या बूटकी भी हो सकती है। हमारे यहा आश्रममे कही अुन चप्पलोंका नमूना है, जो मै दक्षिण अफ्रीकामे पहना करता था। वे आसानीसे बन जाती है और बिना किसी कठिनाअीके मोजे पहने जा सकते है। अुन्हे अभी बना लिया जाय और जरूरत न रहे तो वे बेची जा सकती है। नाप तो मौजूद ही है।

---

* बापूका मतलब भारतीय पोशाकसे है न कि युरोपियनसे।

× स्वाभाविक मौतसे मरनेवाले जानवरोंकी खालसे तैयार किया हुआ चमड़ा।

चूकि मैंने कलेक्टरको जवाबके लिअे कल दोपहर तकका समय दिया है, अिसलिअे सोमवार तक कोअी निश्चित बात मुझे मालूम हो जानी चाहिये। सभव हुआ तो बोरसदका काम पूरा करनेके लिअे मै मगलवारको वहा पहुचना चाहता हू। अिसलिअे फिलहाल तुम यह मानकर चल सकती हो कि मै मगलवारको सुबह बोरसदमे होअूगा।

सस्नेह,

बापू

१३९

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। . . यह सूखेका जारी रहना अिससे होनेवाली व्यक्तिगत असुविधाके अलावा भी गंभीर बात है। मुझे आशा है कि जो बादल रोज दिखाअी देते है, अुनमे से कोअी न कोअी जरूर बरस जायगा। मेरा मतलब खुले चप्पल और चौडे पजेवाले बाकायदा जूते दोनोसे था। वे हम दोनोके लिअे चाहियें। मुझे स्लीपर और जूते दोनो नही चाहिये।

मैं देखता हू कि तुम्हारे पक्षी मित्रोकी सख्या बढ रही है। शायद ये श्रेष्ठ मित्र है। वे तुम्हारे मूक सन्देशको और किसी साधनकी अपेक्षा ज्यादा जल्दी और सचाअीके साथ फैला सकते है।* कार्य समितिकी

---

* अेक गुर्सल मेरे कमरेमे आ जाया करता था। वह मेरे हाथसे किशमिश खाता था। और मैंने अुसे सिखा दिया था कि मेरे सिर पर बैठे तभी अुसे किशमिश मिलें। अिसलिअे वह सीधा अुड़कर मेरे कमरेमे आ जाता और मेरे सिर पर चढकर किशमिशके लिअे चू चू मचाता। कुछ समय बाद अेक दिन वह अपनी बीबीको लेकर आ पहुचा और मेरे सामने आगनमे खडा होकर अुसका परिचय कराने लगा। वह जरा शर्मीली थी लेकिन थोडे दिन बाद मेरी अुंगलियोसे किशमिश खानेकी हिम्मत अुसमें आ गअी। कोअी अेक सप्ताहके बाद मैंने देखा

बैठकके लिअे बम्बअी जानेसे भी पहले मै अहमदाबाद आनेकी जरूर आशा रखता हू। लेकिन यह बारडोलीवाला मामला बडा मुश्किल है। अभी तक मुझे अधकारसे निकलनेके लिअे कोअी प्रकाश दिखाअी नही देता।

सस्नेह,

रेलमे, २७-७-'३१

बापू

१४०

[फिर अेक लम्बा और घटनापूर्ण काल व्यतीत हो गया। पिछले पत्रके बाद बापू गोलमेज परिषदकी यात्राके सम्बन्धमे लॉर्ड विलिग्डनके साथ अतिम चर्चा करनेके लिअे फिर शिमला गये। और मै बापूके तारसे अिस विषयमे आखिरी समाचार पानेकी प्रतीक्षा करनेके लिअे बोग्सद चली गअी कि हमे लदन यात्राके लिअे सामान बाधना है या नही। अतमे अेक तार आया कि हमे अगले जहाजसे रवाना होना है। अिसलिअे सारी तैयारी करनेको हमारे पास दो या तीन दिन ही रह गये। मै दूसरी ही गाडीसे बम्बअी दौड गअी और अगले दो रोज पासपोर्ट जमा करने, पी० अैड ओ० के दफ्तरमे जहाजकी आवश्यक कोठरिया सुरक्षित कराने और कपडे और पेटिया अिकट्ठा करनेमे व्यतीत हुअे। कृपालु मित्र तरह-तरहकी भेट, बापूके लिअे गरम मोजे (जो अुन्होने कभी नही पहने), शाल और अिसी तरहकी चीजे ले लेकर आते रहे। बापू शिमलासे सीधे जहाजके रवाना होनेके समय पहुचे और पी० अैड ओ० का डाकका जहाज अुनके लिअे रुका रहा। मैने पिछली सारी रात सामान बाधनेमे

कि अब वे खुद किशमिश नही खाते थे, बल्कि अुन्हे लेकर बागमे अुड जाते थे। यह हाल कोअी पखवाडे भर रहा। अुसके बाद अेक रोज सुबहमाता-पिता और तीन छोटे बच्चे सब मेरे कमरेमे आ पहुचे, अर्ध वर्तुल बनाकर मेरे सामने खड़े हो गये और अपनी किशमिश मागने लगे। तबसे वे नियमित रूपसे मेरे पास तब तक आते रहे, जब तक मै गोलमेज परिषदके लिअे लदन यात्राको चली नहीं गअी।

बिताअी थी। जब मैंने सब काम खतम कर लिया, ठीक अुसी समय महादेव और देवदास बापूके साथ आ पहुचे और मेरे सामने गर्वके साथ कअी और गरम कपड़ोकी पेटियां और बकस रख दिये। ये अुन्होने अुत्तर भारतके मित्रोसे अिकट्ठे किये थे। अिन कपड़ोंको छाटने और यह निश्चय करनेका समय ही नही रह गया था कि क्या ले जाय और क्या न ले जाय। अिसलिअे हर चीज सीधी जहाज पर ही ले जानी पडी।

अत्यन्त अुत्तेजना और अुत्साहके वातावरणमे अुस दिन प्रात:काल बम्बअीने बापूको बिदा दी। जहाज अरबसागरमे चल पडा और अन्तमे हमे (बापू, महादेव, देवदास, प्यारेलाल और मुझको) सास लेनेकी फुरसत मिली। अब बापूने यह पूछताछ शुरू की कि हमने कितना सामान लिया है। यह बडा घबराहटमे डालनेवाला सवाल था। हमने अुन्हें वता दिया कि कितनी पेटिया और बक्स वगैरा हैं और समझाया कि संख्या क्यों ज्यादा हो गअी है। वापूको सन्तोष नही हुआ। अुन्होने हमसे कहा कि सारी पेटिया खोलकर हर चीजकी देखभाल की जाय और जो भी छोडी जा सकती हो अुसे अदनसे वापस भेज दिया जाय। खैर, यह तो हुआ। अिसी अरसेमे वर्षाऋतुके कारण मौसम खराब हुआ और जहाज डगमगाने लगा। बापू मजेमे रहे, महादेव अुनसे कुछ कम, देवदास भी ठीक-ठीक रहे, पर प्यारेलालका बुरा हाल हुआ और मै तो बीमार ही हो गअी। परन्तु कपड़े तो छाटने ही थे। मैं ज्यो त्यों करके महादेव और दूसरे लोगोकी कोठरी तक पहुची और वहा हम सबने पेटियोके साथ कुश्ती शुरू की। अदनमे लगभग आधा सामान बम्बअी लौटा दिया गया।

लेकिन मुझे अुन बहुतसी घटनाओका जो अुस वक्त और हमारे गोलमेज परिषदके बाद बम्बअी लौट आनेके बीचमें हुअी, विस्तारसे वर्णन जारी नही रखना चाहिये। अितना कह देना काफी होगा कि अगला पत्र गोलमेज परिषदसे लौटनेके कुछ ही दिनके भीतर बापूके बम्बअीमे गिरफ्तार होनेके तुरन्त बाद ही लिखा गया था।]

चि० मीरा,

यह कामकाजी पत्र है। अिसलिअे अखबारोमे अिसका जिक्र न हो।

काचका ज्यादा बड़ा बर्तन भेज देना। वह गरम पानी रखनेके काम आयगा और सुबह-सुबह वार्डरोकी मेहनत बच जायगी।

मैंने महादेवको हिदायतोंके साथ ८०० रुपयेका अेक चैक दिया था। मेरे खयालसे अुस पर मेरे हस्ताक्षरोकी जरूरत नही है। देख लेना वह अुसके पास है या नही और अुस पर मेरे हस्ताक्षरोकी आवश्यकता है या नही।

हम दोनो* सकुशल है। सबको प्यार।

यरवदा जेल, ५-१-'३२ बापू

१४१

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तुम सदाकी भाति लिख सकती हो। क्या तुम्हे मालूम हुआ कि तुम मेरे साथ वह धुनकी, जो मैंने चुनी थी, भेजना भूल गअी? मैंने हलकी अिसलिअे मागी थी कि बडीके साथ और बहुतसी चीजोंकी जरूरत होती है। जब तुम या और कोअी आये, तब बड़ी धुनकी लाअी जा सकती है। तुम्हारी दूरदर्शिताके प्रतापसे मेरे पास अभी तक काफी पूनिया है। अिसलिअे मुझे धुनकीके बारेमे चिन्ता नही है। मैं अभी तक आराम ले रहा हू और जितनी नीद आ सकती है अुतनी नीद ले रहा हू। मेरे बारेमे बाकी जानकारी नारणदासके नाम मेरे पत्रसे हासिल करना।

प्रिवाट परिवार कहा है? अुनका स्वास्थ्य कैसा है? अुन्हें मेरा प्यार। वे मुझे पत्र लिखे। आशा है आश्रममें अुनका समय अच्छा

---

* यरवदा जेलमे सरदार वल्लभभाअी पटेल बापूके साथ थे।

गुजरा होगा। क्या जर्मन मित्र आ गये? और कुमारी बार्कर* ? वैरियर और शामरावके क्या समाचार है? आशा है प्यारेलालने अीवन्स और राजर्स ×को पार्सले भेज दी होगी। वह कहां है? और देवदास कहा है? बर्नार्डकी क्या खबर है?

सस्नेह,

य० सें० जेल, १२-१-'३२ बापू

१४२

चि० मीरा,

तुम्हारी भेजी हुअी चीजे मिल गअी। चप्पले अितनी हल्की है कि अेक-दो महीनेसे ज्यादा नही चलेगी। यानी तलवे घिस जायगे। अिस-लिअे तलवेका चमडा जरूरी है। अगर तुम नही जुटा सकोगी, तो मुझे रबरके तलवोका आश्रय लेना पड़ेगा।

* * *

हम दोनोंकी तबीयत अभी तक अच्छी है। मेरी खुराक बाहर जैसी ही है। सिर्फ शामके भोजनमें मैंने दही और जोड दिया है। रोज कमसे कम दो घटे सुबह शाम मिलाकर घूम लेता हू। अभी तक सूतके दो सौ तारसे आगे नही पहुचा। लेकिन मेरा खयाल है कि अगले सप्ताह तक मै बाकीकी नीद पूरी कर लूगा। २४ घटोमे कुल मिलाकर ९ घंटे जरूर सो लेता हू। पढाअी भी काफी कर रहा हू।

---

* बार?

× अिवन्स और राजर्स दो तगड़े गुप्तचर थे जिन्हें ब्रिटिश सरकारने बापूकी गोलमेज यात्राके दिनोमें हर वक्त अुनकी सभाल रखनेके लिअे तैनात कर दिया था। बापूने दोनोंको अेक-अेक घड़ी विशेष खुदाअी करा कर भेजनेकी व्यवस्था की थी।

अिस समय तक आश्रमकी किसी डाकके आनेकी आशा रखी थी। अभी मुझे दूसरी धुनकी न भेजना।

सस्नेह,

यरवदा मंदिर, १७-१-'३२ बापू

मै क्षमा चाहता हू। मुझे आज पता लगा कि तुमने धुनकी चटाअीमे बाध दी थी।

१८-१-'३२

१४३

चि० मीरा,

आश्रमकी डाक, जिसकी मै कितने ही दिनोसे प्रतीक्षा कर रहा था, कल ही आअी। आशा है अब डाक मुझे नियमित मिल जाया करेगी। बेशक तुम्हारा बम्बअी जाना ठीक था। तुम कहां ठहरोगी और क्या करोगी, अिसका अंतिम निर्णय तुम्हींको करना चाहिये।

* * *

मै तुम्हे पहले ही बता चुका हू कि बड़ी धुनकी न तो लाना और न भेजना। तुमने मुझे अितनी अधिक पूनिया भेज दी है कि अभी मुझे कुछ सप्ताह तक पीजनेकी जरूरत नही होगी। और अिसकी मुझे खुशी है। अभी तक मेरे शरीरमे पहले जैसी ताकत नही आअी है। नौ बजे रातसे पौने चार बजे सुबह तक पूरी नीद लेनेके बावजूद दिनभरमे कमसे कम तीन बार सोता हूं। अभी तक मुझे नीद और आरामकी आवश्यकता है। पिछले सालकी तरह मै पांच सौ गज नही कातता। अितना दो दिनमे कातता हू। लेकिन मुझे आशा है कि मैं जल्दी ही रोज पांच सौ गज कातने लगूगा। अिसके लिअे मै अपने अूपर जोर नही डालूगा। मुझमे जो शक्ति अभी बाकी है, अुसे बचाकर रखनेका प्रयत्न करूगा। यह अधिक पूनियां लाने या भेजनेके लिअे तुम्हे सूचना नही है। अगर मुझे अुनकी जरूरत ही हुअी, तो मैं जल्दी ही बता दूगा। मेरा स्वास्थ्य

खूब अच्छा है और सरदार वल्लभभाओीका भी। मैंने तुम्हे सिर्फ बता दिया है कि अभी तक मुझे कितने आरामकी जरूरत है। लदनके कामकी थकान भयकर थी। और मेरे खयालसे शरीरको अभी लम्बे आरामकी जरूरत है। लदनके बाद ही बम्बओीकी धूमधामने अुस सारे लाभको नष्ट कर दिया, जो समुद्र यात्रासे बेशक हुआ था।

मुलाकातोके बारेमे अिस बार कोओी कठिनाओी नही है। जो मैंने पिछली बार मागा था वह सब अिस बार मान लिया गया है। अिसलिअे हर सप्ताह मुलाकात हो सकती है। लेकिन अिसका अर्थ यह नही कि हर सप्ताह किसीको आना ही चाहिये। मेरी तरफसे कोओी प्रतिबन्ध नही है। मै सिर्फ चेतावनी देता हू कि हम गरीब लोग है और अिसलिअे प्रेमकी खातिर मिलने आनेमे हमे किफायत करनी चाहिये। काम बहुत नही हो सकता। और प्रेम तो त्यागसे ही पनपता है। खैर, तत्त्वज्ञानकी बात छोडे। मै जानता हू तुम सब वही करोगे जो अुत्तम है। अवश्य ही जो राजनीतिक ख्याति रखते है, वे विशेष मजूरीके बिना नही मिल सकते।

बहनोको, कमलाको और खुद तुमको मेरा प्यार।

२३-१-'३२ वापू

१४४

चि० मीरा,

तुम सबके आनेकी बात कलकी-सी मालूम होती है।

. . . तुमने मुझे बताया है कि तुम शामकी प्रार्थनाके समयका पालन नही कर सकती। अैसा है तो तुम्हे समय बदलकर अुसकी पाबन्दी करनी चाहिये। आश्रमकी प्रार्थनाके समय अिस बात पर कुछ क्षण विचार किया करो। यह केवल सुझाव ही है। यह करनेका अुत्तम ढग तुम अच्छी तरह जानती हो।

* * *

हमारी तबीयत अभी तक अच्छी है। मुझे अब भी जितनी नीद मिल सकती है या जितनी ले सकू, अुसकी आवश्यकता है।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, ३१-१-'३२ बापू

१४५

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। अिस पत्रको सीधा ही डाकमे डलवानेका मेरा अिरादा है। तुम्हारी तदुरुस्तीका जो हाल दामोदरदासने सुनाया, अुससे मुझे बेचैनी हुअी। अुसने बताया और तुम्हारे पत्रसे अुसका समर्थन होता है कि तुम बहुत ही सरगरमीसे काम कर रही हो।* तुम्हे रफ्तार धीमी कर देनी चाहिये। तुम हमेशा आधी रात तक जागकर प्रातः ४ बजे नही अुठ सकती। अगर आधी रात तक काम करना जरूरी हो, तो प्रार्थनाके बाद तुरन्त पूरा आराम लेना चाहिये। ×

और अगर हर सप्ताह यरवदा आनेसे तुम्हारे चित्तको शाति मिलती हो, तो तुम जरूर आ जाया करो। मैंने कोअी मनाही नही की है। मैने अिस मामलेमे केवल अपनी भावना प्रगट कर दी है। कैदी कैदी ही है। अिस वक्त तो अधिकारियोने हफ्तेवार मुलाकातोकी अिजाजत दे रखी है, और अभी तक मुझे अिस अिजाजतका अुपयोग न करनेके लिअे कोअी कारण नही दिखता। लेकिन ज्यादासे ज्यादा, यह अेक

---

* मै सविनयभंग आन्दोलनके बारेमे जितने अधिकृत समाचार मिल सकते थे अिकट्ठे करनेके काममे लगी हुअी थी। अुन्हे चुनकर और सम्पादन करके साअिक्लोस्टाअिलमे प्रतिया निकालकर विदेशोंमे भेजती थी।

× प्रार्थनाका मामूली वक्त ४ बजे सुबहका था।

अनिश्चित विशेषाधिकार है, जिस पर बहुत आधार नही रखना चाहिये। अेक कैदी और अुसके अिष्ट-मित्रोके लिअे संयम ही अुत्तम वस्तु है। परन्तु संयम वही है, जिससे शक्ति मिले। अुससे अशक्ति या अुदासी आती हो, तो वह यान्त्रिक या अूपरसे लादा हुआ बन जाता है। अगर तुम सयमके सौन्दर्यको समझ लो और समझनेके बाद अुसका स्वाभाविक रूपमे पालन करो, तो तुम यहा कम आओगी। अगर अिससे तुममे अुदासी आती है, तो समझ लो कि यह प्रयत्न तुम्हारे लिअे भारस्वरूप और अस्वाभाविक है। अुस सूरतमे तुम्हे जरा भी सकोच न रखकर आना ही चाहिये।

मेरा वजन अेक पौड बढा है। अब १०७ पौड है। वल्लभभाअीका वही १४४॥ पौड है। शहद फायदा करेगा।

* * *

आश्रमकी डाकमे मेरे दूसरे पत्रकी आशा न रखना।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, ४-२-'३२ बापू

१४६

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। तसल्ली हुअी। जिनका अीश्वरके पथप्रदर्शनमे विश्वास है, वे जो अच्छेसे अच्छा हो सकता है वही करते है और फिर चिन्ता नही रखते। सूर्यको कभी अधिक परिश्रमसे थकावट नही होती और सूर्यके बराबर अद्वितीय नियमितताके साथ कौन बेगार करता है? और हम यह क्यो समझे कि सूर्य जड पदार्थ है? अुसके और हमारे बीच यह अन्तर हो सकता है कि अुसे आजादी नही है और हमें थोड़ी बहुत है, भले ही वह कितनी ही अनिश्चित हो। लेकिन अिस तरहकी अटकलोमे क्या धरा है? हमारे लिअे अितना काफी है कि अथक शक्तिके

मामलेमे हमारे सामने अुसका अुज्ज्वल अुदाहरण मौजूद है। अगर हम अपनेको पूरी तरह अुसकी* मरजी पर छोड दे और सचमुच शून्य बन जायं, तो हम स्वेच्छासे अपना चुनावका अधिकार छोड देते है और फिर हमारी घिमाअी होनेकी जरूरत नही रहती।

मैने अभी दूधके बजाय बादामकी लुगदी शुरू की है। म रोज दूधकी मात्रा घटा रहा था, क्योंकि वह अनुकूल नही पड रहा था। सभव है जब तक मै आराम कर रहा हू, तब तक मुझे प्राणिज प्रोटीनकी आवश्यकता न हो। मै सिर्फ प्रयोग कर रहा हू। अिसलिअे हमारे पास लदनमे बादामकी जो लुगदी थी, अुसमे से तुम्हारे पास और हो तो बोनल्ले साथ लेती आना। अभी तो २४ घटेमे दो बार नीबू और शहदके पानीके माथ खजूर, टमाटर और बादमकी लुगदीसे खूब अच्छी तरह काम चल रहा है। अभी यह कहना जल्दी होगा कि दूधके बिना मेरा क्या हाल होगा। यद्यपि दूध कतअी छोड देना मुझे वहुत अच्छा लगेगा, मगर अपने स्वास्थ्यको हानि पहुचानेवाला कोअी काम जान-बूझकर नही करूगा।

जब तुम आओगी तब शायद तुम्हे बतानेका वक्त न मिले, अिसलिअे मुझे पत्र द्वारा ही बता दो कि अूनी कम्बलोको तुमने कैसे धोया था? ठण्डे पानीमे भिगोया था या गरममे और कितनी देर? कितना लक्स साबुन अिस्तेमाल किया और कितने पानीमें? मेरा विचार अपना साबुनका चूरा अिस्तेमाल करनेका है। मुझे कोअी जल्दी नही है।

मैने मान रखा है कि तुम मेरे पत्र आश्रमको सुनाती होगी और जानने लायक बाते तुम्हे आश्रमसे मिलती होगी।

*   *   *

हम दोनोकी तरफसे प्यार।

यरवदा मंदिर, ११-२-'३२   बापू

---

* अीश्वरकी।

[चूकि म सविनयभग आन्दोलनके सम्बन्धमे अधिकृत समाचारोका साप्ताहिक बुलेटिन विदेशोको भेजती थी, अिसलिअे मुझे बम्बअी छोड देनेका नोटिस दिया गया था। और चूकि मैंने अुसे माननेसे अिनकार कर दिया, अिसलिअे मुझे बाकायदा गिरफ्तार करके मुकदमा चलाया गया और तीन महीनेकी 'अे' क्लासकी सादी कैदकी सजा दे दी गअी तथा बम्बअीके आर्थर रोडके जनाने जेलमे भेज दिया गया। दीवानी जेलमे, जिसे अस्थायी रूपमे स्त्री राजनैतिक कैदियोका जेल बना दिया गया था, 'अे' क्लासकी जगह न होनेके कारण मुझे पहली दो रातोके लिअे 'सी' क्लासके कैदियोके साथ रखा गया। अिसके बाद जेलके चौकमे अेक छोटेसे रसोअीघरको पर्दे लगाकर मेरी कोठरीका रूप दे दिया गया। लेकिन चूकि सारी जगह बहुतसे चूल्होकी कतारने घेर रखी थी, अिसलिअे भीतर मेरे सोनेके लिअे कोअी जगह नही थी। यह सौभाग्य ही था क्योकि अिस कारण मुझे दिनमे चौकमे दूसरे कैदियोमे घूमनेकी और रातको जब और लोग अपनी बैरकमे बन्द कर दिये जाते थे तव खुलेमें सोनेकी अिजाजत देनी पडी। यह बता दू कि 'सी' क्लासकी राजनैतिक कैदिने ज्यादातर सुशिक्षित महिलाअे थी, जिनका रहन-सहन अूचे दर्जेका और आश्रमसे तो अवश्य ही अूचे दर्जेका था। लेकिन बम्बअी सरकार अपने अिस वर्गीकरणमें खास तौर पर सख्त थी। जहा तक मुझे याद है बा, श्रीमती नायडू और मुझे ही प्रान्त भरमे स्त्रियोमें 'अे' क्लास दिया गया था। कुछ को 'बी' क्लास और बाकी सबको 'सी' क्लास दिया गया था। अिस वर्गीकरणमे सबसे महत्त्वपूर्ण भेद भोजन देनेमे किया गया था।]

चि० मीरा,

आज सुबह तुम्हारा सुखद पत्र मिला। मै अुसकी बाट देख रहा था। हम दोनोको हर्ष हुआ कि तुम वहां सुखी हो। जब अधिक परिश्रमसे तुम्हारा स्वास्थ्य टूटने ही वाला था, ठीक अुसी समय तुम वहां पहुच

गअी। मेरे खयालसे डेढ पाव* दूध तुम्हारे लिअे काफी नही होगा। तुम्हे तीन पाव लेना चाहिये। लेकिन यह सभव है कि शक्ति पहलेसे कम खर्च होनेके कारण तुम्हारे लिअे डेढ पाव ही पर्याप्त हो। मै तुम्हे सिर्फ सावधान कर देता हू कि झूठी किफायत न करना। अगर तुम अिधर अुधर बहुत घूम नही लेती हो, तो मुझे तुम्हारा व्यायाम काफी प्रतीत नही होता।

मुझे खुशी है कि तुम्हारे साथ अितने लोग है। अगर साथवालोका वर्णन करनेकी अिजाजत हो तो वर्णन लिख भेजना।

जिन पुस्तकोकी सिफारिश करनेका विचार होता है, वे सिस्टर निवेदिताकी है। मै चाहूगा कि तुम महाभारत और रामायणके दत्तके सक्षिप्त पद्यानुवाद पढ़ लो और ऑरनाल्डकी 'अिडियन आअिडिल्स' और 'पर्ल्स आफ दि फेथ' भी।

अगर तुम्हारे साथियोको कताअी और पिजाअी जैसे परिश्रमके लिअे वक्त दिया गया है, तो अुन्हे अिसका शौक लगाओ।

तुम्हे वहा हिन्दी बहुत कुछ कर लेनी चाहिये। लेकिन हदसे ज्यादा परिश्रम किसी भी कारणसे न करना। तुम्हे यह बहुमूल्य और अयाचित अवकाश मिल गया है। जिससे तुम्हारे खयालमे तुम्हारा अुत्थान हो, वही अुपयोग अिस अवकाशका तुम कर लो।

मेरे बादामके प्रयोगसे अभी तक सन्तोष मिल रहा है। और वजन अब भी १०६ पौंड है, जो बहुत अच्छा है। अिसलिअे अिस बारेमे तुम्हें कोअी चिन्ता न होनी चाहिये।

हम दोनोकी तरफसे प्यार।

यरवदा मंदिर, २५-२-'३२ बापू

---

* डेढ पाव दूध 'अे' क्लासवालोको मिलता था।

१४८

चि० मीरा,

वचनानुसार तुम्हारा कोअी पत्र नही आया। लेकिन मुझे आश्चर्य नही है। अैसा पत्रव्यवहार रोक लिया गया था। लेकिन जहा तक मेरा सम्बन्ध है और अिसलिअे जहां तक मुझसे पत्रव्यवहार करनेवालोका सम्बन्ध है, अब यह रुकावट दूर हो गअी है। अिसलिअे मै तुमसे लगभग लौटती डाकसे जवाबकी अुम्मीद रखता हू। लिखो तुम्हारा और तुम्हारे साथियोका क्या हाल है, तुम क्या खाती हो, और दिन कैसे बिता रही हो।

महादेव हममे शामिल हो गये है और हमारा मजेदार साथ हो गया है। हममे वे सबसे परिश्रमी कतवैया है। मेरी दुर्बल भुजा मुझे अुनसे बाजी नही ले जाने देती। मेरा दूधरहित भोजन खानेकी चीजोमे लगभग किसी भी परिवर्तनके बिना जारी है। मेरा खयाल है कि मैने तुम्हे बता दिया था कि रोटी और शामिल कर ली गअी है। अभी तक अुससे कोअी नुकसान मालूम नही होता। मेरा वजन १०५॥ और १०६॥ के बीच घटता बढ़ता रहता है। यह बुरा नही है। और लोग भी बिलकुल अच्छी तरह है।

हम सबकी तरफसे प्यार।

य० से० जेल, २६-३-'३२ बापू

१४९

चि० मीरा,

मै साथवाला पत्र भेज ही रहा था कि तुम्हारे दोनो बढिया पत्र मिले। अिसलिअे मैने यह पत्र लिखनेके लिअे अुसे भेजना मुल्तवी कर दिया। अब तुम्हे मालूम हो गया होगा कि मै क्यो न लिख सका। लेकिन हम आखिर कैदी है। हम वैसी नियमितताकी आशा नही रख सकते, जैसी स्वतंत्र लोग अपने लिअे बना सकते है। परन्तु अिन

विलम्बो पर बडबडानेकी कोअी बात नही है। अिन्हे अनिवार्य समझ लेना चाहिये। आशा है आअिदा सब बाते अबाधित रूपमे होती रहेगी। परन्तु जब कभी किसी किस्मकी अनपेक्षित रुकावट पेदा हो जाय, तो चिन्ता न करके समझ लेना कि 'हम कैदी है'।

मुझे खुशी है कि तुमने वजन बढा लिया। तुम्हारी लम्बाअी चोडाअीको देखते हुअे तुम आसानीसे १३२ पौंड वजन रख सकती हो। लेकिन गर्मी बुरी है। नमक छोडकर तुमने अच्छा किया। तुम २-३ दिनके लिअे दूध और मक्खन भी छोड दो, तो ठडक मालूम होगी।

तुम्हारा पढनेका शौक देखकर मुझे प्रसन्नता होती है। किसीसे ग्रीफिथस कृत रामायणका पूरा अनुवाद और ११ मुख्य अुपनिषदोका अनुवाद जुटा लो। अिस बारके लिअे अितना काफी होगा।

हिन्दीके लिअे तुम्हे बालरामायण प्राप्त कर लेनी चाहिये। चूकि अब तुम्हे कथा मालूम हो गअी है, अिसलिअे अुसे हिन्दीमे समझनेमे तुम्हे दिक्कत नही होगी।

मुझे लॉर्ड अर्विनके पत्र* की नकल पहले ही मिल गअी थी।

मुझे भी रोलाके कोअी समाचार नही मिले है। लेकिन म चिन्ता नही करता। अिस काममे अिस प्रकारकी बाधाअे आती ही रहती है।

आज तो यही खतम करना पडेगा, क्योकि मै चाहता हू कि यह पत्र यहासे आज रवाना हो जाय।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, २६-३-'३२ बापू

---

* मेरे खयालसे बापूका मतलब लॉर्ड अर्विनके (अब लॉर्ड हैलीफैक्स) अुस पत्रसे है, जो अुन्होंने मुझे लिखा था।

१५०

मीराबाअी (स्लेड) के लिअे

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे अैसा लगता है कि दाये हाथकी गड़बड़ अभी रहेगी। यहां आने पर मै दाये हाथसे काफी लिखने लगा था और मुझे जल्दी ही मालूम हो गया था कि अिससे कोअी लाभ नही। यह चुपकेसे आते हुअे बुढापेका अेक चिन्ह हो सकता है। अगर अैसा है तो वह न दुःखका और न आश्चर्यका ही कारण है। अगर मैने शरीरको केवल सेवाके साधन और भगवानके मदिरके तौर पर अिस्तेमाल करना सीखा होता, तो बुढापा अेक अैसे सुन्दर पके हुअे फलकी तरह होता, जिसमे अुसकी जातिके तमाम गुण पूर्ण रूपमे होते है। यह तो सौभाग्य ही होगा यदि मै अितनी-सी असमर्थता भुगतकर बच जाअू। लेकिन यह भी व्यर्थकी अटकलबाजी है। अिन चीजोके बारेमे अटकल लगाना मेरा काम नही है। अिन चीजोंको ध्यानमे रखकर निश्चित मर्यादाओके भीतर अुचित सावधानी रखना काफी है। अिसलिअे तुम हाथके बारेमे चिन्ता न करना।

अुपवासके दिनके सिवाय मेरा वजन १०६ पौड बना हुआ है। अुपवासके दिन वह कुदरती तौर पर घटकर १०३॥ पौड हो जाता है। २४ घंटोमे मै अच्छी सिकी हुअी डबल रोटीके टोस्टके ५-६ टुकडे, ३० खजूर, अेक बार कटोरा भर अुबली हुअी भाजी, सवा चार बजे सुबह दो चम्मच शहद चुटकी भर सोडा और गरम पानीके साथ, और दो बार सोडा और नीबू* ले लेता हू। लगभग २ औस बादामकी लुगदी ले लेता हू। अिससे मुझे सन्तोष मालूम होता है। अगर अिससे काम न चला तो फिर दूध लेने लगूगा। दस्त दिनमें दो तीन बार बिना किसी दवा या अन्य अुपायके साफ हो जाता है। नौ बजेसे पौने चार

---

* ठडे पानीके साथ।

बजे तक रातमे और दिनके समय २०-२० मिनट करके दो बार सो लेता हूं। दो दिनमे ३७५ तार कातता हू। अभी तक धुनाओी शुरू नही की है। तुम्हारी भेजी हुओ पूनिया खतम होती ही नही दीखती। शेष समय पढने-लिखनेमे लगाता हू। अभी तो रस्किनका 'फॉर्स क्लेविजियन' नामक बहुत ही मानवतापूर्ण ग्रन्थ पढ रहा हू। यह आदमी जो कहता है, वह बिलकुल सच्चे दिलसे कहता है। अिन पत्रोमे अुसने वचन और कर्ममे आत्माभिव्यक्तिका अुत्तम प्रयत्न किया है। पत्रोके लिखने और अब लिखानेमे भी बहुत वक्त लगता है। चूकि मुझे साथी कैदियोको लिखनेकी अिजाजत है, अिसलिअे पिछली बारसे लिखनेका काम कुदरती तौर पर ज्यादा रहता है। अिससे मै खुश हू। हर सप्ताह आश्रमको नैतिक समस्याओ पर कुछ न कुछ भेज देता हू। और अब पिछले पाच दिनसे मैने आश्रमका अितिहास लिखना शुरू किया है।

मेरे बारेमे तुम्हारे सब सवालोके जवाब खतम हुअे।

वल्लभभाओी और महादेवकी तबीयत बहुत अच्छी है। .... (जेल अधिकारियोने काट दिया) ... । अिन मामलोमे हम पर अपनी लगाओी हुओी पाबन्दियोके सिवाय और कोओी पाबन्दी नही है।

थोड़े समय तक नमक छोड देनेसे कोओी हानि नही हो सकती। और जो परिणाम तुमने अपने बारेमे देखे है वे जरूर होते है। दुर्बलता लानेवाला जो परिणाम तुम देख रही हो वह थोड़े दिनका है और किसी न किसी रूपमे ताजा नीबू लेनेसे बहुत कुछ मिटाया जा सकता है। मेरे खयालसे तुम जानती हो कि मै लगातार ७-८ वर्ष तक बिना नमकके रहा हू और अुसका कोओी दुष्परिणाम नजर नही आया। अिस प्रयोगमे बहुत लोग मेरे साथ शरीक हुअे थे। अिसलिअे तुम नमक छोड़नेका अपना प्रयोग अुस हद तक लम्बा सकती हो, जब तक अुससे तुम्हें लाभ हो। दूधमे खालिस नमक बहुत होता है। कच्चे दूधमे खारेपनका स्वाद आता है।

*　　　*　　　*

तुम्हारे भेजे हुअे भजन महादेवको मिल गये। वे अुनका काम करेंगे।

मैं तुम्हे यह बताना भूल गया कि अब मैंने आकाशके अध्ययनकी आदत डाल ली है। तुम देखती हो कि मेरी लेखनीकी स्याही खतम हो गअी है। यह महादेवकी है। और अब सोनेके समय यानी सवा नौसे ज्यादा वक्त हो गया है। लेकिन अपने खयालसे मैंने कोअी बात अुत्तर दिये बिना नही छोड़ी है। हम सबकी तरफसे प्यार।

यरवदा मदिर, ८-४-'३२ बापू

१८१

चि० मीरा,

तुम्हारा प्रतीक्षित पत्र अभी पहुचा है। तुम्हारी तरह मैं अपने पत्रमे क्यो देर करूं?

मुझे खुशी है कि कमलादेवी* तुम्हारे साथ है और वे सुबहकी प्रार्थनामे तुम्हारे साथ शरीक होती है और शामको भजन गाती है। अुनके जोरसे रस्सी कूदनेकी बातसे मुझे वह समय याद आ जाता है, जब मैं अुसी कारणसे कमलादेवीकी तरह रस्सी कूदा करता था। मैंने लडकोको भी सिखा दिया था। रामदास सबसे बढिया कूदता था। यह व्यायाम अवश्य ही, खास तौर पर जाड़ेके लिअे बढिया है। यह अच्छा है कि

---

* कमलादेवीको सजा 'बी' क्लासके कैदीकी हुअी थी और वे रखी गअी थी 'बी' क्लासकी और कैदिनोकी तरह दीवानी जेलमे 'सी' क्लासवालियोके साथ। वे और मैं बाकी कैदियोकी भलाअीमे बहुत अधिक दिलचस्पी लेने लगी। नतीजा यह हुआ कि हम दोनो बड़े आर्थर रोड जेलके भीतर स्त्रियोके स्थायी जेलमे भेज दी गअी। वहा हमे तीन छोटी-छोटी बैरकोमे से अेकमे रख दिया गया, जिनका अेक ही बरामदा था। दूसरी बैरकोंमे अपराधी स्त्रियां रहती थी।

तुम्हारा बिना नमकके भोजनका प्रयोग जारी है और वह तुम्हारे अनुकूल पड रहा है।

यहा अेक नये डॉक्टर आये है। वे पारसी मेजर है। अुन्हे अपने कामसे प्रेम है और अुनमें वैसी ही जन्मजात गौरवपूर्ण शिष्टता है, जो अेक सभ्य पारसीमे अवश्य पाअी जाती है। वे मेरे दाहिने अगूठे और बाअी कोहनी पर बिजलीकी मालिश करते है। कोहनीमे कुछ समयसे दर्द रहने लगा है। लेकिन अुसी वक्त होता है जब मै खास ढगसे काम करता हू। अुनका खयाल है कि चूकि मैने राष्ट्रीय सप्ताहके दिनोमे दुगुना काम किया है, अिसलिअे कुछ रोज कातना बन्द करनेकी आवश्यकता हो सकती है। जहा तक मेरी कताअीका सम्बन्ध है, आजकल लगभग ८५ तार नित्य होते है। क्योकि मैने पहले ही समझ लिया है कि डॉक्टर महेता मुझे बाये हाथसे चरखा चलानेको कहेगे। अिसलिअे मैने बाये हाथसे कातना शुरू कर दिया है। यह मेरा चौथा दिन है। मैने बहुत अच्छी प्रगति की है। दाहिने हाथसे सूत पहलेसे बहुत ज्यादा स्थिरताके साथ निकलता है और तार पहलेसे बारीक और समान है।

बाये हाथसे अिस तरह अभ्यास करने पर मुझे फिर विचार आता है कि हम लोगोको दाये हाथके बराबर ही बाये हाथसे काम लेनेकी कोशिश करनेकी जरूरत है। और हमे बच्चो* को अभीसे सव्यसाची बनानेकी कोशिश करनी चाहिये। अिस बारेमें नारणदासको मै पहले ही लिख चुका हू।

मेरे खयालसे दो दिनके अुपवासके कारण मैने दो पौंड वजन खोया है। अगर वजन बराबर न घटे, तो अिसमे कोअी नुकसान नही है। अगर घटेगा तो मै जरा भी संकोच न रखकर फिर दूध लेने लगूगा। मैने यह जानकारी केवल खबरके रूपमे ही तुम्हे दी है। वजनके अिस प्रकार घट जानेसे तुमको चिन्ता हरगिज नही करनी चाहिये।

---

* आश्रमके बच्चे।

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आशानुसार समय पर मिला।

*　　　　*　　　　*

मेरा वजन १०४ और १०६ के बीच रहता है। अिसलिअे मैं कोअी फेरबदल नही कर रहा हू। बादामकी लुगदीके बजाय मूगफलीकी लुगदी लेनेकी कोशिश कर रहा हू। अगर यह बादामकी तरह माफिक आ गअी तो अच्छी रहेगी। और लोग भी सकुशल है।

मगनचक्र कल मिला। मै अुसे आजमाअूगा। अिससे मुझे बाअी कोहनीको पूरा आराम देनेका मौका मिल जायगा। और प्रभुदास जब यह सुनेगा कि मै अुसके आविष्कारकी परीक्षा कर रहा हूं, तो बडा प्रसन्न होगा।* हा, मै कुछ समयसे दाहिने हाथसे तार खीचता था। अिससे मुझे बडा लाभ होगा।

मुझे खुशी है कि तुमने दाये हाथके बजाय बाये हाथसे काम लेना आरभ कर दिया है। सिर्फ लिखनेके लिअे ही अैसा नही करना चाहिये। बाये हाथसे खानेका भी प्रयत्न करो। थोडेसे विचारके सिवाय किसी खास प्रयत्नकी आवश्यकता मालूम नही होती।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम कुछ दिन सरोजिनी + के साथ थी और अुनकी सेवा कर सकी।

---

* अिस चरखेमे दो तकुअे होते है और वे पैरसे चलते है। चूंकि बापू अेक ही तकुआ काममे लेते थे, अिसलिअे अुनकी अेक भुजाको पूरा आराम दिया जा सकता था।

\+ श्रीमती सरोजिनी नायडू गिरफ्तार करके आर्थर रोड जेलमे लाअी गअी थी। हम थोड़ेसे अुडते दिनोंके लिअे ही साथ रही, क्योकि वे यरवदा सेंट्रल प्रिजनके स्त्री-जेलमे भेज दी गअी थी।

मैने रुकावट बननेके बारेमे जो कुछ लिखा है, वह बिलकुल सच है। मै किसी चीजको शुरू करनेमे सहायक हो सकता हूं, लेकिन अुस पर अमल न कर सकनेके कारण अुसकी आगेकी प्रगतिमे बाधक ही बन जाता हू। स्वेच्छापूर्वक अपनायी हुअी दरिद्रताका आदर्श बहुत आकर्षक है। हमने प्रगति की है, मगर चूकि मै अपने खुदके जीवनमें अुस आदर्श पर बिलकुल नही चल सका हूं, अिसलिअे आश्रममे और लोगोके लिअे बहुत प्रगति करना कठिन हो गया है। अुनकी अिच्छा तो है, परन्तु अुनके सामने पूरा प्रत्यक्ष अुदाहरण नही है । हमारे यहा दो सुहावने बिल्लीके बच्चे है। वे अपनी माताके मूक आचरणसे शिक्षा ग्रहण करते है। वह अुन्हे अपनी आखोसे ओझल नही होने देती। असल बात अमल करनेकी है। और अभी तो मै बहुतसी बातोमें बुरी तरह असफल होता हू। परन्तु जो अनिवार्य है, अुस पर शोक करनेसे क्या लाभ ?

अभी नारणदासका कार्ड मिला है कि गगादेवी चल बसी। वे रामनाम लेती हुअी खुशी खुशी मर गअी। वे और तोतारामज़ी आश्रमके भूषण थे।

शायद हम जल्दी ही मिलेगे।*

हम सबकी तरफसे प्यार।

यरवदा मदिर, ६-५-'३२

बापू

मैने मगनचक्र पर २४ तार काते। नारणदास पूछते है कि क्या तुम १८ तारीखको मुझसे मिल सकोगी। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, अवश्य ही मिल सकती हो।

बापू

* मेरी तीन मासकी सजा पूरी होने आ रही थी।

१५३

चि० मीरा,

अिस आशासे कि यह पत्र तुम्हे सोमवारको या अुससे पहले मिल जायगा, म तुम्हारे आज अचानक मिले हुअे पत्रका अुत्तर दे रहा हू।

फाअुन्टेन पेनके बिना तुम्हारा काम चल जाय तो अच्छा है। लेकिन हमारा लक्ष्य सम्यक् वृत्ति ही होना चाहिये। अुससे स्थायी और भारी परिवर्तन हो जाते है। मूल कारण सम्पत्तिकी वासना है। अुसकी गहरी खोजके साथ-साथ अलग-अलग वस्तुओका भी अिलाज अवश्य होना चाहिये। अैसे मनुष्यकी कल्पना की जा सकती हे, जो पासमे कुछ न होने पर भी वृत्तिसे रक हो, क्योकि वह सम्पत्तिवालोसे अीर्ष्या करता है। अुसके पास कुछ नही है, परन्तु अिसका अुसे दुख है। दूसरे व्यक्तिके पास सोनेकी तिपाअी हो सकती है और वह गरम राख पर चलनेसे बचनेके लिअे अुस तिपाअीको काममे लेता दिखाअी देता है। मगर वह दूसरे ही क्षण अुसे गरीबोकी खातिर बेचकर नकद रुपया खडा कर लेता है और अिस त्यागसे अुसे प्रसन्नता होती है। यह तुम्हारे कामकी टोका नही है, बल्कि अिसलिअे लिखा है कि अगर अुसका अमल करना जरूरी या सभव हो तो कर लो।

* * *

तुम्हारा बाये हाथका लिखा मुझसे बेशक ज्यादा स्थिर है। थोड़े ही समयमे तुम बाये हाथसे अुतना ही अच्छा लिखने लगोगी, जितना दायेसे लिखती हो। . . .

मगनवक्रने मुझे तग तो किया, मगर मै अुस पर काबू पा रहा हू। मूगफली छोड दी। वल्लभभाअी और महादेवने मुझे डरा दिया और मै अुनके डरानेमे आ गया हू। मेरा वजन बढकर फिर १०५॥ हो गया है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, १३-५-'३२ बापू

चि० मीरा,

मुझे अचानक यह जानकर दुःख हुआ कि तुम मुझसे नही मिलोगी। मुझे पहला विचार तो यही आया कि अगर मै तुमसे नही मिल सकू, तो किसीसे भी कतअी न मिलू।[१] लेकिन मैंने सयम रखा और दूसरोसे मिल लिया। अब मैंने सरकारको लिखा है कि वह अपने निर्णय पर पुनर्विचार करे। मेरा खयाल है कि वह अैसा न करे, तो मुझे और लोगोसे मिलना बन्द कर ही देना चाहिये। मैंने सरकारसे अपने पत्रमे लगभग अैसा कह भी दिया है। अुसके पास मनाहीका कोअी अुचित कारण हो तो दूसरी बात है। तब तक तुम्हे मुझे पत्र लिखना चाहिये। आशा है अिस आशातीत घटनासे तुम्हारी तबीयत खराब नही हुअी होगी। शेष फिर।

बम्बअीकी घटनाये[२] हृदयविदारक है। अीश्वरेच्छा बलीयसी।

सस्नेह,

यरवदा मदिर, १८-५-'३२

बापू

१९ तारीख

जब मैंने यह पत्र सुपरिण्टेण्डेण्टको दिया, तो अुन्होंने मुझसे कहा कि वे तुम्हारा पत्र मेरे पास भिजवा रहे है। वह अब मिल गया। अभी मै और कुछ नही लिखूगा। असलमे आघात[३] जैसी कोअी चीज नही है। अपनेको अीश्वरके हवाले कर देनेके बाद आघातकी गुजाअिश ही कहा रह जाती है? अिसलिअे कष्ट सहनेमे खुशी मानो।

बापू

---

१. मेरी रिहाअीके बाद सरकारको यह सूझी कि मुझे बापूसे न मिलने दिया जाय। जब हमारी छोटीसी मडली बापूसे मिलने गअी, तो जेलके दरवाजे पर मुझे अन्दर जानेकी मनाही कर दी गअी।

२. मेरी रिहाअीके समय बम्बअीमें हिन्दू-मुस्लिम दगोका पूरा जोर था।

३. बापूका मतलब दरवाजेमे न घुसने देनेसे लगनेवाले आघातसे है।

१५५

चि० मीरा,

मै तुम्हारे पत्रकी बाट देख रहा था। वह आज आया। तुम्हे जो आघात पहुचा, अुसे यह मानकर स्वीकार कर लेना चाहिये कि जो अपने अन्तःकरणके अनुसार ही चलना चाहते है, अुन सबके भाग्यमे यही लिखा होता है। मै जल्दबाजीमे कोअी कदम नही अुठाअूगा। अगर व्यक्तिगत बातके अलावा यह न समझू कि मै तुमसे नही मिल सकता, अिसलिअे दूसरोसे भी मिलना बन्द कर देना मेरा धर्म है, तो मै यह कदम नही अुठाअूगा। लेकिन धीरजके साथ देखे क्या होता है।

तुलसीदासजीकी रामायण मेरी नजरमे महान धार्मिक गुणोवाली पुस्तक है। मैने खुद ग्रिफिथका अनुवाद* नही पढा है, लेकिन मुझे मालूम है कि प्राप्य अनुवादोमें वही अुत्तम है और मुझे प्रसन्नता है कि तुमने अुसे अितना अच्छा पाया।

वहा लिफाफे+ बनानेकी कोशिश न करना। जब तुम्हारे पास समय हो, तब यह सुन्दर धन्धा है। अगर तुम्हारे पास अैसे कमजोर लोग हो जिनके पास कोअी काम न हो, तो वे अिस चीजको आजमा सकते है। मगर तुम नही। तुम्हारे लिअे यह समयका दुरुपयोग होगा।

मै आज फिर १०५।। पौंड था। तो देख लो, चिन्ताका कोअी कारण नही है।

अब मगनचक्र पर मेरा अितना काबू हो गया है कि अुसे चलानेमें आनन्द आता है। मैने ८२ मिनटमे २०२ तार यानी फी घंटे १४७

---

* वाल्मीकि रामायणका।

+ बापू और खासकर सरदार बापूके पत्रोंके लिअे लिफाफे बना रहे थे।

तार निकाले। यह मेरे लिअे बुरा नही है। अभी मुझे और भी ज्यादा निकालनेकी अुम्मीद है।

रोला परिवारको मेरा वन्दे लिखना और अुनसे कहना कि अमरीकी मित्रके नामके अुनके पत्रको मैंने बड़े चावसे पढ़ा।× अुसमे कोअी बेजा बात नही है। अीमानदारीसे राय प्रगट करनमे कोअी बुराअी हो ही कैसे सकती है?

हम सबकी ओरसे तुम सबको प्यार।

बापू

*　　　　*　　　　*

(तारीख नही है। यरवदाकी डाककी मुहर २६-५-'३२ की है।)

× मै अिसे अिस पत्रके अन्तमे अुसी रूपमे दे रही हूं, जैसा वह अखबारोमें छपा था। अिसे रोमा रोलाने अेक खानगी मित्रको लिखा था और जरा भी नही सोचा था कि वह प्रकाशित हो जायगा। और जब अुन्हे पता लगा कि अुनके दोस्तने अुसे अखबारोमे दे दिया है, तब अुन्होने पत्र लिखकर बापूसे क्षमायाचना की। परन्तु बापूको तो अुससे खूब आनन्द ही हुआ था।

गांधीजी–रोमां रोलां मिलन

अुनकी मुलाकातके संस्मरण

यह पत्र, जो 'दि नेशन' (न्यूयार्क)से लिया गया है, रोमा रोलांने अपने अेक अमरीकी मित्रको गाधीजीके अपने यहां आनेके बारेमें लिखा था:

हिन्दुस्तानियोके आनेके अवसर पर तुम यहां होते तो कितना अच्छा रहता! वे विला वायनेतेमें ५ रोज — ५ से ११ दिसम्बर तक — ठहरे। वह छोटासा आदमी, जिसकी आखों पर चश्मा लगा हुआ था और दात नदारद थे, अपने सफेद लबादेमें लिपटा हुआ था। मगर अुसकी सारसकी-सी पतली टांगे नगी थी। अुसका घुटा हुआ सिर, जिस पर

थोडेसे मोटे बाल थे, खुला और मेहसे भीगा हुआ था। वह मेरे पास सूखी हसी लिये, अेक अच्छे कुत्तेकी तरह मुह फाड़े हाफता हुआ आया और अुसने अेक बाह मेरी कमरमे डालकर मेरे कधे पर अपना गाल रख दिया। अुसकी भूरे रगकी खोपडी मेरे गालसे लग गअी। मै सोचता हू तो अैसा लगता है कि यह सन्त डोमिनी और सन्त फ्रासिसका चुम्बन था।

बादमे मीरा (कुमारी स्लेड) आअी, जिमका विशाल आकार था और डीमीटर जैसी गर्वीली चाल थी। अन्तमे तीन हिन्दुस्तानी आये। अेक तो गाधीका छोटा लडका देवदास था, जिसका मुह गोल और प्रसन्न था। वह सुशील है और अुसे अपने नामके बडप्पनका बहुत कम भान है। और लोग मत्री — शिष्य — थे। ये दोनो युवक दिल और दिमागके दुर्लभ गुणोवाले महादेव देसाअी और प्यारेलाल थे।

चूकि थोडे ही समय पहले मेरी छातीमे सख्त सर्दी हो गअी थी, अिसलिअे मेरे ही घर पर और विला ओलगामे दूसरी मजिल पर, जिस कमरेमे मै सोता हू वही, गाधी रोज सुबह लम्बी बातचीतके लिअे आते थे। मेरी बहिन मीराकी सहायतासे दुभाषियेका काम करती थी और मेरी अेक रूसी मित्र और मत्री कुमारी कोडाचेफ भी थी, जिन्होने हमारी चर्चाके नोट लिये। मोण्ट्रेवाले हमारे पड़ोसी श्लीमरने कुछ अच्छे फोटो लेकर हमारी मुलाकातोको चित्रोमे दर्ज कर दिया।

शामको सात बजे पहली मजिलकी बैठकमें प्रार्थना होती थी। रोशनी हलकी करके वह हिन्दुस्तानी कालीन पर बैठ जाता और अुसकी छोटीसी भक्त मंडली चारो ओर बैठ जाती और तीन सुन्दर गीत क्रमश गाये जाते — पहला गीताका अंश होता, दूसरा गाधीका अनुवाद किया हुआ संस्कृत मत्रोके आधार पर प्राचीन भजन होता और तीसरा, राम और सीताकी धुन होती, जिसे मीरा अपने प्रेमपूर्ण और गंभीर स्वरमे गाती।

गाधी दूसरी प्रार्थना प्रात तीन बजे करते थे। अुसके लिअे लदनमें वे अपने परेशान साथियोंको जगाते थे, यद्यपि वे स्वय अेक बजे तक नहीं सोते थे। यह छोटामा आदमी, जो अितना दुबला पतला दीखता

है, कभी नही थकता। थकान नामका शब्द ही अुसके कोषमे नही पाया जाता। वह घंटो भीड़के हैरान करनेवाले प्रश्नोका शान्तिसे अुत्तर देता रहता था। लौजान और जिनेवामे अुसने यही किया और अुसके माथे पर बल तक नही पडे। मेज पर अचल बैठकर, हमेशा साफ और शान्त आवाजमे, वह अपने खुले और छिपे हुअे विरोधियोको, जिनकी जिनेवामे कमी नही थी, जवाब देता और अुन्हे वह खरी खरी सुनाता कि वे चुप हो जाते और अुनका गला रुध जाता।

रोमके बुर्जुआ और राष्ट्रवादी लोगोंने पहले तो अुसका छलपूर्ण मुद्रासे स्वागत किया था, मगर जब वह रवाना हुआ तो वे क्रोधसे काप रहे थे। मेरा विश्वास है कि वह और ठहरता, तो सार्वजनिक सभाओकी मनाही कर दी जाती। अुसने राष्ट्रीय शस्त्रास्त्र और पूजी व श्रमके सघर्षके दोहरे प्रश्नो पर भरसक स्पष्टताके साथ अपने विचार प्रगट किये। अिस पिछले मार्ग पर अुसे लगानेकी मुख्य जिम्मेदारी मेरी थी।

अुसका मन लगातार प्रयोगोके द्वारा कर्ममे प्रवृत्त होता है और सीधे मार्ग पर चलता है। मगर वह कभी रुकता नही है। और अगर हम अुसके बारेमे राय बनाते समय अुसकी दस वर्ष पहले कही हुअी बातको आधार माने तो हमारी भूल होगी, क्योकि अुसके विचारोका सतत विकास होता रहता है। मै अिसका अेक अुदाहरण दूगा, जो अुसके स्वभावका परिचायक है।

'अीश्वर सत्य है'

लौजानमे अुससे पूछा गया कि आप अीश्वरको जैसा समझते है अुसकी व्याख्या कीजिये। अुसने समझाया कि किस तरह हिन्दू धर्मग्रन्थोमें अीश्वरके जो सर्वोच्च गुण बताये गये है, अुनमे से अुसने बचपनमें ही निर्णय कर लिया था कि परम तत्त्वकी सबसे सच्ची व्याख्या 'सत्य' शब्दसे की जा सकती है। अुसने अुस वक्त कहा था: "अीश्वर सत्य है।" अुसने यह भी कहा: "परन्तु दो वर्ष हुअे मै अेक कदम आगे बढ गया हू। अब मै कहता हू 'सत्य ही अीश्वर है'। कारण नास्तिकोंको भी सत्यकी

शक्तिमे शका नही है। सत्यकी शोधकी लगनमे नास्तिकोने अीश्वरके अस्तित्वसे भी अिनकार करनेमे आगापीछा नही देखा है और अपनी दृष्टिसे अुनका अैसा करना ठीक है।" अिस अेक ही गुणसे तुम समझ जाओगे कि पूर्वके अिस धर्मात्मामे कितना साहस और कितनी स्वाधीनता है। मुझे अुसमे विवेकानन्दसे मिलते-जुलते गुण दीखते है।

और अेक भी राजनैतिक छल अैसा नही है, जिसकी वह अचानक पकड़मे आ जाय। अुसकी अपनी राजनीति तो यही है कि अुसके जो विचार है वे सब हरेकको बता दिये जाय, कोअी चीज छिपाअी न जाय।

अन्तिम दिन शामकी प्रार्थनाके बाद गाधीने मुझे बीथोवन बजाकर सुनानेको कहा। वह बीथोवनको नही जानता, परन्तु वह जानता है कि बीथोवन मीराके और मेरे बीचकी और अिसलिअे मीराके और अुसके बीचकी कडी रहा है। और आखिरमे हम सबको बीथोवनका ही कृतज्ञ होना पडेगा। मैंने पाचवे स्वरसाम्यका अदाते बजाकर सुनाया। अुसके साथ मैंने ला चेम्प्स अिलीसीज आफ ग्लुक भी सुनाया।

अुस पर अपने देशके धार्मिक गीतोका बड़ा असर होता है। वे कुछ कुछ हमारे सुन्दरतम ग्रिगेरियन भजनोसे मिलते-जुलते है। अुन्हे अुसने परिश्रम करके सग्रह किया है। हमने कला पर भी विचार-विनिमय किया। कलासे वह अपनी सत्यकी कल्पनाको अलग नही करता और न सत्यकी कल्पनासे आनन्दको अलग करता है, क्योकि अुसके खयालसे सत्यसे आनन्द होना ही चाहिये। परन्तु अिससे यह परिणाम अपने आप निकलता है कि अैसे वीर स्वभावके लिअे आनन्द प्रयत्नके बिना नही होता और जीवन भी कष्टके बिना सभव नही है। "सत्यके जिज्ञासुका हृदय कमलके समान कोमल और वज्रके सदृश कठोर होता है।"

प्यारे मित्र, ये थोडेसे सकेत अुन दिनोके है, जब हम साथ रहे। अुनके बारेमें मैंने बहुत ब्यौरेवार बातें लिख रखी है। मैंने तुम्हें

यह बयान नही किया है कि हमारी दोनो कुटियो पर अिन लोगोके आनेसे बिना बुलाये आनेवालो, मटरगश्त करनेवालो और आधे पागलोका अेक तूफान-सा आ गया था। नही, नही, टेलीफोन तो कभी बन्द ही नही हुआ। फोटो लेनेवाले छिप-छिपकर झाड़ियोके पीछेसे हमले करनेका कोअी मौका हाथसे नही जाने देते थे। लीमनके ग्वालोकी सभाने मुझे सूचना दी कि 'भारतके राजा' की अिस यात्राके सारे समयमे अुसके भोजनकी पूरी जिम्मेदारी हम लेना चाहते है। हमें 'अीश्वर-पुत्रो' के पत्र मिले। कुछ अिटालियनोने महात्मासे पत्र द्वारा याचना की कि हमे अगली साप्ताहिक राष्ट्रीय लॉटरीकी अिनाम दिलानेवाली दस संख्याये बताअिये।

मेरी बहन जिन्दा बच गअी, अिसलिअे अब ज्यूरिचमे दस दिन आराम करने चली गअी है। वह जल्दी ही लौट आयेगी। मेरा यह हाल है कि नीद तो हराम ही हो गअी है। अगर तुम्हारे पास हो तो रजिस्ट्रीसे मेरे पास भेज देना!

१५६

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आज पहुचा। अगर निर्णयमे देर हुअी तो अब मैंने अगले सप्ताहसे मुलाकाते बन्द कर देनेका निश्चय कर लिया है। अगर निर्णय अनुकूल हुआ तो मुलाकातें फिर करने लगूगा।

बाअी कोहनीका हाल दायें हाथसे भी बुरा हुआ। बाअीसे सारा काम बन्द हो गया और थोड़ी देरमे अुसके लकडिया बांध दी जायंगी। डॉक्टरोको विश्वास है कि और कुछ नही है, सिर्फ रोज लगातार चरखा चलानेसे जोर पडा है। अीश्वरकी कृपासे अब मगनचक्र पर मैंने पूरा काबू पा लिया है। अिसलिअे कताअी जारी है और अगर दाअी कोहनी बाअीकी सहानुभूतिमे हड़ताल नही कर देगी, तो मजेसे जारी रहेगी।

तुम्हे यह जानकर खुशी होगी कि आज मेरा वजन १०६॥ पौंड निकला। यह पहलेसे अधिक है। अिस तरह तुम देखती हो कि कोहनीके कारण भी चिन्ता करनेका कोअी कारण नही है।

तुम्हारे बिना नमकके प्रयोगके दिलचस्प नतीजे निकल रहे है। परन्तु मैं सारे परिणामोका कारण नमकके अभावको ही बतानेमे पहले और ठहरूगा।

* * *

यह समझना भ्रम है कि नमक न होनेसे स्वाद नही रहता। नमक स्वादको मार देता है। मैं अैसे लोगोको जानता हू, जो नमक डली हुअी चीजोको छूते तक नही। स्वाद आदतकी बात है। मेरे खयालसे तुम मक्खन और रोटी जरूर लेती हो। अिनमे नमक तो है ही। तुम्हारा प्रयोग अलग नमककी मात्राको कम करनेका है। अिसलिअे तुम पर जो असर हुआ है, वह नमक कम करनेका है, न कि तुम्हारे भोजनमे नमकके पूर्ण अभावका। मगर अिसकी कोअी परवाह नही। तुम्हे अिसकी चिन्ता न होनी चाहिये कि तुम किसी न किसी तरह कुछ नमक ले रही हो। जो चलता है ठीक है।

* * *

हम सबकी ओरसे प्यार।

१-६-'३२ बापू

वेरियरका सुझाव है कि हमे हर शुक्रवारकी सायंकालीन प्रार्थनामे अेक अीसाअी भजन गाना चाहिये। अिसलिअे महादेवने 'निर्मल ज्योति' शुरू कर दिया है। और अिसे हम हर शुक्रवारको जारी रखेगे। अगर वेरियरको अभी तक मेरा पत्र न मिला हो, तो यह बात अुन्हे कह देना।

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आज आया। हा, बाओी भुजा पर पट्टी चढी हुअी है। देखनेवाले, जो कारण नही जानते, मुझ पर जरूर दया करते होगे। अगर कोहनीकी पट्टीसे हालत न सुधरी, तो शायद मुझे दूधका प्रयोग करना पडेगा, अगर मैंने अैसा किया तो मै नमक छोडकर भी देखूगा। लेकिन जब मैंने यह जाना कि सर्वथा नमक छोडनेके प्रयोग जैसी चीज है ही नही, तभी मैंने डॉक्टर मित्रोकी सलाह मानी और नमक लेना शुरू किया। . . . मुझे नमकरहित भोजनके प्रति पक्षपात है। अलबत्ता, जब तक मुझे आवश्यकता प्रतीत नही होती, तब तक मे धार्मिक रूपमे अुससे परहेज नही रखना चाहता। तब तक तुम्हारे अनुभव तो जमा हो ही रहे है। वे अुपयोगी सिद्ध होगे।

* * *

तुम्हारे बारेमे जिसे अन्तिम अुत्तर समझा जा सकता है वह मिल गया है। सरकारका कहना है कि चूकि कैद होनेसे पहले तुम आन्दोलनका सचालन कर रही थी, अिसलिअे तुम मुझसे नही मिल सकती। मैंने अिस बयानका खण्डन किया है और कहा है कि तुम्हे सविनयभग आन्दोलनमे भाग न लेनेकी हिदायत थी और तुम सिर्फ खादीका काम करती थी और मित्रोको समाचार भेजती थी।* अगर अिसमे मेरी भूल हो तो मुझे बता देना। और मै सुधार करनेमे सकोच नही करूगा। मुझे पता नही कि मेरे पत्रका कोअी परिणाम निकलेगा या नही। कुछ भी हो, मै अिस अुत्तरको अन्तिम निर्णय मानकर चल रहा हू और अिसलिअे ना० को + लिख दिया कि किसीको न भेजे। मैंने पहले ही सोचकर पिछले सप्ताह मुलाकाते बन्द कर दीं।

* * *

---

* यह सही है।

+ नारणदास गाधी जो अुस समय साबरमती आश्रमके व्यवस्थापक थे।

तुम्हे अिस नअी परीक्षासे खुशी होनी चाहिये और अीश्वरको धन्यवाद देना चाहिये कि हम अेक-दूसरेको पत्र लिख सकते है। परन्तु यह बन्द हो जाय तो भी हमे प्रसन्न ही होना चाहिये। अीश्वरके हुक्मके बिना कुछ नही होता। और जो कुछ वह होने देता है, अुस पर हम शोक कैसे कर सकते है?

*　　　　*　　　　*

सबकी तरफसे प्यार।

यरवदा मदिर, ८-६-'३२　　　　बापू

१५८

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

हा, रविवारसे मैने नमक छोड दिया है। चूकि डॉक्टरोने पट्टी खोल दी है और मालूम हुआ कि अुसके लगानेसे कोअी आराम नही हुआ, अिसलिअे मुझे तुरन्त तुम्हारा खयाल आया और भान हुआ कि मै नमक छोड दू तो तुम्हे ज्यादा अितमीनान होगा। मेरे लिअे यह कोअी त्याग नही था। और अिसलिअे मैने तुरन्त बन्द कर दिया। अिसका नतीजा यह हुआ कि डबल रोटी छोडकर फुलके लेना शुरू कर दिया। पता नही कारण फुलका था या नमकका अभाव, लेकिन दस्त मैं चाहू अुससे भी ढीला होने लगा। अिसलिअे कलसे मैं अंगूर, आम और तरकारी पर हूं। अिससे बिलकुल तो नही मगर अतडिया फौरन ठीक काम करने लगी। अिसलिअे मै कुछ दिन और फुलके और बादाम नही लूगा और देखूगा कि अिसका क्या परिणाम होता है। कल मेरा वजन लिया गया था।

१।। पौंड घटा। अिसमें शिकायतकी कोअी बात नहीं। ताकत अुतनी ही बनी हुअी है। नमक न लेनेकी शर्तका यह अर्थ नहीं कि दूध फिरसे लेने लगू। अगर दूध फिरसे लेने लगू और कोहनीका दर्द जाता रहे, तो अुसका कारण दूधको समझना ठीक ही होगा। अगर दूधके बावजूद कोहनीका दर्द नहीं मिटता है और नमक छोड़ देनेसे मिट जाता है, तो यह दावा किया जा सकता है कि प्रयोग सफल हुआ। डॉ० महेताको विश्वास है कि भीतरी कोअी खराबी नहीं है। जरूरत अितनी ही है कि दर्दवाले अंगको आराम दिया जाय। जहा तक चरखेका सम्बन्ध है, यह आराम मैं दे रहा हू। बहरहाल, नमक खाना बन्द कर ही दिया है। अिसलिअे मैं अुसके दूसरे परिणामो पर निगाह रखूगा और जरूरत हुअी तो दूध लेने लगूगा। मैं अपनेको ध्यानसे देख रहा हू। अिसलिअे चिन्ताका जरा भी कारण नहीं है। और सब बातोमें शरीर बिलकुल ठीक है। वल्लभभाअी ठीक ही कहते है कि अगर कोअी भीतरी खराबी हो तो वह शरीरके अन्य भागोमें फैल जानी चाहिये। मैं यह सब ब्यौरा आश्रमके पत्रमें नहीं दे रहा हूं, क्योकि मैं तुम्हें जो कुछ लिखता हू तुम अुन्हें दिखा देती हो।

तुम्हारे कार्यके सम्बन्धमें तुम जो कहती हो अुसे मैं समझता हू। देखूगा अिस जानकारीका क्या अुपयोग किया जा सकता है।

मेरे खयालसे तुम्हें मालूम है कि देवदास बुखारमें पडा है। जो तार मिला है अुसमें लिखा है कि कोअी गंभीर बात नहीं है। मैंने अधिक ब्यौरेके लिअे तार दिया है। और मणिलाल, सुशीला, अुनकी लड़की और प्रागजी सब भयकर मलेरियाके शिकार हो गये थे। परन्तु अत्यन्त दुर्बलता लेकर अुन्होने मलेरियासे पिण्ड छुडा लिया दीखता है। सर जेम्स जीनकी पुस्तकमें अेक बढिया वाक्य है, ‘जीवन मृत्युकी ओर प्रगति है।’ यो भी कहा जा सकता है कि जिन्दगी मौतकी तैयारी है। पता नहीं क्यो हम अुस अनिवार्य और महान घटनाके विचारसे ही कापने लगते है। अुसे पहलेसे बेहतर जिन्दगीकी तैयारी समझे, तो

भी वह महान है। और जो ओीश्वरसे डरकर जीनेकी कोशिश करता है, अुसके लिअे अैसा ही होना चाहिये।

*　　　　*　　　　*

हम सबकी तरफसे प्यार।

यरवदा मंदिर, १६-६-'३२　　　　बापू

लिफाफेमें तुम वल्लभभाओीकी कारीगरीकी प्रशंसा करोगी।

१८९

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र कल आया। मैं हार गया। मैंने दूध और डबल रोटी और अिसलिअे नमक भी ले लिया है। मेजर भंडारी * मुझे अैसे प्रयोग नहीं करने देते, जिनसे स्वास्थ्यको खतरा हो। और अुनके खयालसे अब समय आ गया है कि मैं दूध रोटी लेने लगूं और फल भी। अुनकी राय है कि नमकके न होनेसे वजन जरूर घटता है और मुझे वजनका घटना महंगा पड़ेगा। मैं लाचार हो गया। अब नमक न खानेका प्रयोग मुझे आअिंदा किसी समयके लिअे रखना पड़ेगा। अिस थोड़े दिनके प्रयोगसे मेरी हालत सुधरी नहीं तो बिगड़ी भी नहीं। मैंने कुछ निरीक्षण किये हैं। परन्तु अुनका कोओी महत्त्व नहीं, क्योंकि अुनका आधार बहुत थोड़े दिनका प्रयोग है। अगर तुमने कुछ और खोज कर ली हो, तो अपने प्रयोगका हाल मुझे बताना।

तुम्हारा पहलेका पत्र मैंने अपने पत्रके समर्थनमें सरकारके पास भेजा है। देखें क्या होता है।

तुमने पूछा है कि बिजलीका अिलाज क्या है। अिसे तेज मालिश (हाओी फ्रीक्वेन्सी) कहते हैं। अिसमें बैंगनी किरणोंसे पगे हुअे कांचके

---

* जेलके सुपरिंटेंडेंट।

चपटे लट्टूसे रगड़ते है। सिवाय अिसके कि ये यान्त्रिक किरणे गरम होती हैं, प्रातःकालीन सूर्यके तापसे भी वही मतलब हल होना चाहिये।

तुमने आश्रमके अितिहासके बारेमे भी पूछा है। मै आश्रमकी प्रवृत्तियोके हर पहलूकी चर्चा कर रहा हू। लेकिन यह काम बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। कोअी न कोअी कारण अैसा आ जाता है कि मै अिसे रोज थोड़ा समय नही दे पाता। और अभी तक मुझे अैसा महसूस नही हुआ कि अिसके लिअे निश्चयपूर्वक नित्य अेक घटा दू। लेकिन अगर मेरा यहा काफी लम्बे अर्से तक रहना हुआ और अीश्वरने चाहा, तो अितिहास अवश्य पूरा हो जायगा।

देवदासको हलका ही सही, पर है मोतीजरा। तुम्हे अुसे पत्र लिखना चाहिये। अुसका पता है: जिला जेल, गोरखपुर, यु० प्रा०।

मेरे खयालसे तुमने अिस बात पर ध्यान नही दिया कि 'बहादुरोको मौत अेक ही बार आती है' का गहरा अर्थ है और अुसमे मोक्षकी हिन्दू कल्पनाके अनुसार पूर्ण सत्य समाया हुआ है। अिसका मतलब है जन्म-मरणके चक्करसे छूटना। अगर 'बहादुर' शब्दका अर्थ अुन लोगोके लिअे लिया जाय, जो अीश्वरकी खोजमे दृढ़ है, तो वे अेक ही बार मरते है। क्योकि अुन्हे फिर जन्म लेने और यह नाशवान चोला धारण करनेकी जरूरत नही होती।

अिन दिनोमे यहाका मौसम सदा ठडा रहता है। हमारे यहा भी पानी गिरा।

*　　　*　　　*

हा, मैने नारणदासको लिखकर पाच मिनिटके मौनका सुझाव दिया है। मै अिसके बारेमे तुम्हे लिखना भूल गया। मै यहा अैसा नही कर रहा हू। यहा यह अनावश्यक है और तुम्हारे लिअे अव्यवहार्य है। किसी नयी जमातमे रामनामका जल्दी-जल्दी लेना बेशक अच्छा है। बहुत तेजीसे रटनेके लिअे अकसर केवल 'राम, राम, राम, राम'

बोला जाता है। ठीक लयसे बोला जाय तो बड़ा आनन्द आता है।
हा, हम ३-४० पर अुठते है, प्रार्थना ४ और ७-२० पर होती है।

आशा है तुम बूतेसे ज्यादा मेहनत नही कर रही होगी।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर २२-६-'३२ बापू

पुनश्च :

तुम जानती हो कि क्वेकरो (शाति-प्रचारको) के अभ्यासमें मौनके समय आखे बन्द करनेकी आवश्यकता नही होती। अुस सूरतमे समय सम्बन्धी कठिनाअी दूर हो जाती है। लेकिन तुम्हारे लिअे ये सब बाते बेकार है।

१६०

चि० मीरा,

* * *

तुम्हारे अुर्दू-अंग्रेजी और अग्रेजी-अुर्दू कोष कहां है ? मुझे अुनकी सख्त जरूरत है। मेरा अुर्दू अध्ययन बढ रहा है। मै काफी पढता हू। अिसलिअे मुझे अपना अुर्दू पुस्तकोका सग्रह बढाना होगा। आश्रममे कअी किताबे है। मेरा विचार अुन्हे मगानेका है।

अभी तो मेरे स्वास्थ्यके बारेमे कोअी देने लायक खबर नही है।

तुम्हे अपने शरीरमे जो सुधार दिखाअी देता है, वह बेशक बहुत अुत्साहवर्धक है। दूध और फलोंकी मात्रा बढाना आवश्यक था।

* * *

तुम्हारे बारेमे मेरे पत्रका कोअी अुत्तर नही आया है। शायद कोअी अुत्तर ही न आये।

* * *

रामनामकी लयके लिअे तुम्हे पंडितजी[1] जब बम्बअीसे गुजरें तब अुन्हे पकडना चाहिये। मेरे खयालसे तुम अुन्हे लिखो तो वे गाधर्व महाविद्यालयके अपने शिक्षक साथियोमे से किसीसे सिफारिश कर सकते है। तुम आध घण्टेमे ही सीख लोगी।

अिन्टर नेशनल फेलोशिप (अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृमडल) के मुख्य सदस्य आजकल कौन कौन है?

युरोपके सब मित्रोंको मेरा सस्नेह वन्दे — और महादेवका भी — लिखना और आक्सफोर्डवाले चाचा[2] और अुनकी पत्नीको भी, तथा अुनके सुन्दर शिशुको प्यार। मै अुस यात्राको, अुस शान्त घरको और अुससे लगे हुअे अति सुन्दर गिरजेको कभी नही भूल सकता।

हम सबकी ओरसे प्यार।

३०-६-'३२ बापू

१६१

चि० मीरा,

तुम्हारा ७ तारीखका पत्र मुझे आज सुबह (१४ तारीखको) ही प्राप्त हुआ। जहा तक मेरे पत्रव्यवहारका सम्बन्ध है, अभी तो सब बाते अस्तव्यस्त है। सारे पत्र सरकारके पास जाते है। बादमे क्या होता है, सो मुझे मालूम नही। मै जाच कर रहा हू। जेलजीवन अैसा ही होता है। अिसमे धीरजकी अच्छी तालीम मिलती है।

* * *

मेरी तदुरुस्ती बिलकुल अच्छी रहती है। वजन आजकल १०५॥ पर स्थिर है। कोहनीका दर्द ज्योका त्यो है। बहुत सभव है कि जो मरहम लगाया जा रहा है, अुससे कोहनीको आराम हो जाय। लेकिन हो या न हो, चिन्ताकी कोअी बात नही।

---

१ साबरमती आश्रमके सगीत-शिक्षक पडित खरे।

२ मेरे चाचा।

हा, प्यारेलालको थोडे दिन नमक छोड देनेसे अवश्य लाभ होगा। तुम्हारे प्रयोगके अच्छे परिणाम निकलते रहे तो अुसे बहुत लोग करेंगे। प्यारेलाल अवश्य आजमायेगा। परन्तु जब तक तुम अुसे कमसे कम साल भर न चला लोगी, तब तक अुसके बारेमें कोअी निश्चित बात नही कही जा सकती।

अखबार कहते हे तुम बम्बअीसे जा रही हो। आश्चर्य है कि तुम्हे आज्ञा अुस समय मिली जब पुलिसको अवश्य मालूम हो गया होगा कि तुम बम्बअीसे रवाना होनेवाली हो। अवश्य ही अुन्हे तुम्हारी प्रस्तावित रवानगीका हाल मालूम होनेसे पहले आज्ञाअे मिल गअी होगी। *

वल्लभभाअीने अब लिफाफे बनानेके कामके सिवाय सस्कृतका अध्ययन और कताअीका काम भी शुरू कर दिया है। सस्कृतकी पढाअीके लिअे वे बहुत ही परिश्रम कर रहे है और यद्यपि गाडीव चरखा अुनके लिअे नया है, तो भी वे २० नम्बरके १८० तार आसानीसे कात रहे है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, १४-७-'३२ बापू

१६२

चि० मीरा,

मेरे सामने तुम्हारा पत्र और पोस्टकार्ड है। शरीर अपना भाडा लेगा। हमे कभी मालूम नही होता कि शरीर पर लागू होनेवाले कानूनोको हम कब भग कर बैठते है। और मानवी कानूनकी तरह प्रकृति भी अज्ञानका बहाना नही मानती। असलिअे तुम्हारे ज्वर पर मुझे आश्चर्य

* जब मै छपरा जाकर राजेन्द्रबाबूसे मिलनेके लिअे सामान बाध रही थी, ठीक अुसी समय मुझे बम्बअी छोड़ देनेका नोटिस मिला। मैने अपनी योजना नही बदली, परन्तु नियत दिन पर ही रवाना हुअी।

नही होता। * मैं आशा करता हू कि तुमने जो जोरदार अिलाज किया, अुसने मलेरियाको बढनेसे रोक दिया होगा। हां, अैसे समय मित्रोकी सेवा भारी देन सिद्ध होती है और अुससे जल्दी आराम होता है। मुझे ज्ञात है कि शिवप्रसाद बाबूके घर पर मेहमानोकी कितनी अुदार सेवा की जाती है। मुझे खुशी है कि तुम्हे ये मधुर अनुभव हो रहे है। अिससे तुम्हारी जैसी बीमारी सह्य ही नही हो जाती, परन्तु वह स्वागत-योग्य भी बन जाती है। क्योकि अिससे हम मानव स्वभावके अुत्तम स्वरूपको समझ सकते है। और जब वह सबके साथ और सब परिस्थितियोमे समान व्यवहार करता है, तब तो वह लगभग दैवी ही बन जाता है।

तुम्हारा गगाका वर्णन बिलकुल काव्यमय है। मुझे भी लगभग अैसा ही महसूस हुआ था जैसा तुम्हे हुआ है। और शायद जगह भी वही थी, जहा मै पैदल चल रहा था। मैने 'नवजीवन' के लिअे अपने सस्मरण लिखे थे। मेरे खयालसे अिसको पूरे दस साल हो गये होगे।

दूधकी खूराक अब भी जारी है। वजन १०५॥ पौण्ड है। अिससे कोहनी पर कोअी असर नही हुआ है। जब मै बादाम और रोटी ले रहा था, अुस समयसे तबीयत कोअी ज्यादा अच्छी नही मालूम होती। जहा तक दस्तका ताल्लुक है, मै अवश्य ही दूधकी खुराककी अपेक्षा अुस खुराकसे ज्यादा अच्छी हालतमे था।

पता नही यह पत्र तुम्हे कब मिलेगा। मेरे पत्रव्यवहारमे गड़बड अभी तक जारी है। आनेवाली डाक तो नियमित हो गअी है, परन्तु जानेवाली डाकमे बडी देर होती है। मै अिसके बारेमे सरकारसे लिखा-पढी कर रहा हू। मै अिस अचानक पैदा हुअी गड़बडको कतअी नही समझ सकता। लेकिन गड़बड हुअी तो है। सौभाग्यसे मैने चित्तकी शातिके खातिर दक्षिण अफ्रीकामे भी अपना कैदी जीवन यह मानकर शुरू किया

---

* छपरासे बनारस पहुचनेके अेक-दो दिनके भीतर ही मै मलेरियाके सख्त हमलेसे लथड गअी।

था कि कैदीके कोअी अधिकार नही होते। अगर तुम अभी तक जेलकी दीवारोसे बाहर हो और अगर तुम्हे मेरे पत्र नियमित नही मिलते, तो तुम जान लोगी कि अुसका कारण क्या है।

सस्नेह,

यरवदा मदिर २१–७–'३२ बापू

सब मित्रोसे वन्दे कहना। सभव हो तो देवदाससे मिल लेना। वह तुम्हारे बहुत ही निकट है।

१६३

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

तुम्हारे पोस्टकार्डोसे बडी राहत मिलती है। मेरी समझमे नही आता कि तुम्हे बुखार क्यो बना रहता है। आशा है तुम मच्छरदानी नियमित अिस्तेमाल करती होगी। आनेवाले पत्र फिर समय पर मिलने लगे है। जानेवाले पत्रोमे बहुत देर होती है। मै सरकारसे अब भी पत्रव्यवहार कर रहा हू। तुम्हे मेरा पत्र न मिले या देरसे मिले तो चिन्ता न करना।

सस्नेह,

यरवदा मदिर २६–७–'३२ बापू

१६४

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

तुम रोज अपनी तन्दुरुस्तीकी रिपोर्ट दे रही हो। अिससे मुझे बड़ी तसल्ली होती है। यह जो हर बारकी बीमारीके बाद अेकाअेक दुर्बलता आ जाती है, अिससे जाहिर होता है कि तुम्हारे शरीरमे बहुत सहनशक्ति नही है। लेकिन मुझे भय है कि अिसका कोअी अिलाज नही है। पहलेके किसी पत्रमे मैंने तुमको लिखा था कि सभव हो तो देवदाससे मिल लेना।

अब अुसका विचार नही करना है। तुम्हे मानसिक और शारीरिक दोनों तरहके कामसे लम्बा विश्राम लेनेकी आवश्यकता है। बाबू शिवप्रसाद और अुनके घरवालोको मेरा वन्दे कहना।

सस्नेह,

यरवदा मदिर २७–७–'३२ बापू

१६८

चि० मीरा,

नारीफकी बात है कि अत्यन्त दुर्बल होने पर भी तुम्हारा लिखना सदाकी भाति ही स्थिर और स्पष्ट है। मालवीयजीको मैने तार दिया था। कहते है कि वे तुम्हें अुस वक्त तक रोक रखेंगे, जब तक तुममे फिरसे शक्ति न आ जाय। और अगर जलवायु अनुकूल हो तो अिससे अच्छा क्या हो सकता है कि तुम शिवप्रसाद बाबूके आतिथ्यमय घरमे और मालवीयजीकी प्रेमपूर्ण सार-सभालमे रहो। मुझे तो बिलकुल चिता नही रहेगी। तो तुम तुलसीके पत्तोकी चाय ले रही हो।* मैने खुद अुसे कभी नही लिया। मैने अुसकी तारीफ बहुत सुनी है। मेरी रायमे खास काम करनेवाली चीज गरम पानी है। लेकिन मुझे बहुतसे वैद्यो और रोगियोकी गवाही पर अविश्वास नही करना चाहिये। मै तो यही चाहता हू कि तुममे पहलेकी-सी ताकत फिर आ जाय और वह भी हानिकारक कुनैन लिये बिना। तुलसीके पत्ते बेशक निर्दोष है और अुनकी सुगन्ध भी कोमल और सुखद होती है।

वहाके सब मित्रोको हमारा सस्नेह वन्दे कहना।

सस्नेह,

यरवदा मदिर ३१–७–'३२ बापू

---

* शिवप्रसाद बाबूका बूढा नौकर मुझे तुलसीकी पत्तियोका अेक खास काढा बना देता था। अुसमे अेक दो पारिजातकी पत्तिया, काली मिर्च और मिश्री डालता था। अिससे पसीना आकर बुखार अुतर जाता था।

आशा है तुम्हे मेरे पहलेके पत्र मिल गये होगे। सरकारने अुन्हें तुम्हारे पास भेजनेकी अिजाजत दे दी है। देर तो हुअी, परन्तु बादमे पत्रोको भेजनेके लिअे खासी मुस्तैदीके साथ मुक्त कर दिया गया है।

१६६

चि० मीरा,

मुझे दो पोस्टकार्डो ओर अेक पत्रकी पहुच लिखनी है। वल्लभभाअी अपने बढते जानेवाले भण्डारमे से अुत्तम लिफाफे चुनकर देते है। अिसलिअे कोअी आश्चर्य नही कि तुम्हे अुनकी कारीगरी पसन्द आती है। यह कला अैसी है, जिससे कचरेका सोना बन जाता है।

मुझे प्रसन्नता है कि राजेन्द्रबाबू तुम्हारे साथ है। अगर मे अुन्हें पत्र न लिख सकू, तो मेरी और वल्लभभाअी और महादेवकी तरफसे भी अुन्हे सप्रेम वन्दे कहना। मुझे अिसमे सन्देह नही है कि जहा भी सभव हो सकता है, तुम हिन्दीमे ही बोलती होगी। तुमने अुस दिन मुझे कुछ और पुस्तके चुन देनेके बारेमे लिखा था, जिन्हें तुम अवकाश* मिलने पर पढ सको। बाबू शिवप्रसादके यहा पुस्तकोका अच्छा सग्रह है। वे और राजेन्द्रबाबू तुम्हारे लिअे पुस्तके चुननेमे तुम्हारी मदद करेगे। जैसे तुम्हे रामायण पसन्द है, वैसे ही तुम महाभारतकी भी कद्र करोगी। यह बडा काम है, मगर है करने लायक। वेद और अुपनिषद् भी है। तुम वेदोके चुने हुअे अश और सारे मुख्य अुपनिषद् पढ सकती हो। अैसा करनेसे तुम्हे बेशक हिन्दू विचारधाराका ज्ञान हो जायगा, जो तुम्हारे लिअे कीमती होगा। फिर हिन्दुत्वके प्रति तुम्हारे स्वाभाविक प्रेमको ज्ञानका भी सहारा हो जायगा। और यह भी हो सकता है कि तुमने जो खयाल बना रखे हैं, अुनमे से कुछको सुधारना पडे। अिस अध्ययनका सन्तुलन

---

* अगर कभी मै जेल चली जाअू।

करनेके लिअे 'कुरान' और अमीरअलीकी 'स्पिरिट आफ अिस्लाम' पढ लेना चाहिये। पिक्थॉलका कुरानका अनुवाद शायद सर्वोत्तम है। मै निश्चित नही कह सकता। परन्तु वह न हो तो डॉ० मुहम्मदअलीका अनुवाद पढना। अत्र मैने तुम्हे पूरे अेक वर्षका अच्छा ठोस पाठ्यक्रम बता दिया है।

देवदासके बारेमे कुछ नही कहता, क्योकि मे अुसे अलग लिख रहा हू। चाय और कहवा तेज हो, तो किसी अच्छे हो रहे रोगीके लिअे जहर है। सभव है चीनी ढंगसे बनाअी हुअी चाय निर्दोष हो। तुम जानती हो यह कैसे बनाअी जाती है, नही जानती?

. कमसे कम अभी तो मेरी डाक, जाने और आनेवाली दोनो, फिर व्यवस्थित हो गअी है।

पिछले सप्ताहसे मैं फुलकोके बजाय केले लेने लगा हू। चार केले रोज लेता हू। यह मैंने कब्जसे बचनेके लिअे किया है, क्योकि कब्ज आता हुआ दीखता था। मेरी तबीयत पहलेसे अच्छी है। अलबत्ता, यह नतीजा तो हुआ ही कि अब भोजनमे बहुत थोडा नमक है। नारगिया ले रहा हू। अुनके साथ नमक नही लेता। अेक शाक लेता हू और अुसमे शामको दूध डाल लेता हू।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, ७-८-'३२ बापू

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

तो तुम फिर अपनी गुफामें आ पहुची। * आशा है तुम खोअी हुअी ताकत और जीवन-शक्ति पुन प्राप्त कर लोगी। किसी भी बातकी चिन्ता न करना। केवल अपनी कताअी पर ही ध्यान रखना और जो अध्ययन आसानीसे कर सको करती रहना। हम सब सकुशल है।

हम सबकी ओरसे प्यार। अीश्वर तुम्हारा कल्याण करे।

यरवदा मदिर, १०-८-'३२

बापू

श्री मीराबाअी,
विचाराधीन कैदी,
आर्थर रोड जेल
बम्बअी

---

* दौरा खतम करके मै बम्बअी आ गअी और अिस तरह मैंने अुस नोटिसका भग किया, जो मुझे बम्बअी छोड देनेके लिअे दिया गया था और जिसे अब, जब मै अहमदाबादसे गुजर रही थी, बम्बअीमे कभी न घुसनेका अेक और नोटिस देकर सख्त बना दिया गया था। स्टेशन पर गाडीके पहुंचते ही मुझे प्लेटफार्म पर गिरफ्तार कर लिया गया और सप्ताह भर मुकदमा चलाकर मुझे अेक सालकी कैदकी सजा दे दी गअी।

१६८

चि० मीरा,

मैंने तुम्हारे नये पते पर अेक पत्र या यो कहो कि पोस्टकार्ड लिखा था।

मैंने निश्चय कर लिया था कि तुम फिर बीमार पड जाओगी, तो मनसे भी तुम्हे नही झिडकूगा। जब मुझे काशीसे तुम्हारी बीमारीका समाचार मिला, तब मैंने दिलमे सोचा था कि तुम जब भी बीमार पडो तभी तुम्हे दोष देनेसे काम नही चलेगा। बेशक, हम अपने कसूरोसे ही बीमार होते है। परन्तु कठिनाअी यह होती है कि हमे सदा पहलेसे ही अपनी भूलोका ज्ञान नही हो सकता। दूसरी कठिनाअी यह है कि ज्ञान हो जाय तब भी हम हमेशा अुनसे बच नही सकते। अिसलिअे यह सचाअी जान लेना काफी है कि हम अपनी गलतियोसे ही बीमार होते है, और जब हम बीमार पड ही जाय, तो सदा अपनेको झिड़कते ही न रहे। अिसलिअे तुम्हारी ताजा भूल पर मुझे आश्चर्य नही होता। तुमने जो परिस्थितिया बताअी है, अुनमे यह अनिवार्य था। अीश्वरकी यही कृपा है कि अिन बीमारियो पर तुम काबू पा लेती हो और बादमे बुरा असर बाकी नही रहता। रोगके कीडोको प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा नष्ट कर देनेसे अकसर शरीर पहलेसे शुद्ध और बलवान हो जाता है। तुम्हे जो आराम मिल रहा है, वह अीश्वरका भेजा हुआ है। तुम्हे मुलाकाते करने या पत्र लिखने तककी अिजाजत न मिले तो भी चिन्ता न करना। ५० वर्ष पहले ही की बात है कि कैदियोको न किसीसे मिलने दिया जाता था और न पत्र लिखने दिया जाता था। आजकल मामूली कैदकी सारी भयकरता नष्ट हो गअी है। हावर्डने जो आन्दोलन छेडा था, वह महान था। वह केवल शुरूकी स्थितिमे है। वह दिन दूर नही है जब जेलखानोकी कायापलट कर दी जायगी और लोगोको केवल नजरबन्द रखा जायगा, ताकि अपने राज्योकी कल्पनाके अनुसार वे नैतिक, सामाजिक या राजनैतिक खराबी न कर सके। परन्तु

जलजीवनकी स्थिति कैसी भी हो, हमे तो खुशी ही मनानी चाहिये। हा, जितनी भी सभव हो राहत प्राप्त करनेकी कोशिश करते रहना चाहिये।

अब मेरे भोजनकी बात सुन लो। क्या तुम्हे याद नही कि यहा यरवदामे मै दूध और रसदार फल लेते हुअे कब्जसे पिड नही छुडा सका और दूध छोडकर ही कब्जसे मुक्त हो सका था? अिस बार भी मैने दूध अिसीलिअे छोडा था कि मै दूध और फलोसे स्वस्थ नही रह सकता था। अिस बार मैने दूधके साथ केला शुरू किया। कुछ हालत सुधरी। मगर अितना काफी नही था। अिसलिअे मैने कुछ ही रोजके लिअे दूध छोड दिया है और गेहूके बजाय बाजरेकी रोटी ले रहा हू। परिणाम अद्भुत हुआ है। पिछली कैदके दिनोमे बाजरेसे ही मेरा कब्ज दूर हुआ था। और मै शेष कैद रोटी, तरकारी और बादामकी मलाअी पर काट सका था। दूध फिर लेना शुरू करनेका विचार है। देखता हू कि बाजरेके साथ लेनेमे कब्ज टलता है या नही। मेरी तंदुरुस्ती बहुत अच्छी है। तुम देख सकती हो कि मै दाये हाथसे लिख रहा हू और अिससे कोअी बिगाड नही हुआ है। बाअी कोहनीकी और भी अच्छी तरह रक्षा करनेके लिअे मैने फिर मगनचक्र अपना लिया है और अिस बार ३० नम्बरसे अूपरका सूत कात सकता हू। अिससे मुझे सन्तोष है। प्रति घटे सूतकी मात्रा अभी तक अच्छी नही है। मुश्किलसे प्रति घटे १०० तार तक पहुचता हू।

वल्लभभाअी सस्कृतमे खूब तेजीसे प्रगति कर रहे है। महादेव फ्रेंच और अुर्दू दोनोमे लगे है। अिस प्रकार हमारे समयका बहुत अच्छा अुपयोग हो रहा है। आसमान अचनाक साफ हो गया है और यहा बहुत गरमी पड रही है, जो अिन दिनोके लिअे गैरमामूली बात है। आशा है तुम्हारे यहा ऋतु बुरी नही होगी।

अुम्मीद करता हू कि तुम्हारे पास मच्छरदानी है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

२३-८-'३२ बापू

१६९

चि० मीरा,

तुम्हारा नियमित पत्र आज मिला। मुझे हर्ष है कि तुम्हारा शरीर पहलेसे अच्छा है। तुम्हारा नुसखा मेरे कामका नही है। अुसमे बकरीके दूधका मक्खन जुटाना पडता है। मै अितना कष्ट अुठाना नही चाहता। और मुझे जरूरत भी नही, क्योकि अुसके बिना ही मेरी तदुरुस्ती बहुत अच्छी है। अिसलिअे मेरे पास अुसके लिअे कोअी बहाना भी नहीं है। कारण, हमे जीभके स्वादके लिअे नये-नये व्यजन निर्माण नही करने चाहिये। मैने बहुत वर्षो तक यह काम काफी किया है। तुम्हे खास तौर पर वहा अिस परिवर्तनकी जरूरत है। जिस चीजकी मेरे शरीरको आवश्यकता प्रतीत होती है, अुसके जुटानेमे मुझे सकोच नही होता। आज मैने दूध लिया है। लेकिन मै बाजरेको जारी रखकर देखना चाहता हू कि दूधके साथ अिसे लेनेसे अतडिया ठीक रहती है या नही। दूधके बिना तो अुसका परिणाम बहुत ही बढिया रहा है। सभव है यह बात सभी शरीरोके लिअे लागू न हो। मुझे यह पता लगा है कि हरेक शरीरकी अपनी अलग खासियते होती है और अुनका पता लगाना पड़ता है।

*　　　　*　　　　*

मै अिस खबरके लिअे बिलकुल तैयार था कि तुम वहासे नही हटाअी जाओगी। तुममे वहा भी तदुरुस्त रहनेकी सामर्थ्य होनी चाहिये। नारणदासने मुझे तुम्हारी घी और खजूरकी फर्मायशके बारेमे लिखा था। आशा है तुम्हे दोनों चीजे मिल गअी होगी। मैने खजूर छोड़ दिये, क्योकि मुझे अच्छे और बिना कीड़ेवाले नही मिले। तुम सख्त और सूखे छुहारे ले सकती हो। मै नही ले सकता।

आशा है तुम्हे कमसे कम कुछ मित्रोसे मिलनेकी अिजाजत मिल जायगी। लेकिन न मिले तो भी हमारे लिअे कोअी पराये नही है।

सभी अजनबी लोग, जिनमे अपराधी और जेलवाले भी शामिल है, हमारे मित्र है। हमने यहा पशुओमे मित्रोको पहचानना सीख लिया है। हमारे यहा अेक बिल्ली है, जिसने हमारी आख खोली है। और हममे जरूरी दृष्टि हो तो हम वृक्षो और पेडोकी भाषा समझ सकते है और अुनकी मित्रताकी कद्र कर सकते है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

२१-८-'३२ बापू

१७०

चि० मीरा,

मै तुम्हारे पत्रकी बाट देख रहा था। वह आज पहुचा। प्रसन्नताकी बात है कि तुमने अुपवासका कारण समझ लिया।* अुसके सिवाय कोअी चारा ही नही था। यह अेक विशेष अधिकार भी है और कर्तव्य भी। यह सौभाग्य अेक या अनेक पीढियोमे बिरलेको ही और क्वचित ही प्राप्त होता है। अहिसाके मार्गमे अुपवास सर्वोत्कृष्ट कर्म है, अगर वह अहिसाकी भावनासे ओतप्रोत हो और जिस कार्यके लिअे अुपवास किया जाता है अुसमे स्वार्थका लेश भी नही हो। अिस-लिअे मै कहता हू कि तुम भी मेरी तरह हर्ष मानो कि मुझे अैसा अवसर प्राप्त हुआ दीखता है। 'दीखता' अिसलिअे कहता हू कि अभी मेरी श्रद्धाकी परीक्षा होनी है। जीवन-मरणके मामलेमे कोअी अपनी ही शक्तिकी बात करनेका साहस नही कर सकता। अिसलिअे प्रश्न यह है कि क्या मै अुस आवश्यक शक्तिके योग्य हूं। दूसरे, क्या अिस कार्यमे वाछित शुद्धता है; और तीसरे, क्या अिस व्रतको लनेमे

---

* २०-९-'३२ को बापूने तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमत्री रैम्जे मैकडोनल्डके साम्प्रदायिक निर्णयके कारण आमरण अनशन प्रारभ किया था।

मैं सचमुच हिंसासे सर्वथा मुक्त हूं? जब मैं कहता हू कि मुझे ये सब बाते प्रतीत होती है, तब मैं केवल अपना विश्वास ही प्रगट करता हू। निर्णय तभी दिया जा सकता है, जब कार्य पूरा हो जाय। मैं चाहता हू कि तुम अिस घटनाकी प्रगतिको जरा भी अशात हुअे बगैर देखती रहो। और न तुम्हे किसी भी स्थितिमे सहानुभूतिमें अुपवास करना चाहिये। तुम्हे अपने ही काममें डूबे रहना चाहिये। और वह काम यह है कि पूर्ण धीरज और सन्तोषके साथ अपनी कैद पूरी करो और जो भी समय तुम्हे मिले अुसके हर क्षणका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करो।

अगर तुम दूसरी तरह तदुरुस्त और अच्छी तरह हो, तो तुम्हारे वजनके घटनेकी मुझे चिन्ता नही है। जब तुम्हारे लिअे वहाका जलवायु अनुकूल हो जायगा और मौसम सुधर जायगा — जो अभी अेक महीने और नही सुधरेगा — तब वजन धीरे-धीरे बढ जायगा।

मेरी बात यह है कि मै बिलकुल अच्छा हू। अभी मेरी खुराक डबल रोटी, दूध, अेक शाक, देशी खजूर (जो बुरे नही है) और मोसम्बी है।

मुझे मालूम है कि तुम्हे स्वभावत वृक्षो और पशुओको मित्र बनानेकी कला याद है। मै चाहता था कि तुम अिस विचारका विस्तार अिस तरह कर लो कि तुम्हे बाहरी मित्रोका अभाव न खटके। अिसी-लिअे मैने परायोको भी अुसी श्रेणीमे रखा था। यानी हमे निश्चित रूपसे अनुभव होना चाहिये कि निजी मित्र और सम्बन्धी लोग पराये आदमियो, पशु-पक्षियो और पेडोसे अधिक मित्र नही होते। वे सब अेक ही है और अगर हम केवल महसूस कर सकें, तो वे सब अीश्वरके अवतार है। जब हम जेलकी दीवारोमे बन्द होते है, अुस वक्त अैसा निश्चित अनुभव होनेसे बाहरके मित्रोसे मिलनेकी सारी लालसा मिट जाती है।

अिग्लैडसे परिवारकी जो खबरे तुम्हे मिली है वे हर्षप्रद है। अुन्हें पत्र लिखो तब सबको मेरा वन्दे लिखना।

हमारे बिल्ली-परिवारको या अुसके कुछ सदस्योंको चरखेकी मालसे प्रेम है। अुनमे से अेकने अुस दिन अुसे नष्ट कर दिया। वे भोजनके समय अपना सगीत छेड देते है और जब वल्लभभाअी अुन्हे खाना परोस देते है तभी बन्द करते है। माको शाकाहारका शौक है। अुसे दाल, चावल और खासकर तरकारिया बहुत पसन्द है। क्या मैंने बता दिया कि हमारे परिवारमे वृद्धि हुअी है? माको जब प्रसव-पीडा हो रही थी तब और प्रसवके बाद दो-तीन दिन तक अुसमे मानवताके दर्शन हुअे। वह हमे लाड करती और हमसे कराये बिना नही छोडती। वह करुण दृश्य था। अपने बच्चेकी वह कितनी सभाल रखती है, यह देखकर बडा आश्चर्य होता है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

१५-९-'३२ बापू

१७१

चि० मीरा,

मै आज ढाअी बजे गुरुदेवको, बादमे शास्त्रीको और फिर तुमको पत्र लिखनेके लिअे अुठा। तुम्हारा हृदयविदारक पत्र मिला। पहले तो मैंने सोचा कि गवर्नरके पास भेज दू, परन्तु ज्यो ही यह विचार आया त्यो ही मैंने अुसे छोड दिया। तुमने भट्टीमे प्रवेश करना पसन्द किया है, तो अुसीमे तुम्हें रहना चाहिये। तुमने अितने वर्षसे देख लिया है कि मेरी संगतिमे रहना कोअी आसान काम नही है। अच्छा, तो अब अिस जहरको आखिरी बूद तक पियो।

जब मैंने अपने व्रतका समाचार देनेवाला पहला पत्र लिखा, तब तुम्हारा और बाका खयाल आया। थोडी देरके लिअे दिमाग चकरा गया। तुम दोनो अिस बातको कैसे बरदाश्त करोगी! परन्तु अन्तरात्माने कहा, 'अगर तुझे अिसमे पडना ही है, तो आसक्तिका विचार मात्र छोड देना पडेगा।' पत्र चला गया। अस्पृश्यताके पापको

धोनेके लिअे कोअी भी पीड़ा बहुत भयंकर नही होगी। अिसलिअे तुम्हे अिस कष्टमे खुश ही होना चाहिये और वीरतापूर्वक अुसे सहन करना चाहिये। मै जानता हू अैसा करना कितना कठिन है। फिर भी तुम्हे कोशिश ठीक यही करनी है। जरा सोचो और समझो कि अतिम दर्शन करनेमे कोअी अर्थ नही है। जिस आत्मासे तुम्हे प्रेम है, वह सदा तुम्हारे साथ है। जिस शरीरके द्वारा तुमने अिस आत्मासे प्रेम करना सीखा, अुसकी अब अुस प्रेमको कायम रखनेके लिअे जरूरत नही है। जब तक अुसका अुपयोग है, तब तक वह बना रहे तो अच्छा है, जब अुसका कोअी अुपयोग न रहे तब अुसका नष्ट हो जाना भी अुतना ही अच्छा है। और चूकि हमे यह नही मालूम है कि अुसका अुपयोग कब समाप्त हो जायगा, अिसलिअे हम यह नतीजा निकालते है कि मृत्यु किसी भी कारणसे हो, अुसका अर्थ यही है कि अब अिस शरीरका अुपयोग नही रह गया है। अगर तुमको अिस बातसे तसल्ली होती हो, तो जान लो कि वल्लभभाअी, महादेव, रामदास, सुरेन्द्र और देवदास, जिनसे मै मिल चुका हू, सब अिस चीजको बहुत ही अच्छी तरह बरदाश्त कर रहे है।

तुम्हारी साथिनोको प्यार। मुझे खुशी है कि किशन तुम्हारे साथ है। वह भली और बहादुर लड़की है।

भगवान तुम्हे शक्ति दे!

सस्नेह,

२०-९-'३२ बापू

१७२

चि० मीरा,

तुम्हारा खयाल मुझे भीतर ही भीतर कुतर रहा है। काश, तुम शाति रख सको। रोज पत्र अवश्य लिखती रहो, और कल अपनी हालत तारसे बताओ। मेरा अुपवास बहुत अच्छी तरह चल रहा है। यह पत्र पहलेकी तरह अेनिमाके बाद पड़ा-पड़ा लिख रहा हू।

स्थिर और मजबूत रहना। अीश्वर पर श्रद्धा रखना। महादेवके जरिये तुम्हे रोज समाचार भेजूगा। शायद स्वय न लिख सकू।

सस्नेह,

२३-९-'३२ बापू

रातके ११॥ बजे

१७३

[महादेवका पत्र आया कि बापूका स्वास्थ्य खासा अच्छा है। कागजके अूपरके हिस्सेमे बापूने अपने ही हाथसे ये शब्द लिखे है]

मेरी प्यारी बिटिया,

तुम्हारी हिम्मत नही टूटनी चाहिये। तुमको अीश्वरकी दयाके दर्शन अितनी प्रचुरतासे होने चाहिये, जितनी प्रचुरतासे शायद पहले कभी नही हुअे।

सस्नेह,

२४-९-'३२ बापू

१७४

२५ तारीखका पत्र मुझे मिला ही नही।

मी०

१७५

तार

आज कोअी पत्र नही भेजा गया है। अीश्वरकी कृपासे सवा पाच बजे गुरुदेव और दूसरे स्नेही मित्रोकी मौजूदगीमे अुपवास टूट गया।*

सस्नेह,

२६-९-'३२ बापू

---

* बापूको अेक सरकारी विज्ञप्ति मिल गअी थी, जिसमे अुन्हे सन्तोष हो गया था।

१७६

चि० मीरा,

अीश्वर महान और दयालु है। वह अपने सेवकोकी सहनशक्तिसे बाहर परीक्षा नही लेता। अिसलिअे सरकारका जवाब समय पर आ गया, जिससे मै कल शामके पाच बजे अुपवास तोड सका। कविवरने प्रार्थना कराअी और अुसके बाद कोढी कैदी परचुरे शास्त्रीकी बारी आअी, जो कुछ समय तक आश्रममे रहे थे।

आजके लिअे अितना काफी है।

यरवदा मदिर, सस्नेह,
२७-९-'३२ बापू

१७७

चि० मीरा,

कल तुम्हारे दो पत्र मिले। मैने खुद अेक छोटासा पुर्जा लिखा था। आशा है तुम्हे मिल गया होगा। यहासे रोज तुम्हारे पास कुछ न कुछ जाता रहा है और आअी० जी० ने मुझे विश्वास दिलाया कि मेरे पत्र तुम्हें तुरन्त दिये जायगे। अिसलिअ मै नही समझ सकता कि मेरे पत्र तुम्हे क्यो नही दिये गये। किन्तु अब तो सब कुछ खतम हो गया। मै नारगी और अगूर खूब ले रहा हू और ताकत आ रही है। नीद अच्छी आती है, अिसलिअे अब चिन्ताका कोअी कारण नही।

अुडीसाका दृश्य, जिसका तुमने वर्णन किया है, और मलाबारके दो और दृश्य अिन दिनो मेरे हृदयमे बसे रहे और अुनके कारण मै पीड़ाको सहन कर सका। गुरुदेवके आनेसे बडी सान्त्वना मिली और अब भी है। अुन्होने तहेदिलसे अुपवासका समर्थन किया है।

आशा है अब तुम्हारा चित्त प्रसन्न होगा। अपनी साथिनोको मेरा आशीर्वाद कहना।

तुम्हे और किशनको प्यार।

२८-९-'३२ बापू

१७८

चि० मीरा,

अुपवास टूटनेके बाद यह तीसरा पत्र है और नारंगियो और अंगूरके रसके पहले फलाहारके बाद ही लिखा गया है। मेरा मुख्य भोजन यही है। कल मैंने तुरअीका पतला रसा लिया। आज मेरा विचार दूध लेनेका है।

तुम्हारे पत्र नियमित आये है। मेरी समझमें नही आता कि मेरे तुम्हे क्यो नही मिले। पूछताछ करवा रहा हू।

शक्ति तेजीसे आ रही है। कल तक डेढ पौंड वजन बढ चुका, यानी ९५ पौंड हो गया है।

रोमा रोलाको मैंने अवश्य पत्र लिखा। अुपवास टूटने पर अुनका तार आया था।

*　　　*　　　*

अलबत्ता, बा ज्यो ही यहा आअी, अपना सब दुख भूल गअी। मालूम होता है अुसने सचमुच सारा कष्ट बडी बहादुरीसे सहन किया है।

आशा है तुम सबको अब बिलकुल शांति हो गअी होगी। अछूतोने सदियोसे जो कष्ट सहन किये है, अुनकी तुलनामें यह अुपवास दरअसल कुछ नही था।

तुम्हे और किशनको प्यार।

बापू

यरवदा मंदिर,
२९-९-'३२

चि० मीरा,

चूकि तुम्हे मेरे पत्र नियमित नही मिल रहे थे, अिसलिअे कल मैने तुम्हे जानबूझकर नही लिखा। यह पत्र नारगी और अगूरका रस लेनेके बाद ही प्रातःकाल मै लिख रहा हू। मै मजमे हू। सोमवारको मेरा वजन ९३।। था। अुसके मुकाबलेमे कल ९९।।। पौड निकला। यह आश्चर्यजनक सुधार है। अेक-दो दिनमे थोडा थोडा घूमने लगूगा। दस्तके लिअे अब भी अेनिमाकी जरूरत होती है, परन्तु आशा है जल्दी ही साधारण स्थिति हो जायगी। खुराक आठ नारगी, अगूर, चार चम्मच ग्लूकोस, सवा पौड दूध, तरकारीका साफ रसा, गूदा और टमाटर है। अिनमे से मै कुछ न कुछ औसतन् हर ढाअी घण्टेसे ले लेता हू। कल मैने २३५ तार काते। बहुत थकान नही मालूम हुअी। यह कताअी दो वारमे की। अंग्रेजी डाकके लिअे और यहाके पत्रलेखकोके लिअे बहुतसे पत्र लिखे। बीच-बीचमे खाने और आराम वगैराका वक्त छोडकर मैने कल आठ बजे रात तक काम किया। और अिसका अभी कोअी खराब असर मालूम नही होता। यह सब बहुत अच्छी प्रगति है। और अिसलिअे मै गुनगुनाता रहता हू कि 'अीश्वर महान और दयालु है।' अुपवास से जो परिणाम निकला, अुसकी तुलनामे अुपवास कुछ नही था। यह मनुष्यका काम नही है, अीश्वरका काम है। अिन सब बातोसे तुम्हारी अुदासी दूर हो जानी चाहिये।

तुमने अखबारोमे देख लिया होगा कि मुलाकातो वगैराके बारेमे लगभग वही प्रतिबन्ध लागू है, जो अुपवाससे पहले थे। बा दिनमें मुझसे मिल सकती है।

तुम्हे और किशनको प्रेम।

यरवदा मदिर, ३१-९-'३२ बापू

मेरे खयालसे तुम्हारे पास और कोअी साथी नही है।

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आज (बुधवारको) आया। मैंने दायें हाथसे लिखा था। तुम्हे लिखावट साफ असलिअे मालूम हुअी कि शारीरिक दुर्बलताके कारण मैंने अक्षर मजबूरन धीरे-धीरे बनाये थे। कमूर बाअी कोहनीका था। कल तक कनअी दर्द नही था। लेकिन आज कुछ अैसा महसूस हो रहा है कि मास भरनेके साथ-साथ दर्द फिर शुरू हो जायगा। अैसा हुआ तो अुसकी चिन्ता करनेकी जरूरत नही। अलबत्ता, कताअी मैं पूरी यानी कमसे कम २०० तारकी रोज कर रहा हू। केशू अेक नया गाडीव लाया था। वह बहुत ही अच्छा चलता है। मेरे खयालसे मुझे डेढ घण्टेसे अधिक नही लगता। मेरा वजन ९९ पौड पर टिका हुआ है। आजकल चूकि मैं कुछ व्यायाम करता हू, असलिअे वजन तेजीसे न बढ सकता है और न बढ़ना चाहिये। आज मैंने दो पौड दूध और पहली बार २० खजूर लिये है। बा दिनमें मेरे साथ रहकर मुझे खिलाती-पिलाती है। पत्रव्यवहारका काम बहुत ज्यादा बढ गया है, असलिअे अुसमें बहुत समय देना पडता है।

* * *

तो तुम्हारी समझमे आया कि कुछ दिनो या महीनोके भी निरीक्षणसे तुम कोअी सिद्धात नही बना सकती। अब नमककी मात्रा यत्रवत् निश्चित करनेकी कोशिश न करो। वह अपने आप ठीक हो जायगी। कभी-कभी छोड देना सदा सहायक होगा। अगर तुम्हे बहुत गरमी लगती हो और ठण्डा पानी बरदाश्त कर सकती हो, तो तुम्हे दो-तीन बार जल्दी-जल्दी ठण्डे पानीसे स्नान करना चाहिये। गहरी सास भी लेकर देखना चाहिय। असमे शरीर तुरन्त ठण्डा हो जाता है। असके लिअे सीटी बजाते वक्त जैसा मुह होता है। वैसा बनाकर सास ली जाती है। खुली हवामे जाकर गहरी सास लेनेका प्रयत्न

अुत्सुकतावश है। अपनी पढाअीकी प्रगतिके समाचार भेजते रहनेकी तुम्हारी आदत रही है।

मेरा वजन तो नही बढ रहा है, परन्तु मेरी साधारण स्थिति अवश्य ही बेहतर है। मै लकडीके सहारे चलता था। दो दिनसे अुसे छोड दिया है। तबीयत हर तरह पहलेसे अच्छी है। हा, बा मेरे खाने-पीनेकी सभाल रखती है। अभी तक ज्यादातर फल ही लेता हू। अिसमे कितना समय और परिश्रम चाहिये यह तुम जानती हो, क्योकि अिसका कष्ट और आनन्द तुमने अनुभव किया है। अनुपात लगभग वही है। मणिलाल और सुशीला आ पहुचे है। अुपवासके समाचार सुनकर अुनसे रहा नही गया। वह दक्षिण अफ्रीकासे बहुत अच्छे सेव और जजीबारसे नारगिया लाया है। काश तुम हिस्सा बटा सकती। वहा भेजनेकी कोशिश बेकार है।

प्रिंसेस अरिस्टार्शीकी तुम्हे याद होगी। वह नियमित पत्रव्यवहार करती रही है और बहुत सुन्दर पोस्टकार्ड भेजा करती है, जिन पर पवित्र चित्र होते है और अुनकी अपनी ही पसन्दके अच्छे धर्मवाक्य होते है।

बा सहित हम सबकी ओरसे तुम दोनोको प्यार।

१२-१०-'३२ बापू

१८२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आज आया। मेरी प्रगति जारी है। भोजनमे कोअी परिवर्तन नही हुआ। वजन बढकर ९९॥ हो गया है। मुझमे लगभग सदाकी-सी शक्ति आ गअी है।

किशनका लम्बा पत्र आया है, जिसमें तुम्हारी प्रवृत्तियोका हूबहू वर्णन किया गया है। कुदरतन तुम्हे अुसकी और अुसे तुम्हारी गैरमौजूदगी खलती है। वह लिखती है कि अुसे तुम्हारी सगतिसे बहुत लाभ हुआ।

तुमने लिखा है कि आजकल अपराधिने तुम्हारे साथ है। हमारे कोषसे अपराधी शब्द निकल जाना चाहिये। अन्यथा हम सब अपराधी हैं। "तुममे जो निष्पाप हो, वे पहला पत्थर मारे"। मगर पापिनी वेश्या पर पत्थर फेकनेकी किसीकी हिम्मत नही हुअी। जैसा अेक जेलरने अेक बार कहा था, अन्दरसे सब अपराधी है। यह कहा तो गया था आधे मजाकमे, मगर अिसमे गहरा सत्य भरा है। अिसलिअे अुन्हे अच्छे साथी मानो। मै जानता हू कि अैसा कहना आसान और करना कठिन है। लेकिन गीता और सच तो यह है कि सारे धर्म हमें अैसा ही करनेकी शिक्षा देते है।

क्या मैंने तुम्हे नही बताया कि अुपवासके दिनोमे हमे दूसरे चौकमे, जहा अधिक अेकान्त रह सकता है, हटा दिया गया था। अिसलिअे हमारे साथकी बिल्लिया वही रह गअी थी। अब हमे फिर अुसी पुराने चौकमे ले आये है अिसलिअे हमारे ये चौपाये साथी बड़े खुश है। वे सब हमारे आसपास म्याअू-म्याअू करते रहते है।

तुमने अपनी पढाअीके बारेमे जो कुछ लिखा है वह मै समझ गया। जितना चाहिये अुतना समय लो। और जैसी मरजी हो वैसा ही करो। तुम्हारे शरीर या मन पर कोअी जोर नही पडना चाहिये।

*　　　*　　　*

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, १९-१०-'३२　　　　　बापू

१८३

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र अचूक नियमसे आता है।

कुरानमे तुम्हे और बहुतसे रत्न मिलेगे। अुनमे से कुछ बहुत गहरा असर करनेवाले है। . . . तुम किसका अनुवाद पढ रही हो?

मेरा वजन और स्वास्थ्य स्थिर है। मैने दो दिन तक रोटी लेकर देखी और फिर फल, दूध और अेक शाक पर वापस आ गया हू। मै

अपना दूध शाक पर डाल लेता हू। शाक अभी तो अेक दिन लौकी और अेक दिन कद्दूका होता है। जेलके बगीचेमें अभी ये दो ही तरकारिया मिलती है। और मै वे ही तरकारिया लेनेका प्रयत्न करता हू जो यहा पैदा होती है। वे शरीरको अच्छी तरह अनुकूल पडती नजर आती है। वही चीज बार-बार खानी पडती है अिसकी मुझे चिन्ता नही है।

मैं देख रहा हू कि मौसम ठण्डा होनेके साथ-साथ तुम्हारी तबीयत सुधर रही है। आशा है यह सुधार बना रहेगा।

सात साल सपनेकी तरह निकल गये।[1] जब मे अुन भयंकर झिडकियोको याद करता हू, तो काप अुठता हू। और सिर्फ यही मान कर थोडासा सन्तोष कर लेता हू कि झिडकिया प्रेम ही दिलवाता था। परन्तु मै जानता हू कि अिससे बेहतर तरीका भी था। जब मुझे पिछली बाते याद आती है, तब अनुभव करता हूं कि मेरे प्रेममे अधीरता थी। अुस हृद तक अुसमे अज्ञान था। ज्ञानपूर्ण प्रेममे सदा धैर्य होता है। अज्ञानपूर्ण प्रेम सस्कृतके मोह शब्दका अधूरा अनुवाद है। मै धीरज रखना सीखूगा। जब मै अपनी छोटी-छोटी बातोकी ओर देखता हू, तो मालूम होता है कि अभी तक मुझमे अुतना धैर्य नही आया है जितना सच्चा प्रेम चाहता है। वह धीरज भी आयेगा।

तुम्हे वह शाति नामक चीनी नवयुवक याद है? अुपवासके दिनोमे मुझे अुसका अेक तार मिला था और अब अुसकी तरफसे पश्चात्तापका अेक पत्र आया है। बेचारा अपने व्रतोका पालन नही कर सका और अिसलिअे चुप रहा। वह कअी बच्चोका बाप है। अुसने चीनके नाशका चित्र खीचा है और पिछली बातोके प्रायश्चित्त रूपमे भारत लौट आनेकी अुत्सुकता प्रगट की है। अुसकी अग्रेजीमे आश्चर्यजनक सुधार हो गया है।[2]

१. १९२५ मे मेरे आनेके दिनसे लगाकर।

२. वह साबरमतीमे मेरा विद्यार्थी था।

देवदास कल यहा आया था। वह पहलेसे बहुत अच्छा है। प्यारेलालने दूध और मक्खन न लेनेकी जिद पकड रखी है और तेल ही खाता है। फल भी नही लेता। नतीजा यह हुआ कि अुसका मुह आ गया है। मैने अुससे कहा है कि अितना हठ न करे।

*　　　　*　　　　*

किशन वहा हो तो तुम दोनोको प्यार।

२६-१०-'३२　　　　　　　　　　　　　　　　बापू

यह पत्र अेक खास लिफाफेमे जा रहा है। आशा है तुम्हे मिल जायगा।

१८४

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मुझे कल तीसरे पहर मिला। अिस वक्त सुबहके सवा पाच बजे है। प्रार्थना हो चुकी और बादमे मैने शहद, गरम पानी और चुटकी भर सोडा ले लिया है। फिर हम तीनोने मिलकर मेरे फल तैयार किये—यानी दो मोसम्बी जो महादेवने छिली, दो सन्तरे जिन्हे मैंने छीला और अनारका रस जो सरदारने निकाला। मैंने रसमे अेक चुटकी नमक मिला दिया और मोसम्बी और सन्तरेका गूदा रसमे डाल दिया। वे दोनो घूमने चले गये और मैंने सलाद खाया। अितनेमे ५। बज गये और मैंने यह पत्र प्रारभ किया। बाये हाथसे अिसलिअे लिख रहा हू कि परिवर्तन हो जाय और दाये हाथको आराम मिल जाय।

फलोके सलादकी बात कहते हुअे मै अपनी खोजके बारेमे बता दू। मैंने पाया कि फलोसे अधिकसे अधिक लाभ होनेके लिअे अुन्हे अकेले और खाली पेट खाना चाहिये। यहा तक कहा जा सकता है कि रसदार फलो पर वही नियम लागू होता है जो दस्तावर दवाओ पर। असलमे सभी खाद्योको औषधिके रूपमे लेना चाहिये। सस्कृतमे भोजन और दवा

दोनोके लिअे अेक ही शब्द औषध है। किशन अिसका अर्थ तुम्हे अधिक समझा देगी। यह जरूरी नही कि दवा स्वादमे खराब ही हो। वह जीभके स्वादके लिअे भी नही ली जाती। भोजनको भी ठीक अिसी तरह लेना चाहिये अर्थात् सम्यक् भोजन, सम्यक् मात्रामे, सम्यक् रीतिसे ओर सम्यक् काल पर। यहा मैने सुबहकी सैरके लिअे लिखना बन्द कर दिया था ओर अब पौने सात बजे फिर शुरू करता हू।

पैगम्बरके जीवन पर कअी पुस्तके है। पहला स्थान तो अमीर-अलीकी 'स्पिरिट आफ अिस्लाम'को देना पडेगा। फिर वाशिंगटन अिरविगकी लिखी हुअी 'महम्मद अेंड हिज सक्सेसर्स' भी बडी अच्छी पुस्तक है। कार्लाअिलका 'मोहम्मद अेज अे हीरो' भी पढने लायक ग्रन्थ है।

मुझे खुशी है कि किशन तुम्हारे साथ है। अुसे तुमसे और तुम्हे अुससे अधिकसे अधिक लाभ मिलना चाहिये। पता नही अुसके पत्रके अुत्तरमे मेरा जवाब अुसे मिला या नही। मैने अुसके दिये हुअे पते पर भेजा था। अुसे मिला हो या न मिला हो, अुसे कह दो कि जल्दी हो या न हो, बुरी लिखावट कभी न लिखे। यह पाठ मेरे दुर्भाग्यसे सबको सीखना चाहिये। बुरी लिखावट और हरअेक बुरी चीज सचमुच हिसा है। जेल जीवनमे हमे धीरजका गुण सीखनेका दुर्लभ अवसर मिलता है।

*　　　　*　　　　*

अमीरअलीकी पुस्तक रजिस्टर्ड डाकसे भेज रहा हू। जब पढ चुको तो रेहानाके पास भेज देना। वह तैयब परिवारकी है।

हम सबकी तरफसे तुम्हे और किशनको प्यार।

३-११-'३२　　　　बापू

१८५

चि० मिरा,

तुम्हारा पत्र सदाकी भाति मिला। तुम्हारा अेक पौड वजन घट जानेके मुकाबलेमे मेरा लगभग ३ पौड वजन बढ गया है। आज वह करीब १०२ पौड है। अिसका कारण यह है कि मै अधिक दूध ले सका हूं। अुसके अेक भागका मै पनीर बना लेता हू और अुसे रोटीके साथ लेता हू। यह नही मालूम कि कब तक अितना दूध ले सकूगा।

तुम्हे अपने कब्जसे तुरन्त मुक्त हो जाना चाहिये। अिसके लिअे फल खाली पेट लेने चाहिये। अुसके बाद दो घण्टे तक और कुछ न खाना चाहिये। दूसरी बात यह है कि जब कब्ज हो जाय, तो प्रोटीन-वाले खाद्य यानी रोटी और दूध भी नही लेने चाहिये और बारी-बारीसे फल और अुबली हुअी हरी तरकारिया लेनी चाहिये। अुपवासके बाद मैंने अपने शरीरको अिसी तरह बनाया। और अिन दिनो वल्लभभाअी भी अिसी तरहके अपौष्टिक स्नेहविहीन और शर्कराविहीन पदार्थो द्वारा अपना कब्ज, भारीपन और खासी मिटा रहे है। अिससे वजन अच्छी तरह कायम रहता है। हां, सूखा मेवा लिया जा सकता है। बुद्धिमानी अिसीमे है कि सूखे और ताजे फलोको मिलाया न जाय। अिस प्रकार आदमी चार बार खा सकता है। अुदाहरणार्थ अेक बार अनार और मोसम्बी, दूसरी बार लौकी और टमाटर जैसे शाक, तीसरी बार सूखे अजीर या खजूर या अुनके टुकडे रातको पानीमे भिगोकर और गरम करके या ठण्डे, और चौथी बार नीबू निचोकर वही शाक या कद्दू या फिर टमाटर या लेटूस और टमाटर या पिसी हुअी गाजरका सलाद लिया जा सकता है। अिस प्रकारका भोजन कुछ दिन बराबर लेनेसे सख्त कब्ज मिट जाना चाहिये। कभी-कभी दूध या रोटी छोड़ देनेसे भी काम चल सकता है। मै मान लेता हू कि तुम्हारी रोटी दरअसल मोटे आटेकी होगी और फुल्के भी बिना छने

मोटे आटेके होंगे। पीसनेसे पहले गेहूको पूरी तरह साफ कर लेना चाहिये। गेहूसे पूरा लाभ अुठाना हो तो अुनमें पूरे चोकरका रहना बिलकुल जरूरी है। अिन बातोका सहायताके रूपमे ही अुपयोग करना चाहिये और खुदके अनुभवसे अुनमे सुधार कर लेना चाहिये।

हा, मैं अपना लगभग सारा समय अस्पृश्यताके काममे लगा रहा हू। अेक खास ढगसे काम लेने पर कोहनिया अब भी दर्द करती हैं। अब मैं अपने अधिकाश पत्र लिखवाता हू। जो थोडेसे खुद लिखता हू, अुनके लिअे दोनो हाथ बारी-बारीसे काममे लेता हू। अिससे काम चल जाता है। अभी तो मैंने कताअी २०० तारसे घटाकर १०० कर दी है। अलबत्ता कोहनियोके अिस दर्दकी चिन्ता करनेका जरा भी कारण नही है। अुन्हे आरामकी जरूरत है, और कोअी बात नही है। जब ताकत फिर आ जायगी और पुट्ठे भर जायेंगे, तब बहुत करके दर्द जाता रहेगा।

प्रसन्नताकी बात है कि किशन अब भी तुम्हारे साथ है। अुसे चाहिये कि तुम्हारे अुच्चारणके मामलेमे अत्यन्त कठोर रहे।

हम सब सकुशल है और हम सबका तुम दोनोको प्यार।

९-११-'३२ बापू

१८६

चि० मीरा,

मैं दायें हाथको काममे नही ले सकता सो बात नही है, परन्तु बायेंसे काम लेना बेहतर है। मैंने यह पत्र प्रातःकालकी प्रार्थनासे पहले सिर्फ अिसलिअे शुरू किया है कि छोटासा परिवार जमा हो अुससे पहलेके थोडेसे मिनटोका अुपयोग हो जाय। मेरे पत्र सदाकी अपेक्षा कुछ छोटे पाये जायें, तो आश्चर्य न करना। हरिजन-कार्य अितना भारी हो गया है कि और किसी कामकी गुजाअिश ही नही रहती। भारी पत्र-व्यवहारको पढनेमे ही दो घण्टेसे ज्यादा लग जाते हैं। (यह महादेव

आ गये) (अब मैं प्रार्थनाके बाद फिर शुरू करता हू) मुलाकातोमे दो-तीन घण्टे चले जाते है। अिसलिअे मुझे दूसरा काम घटाना पड़ता है। चूकि यहाके डॉक्टरोकी पक्की राय है कि कोहनियोमे सिवाय कताअीसे आराम देनेकी आवश्यकताके और कोअी खराबी नही है, अिसलिअे मैंने चरखा बिलकुल छोड दिया है और लगभग आध घण्टे तक तकली ही चला लेता हू। तकलीमे दूसरे पुट्ठोको काममे लेनेकी जरूरत होती है। अिस तरह लाजिमी समयकी बचत अैसे वक्त हुअी है जब अुसकी जरूरत ही थी। (अिस समय फिर विक्षेप हुआ, क्योंकि शर्बत पीना था और फल तैयार करके खाने थे।)

तुम्हारे नमक छोड देनेकी मुझे चिन्ता नही है। जब छोडनेका लाभ समाप्त हो जाय, तब फिर लेने लग जाना। मुझे पता नही कि जवार या बाजरेकी रोटी तुम्हे माफिक आयेगी या नही। क्या जेलका पिसा हुआ गेहूका मोटा आटा है ही नही? खैर, जवार या बाजरेकी अेक रोटीसे तुम्हे कुछ भी हानि नही होनी चाहिये। लेकिन सूखे मेवे और ताजे फल खूब लेनेसे तुम बिलकुल अच्छी रहोगी।

*　　　　*　　　　*

मेरी और प्रगति हुअी है। और १।। पौड वजन बढ जानेसे कुल १०३।। पौड हो गया है! जहा तक मेरी कल्पना है, अिसका कारण भोजन सम्बन्धी अेक खोज है। यह अुसी समय हुअी जब अस्पृश्यताका काम शुरू हुआ। लेकिन अिस कामसे वजनकी वृद्धिका कोअी वास्ता नही है। मै लगभग अेक औंस ताजा सुखाया हुआ दूध लेता हू। अिसे मराठी और गुजरातीमे मावा कहते हैं। दूधमें से पानी अुडा दिया जाता है। वह भारी साबित होना चाहिये। परन्तु मालूम होता है मेरे लिअे वह अीश्वरकी देन सिद्ध हुआ है। अिसके कारगर होनेके बारेमे निर्णय देना अभी बहुत जल्दी होगा। हा, अिसमे शक नही कि मौजूदा वृद्धि अिसीके कारण हुअी है।

*　　　　*　　　　*

हम सब अच्छे है और तुम दोनोके लिअे गाडीभर प्रेम भेजते है।

१७-११-'३२ बापू

अब सुबहके ५-३० बज चुके है। अब मुझे 'पुस्तकालय' जाना है और फिर घूमने जाना है, क्योंकि बादमे ६॥ बजेके लगभग बकरिया आ जाती है।

१८७

चि० मीरा,

आज फिर वही प्रातःकालीन प्रार्थनाके पहलेका समय है और मै महादेवकी प्रतीक्षा कर रहा हू।

तो किशन तुम्हारे पास नही है। तुम्हे भाति-भातिके अनुभव हो रहे है।

मै तुम्हे बुद्धधर्म पर अेक पुस्तक भेज रहा हू, जो हालमे ही मिली है। आशा है यह दिलचस्प मालूम होगी। मैने अिसे अभी पढा नही है। अिसे मेरे पास लौटा देना और लिखना कि तुम्हारे खयालसे यह अच्छी लिखी गअी है या नही। मैने ग्रन्थकारको वचन दिया है कि मै अिसे देख जाअूगा। परन्तु लौटानेकी बहुत जल्दी नही है। दो या अधिक सप्ताह तक मै किसी चीजको छू भी नही सकूगा।

बिना छने गेहूके बारेमे तुम्हारा कहना मेरे ध्यानमे है। तुम्हारा अनुभव आश्रम तक पहुचा दूगा।

बिलकुल अच्छी हो जानेके लिअे जो चाहो सो परिवर्तन कर लो। कल मेरा वजन १०३ पौड लिखा गया था। अभी तो सभव है यही स्थिर रहेगा। अब शायद मै मावेकी मात्रा न बढा सकू। और कामके बढते हुअे बोझके कारण वजन बढनेकी भी आशा नही है। परन्तु १०३ पौड मेरे लिअे अच्छा वजन है। कोहनिया बिलकुल ठीक नही है। डॉक्टर चाहते है कि अेक सप्ताह तक कातना कतअी बन्द कर दू, और मैने मान लिया है। दर्द कातनेके परिश्रमके

कारण है, अिस बातका अुन्हे अितना विश्वास है कि अुनके खयालसे आरामसे लाभ अवश्य होगा। मै अगले बुधवार तक आजमा कर देखूगा।

अब यहा ठीक सर्दीका मौसम शुरू हो गया दीखता है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

य० सें० जेल, २४-११-'३२

बापू

१८८

दुबारा नही पढा

चि० मीरा,

आज फिर गुरुवारको सुबहके चार बजेसे पहले लिख रहा हू। तुम्हारा पत्र लिखनेमे मुझे जल्दी न करनी पडे, अिसलिए महादेव आरामसे बैठे है। कोअी मुझे बता न देता, तो मै तुम्हे हरगिज ४० सालकी नही मानता। आशा है तुम अेक सालकी बच्ची थी, तबसे अब कमसे कम ४० गुनी ज्ञानवान हो, और अगर हर क्षण हमारे ज्ञानकी वृद्धि हो, तो यह वृद्धि असीम न सही, बेहिसाब तो हो ही जाय। भगवान करे तुम्हारी ज्ञान-वृद्धि असीम हो!

तुम्हारे स्वास्थ्यके लिअे मैने अपना नया प्राप्त किया हुआ ज्ञान तुम्हें बता दिया। अब यह तुम सोच लो कि तुम्हारे लिअे क्या अच्छा है। अपने भोजनमे कुछ सलाद, लेटूस, पक्के टमाटर या किसी तरकारीकी कोमल पत्तिया और जोड़ लो। अतड़ियोके लिअे यह अच्छा है। लेकिन तुम्हे ही अच्छी तरह जानना चाहिये कि तुम्हारे लिअे क्या अच्छा है।

* * *

तुम्हारा समयपत्रक कामसे भरा हुआ लगता है। तुमने जितना आराम अपने लिअे रखा है, अुससे अधिक रखना चाहिये। मेरे विचारसे तुम्हें अपने साथ कठोरता नही करनी चाहिये। हमेशाकी थकावटके

बजाय ताजगी महसूस होनी चाहिये। क्या तुम काफी नींद लेती हो? मन ही मन घुटते नही रहना चाहिये।

मुझे अपने बारेमे अेक असाधारण परिणामकी सूचना देनी है। मै १०३ से अेकदम १०६ पौड पर पहुच गया हू। मावा ले रहा हू। लेकिन शक्तिमे अुतनी ही वृद्धि या कोहनियोकी पीडामे अुतनी ही कमी नही हुअी है। अभी तक न कातनेसे भी कोअी फर्क नही पडा है। अिसलिअे सभव है वजन बढ जाना कोअी खालिस देन न हो। मै अिस अचानक घटनाको ध्यानसे देख रहा हूं।

मेरी सारी पढाअी स्थगित हो गअी है। पत्रव्यवहार और मुलाकातोके सिवाय कुछ नही होता। बा अपने साथ वेलाबहन और बालको लेकर दक्षिणमे चली गअी है*। अुर्मिलादेवीको भी वहा भेज दिया गया हे। अिसमे सन्देह नही कि हिन्दू जितना अपने धर्मके बारेमे आजकल सोच रहे है, अुतना पहले कभी नही सोचते थे।

अब मुझे बन्द करना चाहिये। सुबहके ५॥ बज चुके है। मुझे 'पुस्तकालय' जाना चाहिये और फिर सैरके लिअे।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, १-१२-'३२ बापू

आशा है तुम्हे बौद्धधर्मकी पुस्तक मिल गअी होगी।

१८९

तार

अीश्वर ही हमारा अेकमात्र सहारा है। अुपवास शनिवारको शुरू हुआ, कल टूट गया। सुबह दूध लिया। कुछ भी चिन्ता न करना।

सप्रेम,

यरवदा मदिर, ५-१२-'३२ बापू

---

* बा और दूसरे लोग हरिजन कार्यके लिअे दक्षिण भारतमे चले गये थे।

१९०

पोस्टकार्ड

चि॰ मीरा,

जो छोटासा अुपवास शनिवारको शुरू होकर रविवारको दोपहरके अेक बजे खतम हो गया, अुसका तुम पर असर न होना चाहिये। वह अप्पा साहब* के कारण था, जो अेक पवित्र कार्यकर्त्ता है। तुम्हे अुनकी याद है? कल मैंने केवल फल लिये और आज प्रात दूध।

सस्नेह,

५-१२-'३२

बापू

१९१

चि॰ मीरा,

तुम्हारा साप्ताहिक पत्र मिला। आशा है अुपवास सम्बन्धी मेरा तार और पोस्टकार्ड तुम्हें मिल गये होगे।

अूपरवाला भाग कल रातको लिखा गया था। अब सुबहके पाच बजे है। प्रार्थना हो गअी है और पानीके साथ शहद और फिर नारगिया भी ले ली है। अेक दिनमे नही बल्कि चार रोजमे वजनके जो ६ पौड खोये थे, अुनमे से २ पौड वापस प्राप्त कर लिये है। अिससे जाहिर होता है कि कुछ पौड जितनी जल्दी खो देता हू अुतनी ही जल्दी प्राप्त भी कर लेता हू। दूसरे शब्दोमे मैं फालतू अन्न-जलका ही भार

---

* अप्पा साहब पटवर्धनने, जो अुस समय कैदी थे, अधिकारियोसे प्रार्थना की थी कि अुन्हे जेलमे भगीका काम करने दिया जाय, परन्तु अुन्होने अिस बिना पर अिनकार कर दिया कि वे ब्राह्मण है और भगी नही है। तब अुन्होने अुपवासका आश्रय लिया। बापूने यह सुनकर सहानुभूतिमे अुपवास शुरू कर दिया और दूसरे ही दिन अधिकारी झुक गये।

लिये फिरता हू। अुपवास केवल ४८ घण्टे रहा। अिससे कोअी स्थायी हानि नही हो सकती। तुम्हारा यह कहना ठीक है कि पिछले अुपवासमे पुट्ठोकी जो हानि हुअी होगी, वही अभी पूरी नही हुअी होगी।

लेकिन अुपवास तो मेरा साधारण जीवनक्रम बन गया है। यह वह आध्यात्मिक औषधि है, जो समय-समय पर अैसे रोगो पर अिस्तेमाल की जाती है, जो अिसी विशेष चिकित्सासे अच्छे होते है। हरेक आदमी अचानक यह सामर्थ्य नही पा सकता। मैने प्राप्त की है तो बडी लम्बी तालीमके बाद प्राप्त की है।

साथियोको जब कभी मेरे अुपवासकी खबर मिले, तो अुन्हे अुद्विग्न या जरा भी अशान्त नही होना चाहिये। अुन्हे मेरी शुद्धता और समझदारी पर भरोसा हो, तो खुशी मनानी चाहिये। कारण फिर तो वह हम सबके लिअे और तमाम दुनियाके लिअे अच्छा होना ही चाहिये, जैसा कि हरेक आध्यात्मिक प्रयत्न होता है। अिससे हम सबको अधिक हृदयमथन और आत्मशुद्धिका प्रोत्साहन मिलना चाहिये।

खुशी है कि तुम्हे साधारण ढगका कुछ साथ फिर मिल गया।

अभी तो मै नमक छोडनेका प्रयोग शुरू नही करना चाहता। कोहनियोंको देख रहा हू। कोअी कष्ट नही है। कताअीको स्थगित रखना अेक हानि है। फिलहाल मुझे अिसे सह लेना चाहिये।

मणिलाल और अुसकी पत्नी अगले सप्ताह दक्षिण अफ्रीका चले जायेगे। अुनका वहां मौजूद रहना जरूरी है। मेरे अुपवास वगैराके कारण अुन्हे अपने कर्तव्यसे नही हटना चाहिये। . . .

बा और अुर्मिलादेवी दक्षिणमे अच्छा काम कर रही है। लेकिन अब मुझे बन्द करना चाहिये।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, ८-१२-'३२ बापू

१९२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र यथासमय पहुंच गया। अिस समय लगभग ४ बज कर २० मिनट हुअे हैं और हमने प्रात कालकी प्रार्थना खतम की है। हमारे मानव परिवारमे छगनलाल जोशी चौथे सदस्य जुड हैं और अगर बिल्लियोको जोड ले तो हमारी सख्या सात है। अितना ही है कि वे प्रार्थनामे नही आती। अुनका सम्बन्ध साथ-साथ खाने तक ही सीमित है।

छगनलालके आ जानेसे काम जल्दी निपटानेमे सुविधा हो गअी है, किन्तु मेरे परिश्रमके घण्टोमे कमी नही हुअी। अिसकी आशा भी नही रखी गअी थी। जो बाते मुझीको करनी चाहियें, वे करनी ही पडती हैं। कमसे कम २ जनवरी तक दबाव बना ही रहेगा।

क्या कारण है कि हृदय बुद्धिका कहना नही मानता या साथ नही देता? क्या श्रद्धाकी कमी है? यद्यपि मै किसी अन्तिम निर्णय पर नही पहुचा हू, फिर भी मेरा मत अुसी दिशामे जाता है। यद्यपि मेरी बुद्धि मुझे बताती है कि मुझमे प्रेम हो तो सापको टालनेकी आवश्यकता नही है, फिर भी यह मेरी श्रद्धाका अभाव ही है जो मुझे अुससे सम्बन्ध जोडनेसे रोकता है। अिस प्रकारके अुदाहरण बहुत दिये जा सकते है। मै चाहूगा कि तुम अिस दिशामे खोज करो और हृदय और बुद्धिके जो भी सघर्ष तुम्हे याद हो अुन सबके कारणका पता लगानेकी कोशिश करो। अैसा करनेसे तुम्हारे लिअे हृदयका बुद्धिके साथ सहयोग कराना सभव हो सकता है। अगर मेरा अुपवास करना मेरे और हरेकके लिअे अच्छा है, तो हृदय खुश होनेसे क्यो अिनकार करे? अगर मै स्वस्थ हू तो हृदय अवश्य प्रसन्न होता है। कुछ हालतोमें यह बेहतर है कि मै स्वस्थ रहनेके बजाय अुपवास करू। बुद्धि अैसा कहती है, परन्तु हृदय बुद्धिके स्पष्ट प्रमाणको अस्वीकार करता है। क्या श्रद्धाकी

कमीके कारण अैसा करता है? या अिसमे आत्मवचना है और दरअसल बुद्धिने जैसे स्वास्थ्यरक्षाकी जरूरत महसूस कर ली है, वैसे अुपवासकी आवश्यकता अनुभव नही की है? यहा मैने निर्णयकी कल्पना किये बिना केवल तुम्हारे लिअे समस्या बयान कर दी है। मै निर्णय करना भी चाहू तो अुसके लिअे मेरे पास काफी सामग्री नही हो सकती। कमसे कम अभी तो मुझे यह विषय यही छोड़ देना पडेगा।

मेरा वजन अब १०३ है। मैने दूधकी मात्रा घटा दी है, रोटी छोड दी है और नारगियोकी सख्या ८ से बढाकर १६ कर दी है। खजूर भी फिलहाल छोड दिये है। दूध मै अेक पौड ही ले रहा हू। जल्दी ही दूधकी मात्रा बढा देनेकी अुम्मीद रखता हू।

* * *

टाअिम्स आफ अिडियासे मेरे वक्तव्य पूरे छापनेकी अपील करना व्यर्थ है। मै कोशिश करके किसीसे तुम्हारे पास वक्तव्योकी नकल भिजवा दूगा। अुनके तुम्हे मिलनेमे कोअी आपत्ति नही हो सकती, क्योकि जो अखबार तुम्हे मिल सकते है वे तुम लो तो अुनमे ये वक्तव्य पाये जाते है।

आशा है कि बा १६ तारीखको अपना दौरा पूरा करके पूना आ जायगी।

* * *

हम सब अच्छे है।

* * *

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, १५-१२-'३२ बापू

मै सातवे और आठवेंके सिवाय पहले ९ वक्तव्य भेज रहा हू। अिन दोको ढूढना पडेगा। . . . (जेलके अधिकारियोने काट दिया)।

१९३

चि० मीरा,

तुम्हारा मामूली पत्र मामूली समय पर अन्दर आ गया, परन्तु अुसमे अब भी जो पुस्तक तुम पढ़ रही हो अुसकी टिप्पणियां नही आअी। शायद पहली बार मैंने तुम्हारे पत्रको कटापिटा पाया। क्या यह याददिहानी है कि तुम और मै कैदी हैं? मगर मुझे परवाह नही और तुम भी न करना। वे धन्य है जो कोअी आशा नही रखते।

तुम कहती हो कि हमारे भयका कारण अीश्वरमे श्रद्धा न होना नही है, बल्कि अपने पर विश्वास न होना है*। लेकिन ये दोनो अेक ही चीज है। अीश्वरमें श्रद्धा न होनेसे ही आत्मविश्वासका अभाव होता है। अिससे अीश्वर क्या है अिसका अज्ञान प्रगट होता है। फिर तुम यह भी कहती हो कि श्रद्धाका अभाव हमारे असयमसे पैदा होता है। यह सच है परन्तु अिसका अर्थ भी वही है। गीताके दूसरे अध्यायका ५९वां श्लोक पढो। अिन्द्रियोके विषय अीश्वरके प्रत्यक्ष दर्शनसे, या दूसरे शब्दोमे अीश्वरके प्रति श्रद्धा होनेसे ही नष्ट होते है। अीश्वरके प्रति पूर्ण श्रद्धा होना ही अुसे देखना है। चौथे परिमाणका अस्तित्व मान लेनेसे भी मामला नही बनता। अन्तमे वह भी अुसी बातकी तरफ ले जाता है। "पहले अीश्वरका राज्य खोजो, फिर सब कुछ अपने आप मिल जायगा।" जब हमारा अुससे मिलन होगा, तब हम अुसे देखकर खुशीसे नाच अुठेगे। और फिर न सापोका डर रहेगा और न प्रियजनोकी मृत्युका। कारण अुसकी मौजूदगीमे न मौत होती

---

* मुझे अिस समय ठीक याद नही कि मेरा सिद्धान्त क्या था। जब तक खोज निरंतर जारी रहती है, तब तक आध्यात्मिक सत्य हमें अदृश्य परन्तु निस्सन्देह रूपमे मालूम होते है। आज मुझे अन्त प्रेरणासे यह सचाअी ज्ञात हुअी है कि भयका अर्थ अीश्वरमे श्रद्धाका अभाव है।

है और न साप काटते है। बात यह है कि अत्यन्त सजीव श्रद्धा भी सम्पूर्णसे कम ही रहती है। अिसलिअे शरीरधारी यानी काराबद्ध आत्माके लिअे भयके सम्पूर्ण अभाव जैसी कोअी चीज नही है। शरीरका होना ही अेक मर्यादा है। यह जुदाअीकी दीवार है अिसलिअे हम अपना डर छोड देने यानी अपनी श्रद्धाको बढानेका प्रयत्न ही कर सकते है।

मेरा वजन अब १०३॥ पौड है। अभी तो मैने रोटी और तरकारी तक छोड दी है और अिसलिअे नमक भी। दूधकी मात्रा २ पौंडसे जरा कम है। कामका भारी बोझ होता है, नत्र मेरी खुराक दूध ओर फलकी होती है।

जो वक्तव्य रह गये थे अिस पत्रके साथ है।

हमारी बिल्लिया जलील हो गअी। मा बिना पूछे खाती हुअी और रातको दरिया और कागज खराब करती पाअी गअी। अिसलिअे वल्लभभाअीने खाना देना बन्द कर दिया है। अिस प्रकार सहभोज बन्द हो गये है। पता नही वल्लभभाअी और क्या आर्डिनेस जारी करेंगे। बेचारी बिल्लीके लिअे भी आर्डिनेस राज्यका बोलबाला है!

अभी सुबहके ५-३० ही बजे है।

सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, २२-१२-'३२ बापू

१९४

प्रात. प्रार्थनाके बाद

चि० मीरा,

टिप्पणिया आखिर मिल गअी। तुम्हारा पत्र यथासमय अन्दर आ गया था। किसी विपत्ति* का (अर्थात् किसी घटनाका जिसे हम विपत्ति मान ले लेकिन दरअसल जो न्यामत हो) पहलेसे ही अभिनय करना और हमारी जो भावनाअे होनेवाली हो अुन्हे पहले ही दोहराना बेजा बात है। अितना काफी है कि हम बुरेसे बुरेके लिअे अपनेको तैयार रखें। यह होता है ओीश्वरमे दिन प्रतिदिन श्रद्धा बढानेसे—वह ओीश्वर जो नेक है, न्यायपरायण है, दयालु है, अुदार है, रोजी देनेवाला है, नि सहायकोका सहायक है, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सदा जागरूक और पूर्ण सत्य है।

निर्वाणका अर्थ है अहकारका बिलकुल मिट जाना। अुसका भावात्मक स्वरूप अनुभव किया जा सकता है, परन्तु अुसका वर्णन नही हो सकता। लेकिन अनुमानसे हम जानते है कि अिस संसारमे हमें जो भी आनन्द अनुभव हो सकता है अुससे यह कही ज्यादा श्रेष्ठ है।

जरूरत हो तो डॉ० गौडकी पुस्तक तुम अभी और रख सकती हो।

नमकरहित भोजन जारी है। अुसका कोहनी पर कोअी असर नही पडा। कामका भार बहुत होनेके कारण दूध घटाना पडा है और

---

* अिस पत्रकी और अिसी तरह ५-१-'३३ और १९-१-'३३ के पत्रोंकी शिक्षा अुन चीजोमे से है, जो मेरे अन्तरमे ग़हरी अुतर गअी है। और अब तो मेरी यह आदत हो गअी है कि ज्यों ही मेरा मन अटकलबाजी और कल्पनाके घोडे दौड़ाने लगता है, त्यों ही मैं अुसे रोक देती हूं। आनेवाली घटनाओकी मानसिक कल्पनाओका, फिर वे अच्छी हो या बुरी, बन्द होना भीतरी शातिके लिअे अेक जरूरी शर्त है।

अिससे फिलहाल वजन घटकर १०२ हो गया है। कोअी चिन्ताकी बात नही है।

२ जनवरीको अुपवास नही होगा।* कारण अखबारोमे देख ही लोगी। अब समय नही है।

सस्नेह,

बापू

(तारीख नही है, शायद २९-१२-'३२ हो। डाककी मुहर पर ३०-१२-'३२ है।) मी०

*

१९८

चि० मीरा,

लो, 'अेन ऑप्टिमिस्ट्स केलेंडर' (अेक आशावादीका पचाग) की मेरी प्रति तुम्हारे लिअे है। कल्पना मेरी नही, वल्लभभाअीकी है। तुम देख लोगी कि लेखकने १२ प्रतिया भेजी है। मैने वल्लभभाअीसे पूछा कि क्या वे अिन्हे बाटने लायक समझते है और समझते है तो नाम सुझाये। अुन्होने कुछ नाम सुझाये और अुनमें जोडनेको तुम्हारा नाम हम दोनोके मुहसे अेक ही साथ निकला।

तुम्हारे लम्बेसे लम्बे पत्र भी मेरे लिअे छोटे है। मुझे लिखने बैठो तो मुझे बचानेका हरगिज विचार करनेकी जरूरत नही। असलमे तुम प्रयत्नके बिना दे सकती हो, तो मुझे तुम्हारे लम्बे पत्रोकी **जरूरत** है। काश मै भी अितने ही लम्बे खत भेज सकता। परन्तु मै अच्छा

* बापूने गुरुवायुर मंदिर हरिजनोके लिअे खुलवानेको केलप्पनके साथ सहानुभूतिमे २ जनवरी १९३३ से अुपवास करनेका अिरादा जाहिर किया था। परन्तु अुपवास जनमत लिये जानेके कारण टल गया। जनमतमे लोगोने भारी बहुमतसे मदिर-प्रवेशके पक्षमे राय दी।

पत्रलेखक नही हू। और अभी तो मुझे समय मिले और लम्बे पत्र लिख सकू तो भी नही दे सकता। गुरुवारको सुबहकी प्रार्थनाके आसपास लगभग ३० मिनट तुम्हे देकर ही मुझे सन्तोष करना पड़ेगा।

अभी तो तुम्हे अुपवासका विचार करनेकी आवश्यकता नही है। जब तक कोअी चीज, अच्छी या बुरी, सामने ही न आ खड़ी हो, तब तक अुसकी कल्पना कभी न करो। पूर्ण समर्पणका अर्थ है सब चिन्ताओसे मुक्त हो जाना। बच्चा कभी किसी बातकी चिन्ता नही करता। अुसे कुदरती तौर पर मालूम रहता है कि मा-बाप अुसकी चिन्ता रखते है। यह बात हम बडे लोगोके लिअे कितनी अधिक सच होनी चाहिये? अिसीमे श्रद्धा या यो कह लो कि गीताकी अनासक्तिकी परीक्षा है।

'अछूत'* शब्द अिसलिअे चुना गया कि दक्षिणके कुछ हरिजनोको नये नाम पर आपत्ति हुअी। अुन्हे अिसके पीछे कोअी षड्यत्र दिखाअी दिया। अिसलिअे यह शब्द मजबूर होकर चुनना पड़ा।

बा आश्रमके लिअे रवाना हो गअी, मार्गमे होगी। अुर्मिलादेवी कल गअी। अब संभव है शास्त्रियोके चले जानेसे कामका दबाव कुछ कम हो जाय। लेकिन मुमकिन है मुझे अिस महीनेकी १२ तारीखको अेक और बहस सुननी पडे।

मेरा वजन कल फिर बढकर १०३ हो गया। नमकरहित भोजन जारी है। मुझे अैसा करनेमे कोअी दिक्कत नही होती। यही विचार है कि शरीरको अिसकी आवश्यकता है या नही। कोहनी अभी अच्छी नही है। हा, रोटी और शाक अभी तक छोड़ रखे है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

गुरुवार सुबह बापू

यरवदा मदिर, ५-१-'३३

---

* हरिजन नाम सबको मान्य होनेमे कुछ समय लगा।

१९६

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र सदाकी भाति पहुच गया। डॉ० गौडकी पुस्तक पर तुम्हारी टिप्पणिया भी।

मै हमेशा तुम्हे लिखना भूल जाता हू कि हम दोनोके मित्र तुम्हारे बारेमे क्या कहते है। वे सब तुम्हे याद करते है, अुनके पत्र तुम्हे मिल सकते हो तो तुम्हे लिखना चाहते है और हर बार तुम्हे अपना प्यार भेजते है। अिनमे किंग्सले हॉलवाले लोग, प्रीवाट् परिवार, अिटालियन बहने, सन्त फ्रासिसकी चिडिया और मेरी बार है। यह पूरी सूची नही है, थोडीसी बानगी ही है। मगर मै थोडेसे असली पत्र ही तुम्हारे पास भेज दूगा। अिनमे तुम्हे मेडीलीन* का पत्र और मेरा अुत्तर तथा अेण्ड्रूज और प्रज्ञाचक्षु जॉन मॉरिसके पत्र भी मिलेगे। अगाथा, अेस्थर, होरेस और वूडब्रूक लोगोके नाम भी नही भूलने चाहिये। वे जब कभी लिखते है तुम्हे जरूर याद करते है। अिस पत्रके साथ तुम्हे जान मॉरिसका बडे दिनका कार्ड और राजकुमारी अेरिस्टार्शीके साप्ताहिक कार्डोमे से अेक अत्यन्त सुन्दर सचित्र कार्ड भी मिलेगा। वह गाढ भक्तिवाली विद्वान महिला ही दिखाअी देती है।

स्टोवके बारेमे तुम्हारी राय देरसे आअी। आश्रममे से अुसे कोअी दो मास हुअे निकाल दिया गया। मुझे तुम्हे अुसी समय लिखना चाहिये था। स्टोवसे जलकर प्रो० त्रिवेदीकी भौजाअीकी मृत्यु हो जानेके समाचार सुनकर मैने नारणदासको लिखा था कि अिस घटनाका सबसे अच्छा शोक अिसी तरह मनाया जा सकता है कि स्टोवको आश्रमसे कतअी हटा दिया जाय। कुछ स्त्रियोको विश्वास कराना कठिन काम

---

* मेडीलीन रोला।

था। परन्तु अुन सबने समझ लिया कि अैसा करनेकी आवश्यकता है। अुसका हटाना अनिवार्य नही किया गया। सबने स्वेच्छासे ही अुसे छोड़ दिया। मुझे तुम्हे यह सुखद समाचार पहले देना चाहिये था, पर हर सप्ताह अिस तरहकी छोटी मोटी बाते तो न जाने कितनी रह जाती होगी? परन्तु मैं जानता हू कि तुम अैसी बातोकी मुझसे आशा नही रखती। फिर भी अगर मैं तुम्हे न बताअू, तो तुम्हे आश्रमकी वे सारी घटनाये मालूम ही न हो पाये, जो तुम्हे जाननी चाहिये और जेल-नियमोके अनुसार तुम जान सकती हो।* मैं जो कुछ कर सकता हू वह मुझे जरूर करना चाहिये।

मेरा वजन अुतना ही है जितना पिछले सप्ताह था। खुराक भी वही है। अभी तक नमक नही लिया। मेरे लिअे अिसमे त्याग नही है। अुसकी लालसा भी नही है। जब लेता हू तो अच्छा लगता है। लेकिन ज्यो ही मुझे मालूम हो जाता है कि कोअी वस्तु मेरे लिअे हानिकारक है, मुझे वह अच्छी नही लगती। कोहनीकी पीड़ा ज्योकी त्यों बनी हुअी है। चिन्ताका जरा भी कारण नही है।

साथके पत्र और कार्ड लौटानेकी आवश्यकता नही है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

सुबहके पांच बजे

यरवदा मदिर, १३-१-'३३ बापू

---

* जब मुझे अेक वर्षकी कैदकी सजा हुअी थी, तब मुझे बताया गया था कि मै पखवाड़ेमे अेक बार पत्र प्राप्त कर सकती हूं और अेक मुलाकात कर सकती हू, यानी अेक सप्ताह पत्र और दूसरे सप्ताह मुलाकात। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि मुलाकातके हकके बदलेमें पत्रका हक मुझे मिल सकता है। अिस प्रकार मुझे हर सप्ताह बापूको अेक पत्र लिखने और अेक अुनका पानेकी अिजाजत थी। और किसी भी प्रकारके पत्रव्यवहारकी अिजाजत नही थी।

१९७

चि० मीरा,

यह गुरुवारको ठीक सुबहकी प्रार्थनाके बादका समय है। वल्लभभाओी और मैं शहदके लिओ गरम पानीकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारा पत्र मेरे सामने है। मैंने सदाकी भाति पिछले सप्ताह भी गुरुवारको सुबहकी प्रार्थनाके बाद पत्र जरूर लिखा था। अगर किसी कारणसे वहा अुसे सुपरिण्टेडेटने रोक लिया हो, तो अुन्हे यह बात तुम्हे बता जरूर देनी चाहिये थी, ताकि तुम्हे हर तरहकी दुर्घटनाओकी कल्पना करनेकी चिन्ता तो नही होती। मैंने मेजर भण्डारीका ध्यान अिस मामलेकी तरफ दिलाया, तो अुन्होने जाच करनेका वचन दिया है। अिधरसे तो पत्र समय पर डाकमे पड गया था। लेकिन यह हो सकता है कि वह पत्र अिसलिओ रोक लिया गया हो कि जहा तक मुझे याद है मैंने पहली ही बार अपने पत्रके साथ मेडीलीन रोला और अेण्ड्रूजके कुशलपत्र और मेडीलीन रोलाके नाम लिखे अपने अुत्तरकी नकलें भेजी थी। मैंने अेक बहुत सुन्दर चित्र-कार्ड भी भेजा था, जिसमे कुमारी और अुनके दैवी बच्चेकी तस्वीर थी। यदि अुस कारणसे पत्र रोका गया हो तो मुझे आश्चर्य होगा और फिर दूसरे पत्रोंके साथ मेरा पत्र भी क्यो रोका जाय? अिसलिओ मेरी कल्पना यह है कि वह रास्तेमे कही गुम हो गया है। बहरहाल, अिधर मैं पूछताछ कर रहा हू और अुधर तुम कर सकती हो। मेरे लिओ वह पीठ पर अेग्स्टार्शीकी सुन्दर लिखावटवाला कार्ड अेक बहुत बडा खजाना था।

और अिस घटनासे यह शिक्षा ले लो कि अगर अैसी दुर्घटना फिर कभी हो भी जाय, तो विश्वास रखना कि तुम्हारा साप्ताहिक सन्देश न मिला होगा तो भी मैंने तो सदाकी तरह तुम्हें पत्र लिखा ही है, और दुर्घटनाका कोओी अैसा कारण ही है, जो मेरे काबूमे नही है। अगर मैं

बीमार पड़ जाअू और लिख न सकू या और कोअी कारण बाधक हो जाय, तो तुम्हे बाकायदा सूचना मिल जायगी कि अिस सप्ताह कोअी पत्र नही भेजा गया। दूसरे शब्दोमे, कारणोकी कल्पना न करना, परन्तु धीरजसे जानकारीके लिअे अिन्तजार करना। और बुरी कल्पना तो हरगिज न करना। चूकि अीश्वर दयालु है, अिसलिअे कल्पना ही करनी हो तो अच्छीसे अच्छी करनी चाहिये। अलबत्ता, गीताका भक्त तो कभी कोअी कल्पना करता ही नही। आखिर तो भला और बुरा सापेक्ष शब्द है। अिसलिअे घटनाये जैसी होती है अुन पर वह ध्यान देता रहता है और स्वाभाविक प्रतिक्रिया करता है और अपने भागको अिस तरह अदा करता है मानो वह अुस महान कारीगरके हाथमे अेक साधन है, ठीक अुसी तरह जैसे कोअी अच्छी हालतवाली मशीन कारीगरके अिशारेसे अपने आप काम करती है। किसी चेतन प्राणीके लिअे यंत्रकी तरह बन जाना सबसे कठिन होता है। फिर भी किसीको शून्य बनना हो, तो पूर्णताकी अिच्छा रखनेवालेको ठीक अैसा ही बनना होगा। यत्र और मनुष्यमे बडा भारी भेद यह है कि यत्र जड़ है और मनुष्य पूरी तरह चेतन है और अुस महान कारीगरके हाथमे जानबूझकर यत्र बनता है। कृष्ण तो साफ शब्दोमे कहते है कि सब प्राणी मशीनके पुर्जोकी तरह अीश्वरके चलाये चलते है। तुम देखोगी कि यह मैंने दाये हाथसे लिखा है। मै देखता हू कि बायेको भी जो थोडासा लेखन कार्य वह करता है अुससे आराम देनेकी जरूरत है। यह सभव है कि कोहनियोकी पीड़ाका कुछ न कुछ सम्बन्ध अुस बाहरी थकानसे हो, जो लिखने या कातने या दोनोसे होती है। नमक छोड देनेसे वह बेशक नही मिटी है और मिटे भी कैसे, अगर कारण भीतरी नही है? तुम पर अुसका तुरन्त परिणाम होता है, क्योकि तुम्हारा कारण भीतरी है। मुझे गठिया नही है। हो तो मुझे मालूम हुअे बिना न रहे। कुछ भी हो, नमकरहित भोजन अब भी जारी है। और कल मेरे वजनमे अेक पौंडकी वृद्धि दिखाअी दी। अिसलिअे अब वह १०४ पौड है।

तुम्हे चक्कर आनेके कारणका पता लग सके तो लगाना चाहिये। क्या तुमने वहाके डॉक्टरसे अिसकी चर्चा की है? सैर करनेके बाद तुम्हे चक्कर नही आने चाहियें। ताजगी महसूस होनी चाहिये। सैरको निकलनेसे पहले मुह पर और सर पर भी ठडा पानी जोरसे छिडकना और चक्कर आनेके जरा भी लक्षण दिखाअी दे तो घूमते समय ठण्डे पानीके घूट धीरे-धीरे पीना भी कअी बार अच्छा रहता है। गहरी सास लेनेके लिअे क्षणभर ठहर जानेसे भी चक्कर रुक जाते है। ये सब मेरे अपने अनुभवकी बाते है।

तुम्हारी पढाअीके बारेमे तुम्हारा जो कुछ कहना है, वह मेरे ध्यानमे आया। महाभारतका कार्यक्रम अच्छा है। जब तुम अेक भी शब्दका अर्थ छोडे बिना पूरा हिन्दी अनुवाद पढ चुकोगी, तब हिन्दीकी अच्छी पडिता हो जाओगी। यह बडा भारी काम है। परन्तु मै जानता हू कि प्रेमको कोअी हरा नही सकता।

अगर अिस पत्रकी पहुचके तौर पर तुम्हे अेक पोस्टकार्ड डालने दिया जाय और यह मिलते ही दे दिया जाय, तो मुझे अेक पोस्टकार्ड डाल देना।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मंदिर, १९-१-'३३ — बापू

१९८

चि० मीरा,

यह गुरुवारकी प्रार्थनासे पहलेका समय है। मुझे तुम्हारा पत्र बुधवार दोपहरको मिलता है और मै गुरुवारको सुबह प्रार्थनाके बाद या कभी-कभी आज की तरह, पहले जवाब लिखता हू। अिसलिअे जब कभी तुम्हे मेरा पत्र मामूली समयसे देरमे मिले या मिले ही नही, तब यह समझ लो कि मेरी ओरसे विलम्ब नही हुआ होगा। परन्तु संसार कितना ही अच्छा हो जाय, तो भी अकस्मात् दुर्घटनायें होती ही रहेगी। अीश्वर

के कोषमे अकस्मात् नामकी कोअी चीज ही नही है। दुनिया अकस्मातोका अेक अध्याय है। कारण अकस्मात् वे घटनाये है, जिन पर हमारा नियत्रण नही होता और जिनके कारणोका पता हमे अुन घटनाओके हो जानेके बाद भी नही लग पाता।

तुम देखोगी कि मैने दाये हाथसे फिर लिखना शुरू कर दिया है। लिखनेका काम बहुत तो नही करता। हर रोज कुछ गुजराती, जो दो घण्टेसे अधिक नही होता और तुम्हारे नामका साप्ताहिक अग्रेजी पत्र। अुससे हाथको हानि नही हो सकती। कमसे कम किसीने यह नही सुझाया है कि यह हानिका कारण है। चरखेको दोष **जरूर** दिया गया था। लेकिन वह विचार भी गलत जान पडा है। पिछले मगलवारको मैने मर्यादित कताअी फिर शुरू कर दी। परन्तु मै हठ नही करूगा। दर्द बढ गया तो मै अुसे छोड दूगा। कल वजन २ पौड घट गया, परन्तु थोडासा घटना-बढना जरा भी चिन्ताकी बात नही है।

अब तुम्हारी बात। चक्कर आनेका कुछ भी कारण हो, अुसकी चर्चा तुम्हे डॉक्टरसे कर लेनी चाहिये। अगर कारण बदबू हो, तो तुम्हे किसी बेहतर स्थान पर ले जाना चाहिये*। तुम्हे अेतराज न हो तो मै खुद सरकारको लिखना चाहूगा। तुम्हारी नाक बहुत नाजुक है

---

* आर्थर रोड जेल अजीब जगह पर था। अेक तरफ धोबी-घाट था, पीछेकी ओर कचरा डालनेका मैदान था, अुसके आगे अेक स्थान था जहा जेलके नजदीकसे अकसर सडती हुअी हालतमे मुर्दार जानवर ले जाये जाते थे। दूसरी तरफ चालोके पाखाने थे, जिनके हवादान जेलकी दीवार परसे दीखते थे। सामने, सड़ककी दूसरी तरफ बुखारका अस्पताल था, जहासे चेचककी गभीर और दीर्घ महामारीके कारण रोज अर्थिया निकलती थी। अिन सब बातोंके अलावा जेल बहुत नीची भूमि पर होने और गन्दे पानीके नालोका समुद्रसे सीधा सम्बन्ध होनेके कारण हर तेज ज्वारके समय अुस पाखानेमे से, जो छोटीसी बैरकके पास ही था और जिसके किवाड नही थे, बडी बदबूदार हवा आया करती थी।

और अिसलिअे बदबूका तुम पर औरोकी अपेक्षा शीघ्र असर होता है। क्या मैं तबादलेके लिअे अर्जी भेजू ? शायद तुम्हारे मामूली साप्ताहिक पत्रके सिवाय अिस प्रश्नका अुत्तर देनेकी तुम्हे अनुमति मिल जायगी।

* * *

'अुपवासके बिना प्रार्थना नही हो सकती,' यह वचन बिलकुल ठीक है। यहा अुपवासका अर्थ अधिकसे अधिक व्यापक करना पडेगा। शरीरके अुपवासके साथ **समस्त** अिन्द्रियोका भी अुपवास करना पडेगा। और गीताका अल्पाहार भी शरीरका अेक अुपवास ही है। गीता भोजनके सयमकी बात नही करती, पर 'अल्पाहार'की करती है, अल्पाहार हमेशाका अुपवास है। अल्पाहारका अर्थ यह है कि जिस सेवाके लिअे शरीर बनाया गया है सिर्फ अुसके लिअे शरीरको कायम रखने लायक ही खाया जाय। दूसरी परीक्षा यो हो सकती है कि भोजन भी औषधिकी तरह नपी हुअी मात्रामे, निश्चित समय पर और स्वादके लिअे नही परन्तु शरीरके हितके लिअे लिया जाय। 'अल्पाहार' का बेहतर अनुवाद शायद 'नपी हुअी मात्रा' होगा। मुझे अर्नाल्डका अनुवाद याद नही आ रहा है। अिसलिअे पेटभर भोजन अीश्वर और मनुष्य दोनोके प्रति अपराध है — मनुष्यके प्रति अिसलिअे कि पेटभर खानेवाले अपने पडोसियोका हिस्सा छीनते है। अीश्वरकी अर्थव्यवस्थामे अितनी ही गुजाअिश रखी गअी है कि सबको केवल औषधिकी मात्रामे रोज भोजन मिल जाय। हम सब पेटभर खानेवाले है। आवश्यक औषधिके रूपमे खुराककी निश्चित मात्रा स्वभावत. जान लेना बहुत मुश्किल काम है, क्योकि मांबापकी ओरसे हमे अति भोजनकी शिक्षा मिलती है। बादमे 'जब चिडिया चुग गअी खेत', तब हममें से कुछ लोगोंको ज्ञान होता है कि खुराक स्वाद लेनेके लिअे नही, परन्तु शरीरको दासके तौर पर पालनेके लिअे बनाअी गअी

अिन सब कारणोसे छ महीनेमें ही मेरा स्वास्थ्य गिरने लगा और मेरी गर्दन पर गाठें अुठने लगी।

है। अुसी क्षणसे स्वादके लिअे खानेकी पैतृक और डाली हुअी आदतके खिलाफ जबरदस्त लड़ाअी शुरू हो जाती है। अिसीलिअे बीच-बीचमे पूरे और सदा आशिक अुपवासोकी जरूरत है। आशिक अुपवास ही गीताका अल्पाहार या मिताहार है। अिस तरह 'अुपवासके बिना प्रार्थना नही हो सकती,' यह शास्त्रीय वचन है, जिसे प्रयोग और अनुभवसे सच्चा साबित किया जा सकता है।

* * *

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, २६-१-'३३ बापू

१९९

चि० मीरा,

यह गुरुवार २ फरवरीको सुबहकी प्रार्थनाके बादका समय है। यद्यपि मुझे तुम्हारा साधारण साप्ताहिक पत्र नही मिला है, फिर भी मुझे तो हर गुरुवारके प्रातःकालकी तरह आज भी तुमसे सम्पर्क साधना ही है।

अिस सप्ताह वजनमे अेक पौडकी वृद्धिका समाचार देना है। नमकका त्याग जारी है। खानेकी चीजें ज्योकी त्यो है — पपीता, २० खजूर, ४ नारगिया, दो खट्टे नीबू, चार मध्यम चम्मच शहद, अक पौड बकरीका दूध, और अेक मध्यम चम्मच बादामकी लुगदी। शहद मै दो बार गरम पानी और दस ग्रेन सोडेके साथ लेता हूं। सुबह दूध और शामको बादामकी लुगदी। लुगदी और आधा पौड दूधमें फर्क होता रहता है। अिससे तुम्हे मेरे भोजनकी ठीक कल्पना हो जायगी। मैने कल ताजा बिना अुबला हुआ दूध शुरू किया। कहते है बिना अुबला हुआ दूध ताजा और साफ हो, तो अुबले हुअे दूधसे हमेशा अच्छा और सुपाच्य होता है। अिस प्रयोगका असर देखूगा।

गजाजीने मुझे बताया कि देवदासको पता लगा है कि वह बहुत बढ़िया और प्रभावशाली वक्ता है। अुसने अस्पृश्यताके कामके लिअे दक्षिणका दौरा अभी समाप्त किया है।

हम सब अच्छी तरह हैं।

सस्नेह,

२-२-'३३ बापू

देवदासका हिन्दीका भाषण और अुसका अनुवाद साथमें है। यह अद्‌भुत चीज है।

पुनश्च

आखिर तुम्हारा साप्ताहिक पत्र तो मुझे मिल गया, परन्तु बीचवाला अभी नहीं मिला है। आज अिससे अधिक लिखनेको मेरे पास समय नहीं है। अिस पत्रको जारी रखते हुअे दूसरा पत्र भेजूंगा। शायद अुसे अिसीके भागके रूपमें जाने दिया जायगा।

अीश्वर तुम्हारा रक्षक हो।

२-२-'३३ बापू

२००

चि० मीरा,

तुम्हारा साप्ताहिक पत्र यथासमय आ गया। और वह मुझे दिया गया, अुसस ठीक दो दिन पहले तुम्हारा अपनी दशाका वर्णन करनेवाला विशेष पत्र पहुंचा। अिस पर मैंने सरकारको अेक पत्र भेजकर प्रार्थना की कि वह तुम्हारी बदली यरवदा कर दे और विशेषज्ञोंसे तुम्हारी जांच कराये। मैंने वही किया जो हर दृष्टिसे अपना फर्ज समझा। किसी कैदीको अपनी जेल-बदलीकी मांग करनेका अधिकार नहीं होता। असाधारण परिस्थितिके सिवाय अुसे जिस हालतमें रखा जाय, अुसीमें रहना पडता है। जब मैं हावर्डके जमानेके जेलजीवनका विचार करता हूं और आजकलके जेलजीवनको देखता हूं, तो स्थितिमें

सुधार देखकर चकित हो जाता हू। फिर भी जिन कैदियोको अन्त करणकी खातिर जेलकी हवा खानी पडती है, अुनके लिअे अिस जीवन और अुस जीवनमे कुछ भी फर्क नही होना चाहिये। अुन्हे तो हावर्डके समयके जीवनको भी सहर्ष स्वीकार करनेको तैयार रहना चाहिये। कारण अुन्हे शरीरके आराम और प्रियजनोसे शारीरिक रूपमे मिलनेके सुखकी अपेक्षा अन्त.करण अधिक प्रिय है। अिसलिअे अेक तरफसे शरीरको अच्छी स्थितिमे रखने और दूसरी सुविधाअे प्राप्त करनेके सब प्रामाणिक और वैध प्रयत्न होने चाहिये, और दूसरी तरफ निराशाको पूरी अनासक्तिके साथ शिरोधार्य करना चाहिये। तुम्हें अपनी सारी हालत सिविल सर्जनको बताते रहना चाहिये और अपनी पहलेकी गाठोका अितिहास बता देना चाहिये *। काश तुम अुनके बारेमे मुझे पहले लिखती। खैर, अब मामला सरकारके हाथमे है और अुससे भी ज्यादा अीश्वरके हाथमे है। "अुसकी मरजीके बिना पत्ता भी नही हिलता।"

गीताके जिस अशको तुमने अुद्धृत किया है, वह सयमपूर्ण आदतोसे सम्बन्ध रखता है। मेरे दिमागमे यह चीज नही थी। जो अश मेरे ध्यानमें था वह अन्तिम अध्यायके ५२वे श्लोकका है। मै अुसका अनुवाद यो करूगा. "जिसे अेकान्त प्रिय है, जो अल्पाहार करता है, जिसका मन, वचन और कर्म पर पूरा काबू है; जो ध्यानमे लगा रहता है और आसक्तियोसे सदा मुक्त है।"

तुम्हे अपने भोजनकी मात्राकी शिकायत होनेका कोअी कारण नही है। तुम निरे नापतौल पर चलनेका दु.साहस नही कर सकती। हमारे बहुतसे भाअी-बहनोके लिअे अिससे दुगुनी मात्रा भी सचमुच थोडी होगी। और लोग कितनी खुराक लेते है, अिसका विचार किये बिना तुम्हें तो

---

* जब मै पंद्रह वर्षकी थी, तब मेरी गर्दन पर यक्ष्माकी गाठोका आपरेशन हुआ था। अुस अवसर पर भी गन्दे पानीकी बदबू ही सूजनका तात्कालिक कारण हुअी थी।

अपने ही शरीरकी स्थितिसे निर्णय करना चाहिये। हमे अितना ही समझ लेना चाहिये कि स्वेच्छापूर्वक अल्पाहार दुनियाकी कठिनतम वस्तुओमे से अेक है। समय-समय पर पूरा अुपवास कर लेनेसे यह सदाका अुपवास कही मुश्किल है। स्वेच्छापूर्वक अल्पाहार करनेसे पूरा सन्तुलन यानी शरीर और मनका पूर्ण स्वास्थ्य होना ही चाहिये। हम केवल प्रयत्न कर सकते है।

मरा भोजन और वजन जैसा पिछले सप्ताह मैंने बयान किया था वैसा ही है। कोहनीका भी वही हाल है जो पहले था। अब मै अुसकी परवाह नही करता। मेरे खयालसे मै तुम्हे बता चुका हू कि मैंने कातना पुनः आरभ कर दिया है। शायद पिछले सप्ताह मगलवारको आरभ किया। मै आनेवालोसे बाते करते-करते कातता हू। कोअी न्यूनतम मात्रा निश्चित नही की है। अभी तो १६० तार तक भी नही पहुचा हू। कलकी संख्या सबसे अधिक यानी १४१ थी। अक ४० से अूपर है।

तुमने देवदासके बारेमे जो कुछ बताया वह सच है। अुसका विवाह बहुत सुखपूर्ण सिद्ध होना चाहिये। लक्ष्मी भी निखरती जा रही है। . .

'हरिजन' प्रकाशित होनेवाला है। अुसकी तैयारीमे अिस वक्त मै, हम सभी, बहुत व्यस्त हैं। मुझे अेक बहुत अच्छा सम्पादक और अुतना ही अच्छा व्यवस्थापक मिल गया है। प्रेस भारतसेवक समाजका है, जिसके साथ मेरा आध्यात्मिक सम्बन्ध कहा जा सकता है। अिसलिअे मुझे व्यवस्था सम्बन्धी तफसीलकी बातोकी चिन्ता नही करनी पडेगी। अीश्वर यदि भयकर है तो महान और दयालु भी है। हम सबकी ओरसे प्यार। अिस समय सुबहके ५। बज गये है।

९-२-'३३

बापू

चि० मीरा,

मै यह पत्र शुक्रवारको प्रात ३। बजे शुरू कर रहा हूं। मालूम होता है अब मुझे तुम्हारा साप्ताहिक पत्र बुधवारको सुबह न मिलकर गुरुवारको तीसरे पहर मिला करेगा। यह मेरे लिअे अधिक अनुकूल है। कारण बुधवार और गुरुवारको मेरे पास निजी पत्रोके लिअे वक्त नही रहता। ये दोनो दिन 'हरिजन'के लिअे चाहिये। गुरुवारको शामके ६ बजे तक सब काम मेरे हाथोसे निकल जाना चाहिये। अिसलिअे यद्यपि और दिनो भी मुझे 'हरिजन'के लिअे लिखना तो पडेगा, मगर बुधवार और गुरुवार तो अुसीके लिअे लगाने पडेगे। यह लगभग पहले जैसी ही स्थिति है।

मैंने सोचा था कि शायद अतिरिक्त टिप्पणी लिखनी पड़ेगी, परन्तु नही लिखी और असाधारण प्रयत्नके बगैर लिख भी नही सकता था।

तुम्हारे पत्रसे ज्ञात हुआ कि तुम्हे रातको तालेमे बन्द नही किया जाता। अिस आजादीका तुम्हे पूरा लाभ अुठाना चाहिये। तुम्हारे लिअे जिस अुत्तम भोजनकी जरूरत है, वह है तमाम दिन और तमाम रात ताजी हवा। जैसा मुझे मालूम हुआ है, अगर तुम्हारे चौकमे बहुतसे नीमके पेड है तो तुम्हे दिनभर खुलेमे काम करना चाहिये। ओस पडे या न पडे, रातभर तुम्हे पेडोकी छायामे भी नही, परन्तु सीधे आकाशके नीचे सोना चाहिये। तारोके साथ अत्यन्त सीधा सम्पर्क निहायत जरूरी है। जब तक तुम पैरोसे गर्दन तक और जरूरत हो तो शिर तक अच्छी तरह ढकी हो और जब तक तुम्हारे होठ बिलकुल बन्द हो और तुम्हे यकीन है कि तुम नाकसे ही सास ले रही हो, तब तक ओससे कोअी हानि नही होती। अिसके अितमीनानके लिअे सोते समय चित लेटकर और पैर पूरी तरह फैलाकर तुम्हे कुछ गहरी सासे ले लेनी चाहिये। अिस तरह सास लेनेके लिअे तुम्हे कुछ निश्चित समय, हर बार लगभग

पाच मिनट, अलग निकाल रखने चाहिये। बादमे हमेशा नाकके जरिये सास लेनेकी तुम्हारी आदत पड जायगी। जो लोग अभ्यासके बिना ही समझते है कि वे कुदरतन् नाकसे साम लेते हैं, अुनका यह समझना सदा सही नही होता। वे मुहसे कब सास ले लेते है, अिसका अुन्हे ध्यान नही रहता। दुर्भाग्यसे अधिकाश लोगोको ठीक तरह सास लेनेकी आदत डालनी पडती है। जो स्वच्छ वायु सेवन करते है, शुद्ध पानी पीते है, ठीक तरहका भोजन ठीक मात्रामे और ठीक ढगसे खाते हैं और मुनासिब व्यायाम करते है, अुन्हे क्षयरोग नही हो सकता।

तुम्हे आर्थर रोडमे हटा देने पर मैने सरकारको धन्यवाद दिया है। अुसने यह काम तत्परता और अच्छे ढगसे कर दिया। यह सच है कि मैने निश्चित रूपमे यरवदा तबादला करनेकी माग की थी। मगर अुसके पास तुम्हे यहा न बदलनेके लिअे अुचित कारण होगे। मै तुम्हे जानता हू, अिसलिअे कह सकता हू कि दूसरे नबरकी जगह बेशक साबरमती है। तुमने यह समझ लिया हो कि भले ही मेरा शरीर यरवदामे पड़ा है, परन्तु मेरी आत्मा तो साबरमतीमे ही निवास करती है, तो साबरमती तुम्हारे लिअे अुत्तम स्थान है। आत्माके बिना शरीर अैसा ही है, जैसे शाहजहाके बगैर ताज — अेक मकबरा — है।

तुमको अपनी गाठोका सब हाल आर्थर रोड जेलके सर्जनको बता देना चाहिये था। हम तबादलेकी माग न भी करे, परन्तु अपनी हालत बता देना तो हमारा फर्ज है। कारण अधिकारी हमारे शरीरोको यह अुम्मीद रखकर अपने कब्जेमे रखते है कि हम अुन्हे अुनकी हालतके सारे समाचार बताते रहेगे। अगर हम नही बताते तो जेलके नियमोका पूरा न सही, कमसे कम जाब्तेमे तो भग करते ही है। अिसलिअे तुम हर खराबीकी खबर सुपरिण्टेडेटको देना। सरकारने मुझे बताया है कि वे अेक आअी० अेम० अेस० अफसर है और अिसलिअे अेक योग्य चिकित्सक हैं। तुम्हे अपने शरीरको सोलहो आने रोगमुक्त बना लेनेकी कोशिश करनी चाहिये।

मेरे लिअे यह बडी खुशीकी बात है कि बा और गंगाबहन और कुसुम तुम्हारे साथ है। क्या तुम औरोसे नही मिल सकती ?

गगाबहन और कुसुमसे कहना कि मैने दोनोंको पत्र लिखे थे। अुनके और बाके लिअे पत्र साथमे हें। अगर अुन्हे पत्र पानेका अधिकार या अिजाजत हो, तो तुम अुन्हे हाथोहाथ दे देना। अुनमे कुशल समाचारोके सिवाय कुछ नही है।

मेरा वजन और भोजन ज्योका त्यो है और यही हाल कोहनियोका भी है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, १७-२-'३३ — बापू

पुनश्च :

अवश्य ही अिस पत्रमे मैने जो सूचनाये दी है, अुन सबमे सुपरिटेडेट फेरबदल कर सकते है।

बापू

* * *

२०२

चि० मीरा,

अिस समय शुक्रवारके प्रात कालके ३।। बजे है। अिस सप्ताहके लिअे अभी तक तुम्हारा कोअी पत्र नही आया। मैने तुम्हे पिछले हफ्ते नियमपूर्वक लिखा था। यह शुक्रवारकी बात है, क्योकि तुम्हारा पत्र गुरुवारको तीसरे पहर मिला था। मै मान लेता हू कि व्यवस्थामें यह थोड़े दिनकी गड़बड तुम्हारे नये निवासस्थान और नये सरक्षकोके कारण हुअी है। मै प्रतीक्षा और प्रार्थना करूगा और गीता-माताका सन्देश हृदयगम करूंगा। वह विलक्षण माता है। मेरे खयालसे

तुम्हें मालूम है कि वह माता कहलाती है। गीताका अर्थ 'गीत' है। वह अुपनिषद्के विशेषणके तौर पर अिस्तेमाल किया जाता है और अुपनिषद् स्त्रीलिंग है। अुसकी अुपमा पवित्र गायसे दी जाती है, जो तमाम मनोरथ पूरे करनेवाली है। अिसलिअे वह माता हुअी। खैर, यह अमर माता हमें आध्यात्मिक पोषणके लिअे जितना दूध चाहिये वह सब दे देती है। शर्त अितनी ही है कि हम दूध पीनेवाले बच्चोकी तरह दूध लेने और चूसनेके लिअे अुसकी शरणमे जाय। अुसके स्तनके अटूट भण्डारमे अपने करोडो शिशुओको दूध पिलानेकी सामर्थ्य है।

निन्दा, गलतबयानी और प्रत्यक्ष निराशाओके बीचमे हरिजन कार्य करते हुअे मुझे अुसकी गोदमे आराम मिलता है, और निराशाके कूपमे गिरनेसे मेरी रक्षा होती है।

अिस तरह तुम मुझे हंसता हुआ और बेफिक्र पाती हो।

मेरा वजन १०३ पर आकर ठहर गया है और खुराककी मात्रा और प्रकार भी ज्योके त्यो है। फिलहाल बिना अुबाला हुआ ताजा दूध चल रहा है। अिससे कोअी खराबी नही हुअी। मेरा और महादेवका अधिकांश समय 'हरिजन'के लिअ लिखनेमे लग जाता है। छगनलालको भी खूब काममे मशगूल रखा जाता है।

अिस बार अिससे अधिक नही। अब मुझे औरोको प्रार्थनाके लिअे जगाना पड़ेगा।

हम सबकी तरफसे तुम्हे और दूसरोको प्यार।

२४-२-'३३ बापू

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मगर अुसकी चर्चाके लिअे आज समय नहीं है।

बापू

चि० मीरा,

यह शनिवारकी प्रातःकालकी प्रार्थनासे पहले ३।। बजेका समय है। शुक्रवारकी शाम तक तुम्हारा कोअी पत्र नही आया। मैंने कल भी अिस आशामे लिखना स्थगित रखा कि तीसरे पहर तुम्हारा पत्र मिल जायगा और मै तुम्हारे लिअे कुछ न कुछ लिखकर डाकमे डलवा सकूगा। मगर अैसा होना नही था। अिस प्रकार तुम्हारा पत्र हर हफ्ते अधिक देरसे आ रहा है। परन्तु अुसकी आशा रखते हुअे भी मै चिन्ता नही करता।

यह पत्र-लेखन कैदियोका अधिकार नही है। अिसलिअे अिसमें हमारा अधिकार छिन जानेका प्रश्न भी नही है। जिसे धर्म साधारण जीवनमे कर्तव्य कहता है, वह जेल-जीवनमे जबरन करना पड़ता है या अैसा दिखाअी देता है। परन्तु हमारी यह बात नही है। हम अेक प्रकारसे स्वेच्छापूर्वक कैदी बने है। अिसलिअे जब कोअी अिजाजत वापस ले ली जाय या अधिकारियोके अनुकूल ढगसे नियमित कर दी जाय, तब हमे अुस जब्रका दुःख न होना चाहिये। जरूरत हो तो मै तुम्हारे पत्रोके बिना काम चला सकता हू और तुम्हे भी अिसी तरह करनेके लिअे अपनेको तैयार कर लेना और **सुखी रहना** चाहिये। अेक प्रकारसे तो जब कोअी चीज नही मिल सकती हो, तब सभी अुसके बिना काम चला लेनेकी तालीम पा लेते हैं। गीताधर्मका अनुयायी अपनेको चीजोके बिना **खुशीसे** काम चला लेनेकी तालीम देता है। गीताकी भाषामे अुसे समता कहा गया है। क्योकि गीताका सुख दुखका विरोधी नही है। वह अुस स्थितिसे श्रेष्ठ है। गीताके भक्तको न सुख होता है न दुख। और जब हम अुस स्थितिमे पहुच जाते है, तब दुःख-सुख, हार-जीत, प्राप्ति-अप्राप्ति कुछ नही रह जाते। अगर हम गीताके अुपदेशका पालन करना सीख लें, तो जेल-

जीवन सौभाग्यका जीवन बन जाता है। यह काम बाहरकी अपेक्षा जेलमें ज्यादा आसानीसे हो सकता है। कारण बाहर तो हमें पसन्द नापसन्द करनेका अवसर मिलता है। अिसलिअे हम सदा अपनी परीक्षा नही कर सकते। जेलमे तरह-तरहके खटकनेवाले मौके आते रहते है। क्या हम अुन्हे निश्चल भावसे सहन कर सकते है? कर सके तो अच्छा है।

. बाको अपनी दाढ[1] की सभाल रखनी चाहिये। क्या वह अपने दात लगाती है? काफी व्यायाम करती है? क्या वह अपने आप कुछ पढती है? अुसे पत्र सप्ताहमे मिलते है या पखवाडेमे? मुझे मालूम है पिछली बार अुसे मेरे कअी पत्र नही मिले थे। पता नही अुनका क्या हुआ। अिस बार मै अवश्य चाहता हू कि मेरे पत्र अुसे मिलने चाहिये। जहा तक मुझे ज्ञात है, जेल-अधिकारियोने अुसके पत्र नही रोके थे।

* * *

तुम्हारे अितिहासके बारेमे मै डॉ० साडर्स[2] को जरूर लिखना चाहता हू। लेकिन अितिहास कुछ भी हो, अिलाज वही है जो मै तुम्हे बता चुका हू। अिसलिअे अुनकी रिपोर्टके लिअे ठहरनेकी कोअी जरूरत नही। हा, अुनका कहना क्या है, यह जान लेना अच्छा ही है। सूर्यके प्रकाशसे, अैसे सादे खुराकसे जिसके जीवन-तत्त्व नष्ट न हो गये हो और खुली हवामे व्यायाम करनेसे सारी गाठे और दूसरी खराबिया मिट जायगी।

लो, वे प्रार्थनाके लिअे आ गये। ४ बजकर १० मिनट हुअे है। मै बन्द करता हू। हम सबकी ओरसे प्यार।

४-३-'३३ बापू

---

१. अुस समय बा अगर अपने नकली दात नही लगाती थी, तो नीचेकी दाढके हिलनेसे दर्द होता था।

२. मेरे चचेरे भाअी, जो हार्ले स्ट्रीटके डॉक्टर थे, अिग्लैडमे बचपनसे ही मेरा अिलाज करते रहे थे।

और भी कअी अर्थ किये जा सकते है। यह बहुत सादा और अूचा अुपनिषद् है और गहन भी है। गीताकी तरह अुसमे भी समस्त ज्ञानका सार है। शायद गीता अुसकी टीका है। गीताके अेक प्राचीन टीकाकार या यो कहो कि भक्तने अुपनिषदोको गायकी, गीताको दूधकी और कृष्णको अुन्हे दुहनेवाले ग्वालेकी अुपमा दी है। मगर अभी अिस बारेमे और अधिक नही।

आशा है तुम्हारी प्रगति जारी होगी और असमे गरमीके मौसमसे, जो हमारे यहा शुरू हो गया है, बाधा नही पडेगी। ललाट पर मिट्टीकी पट्टी या केवल गीला कपडा रखो। अिसका आश्चर्यकारक ठण्डा असर होता है। जिस चीजसे सिर ठण्डा होता है, अुससे सारा शरीर ठण्डा हो जाता है। कल ग्रेगकी भेजी हुअी नजर विषयक अेक अमरीकी पुस्तकमें मुझे अेक जोरदार वाक्य मिला। अुसमे कहा गया है कि झूठसे बदन गरम और आखे खराब हो जाती है। अगर 'झूठ'के अर्थका विस्तार कर लें, तो यह सही है। जान या अनजानमे कुदरतके कानूनोको भग करना झूठ है। जान-बूझकर ज्ञात नियमोका तोडना अैसी झूठ है, जिससे हमारे नैतिक बलकी हानि होती है। अनजाने कानून भग करनेसे वह हानि या अुतनी हानि नही होती। परन्तु शरीरकी हानि तो हर हालतमें होती ही है। प्राणायाम पर लिखनेवालोका दावा है कि श्वासोच्छ्वासको नियमित और नियंत्रित करनेकी शक्ति हो, तो जलवायुके परिवर्तनका असर नही होता। गीतासे अिस मान्यताका समर्थन होता प्रतीत होता है। यह अैसा क्षेत्र है जिसमे आधुनिक ज्ञानके प्रकाशमे फिरसे खोज होनेकी जरूरत है। लोनावालाके कुवलयानन्द यह काम कर रहे है। सीटी बजाते समय जैसे होठोको करते है, वैसे करके बाहरकी हवा धीरे-धीरे अन्दर ले जाओ तो तुम्हे तुरन्त ठण्डक मालूम होगी। चित लेटते समय याद रखो कि पीठके पुट्ठे फूलने न चाहियें। अिसलिअे तुम्हारा सास लेना बहुत ही धीमे-धीमे होना चाहिये। अिसका अुद्देश्य शरीर पर ठण्डक पहुचानेवाला असर पैदा करना, अुसे ढीला छोड़ना और आराम

देना है। मन और शरीरके खिचावको राहत पहुंचानेके लिअे नीदसे बढकर कोअी चीज नही है। अिसलिअे प्राणायाम पद्मासन लगाकर शरीरको सीधे तख्तेकी तरह तानकर करना चाहिये। यह सब अभ्यास धीरे-धीरे, विचारपूर्वक और नियमित होना चाहिये और हमेशा खाली पेट होना चाहिये।

यहां प्रार्थनाके लिअे लिखना रुक गया था और अब २५ मिनटके बाद ४-३५ पर फिर लिखना शुरू होता है।

सब बातोको देखते हुअे मुझे अर्नाल्डका अनुवाद और सबोसे अधिक अुपयोगी मालूम होता है। 'परहेजी' गलत शब्द है। 'थोड़ा भोजन' अच्छा है। अल्पका अर्थ है काफीसे कम। काफी क्या है, यह अनुमानका विषय है और अिसलिअे हमारे अपने ही मनकी कल्पना है। सत्यभक्त मनुष्यने यह जानते हुअे कि मनुष्य सदा शरीरकी रियायत करता है अुस रियायतका अिलाज करनेकी दृष्टिसे कहा कि अुसके विचारसे जितना भोजन काफी हो अुससे थोड़ा कम लेना चाहिये। तब कही यह सभव होगा कि वह जितना सचमुच काफी हो अुतना ही भोजन लेगा। अिस प्रकार जिसे अकसर हम अल्प समझते है, संभव है वह भी काफीसे ज्यादा हो। कम खानेके कारण जितने लोग कमजोर रहते है, अुनसे अधिक लोग ज्यादा या गलत भोजनके कारण रहते है। अगर हम अुचित भोजन चुन ले, तो यह देखकर आश्चर्य होता है कि कितनी थोडीसी मात्रा काफी हो जाती हैं।

मुझे खुशी है कि बा तुम्हारे साथ मजेमे है और हिन्दी सीख रही है और तुमसे भजन गवाती है। . . .

मेरा वजन अब १०४ लिखा गया है। खुराक वही फल और दूध (कच्चा) है। मै अभी तो अेक पौडसे कम दूध लेता हूं। फलोसे ही मेरा वजन कायम है। कोहनियोंका वही हाल है। चिन्ताका कोअी कारण नही। कताअी घटाकर कमसे कम कर दी है। कोअी

निश्चित मात्रा नही है। अक अभी तो ५५ और ६० के बीच है। यह केशूके छोटेसे आविष्कार पर पीजे हुअे देवकपासका सूत है।

हम सबकी ओरसे प्यार।

यरवदा मदिर, ११-३-'३३ बापू

२०५

चि० मीरा,

शुक्रवारको सुबहके ३। बजे है। तुम्हारा पत्र यथासमय आ गया था।

आज मै सक्षेपमे ही लिखूगा, क्योकि और कअी महत्त्वके पत्र लिखने है। मुझे जरा भी सन्देह नही कि तुम्हारी प्रगति जारी रहेगी, अगर मै प्राणायामके बारेमे और चित लेटकर धीरे-धीरे सास लेनेके सम्बन्धमे अपनी सूचनाअे तुम्हे समझा सका हू। भाजी खूब खानेसे तुम्हारा कब्ज मिट जाना चाहिये। रोटी तो नही लेनी चाहिये, मगर पपीता मिल सके तो लेना चाहिये।

भोजनमे और कोअी फर्क किये बिना पिछले सप्ताह मैने नमक-रहित भोजन स्थगित कर दिया। मैने केवल फलोके साथ दिनभरमे कुल मिलाकर ३० ग्रेन तक नमक लेना शुरू कर दिया। अितने ही परिवर्तनकी खबर देनी है कि कल मेरा वजन बढकर १०५ हो गया दूध या फलोमे कोअी वृद्धि नही हुअी है। परन्तु मै यह नही कह सकता कि वजन नमकके कारण बढा है। देखेगे।

* * *

सस्नेह,

१७-३-'३३ बापू

२०६

चि० मीरा,

यह गुरुवारको सुबहकी प्रार्थनासे पहलेका समय है। तुम्हारा पत्र बाके पत्रके साथ कल आया।

ज्योतिष पर अेक पुस्तक तुम्हे भेजी जा रही है। अिस महीनेके लिअे अेक नकशा भी साथमे है। अिसी पत्रके साथ तुम्हे डॉ० साडर्सका खत भी मिलेगा। सब बातोको देखते हुअे यह सन्तोप-जनक है।

अिसी पत्रके साथ बाके लिअे भी पत्र होगा।

तुम आश्रमके आचरणकी जितनी चाहो चर्चा कर सकती हो। अिससे मै थकूगा नही। अिससे मुझे सहायता मिलेगी। अिससे तुम मेरा दृष्टिकोण ज्यादा अच्छी तरह समझ सकोगी। तुम मेरी किसी बातको तुरन्त न समझ सको या समझकर भी मुझसे सहमत न हो सको, तो अिसीसे तुम्हे अपने पर यह दोष नही लगाना चाहिये कि तुम्हारा मुझमे या मेरे ज्ञानमे विश्वास नही है। मै सम्पूर्ण प्राणी नही हू। मेरी भूलोमे तुम्हे मुझसे सहमत क्यो होना चाहिये? यह तो अन्धश्रद्धा होगी। मुझ पर श्रद्धा होनेसे तुममे किसी दोषदर्शीकी अपेक्षा मेरी सच्ची भूल अधिक जल्दी जान लेनेकी सामर्थ्य आनी चाहिये। मै तो तुम्हारी श्रद्धासे अितनी ही आशा रखूगा कि जब तुम मुझे अपनी गलतीका विश्वास न करा सको तो तुम्हे यह सोचना चाहिये कि सभव है जिन मामलोमे मैंने तुमसे अधिक विचार और अनुभव किया है, अुनमे मेरी दृष्टि अधिक स्पष्ट हो। अिससे तुम्हे मनकी शान्ति मिलेगी। अिसलिअे तुम्हे अपनी शकाओको दबाकर और कुछ खास बातोमे मेरे खयालसे सहमत न होनेके कारण आत्मपीड़न करके अपनी विचारशक्तिको निकम्मी नही बना देनी चाहिये। अिसलिअे

तुम्हे आश्रमकी चर्चा अुस वक्त तक जारी रखनी चाहिये, जब तक अुसके बारेमें मेरे आदर्श तुम्हारी समझमे खूब अच्छी तरह न आ जाय।

दोनोमें पुरुषके अधिक पापी होनेकी तुम्हे दलील देनेकी जरूरत नही थी। अिस मुद्दे पर मेरे जिन पुरुष मित्रोने अपनी राय जाहिर की है, अुन सबके नही तो अधिकाशके विपरीत मेरा यही मत रहा है। अलबत्ता मै तुमसे सहमत हू कि पशुसृष्टिमे अगर मनुष्य श्रेष्ठ है, तो अुसकी वह श्रेष्ठता ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी अुसकी शक्तिमे है। अिसलिअे संभव हो तो यह आश्रमका अैसा आदर्श होना चाहिये, जो तुरन्त सिद्ध किया जाय।

अिसलिअे जहा तक बुनियादी चीजका सम्बन्ध है, हम दोनो पूरी तरह सहमत हैं। दिक्कत या मतभेद वही आ जाता है, जहा हम अुस आदर्शको पूरा करनेके अुपाय खोजने लगते है।

मेरा यह विचार दिनोदिन दृढ होता जाता है कि आश्रम वैसे ही चलता रहे जैसे अभी चल रहा है और नये लोगोकी भरती नियमित करनेकी व्यवस्थापकको काफी स्वतत्रता हो। हमारा जीवन दिनोदिन सादा होना चाहिये, न कि पेचीदा। आत्मसयममे हमारी दिन प्रति दिन प्रगति होनी चाहिये। मगर हमारा परिवार अभीकी तरह ही सम्मिलित रहना चाहिये।

रुकावट मौजूदा रचनाकी नहीं है। रुकावट यह है कि हमारे यहा सच्चे पूर्ण ब्रह्मचारी बहुत थोडे हैं। सभी टूटे बर्तन थे, सभीको अपने अपने विकारोको जीतना पडा। परन्तु मेरा मत है कि अुनमे अधिकाश सच्चे मुमुक्षु थे और है। अिसलिअे हम अन्धोके अन्धे नेता है और सदा ठोकर खाकर गिरते है। जब सतत प्रयत्न द्वारा हममे से कुछ अिस प्रयत्नमें कमसे कम प्रवेश पा लेंगे, तब हमारी स्थिति अवश्य बेहतर हो जायगी। अिसलिअे समस्या यह बन जाती है कि हम सब आदर्श तक पहुंचनेकी अधिकसे अधिक चेष्टा करें। ब्रह्मचर्यकी मेरी व्याख्या याद

रखो। अुसका अर्थ अेक या अनेक अिन्द्रियोका दमन नही है, परन्तु अुन सब पर पूर्ण विजय प्राप्त करना है। दोनो स्थितियोमे मौलिक भेद है। मै अपनी सारी अिन्द्रियोंको दबा तो आज भी सकता हू, परन्तु अुन्हे जीतनेमे मुझे कल्प लग सकते है। विजयका अर्थ यह है कि वे स्वेच्छापूर्वक दासोका **काम दें**। मै अेक सादे कष्टरहित आपरेशनसे कानके परदेमे छेद करके श्रवणेन्द्रियका दमन कर सकता हू। पर यह निकम्मी चीज है। मुझे कानको अैसी तालीम देनी चाहिये कि वह गपशप, गन्दी चर्चा और निन्दा सुननेसे अिनकार कर दे, दिव्य सगीतके लिअे खुला रहे और हजारो मिल दूरसे आनेवाली सहायताकी पुकारको सुन ले। कहते है सन्त रामदासने अैसा किया था। तो जननेन्द्रियको किस तरह काममे लिया जाय? हमारे पास जो भारी सर्जनात्मक शक्ति है, अुससे अपने जैसी हाड़-मासकी मूर्तिया पैदा करनेके बजाय हम जीवनभरके लिअे यानी आत्माके लिअे रचनात्मक कार्यकी सृष्टि करे। हमे पाशविक विकार पर लगाम लगाकर अुसे दैवी विकार बना देना होगा। यहा तुम गीताके दूसरे अध्यायका ६४ वा श्लोक पढ लो। भगवत् गीताका ध्रुवपद 'युद्धसे भागना नही, बल्कि अनासक्त होकर मुकाबला करना' है। अिसलिअे तुम्हे, मुझे और हम सभीको सब तरहके नर-नारियोके बीचमे अचल होकर खडे रहना है। शारीरिक अेकान्त है ही नही, कुछ लोगोको थोडे समयके लिअे वह मिल जाय, यह अलग बात है। आश्रम जहा है बिलकुल ठीक है, परन्तु हमे अधिक विकासके लिअे फैल जाना पडेगा। मगर यह विकास समय पाकर कुदरती तौर पर होगा।

हम सबकी ओरसे प्यार।

२७-४-'३३

बापू

चि० मीरा,

तो तुम्हे मुझे वह प्रेमपूर्ण तार भेजनेकी अनुमति मिल गअी। मैंने तो प्रयत्न भी नही किया। मैने सोचा कि तुम्हारे पास शान्तिदायक सन्देश भेजनेके लिअे विशेष अिजाजत लेनेकी अपेक्षा यह बेहतर है कि तुम चुपचाप कष्ट सह लो। बादमे, मुझे आशा है, तुम्हे और कुछ दूसरे लोगोको रोज सन्देश भेजनेकी अिजाजत मिल जायगी।

अिस कदम* की पवित्र आवश्यकता तुमने समझ ली। बाका ग्वैया शानदार रहा। अुसके साहससे मुझे बहुत ही बल मिला है।

तुम्हारा पत्र मेरे सामने है। यद्यपि वह अिस कदमकी तुम्हे कुछ भी जानकारी होनेके पहले लिखा गया था, अुसमे मुझे अेक शोकपूर्ण मनस्थिति दिखाअी देती है। तुम्हे अुस पर विजय पानी है। अगर तुम्हे किसी जीते-जागते अीश्वरमे जीती-जागती श्रद्धा है, तो तुम्हे महसूस होगा कि वह सदा तुम्हारी रक्षाके लिअे तुम्हारे पास है। जब तक यह स्थिति नही हो जाती, तब तक हाड़-मासवाले किसी व्यक्तिमे श्रद्धा होनेसे भी कोअी लाभ नही। यह तो किसी धोखेबाज पर आधार रखना है। तुम्हे पहले अिस पर स्पष्ट विचार कर लेना चाहिये और बादमे हृदयका बुद्धिसे सहयोग कराना चाहिये।

* * *

बासे कह दो कि मेरी तरफसे कतअी चिन्ता न करे। वह, मै और हम सब अीश्वरके हाथोमे है। हम जीते रहे तो भी अच्छा और मर जाय

---

* बापूने आत्मशुद्धिके लिअे २१ दिनका अुपवास करनेका निश्चय किया था। अुन्होने कहा था कि 'यह हरिजन कार्यके सम्बन्धमे अधिक जागरूकता और सावधानीके लिअे अपनी और अपने साथियोकी शुद्धिके निमित्त हार्दिक प्रार्थना है।' सरकारने अुपवास शुरू होने पर बापूको छोड़ दिया था। अुपवास पूनाके पर्णकुटी नामक स्थानमे जारी रहा।

तो भी अच्छा। हम मरनेके लिअे ही पैदा होते है और फिर पैदा होनेके लिअे ही मरते है। यह सब पुराना तर्क है। फिर भी अिसे हृदयगम कर लेनेकी आवश्यकता है। किसी न किसी कारण हम जन्मकी तरह मृत्युका स्वागत नही करते। हमे अपनी अिन्द्रियोके प्रमाण पर भी भरोसा नही होता कि आत्माके बिना शरीरसे कोअी आसक्ति रखी ही नही जा सकती। और अिस बातका कोअी भी प्रमाण नही है कि आत्मा शरीरके साथ नष्ट हो जाती है।

अब और अधिक नही। मिलनेवाले अन्दर आ गये है।

आशा है, ज्योतिषकी किताब तुम्हे मिल गअी होगी।

सस्नेह,

४-२-'३३

बापू

२०८

चि० मीरा,

यह पत्र महादेव मेरी तरफसे लिख रहे है। अब वह रोज लिखा करेगे और जब कभी सभव होगा, मेरे हस्ताक्षर करा लेगे। तुम और बा भी रोज लिख सकती हो। साथमे बाके लिअे अेक पत्र है।

तुम्हे मेरी ओरसे किसी दलीलकी जरूरत नही है। जरूरत हो तो वह सब आजके 'हरिजन' मे पढ लेना। मेरे लिअे यह सूर्यप्रकाशकी भाति स्पष्ट है कि अुपवास होना ही चाहिये था। मुझे यही आश्चर्य है कि मैने यह निर्णय और भी पहले क्यो नही किया। अिन तमाम दिनोमे मै अपनेसे झगडता रहा हू। पिछले तीन दिनोमे कशमकश तीव्र हो गअी और आधी रातके कुछ देर बाद मुझे साफ आवाज आअी कि मुझे यह जोखिम अुठानी ही चाहिये। मै समझ सकता हू कि तुम्हे कैसी पीडा हो रही होगी। मै जानता था कि बा बहादुर रहेगी। परन्तु तुम दोनोके सम्मिलित तार और तुम्हारे पत्रोसे मुझे अिस यात्राके लिअे अभीसे आध्यात्मिक

खुराक मिलने लगी है। अगर तुम चाहती हो कि मै शरीरके खिलाफ आत्माके सग्राममे विजयी बनकर निकलू, तो तुम्हे भी संग्राममे शरीक होना पडेगा। मैं जानता हूं कि तुम्हारे लिअे यह प्रयत्न कितना पीड़क होगा, परन्तु मै यह भी जानता हूं कि तुम्हारी विजय होगी और तुम मेरे भी विजयी होनेमे सहायक बनोगी। परन्तु **हमारी** विजय क्या है? जैसा तुमने अपने पत्रके आरभमे सत्य ही कहा है – और शायद जिस समय वहा तुमने ये शब्द लिखे होगे, ठीक अुसी समय मैने अपने लेखका यह शिर्षक लिखा होगा – हमारी नही, प्रभुकी अिच्छा पूरी हो।

तुम दोनो रोज मुझे पत्र लिख दिया करो।

यरवदा सेन्ट्रल जेल,
६-५-'३३ — बापू

२०९

चि० मीरा,

अिस समय प्रात.कालके ३-१० हुअे हैं। मैने अपना पहला पत्र पूरा किया है। वह अेण्ड्रूजके नाम है। मैं ही नही, परन्तु हम सब तुम्हे याद कर रहे है। लोग मुझे तुम्हारे बारेमे लिखते या कहते है और यह सुझाते है कि मुझे तुम्हारी खातिर अुपवास छोड देना चाहिये। यह मेरे प्रति तुम्हारे प्रेमकी बड़ी प्रशसा है, परन्तु अेक हेतुरहित टिका भी है। मै चाहता हू कि मै खुद और तुम्हे जाननेवाला हर शख्स यह अनुभव करे कि तुम्हारा प्रेम अितना गहरा, सच्चा और ज्ञानपूर्ण है कि शरीरसे कितने ही अरसे तक वियोग हो जाय तो भी वह अुसका भार सहन कर लेगा। मै जानता हू कि यह स्थिति आयेगी, आ रही है। वह बुद्धिसे नही आयेगी। हृदयसे आयेगी। असली प्रेमका आधार सर्वथा अुसके आध्यात्मिक अश पर होता है, यद्यपि शुरूमे वह अिन्द्रियोके द्वारा पैदा होता है। मै चाहता हू तुम भी मेरी तरह महसूस

करो कि यह अुपवास ओीश्वरकी आज तक मिली हुअी किसी भी देनसे बडी देन है। मै अिसे भय और कपनके साथ कर रहा हूं, तो यह मेरी दुर्बल श्रद्धाका चिन्ह है। परन्तु अिस बार मेरे भीतर वह खुशी है, जो पहले कभी नही हुअी। मै चाहता हूं तुम मेरी अिस खुशीमे शरीक होओ।

अिसलिअे अपनेको भोजनसे वचित न करना। ओीश्वरको धन्यवाद देकर भोजन करो और अपनेको सेवाके लिअे तदुरुस्त रखो। तुम्हारे लिअे भी वह समय आ सकता है, जब तुम्हे अैसा ही अुपवास करना पडे। कुछ परिस्थितियोमे यही अेक हथियार होता है, जो ओीश्वरने हमे घोर लाचारीके समय काममें लेनेको दिया है। हमे अुसका अुपयोग करते नही आता या हम समझ लेते है कि अिसका आदि और अन्त केवल शरीरको आहार न देना ही है। यह अैसी चीज नही है। भोजन न करना अनिवार्य तो है, परन्तु वह अिसका सबसे बडा अग नही है। सबसे बडा अग तो है प्रार्थना — ओीश्वरसे लौ लगाना। यह शारीरिक भोजनसे भी बढ़कर है।

यथासभव महादेव तुम्हे रोज पत्र डाल दिया करेगे।

ओीश्वर तुम्हे शक्ति दे।

सस्नेह,

बापू

बाके लिअे पत्र साथमे है।

यरवदा मंदिर,
८-५-'३३

आशा है तुम्हे मेरा शनिवारका पत्र मिल गया होगा। अेक पत्र बाके नाम भी भेजा गया था।

२१०

[नीचे लिखे सन्देश बापूके अुपवासकी प्रगतिके समाचार देनेवाले पत्रो पर खुद अुन्होने लिखे थे.]

तुम्हे और बाको अैसे समाचार रोज मिलेगे। आशा है तुम अच्छी तरह बरदाश्त कर रही होगी।

१०-५-'३३ बापू

२११

चि० मीरा,

तुम अन्त तक बहादुर बनी रहना। मेरी बेटी होना खेल नही है। वहा होनेसे तुम्हे[1] से भी ज्यादा कठोर अग्निपरीक्षामे से गुजरना पड़ेगा। परन्तु मेरे बच्चे सपूत हो तो अुन्हे मुझसे अधिक अच्छा आचरण बताना पड़ेगा। क्यो ठीक है? अीश्वर तुम्हारी रक्षा करे।

सस्नेह,

बापू

२१२

तो अब सभाल रखनेके लिअे या साथके लिअे तुम्हारे पास बा नही रही। अीश्वर तुम्हारी सम्पूर्ण परीक्षा कर रहा है। वह तुम्हे बल देगा।[2]

सस्नेह,

१४-५-'३३ बापू

---

१. अिस पत्रके साथ अुपवासकी प्रगतिके समाचार देनेवाला जो पत्र था, अुसमे मथुरादासने यह लिखा था:

"पीछे लिखी हुअी पक्तियां बापूने शुक्रवारको दिनके दो बजे लिखी थी। चश्मा लगाये बिना लिखी, अिसीलिअे वाक्य अधूरा रह गया।"

२. सरकारने बाको बापूके पास जानेके लिअे छोड़ दिया था।

२१३

तुम अद्भुत वीरताका परिचय दे रही हो। अीश्वर पर सम्पूर्ण आधार रखनेके सिवाय कोअी सच्ची बहादुरी नही है।

सस्नेह,

२१-५-'३३ बापू

२१४

चि० मीरा,

मैंने अभी-अभी अुपवास तोडा है। आगेका काम शुरू होता है। प्रभु ही अुपाय और मार्ग बतायेगा।

२९-५-'३३

२१५

चि० मीरा,

तुम्हें प्रत्यक्ष मिलनकी अिस लालसासे मुक्त होनेकी अवश्य चेष्टा करनी चाहिये। आशा है बुखार मिट गया होगा।

सस्नेह,

पूना, बापू
३-६-'३३

२१६

चि० मीरा,

यह बार-बार बुखार आना मुझे अशान्त करता है। तुम्हे सच्चा आत्मसयम सीखना चाहिये। यह पढनेसे नही होता बल्कि निश्चित रूपसे यह अनुभव करनेसे ही होता है कि अीश्वर हमारे साथ है और वह हमारी संभाल अिस तरह करता है मानो अुसे और किसीकी चिन्ता करनी ही नही है। यह कैसे होता है, सो मै नहीं जानता। यह

जरूर जानता हू कि अैसा होता ही है। जिनमे यह श्रद्धा है अुनके कन्धोसे सारी चिन्ताओंका भार अुठ जाता है। तुम अेक साथ श्रद्धा और खिचाव दोनो नही रख सकती। अपने मनका खिचाव दूर करो।

पूना, सस्नेह,
५–६–'३३

बापू

२१७

लिखाया हुआ

पर्णकुटी,
पूना, ७-६-'३३

चि० मीरा,

मुझे लिखना नही चाहिये। पिछला पत्र ज़ो मैने तुम्हें लिखा था, अुससे मेरे हाथ पर बहुत जोर पडा। अिसलिअे तुम्हारे ५ तारीखके पत्रके जवाबमें यह पत्र लिखवा रहा हू।

तुम कहती हो कि महादेवके लिखे हुअे पत्रके अन्तमे मैंने जो संक्षिप्त वाक्य लिखा, अुससे तुम्हे पीडा हुअी। आश्चर्यकी बात है कि जहां दु.ख होनेका जरा भी कारण न हो, वहा भी हम दु.ख कैसे पैदा कर लेते है। मेरा वाक्य तुम्हारे बुखारके सम्बन्धमे था, जिसे तुम्हीने अधिक चिन्ताके कारण हुआ बताया था। तुमने साफ तौर पर अुल्लेख किया था कि तुम वियोग सहन नही कर सकती। . . . अिसकी तो कल्पना तक नही थी कि जब मेरे साथ रह सकना तुम्हारे लिअे सभव हो यानी हम दोनो कैदमे न हो, तब भी तुम मेरी नजरसे दूर रहो। अवश्य ही अुस सूरतमे तुम स्वाभाविक रूपमे मेरे साथ होगी। लेकिन जेलसे बाहर रहना मेरा स्वाभाविक जीवन नही है। मेरा स्वाभाविक जीवन कैदीका है और अिसलिअे मेरा सुझाव है कि तुम्हे मेरी शारीरिक अुपस्थितिके बिना काम चलाना सीख लेना चाहिये। क्या यह सूर्यप्रकाशकी तरह साफ नही है ?

तुम्हारा यह वजन घटना मुझे पसन्द नही है। अपने कधो पर यह चिन्ताका भार लिये फिरनेमे कोअी मौलिक खराबी है। अेक जीते-जागते ओीश्वरमे जीती-जागती श्रद्धा रखनेका अिससे मेल नही बैठता। जैसे-जैसे समय बीतता है वैसे-वैसे मै रोम रोममे अुसका सजीव अस्तित्व अनुभव करता हू। यह अनुभव न हो तो मै पागल हो जाअू। मेरे मनकी शान्तिको भग करनेवाली कितनी ही बाते होती है। अितनी घटनाये होती है कि अिश्वरके अस्तित्वका भान न हो तो वे मुझे जडसे हिला डालें। परन्तु वे हो जाती है और मुझ पर लगभग कोअी असर नही होता। मै चाहता हू तुम भी मेरी तरह अिस सत्यको पहचानो। फिर अिस कारणसे तुम्हे अशान्ति नही होगी कि तुम शरीरसे मेरे निकट नही हो सकती। याद रखो कि तुम्हे और मुझे जो वियोग मजबूरन सहना पड़ता है, अुसे सहन करनेके लिअे किसी बहादुरीकी जरूरत नही है। लाखो मनुष्य बिना किसी प्रयत्नके अैसा करते है। यह समझनेकी भूल न करो कि वे अैसी जुदाअी अिसलिअे सहन कर लेते है कि अुनका स्वभाव अैसी बातोमे कोमल नही होता। हम अुनकी जाच करे तो पता चलेगा कि जितने कोमल तुम और मै हो सकते है ठीक अुतने ही कोमल वे भी है। अितना ही है कि अुनकी ओीश्वरमे अैसी स्वाभाविक श्रद्धा होती है जिसका अुन्हे ज्ञान भी नही होता। अुनके मुकाबलेमे हमारी श्रद्धा पैदा की हुअी होती है। अिसलिअे हमे वियोग सहन करनेका भगीरथ प्रयत्न करना पड़ता है। बहरहाल, तुम्हारी मनोवृत्तिका मेरा विश्लेषण यह है। अगर यह सही नही है तो तुम अपना विश्लेषण स्वय कर लो और किसी भी तरह अिस भयंकर चिन्तासे मुक्त हो जाओ। गीताके दूसरे अध्यायमे कृष्णके संवाद पर ध्यानपूर्वक मनन करो। फिर बारहवे अध्याय पर चली जाओ और देखो कि तुम्हे सच्ची मानसिक शान्ति और निश्चलता प्राप्त हो सकती है या नही। मेरी अिस दलीलका ब्यौरेवार अुत्तर देनेका प्रयत्न न करना। मै तुम पर अितना जोर नही डालना चाहता।

मैंने यह दलील सिर्फ अिसीलिअे दी है कि सभव हो तो तुम्हे तसल्ली करा दू। मै जानता हू कि जब हमारे सारे प्राण अपने ही से विद्रोह कर रहे हो तब दलील व्यर्थ होती है। शायद जिस पीडक प्रक्रियामे से तुम गुजर रही हो, वह अुस अनुभवका प्रारम्भ है जो तुम्हे अीश्वरकी जीती-जागती अुपस्थितिका होनेवाला है। अीश्वर करे अैसा हो। कुछ भी हो, अपने मनमे यह विचार आने ही न दो कि जब हम दोनो जेलमे बाहर हो, तब भी तुम्हारे मुझसे अलग रहनेका कोअी प्रश्न रहेगा।

अब मेरी बात। मै मजेमे हू। ६४ वर्षकी आयुमे शरीरका पुनर्निर्माण धीमी गतिसे ही हो सकता है और मै देखता हू कि वह गति मैंने आशा रखी थी अुससे धीमी होगी। फिर भी स्थिरताके साथ चंगा हो रहा हू। २४ औंस दूध आसानीसे ले रहा हू। २ पौंड तक जानेकी कोशिश है। और डॉ० दिनशा महेताकी देखरेखमे मात्रा और भी बढ सकती है। मै जिस ढगसे प्रगति कर रहा हू, अुससे मुझे पूरा सन्तोष है। दूधके सिवाय मै नारगियां और ३-४ अनारका रस लेता हू। और खासी मात्रामे शहद, शायद ४ औंस ले रहा हू। कल तक तरकारीका रसा ले रहा था। आजसे डॉ० महेताने दूधकी मात्रा बढानेके लिअे रसा बन्द कर दिया है। अिस प्रकार तुम देखती हो कि मेरे भोजनके और जिस ढंगसे मेरी प्रगति हो रही है अुसके बारेमे शिकायतकी कोअी बात नही है।

तुम्हें मौसमकी सख्त गरमीकी शिकायत है। हमारे यहा बढ़िया ठण्डी ऋतु है। बेशक, पूना बरसातके लिअे आदर्श स्थान है।

१६ तारीखको देवदासका लक्ष्मीसे विवाह होगा; धार्मिक सस्कार अुस तारीखको होगा। परन्तु चूकि यह विवाह वर्तमान हिन्दू रिवाजको तोडकर होगा, अिसलिअे २१ तारीखको अुसकी सिविल रजिस्ट्री भी होगी।

* * *

सस्नेह,

बापू

२१८

लिखाया हुआ

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र अभी पहुचा है। मुझे अिस सप्ताह बहुत सक्षेपमे लिखना पडेगा. क्योकि ८ बजेसे जिसे दुग्धाहार कहते है वह शुरू होता है और ३।। या ४ बजे तक चलता है। अिस अरसेमे सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक विश्रामकी भी जरूरत होती है। फिर भी अगर मुझे यह पत्र समय पर ही लिखना हो, तो अिस दुग्धाहारके समयमे ही लिखना होगा। यह भोजन क्या है, अिसका वर्णन बादमे महादेव करेगे। अुससे अभी तक यह तो नही कहा जा सकता कि वजन बढ़ रहा है, फिर भी स्पष्ट है कि मेरी शक्ति बढ रही है। अत मेरे लिअे चिन्ता करनेका कोअी भी कारण नही है। जहा तक मुझे दिखाअी देता है यह कहा जा सकता है कि मै स्थिरतापूर्वक प्रगति कर रहा हू।

अपनी तदुरुस्तीके और मेरा पत्र पढनेमे तुमने जो भूल की अुसके बारेमे तुम्हारा कहना मैने समझ लिया। यह आशा जरूर है कि कमजोरीने तुम्हारा पिण्ड छोड़ दिया होगा और अब बुखार बाकी नही होगा। मै मान लेता हू कि तुम अपने लिअे फलोकी कजूसी नही करोगी। शरीरको जिस चीजकी भी आवश्यकता है, अुसे जुटा लेना चाहिये और अच्छी व तगडी बन जाना चाहिये।

सस्नेह,

पूना, १४-६-'३३ 　　　　　　　　　　बापू

२१९

पर्णकुटी,
पूना, २१-६-'३३

चि० मीरा,

तुम्हारा १८ तारीखका पत्र मेरे हाथमे आज सुबह आया।

जिसे दुग्ध-चिकित्सा कहा जाता है, अुसे मैंने छोड दिया है। परन्तु मै अपने ही ढगसे ६ बजेसे प्रारभ करके ३ घण्टेके अन्तरसे ४ पौड दूध और रसदार फल (नारगिया, अगूर और अनारका रस) ले रहा हूं। फिलहाल अिसके मेरे लिअे अधिक अनुकूल होनेकी सभावना है। मेरा वजन बढकर ९३॥। पौड तक पहुच गया है। यह अच्छी वृद्धि है और मुझे तीन-चार बार चन्द कदम रोज चल लेनेकी अिजाजत है। छ. सप्ताहके बाद मैंने पहले पहल टब स्नान किया। अिससे बड़ी ताजगी आअी। तो देख लो, जहा तक मेरे स्वास्थ्यका सम्बन्ध है कोअी चिन्ताकी बात नही है। कथित दुग्ध-चिकित्सामे मेरी लम्बाअीके हिसाबसे मुझे बिना किसी कष्टके १२ पौड दूध रोज ले सकना चाहिये। यह अेक खास तरीका है और बहुत लोगोके लिअे बड़ा कारगर होता है। मेरे लिअे भी अन्तमे सफल होनेकी आशा रखी गअी थी, परन्तु मै अिस पर तर्क करनेमें फंसना नही चाहता था और अिसलिअे फिलहाल मैंने अुसे छोड दिया है। तुम्हे यह जानकर आश्चर्य होगा कि काकासाहब यह अिलाज करा रहे हैं। अिस समय वे १० पौड दूध रोज ले रहे हैं और अुन्हे १२ पौड तक पहुचना है। अुनका वजन १२० पौड तक हो गया है। ब्रजकिशन भी, जिन्हे तुम्हे मालूम है बरसोसे हमेशा कब्ज रहता है, यही चिकित्सा करा रहे हैं। वह हर घण्टे १ पौडके हिसाबसे बिना किसी दिक्कतके १२ पौड दूध रोज ले लेते हैं। यह अच्छी तरह आजमाया हुआ तरीका है। अिस प्रणालीमे मुख्य बात यह है कि जब

तक दुग्ध-चिकित्सा जारी रहे, तब तक बिस्तरमे लेटे रहना पडता है। दूध लेना शुरू करनेसे पहले सुबह खूब व्यायाम किया जा सकता है।

*   *   *

सस्नेह,

बापू

२२०

पूना, २९-६-'३३

चि० मीरा,

अिस समय गुरुवारको सुबहके ५॥ बजे हैं। तुम्हारा पत्र मेरे सामने है।

यह सोचकर मुझे खुशी होती है कि तुम फिर अच्छी हो गअी और दिनों दिन तुममे शक्ति आ रही है। हमें सब ऋतुओमे अच्छा रहनेकी शक्ति प्राप्त करनी ही चाहिये। मै जानता हू यह काम कठिन है, परन्तु यह अिन्सानके बूतेसे बाहरकी बात नही है। अिसमे मनका बहुत हाथ होता है। अगर बाह्य बातोमे हम गीताके छठे अध्यायके अनुसार पूरी तरह अनासक्त हो सके, तो वह स्थिति प्राप्त हो सकती है। सम्प्रति वह हमारे बूतेके बाहर दिखाअी देती हो, तो अिससे हमे घबरानेकी आवश्यकता नही है। गीताकार हमे कोशिश करनेके लिअे कहता है और अपने विपुल अनुभवसे बताता है कि अिसमे असफलता कभी नही होती। देर लग सकती है, परन्तु सफलता निश्चित है।

हा, अुपवासके दिनोमे मैंने नमक नही लिया। यह जबरदस्तीका पुण्य था। मै ले ही नही सकता था। अुससे अरुचि होनेके कारण लेनेकी कोशिश ही नही की और चूकि सोडा था, अिसलिअे अुसकी जरूरत नही थी। सोडा मैंने ज्यो-त्यों करके ले लिया।

कल मेरा वजन ९७। था और कुल मिलाकर तीन बारमे ४४ मिनट घूमा तो भी थकान नही मालूम हुअी। अिसलिअे यह पहलेसे बहुत अच्छी प्रगति है। थोडी बातचीत करनेमे भी कठिनाअी नही होती।

* * *

सस्नेह,

बापू

२२१

पूना, ६-७-'३३

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला।

मेरी प्रगति बराबर हो रही है। अब मै ९८ पौडसे अूपर हू। खुराक वही पहले जैसी है। दिनमे तीन बार कुल मिलाकर १ घण्टे २० मिनट घूम सकता हू। यह कम नही है! अिससे मुझे थकान नही होती। आशा है अच्छी सेहतकी स्पर्धामे तुम मुझे हरा दोगी। बेशक, वहाकी गरमी तुम्हारे विरुद्ध है। लेकिन अब तो वर्षा हो ही जायगी। किसी भी हालतमे, जब गरमी बहुत सताये, तब अगर गीली चादर लपेट लोगी तो तुम्हे तुरन्त ठण्डक हो जायगी। चादर कैसे लपेटना यह तो तुम्हे आता ही है। अपने बिछौनेकी चादर ले लो। अुसे ठण्डे पानीमे डुबो लो। अितनी अच्छी तरह निचोड लो कि पानी न रह जाय। चादर पर नगी लेट जाओ और अुसे अपने चारो ओर लपेट लो। पैरोसे गर्दन तक कम्बल ओढ लो। पाच मिनट या आराम मालूम हो तो अधिक अुसीमे रहो। ठिठुरन मालूम नही होनी चाहिये। अैसा हो तो तुरन्त बाहर निकल आना चाहिये। अिससे बडी ताजगी और ठण्डक आती है। जरूरत हो तो अिस तरह चादर अकसर लपेट सकती हो। खुद परीक्षा करके देख लो।

* * *

तुम्हारा बन्दरोंका वर्णन बड़ा दिलचस्प है। क्या वे अभी तक तुम्हारा भोजन छीनकर नही ले गये? हां, यह तो तुम जानती ही ो कि जब वे क्रोधमे आते है, तब सख्त चोट पहुंचा सकते है।

*　　　　*　　　　*

हम सबकी ओरसे प्यार।

बापू

२२२

पूना, १३-७-'३३

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र पहुच गया। तुम कल्पना कर सकती हो कि मुझ पर कितना भार आ पड़ा है। यह और दूसरे अेक दो महत्त्वपूर्ण पत्र और 'हरिजन' के लेख लिखनेके लिअे मैंने मौन ले लिया है। ९ बजे सुबहकी अेक मुलाकात करनेमें थोड़ेसे मिनट बाकी है। अीश्वरकी मुझ पर कृपा है कि वह मुझे अितनी शक्ति दे देता है, जिससे मैं अपने सामने पडे हुअे कामको निपटा सकू।

वजन घटता बढता रहता है। १०१ से अधिक था पर कार्याधिक्यके कारण वह घटकर ९९ से नीचे जा पहुचा है। कुछ समय तक अिसी तरह घटता बढ़ता रहेगा। मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी रहती है।

मै चाहता हूं कि तुम मन और शरीर दोनोके स्वास्थ्यकी होड़मे अुसकी चिन्ता किये बगैर मुझे हरा दो। तुमने मुझे पिता और मा दोनों बना तो लिया, परन्तु मुझसे पाअी हुअी विरासतमे वृद्धि नही की तो फायदा क्या हुआ? मेरा सचमुच यह विश्वास है कि जहा परस्पर कर्तव्यका भाव होता है वहा अैसा ही होना चाहिये। और जहां माता-पिता बनाये जाते है, वहा अुनकी बुराअियो और मर्यादाओके लिअे नहीं, परन्तु अुनमे जो गुण माने जाते है, अुनके लिअे बनाये जाते है।

अिसलिअे असली या काल्पनिक गुण केवल लिये ही नही जाते, अुनमें वृद्धि भी की जाती है। मैं चाहता हू तुम अिस नियमको सिद्ध कर दिखाओ। मुझे विश्वास है तुम अैसा करोगी।

क्या तुम्हे गोरखनाथकी मशहूर मिसाल मालूम है, जो अपने गुरु मछन्दरनाथसे आगे बढ़ गये थे?

* * *

सस्नेह,

बापू

२२३

आश्रम, साबरमती,
३०-७-'३३

चि० मीरा,

यह पत्र आश्रमसे लिख रहा हूं। अिस समय रातके पौने नौ बजे है। आशा है तुम मुलाकातके बाद बहुत ज्यादा अुत्तेजित नही हुअी होगी।* तुम्हे वजन बढ़ाना होगा, अगर बीमार हुअे बिना बढ़ा सको।

अब आश्रम तो तोड़ दिया गया है, अिसलिअे अपनी जरूरतें तुम्हे रणछोड़भाअीसे पूरी करानी होंगी। मैंने अुनसे कह दिया है।

मैं अधिक नही लिखूंगा। क्योंकि मेरे पास समय नही है और मेरी अुगलियां अब ज्यादा काम नही देती।

सस्नेह,

बापू

---

* बापू मुझसे साबरमती जेल पर मिलने आये थे।

२२४

[यहां पिछले और अिस पत्रके बीच फिर अेक लम्बा अरसा बीत जाता है। अिस अरसेमे बहुतसी घटनाये होती है। मुझसे साबरमती जेलमे मिलकर जानेके बाद दूसरे ही दिन शामको बापू गिरफ्तार कर लिये गये और यरवदा जेल भेज दिये गये। वे दूसरे दिन रास गावकी तरफ कूच शुरू करनेवाले थे और अिसीको रोकनेके लिअे यह कार्रवाअी की गअी थी। पिछली बार जेलमे रहते हुअे हरिजन-सेवाकी जो सुविधाअे दी गअी थी, वे अिस बार नही दी गअी। अिसलिअे बापूने अुपवास शुरू कर दिया। सरकार अडी रही और बापूका स्वास्थ्य पिछले २१ दिनके अुपवासके कारण अैसा हो गया था कि अुनकी टिके रहनेकी शक्ति बहुत घट गअी और हालत तेजीसे बिगडने लगी। मेरी साल भरकी कैद पूरी हो ही रही थी। साबरमती जेलके सुपरिण्टेडेटकी बड़ी सहानुभूति थी और असने पूरी कोशिश की कि मेरी मियाद पूरी होनेसे घण्टे दो घण्टे पहले मुझे छोड दे, ताकि मै पूनाके लिअे प्रात.कालकी गाड़ी पकड सकू। मै जेलसे सीधी स्टेशन पर पहुची और सारे सफरमें लोगोको बापूकी हालतकी चर्चा करते हुअे और यह कहते हुअे सुना कि वे मर रहे है। जब मै पर्णकुटी पहुंची तो मैने देखा कि बा और दूसरे लोग हाथ मल मलकर कह रहे थे कि "बापू नही बचेगे।" बाको अुनसे मिलने दिया गया था। वे बोली, "आज सुबह अुन्होने और पानी लेनेसे अिनकार कर दिया है, अपनी थोड़ीसी छोटी मोटी चीजें अपने सेवकोंको बाट दी है और अवसानकी तैयारी कर रहे हैं।" यद्यपि मेरे पास अन्त:स्फूर्तिके सिवाय और कोअी आधार नही था, फिर भी मै कह सकी, "मुझे लगता है कि बापू मरेगे नही।" अुस दिन सुबह अेण्ड्रूज अन्तिम समयमे समझौतेकी आशासे जेल पर गये थे। हम दुविधामें बाट देख रहे थे। खबर आअी कि सरकार बापूको छोड़ रही है और थोड़ी देरमें बीमारोंकी गाड़ी बापूको अेण्ड्रूजके साथ लेकर पर्णकुटी

पहुंच गअी। बापूको खटोले पर ले जाया गया। अिससे पहले या बादमे मैने बापूको कभी अितनी बुरी हालतमे नही देखा। आखे बैठ गअी थी और चेहरा बिलकुल पीला पड़ गया था। फिर भी अुनकी आत्मा अुतनी ही प्रफुल्ल थी। अिसके बाद अच्छे होनेमे लम्बा अरसा लगा और फिर अखिल भारतीय हरिजन-यात्रा शुरू हुअी। अिस यात्राके सारे मध्य और दक्षिण भारतीय भागमे मै बापूके साथ थी। जब हम बम्बअी तक अुत्तरमे लौट आये थे, तब मुझे भीतरसे प्रेरणा हुअी कि मुझे अिंग्लैण्ड जाकर लोगोंको और खासकर मजदूर वर्गको बापू और अुनके सन्देशके बारेमें कहना चाहिये। मै सीधी बापूके पास गअी और अुनसे कहा। अुन्होने कहा, 'तुम्हे जाना चाहिये।' पांच दिनके भीतर मै जहाज पर सवार होकर युरोप चल दी। निम्नलिखित पत्र मेरे जानेके बाद बापूका लिखा हुआ पहला पत्र था।]

चि० मीरा,

कैसा वियोग था! वह अुदास कर देनेवाला वियोग था। लेकिन मै जानता हू कि मुझ पर अिससे अधिक गहरे या मूल्यवान और फिर भी नि:स्वार्थ स्नेहकी वर्षा कभी कोअी नही करेगा। मै अुसी स्नेहसे परेशान हो गया हू। लेकिन यह तो अुसका अस्थिर पहलू है। भगवान तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हारे प्रयत्नको सफल करे। जब तक जरूरी हो तुम वहा ठहर जाना और जितनी जल्दी हो सके लौट आना।

ऋषि और अुनकी बहनको मेरा प्यार पहुंचा देना। अेफीसे मिलना न भूलना। अुसे और दूसरे सब भाअी-बहनोको मेरा प्यार।

आशा है तुम्हारी चीजे समय पर पहुंच गअी होगी।

सस्नेह,

बापू

२०-६-'३४

२२५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र और पोस्ट कार्ड मिल गये। अीश्वर तुम्हारी रक्षा करे। मैं लगातार मुलाकातोंसे घिरा रहता हूं। अीश्वर तुम्हारे साथ रहे। हम सबकी ओरसे प्यार।

२२-६-'३४

बापू

२२६

चि० मीरा,

तुम्हे गाड़ी भर प्यार भेजनेके सिवाय और कुछ नही लिखना है।

प्यार। . ...

२९-६-'३४

बापू

२२७

चि० मीरा,

अब भी काम बहुत ज्यादा है और समय कम है। अिसलिअे तुम्हे मेरी ओरसे लम्बे पत्रकी आशा नही रखनी चाहिये। चन्द्रशकर तुम्हे पूरा हाल लिख रहे है। आज जो दुखद घटना * हुअी, अुसका वर्णन वह करेंगे।

---

* अजमेरमे बापूकी सभामे सहानुभूति रखनेवालो और सनातनियोंमें संघर्ष हो गया। सनातनियोके नेता पंडित लालनाथने हरिजन-यात्राके दिनोंमे बापूका पीछा किया था और तरह-तरहके विरोधी प्रदर्शन करके गड़बड़ मचाअी थी। अिस अवसर पर अुन्होने काली झण्डियां दिखाकर प्रदर्शन किया और बापूके सभामे पहुचनेसे पहले जो भिड़न्त हुअी, अुसमे पंडित लालनाथको चोटे आ गअी। जब बापूने अिस घटनाका हाल सुना, तो अुन्होने सप्ताह भरका अुपवास करके अहिंसाके भंगका प्रायश्चित्त करनेके अपने निश्चयकी घोषणा कर दी।

जेलखानेके बरतावके बारेमें मेरे पास कअी बयान रखे है। परन्तु अभी तक मैं अुनकी जाच नहीं कर सका हूं। अिसलिअे अुन्हे मि० मैक्सवेलके पास भेजनेमे देर हो रही है।

सस्नेह,

अजमेर, ५-७-'३४ बापू

२२८

चि० मीरा,

तुम आनेवाले अुपवासको समझ लो। अिस घटनाके प्रायश्चित्तकी जरूरत है, क्योंकि अिसमे साफ तौर पर प्रतिज्ञा भंग हुअी है। दुनियामे सुरक्षाके वचनभंगके बराबर शायद कोअी वस्तु गभीर नही होती। मुझमे अधिक शक्ति होती तो अिससे भी लम्बा अुपवास करता। तुम्हें अशान्त नही होना चाहिये। तुम्हे अपना निश्चित कार्य विचलित हुअे बिना जारी रखना चाहिये।

यह पत्र और मित्रोंको भी पढ़ा देना।

सबको प्यार,

१०-७-'३४ बापू

२२९

चि० मीरा,

यह पत्र चलती गाडीमें लिखा जा रहा है।

* * *

कमसे कम सारे अगस्तके लिअे मै स्वतंत्र हूं। अुसके बाद मेरे सामने कोअी मार्ग स्पष्ट नही है। मुझे चिन्ता भी नही है। आगेका कदम भगवान सुझायेगे। अेंड्रूज २५ अगस्तको आनेवाले है।

अपनी तदुरुस्ती कायम रखना। यह समझ लो कि तुम्हारी अिंग्लैण्ड यात्राका कोअी प्रत्यक्ष परिणाम दिखाअी न देगा, तो भी मुझे

कोअी परवाह नहीं है। मेरे लिअे तुम्हें मिलनेवाला अनुभव ही काफी परिणाम है। अिसलिअे अपने प्रति या अपनी परिस्थितियोके प्रति अधीर न होना।

मैं बिलकुल अच्छा हू। थकान जरूर है। परन्तु यह थकान तो अनिवार्य है।

सस्नेह,

१२-७-'३४ बापू

२३०

चि० मीरा,

यह पत्र भी चलती गाड़ीमें लिख रहा हूं। मुझसे तुम्हें लम्बे और जानकारी भरे पत्रोंकी आशा नही रखनी चाहिये। मेरे लिअे तुम्हे हर सप्ताह अपना प्यार भेज देना काफी है। बाकीका काम चन्द्रशकर अच्छी तरह कर लेते है। और अब महादेव और वल्लभभाअी भी छूट गये है। प्यारेलाल और महादेव मेरे साथ है, काका भी है। जयरामदास भी छूट गये, मगर मेरे साथ नही है। अब तो मुख्य व्यक्तियोंमे जवाहरलाल और अब्दुल गफ्फारखां ही रह गये है।

यह गाडी मुझे कलकत्ते ले जा रही है। सभव है गवर्नरसे मेरी मुलाकात हो और मूरसे तो होगी ही।

आनेवाले अुपवाससे तुम्हें अशान्ति नही होनी चाहिये। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि अुपवासकी खबरसे अुन आदमियोके नाम प्रगट हो गये है, जिन्होने काली झण्डियोके प्रदर्शन पर हमला करनेमे भाग लिया था।

* * *

सस्नेह,

१९-७-'३४ बापू

२३१

रेलमे, २५-७-'३४

चि० मीरा,

यह सिर्फ अितना ही बतानेको है कि तुम सदा मेरे पास हो।

सस्नेह,

बापू

२३२

चि० मीरा,

यह अैसे समय लिखा जा रहा है, जब अेक हाथमे तरकारी और दूसरेमे कलम है। डाकका समय निकट है। अिसलिअे तुम्हे केवल प्रेम ही भेज सकता हू।

२६-७-'३४

बापू

२३३

चि० मीरा,

६ बजे प्रातःकाल मैने अुपवास शुरू किया। अब ७ बजे है। मुझे विश्वास है कि अिस सप्ताहके दिनोंमे तुम्हे अशान्ति नही होगी। बेचैनीका कोअी कारण नही। लेकिन मेरे अिस सब कुछ कहनेसे फायदा क्या ? अिस पत्रके पहुंचनेसे पहले तो अुपवास दो बार पूरा हो जायगा।

*　　*　　*

अभी तो मेरे मनमे कअी परिवर्तन हो रहे है। कांग्रेसकी भ्रष्टता जैसे मुझे अिस समय खाये डाल रही है, वैसा पहले कभी नही हुआ। मै मित्रोसे सलाह-मशविरा कर रहा हू कि मेरा कांग्रेस छोडकर और बाहर रहकर अुसके आदर्शोंको पूरा करनेकी कोशिश करना कहा तक ठीक होगा। यह अच्छा है कि अिस भ्रष्टाचारसे मुझे बेचैनी होती है।

मै जल्दबाजीमें कोअी कदम नही अुठाअूगा, मगर बात अैसी ही है। मुझे यह भी महसूस होता है कि यहाकी लडकियोंकी सस्था बन्द कर देनी चाहिये, यदि मै वर्धामे बैठ जानेको तैयार नहीं हू या विनोबा अकेले अुसकी व्यवस्थाकी जिम्मेदारी न ले ले। अुपवासके दिनोमे वे अिस पर विचार करेंगे। यही दो चीजे मेरे मनमे अिस समय मुख्य है।

बाकी समाचार तुम्हे महादेव या प्यारेलालसे मिलेगे।

*　　　*　　　*

तुम्हारा वहाका काम बेशक भारी है। तुम असाधारण शक्ति लगा रही हो। अिससे ज्यादा और क्या कर सकती हो? वहासे लौटनेकी जल्दी न करना। बीमार न पड़ना।

सस्नेह,

वर्धा, ७-८-'३४　　　　　　　　बापू

अफसोस, मै अभी तक मैक्संवेलको नही लिख सका हू।

२३४

चि० मीरा,

मैंने तुम्हे अुपवास शुरू करनेके बाद मगलवार ७ तारीखको पत्र लिखा था। आज गुरुवार और अुपवास तोड़नेके बाद तीसरा दिन है। अन्तिम दिवस शारीरिक पीड़ाका था। शायद अिसीमे भलाअी हो। मुझे शारीरिक यातना न हो, तो प्रायश्चित्तका मूल्य ही क्या? कष्ट अनुभव न हो, तो 'कष्ट भोगनेका आनन्द' अिस वचनके कोअी मानी ही नही। 'कष्ट भोगनेका आनन्द', अिन शब्दोका अर्थ मुझे पहलेकी अपेक्षा सोमवारको ज्यादा पूरी तरह मालूम हुआ। अिस खजानेको पाकर मै अितना सम्पन्न हो गया कि अुसे मै किसी राज्यके बदलेमें भी जाने न देता।

यह तो हुआ। जब मै यह लिख रहा हू, तब अैसा लगता है कि शक्ति धीरे-धीरे आ रही है। यह मै वसुमतीके सहारेसे छत पर थोड़ा

टहलनेके बाद लिखने बैठा हूं। . . . प्रभावती तो है ही। अिन दिनों अुसने बहुत परिश्रम किया। समझमे नही आता अुसमे अितनी सारी ताकत आती कहासे है। कभी थकी हुअी नही दीखती।

* * *

आश्चर्य है कि तुम वहा तदुरुस्त नही रही। आशा है तुम अपनेको ताजे फलो और सलादसे वंचित नही रखती होगी। अपनेको परिश्रम करने योग्य स्थितिमे रखनेके लिअे वहा ये चीजे जरूरी है।

अपने आक्सफोर्डवाले चाचाके यहा जानेका तुम्हारा वर्णन दिलचस्प है। किसी न किसी कारण वह अण्डाकार अिटालियन चेहरा* मुझे बहुत आकर्षित करता है। असलिअे शिशुके तुम्हारे सुन्दर वर्णन पर मुझे आश्चर्य नही हुआ।

* * *

सस्नेह,

१६-८-'३४ बापू

दुबारा नही पढ़ा

२३५

लिखाया हुआ वर्धा,

(दुबारा नही पढ़ा) ७ सितम्बर, १९३४

चि० मीरा,

मुझे अिस सप्ताह तुम्हें लिखनेका प्रयत्न नही करना चाहिये। मेरे पास तुरन्त करनेका अितना काम पडा है कि मै तुम्हें लम्बा पत्र नहीं लिख सकता। कमसे कम महादेवने जरूर लिखा होगा। यह तो तुम्हे अितना ही बतानेको है कि मै बिलकुल अच्छा हू और लगभग पूरी गतिसे काम कर रहा हूं। मेरे बारेमे चिन्ताकी कोअी बात नही है।

* * *

---

* यहा 'अंडाकार अिटालियन चेहरे' से मतलब मेरी चाचीसे है। वे है तो अंग्रेज मगर अुनका चेहरा अैसा ही है।

मेरे सामने पार्लमेण्टरी बोर्ड और कार्यसमितिकी बैठकें हो रही हैं। . . . खान बन्धु यहां आये हुअे है और अुनके साथ बड़ा आनन्द आ रहा है। अुनके साथ जितना अधिक रहो, अुतना ही अुनके प्रति प्रेम बढ़ता है। वे कितने अच्छे, कितने सादे और साथ ही कितने तीव्रबुद्धि है। वे घुमाफिराकर बाते नही करते।

सस्नेह,

बापू

२३६

समुद्री तार

वर्धा २२ १४ (सितम्बर) १५-२०

मीराबहन, मार्फत कैलोफ, लंदन

अगर कमलानी आये तो अुसे अपने साथ लेती आना। हो सके तो अेंड्रूजके पहुंचने तक (२० अक्तूबर तक) ठहर जाओ।[१]

सस्नेह,

बापू

२३७

समुद्री तार

वर्धा, १३ २९ (सितम्बर) ११००

मीराबाअी, मार्फत अेलेग्जैण्डर वूडब्रूक सेलीओक बर्मिघम

परमात्मा तुम्हें मार्ग दिखाये। आशीर्वाद।[२]

बापू

---

१. अिसका अर्थ हुआ अेक महीने तक और ठहरना। मैंने अिसका अुपयोग अमरीका जानेमे किया। गोकि वहां मै दो ही सप्ताह तक रह सकी।

२. बापूको अिसी समय मेरे अमरीका जानेका निश्चय मालूम हुआ था।

गये हैं। बालने मेरा काम संभाल लिया है। यहा बहुतसे पुराने परिचित लोग हैं, जो मेरी जरूरते पहलेसे ही समझ लेते है। अिसलिअे तुम्हें मेरे लिअे कुछ भी चिन्ता करनेकी जरूरत नही है। मेरे मनमे जरा भी सन्देह नही कि तुम्हे अपने साथ न लाकर मैंने अच्छा किया। परन्तु यह आगेके लिअे कोअी अुदाहरण नही है। और हर सूरतमे अन्तिम निर्णय तो तुम्हारा ही रहेगा।

आशा है तुम्हे फलोके रूपमे जो चाहिये सो सब मिल जाता होगा। जिस किसी चीजकी जरूरत हो मंगवा लेनेमे सकोच न करना।

सस्नेह,

बोरसद, २२-५-'३५

बापू

२४१

चि० मीरा,

* * *

सिन्दीकी सफाअीका काम अेक दिन भी बन्द नही रहना चाहिये *। लेकिन साथ ही तुम्हें चुपचाप पहाड़ी तक्की सैर भी जरूर जारी रखनी चाहिये।

सरदारने मेरे लिअे बहुत हलका कार्यक्रम रखा है।

सस्नेह,

बोरसद, २६-५-'३५

बापू

---

* हमारे मगनवाडीमे बस जानेके बाद मैंने पासके खुले प्रदेशमे तडके ही सैरके लिअे जाना शुरू किया। अिससे मुझे रोज पासके अेक छोटेसे गांवमे होकर गुजरना पड़ता था, जो लगभग वर्धाका ही अेक भाग था और जिसे सिन्दी कहते थे। अिस गांवके निवासी, स्त्री-पुरुष दोनों, गावके नजदीकके रास्तेके दोनों तरफ टट्टी बैठते थे। सयोगवश मैंने बापूसे अिसका जिक्र कर दिया। वे तुरन्त बोले, "अिन लोगोंको सफाअी सिखाना हमारा धर्म है और वे न माने और आम रास्तोंको

२४२

चि० मीरा,

तुम्हारे दो बढिया वर्णनात्मक पत्र मिले। अुनसे पता चलता है कि आत्माभिव्यक्ति* के लिअे तुम्हे अिस तरह अकेले घूमनेकी कितनी जरूरत है। रोज नही तो अकसर तुम्हे ये सैर करनी चाहिये। डाकका समय हो रहा है और मै लिख रहा हू। मेरा मुख्य भोजन यहा दो पौड दूध, दो तोले नीम, स्थानीय आमोका बडा कटोरा भर रस और नीबू है। यहाका मौसम वहासे बेशक बहुत ठण्डा है। हम समुद्रसे सिर्फ १५ मील दूर है।

सस्नेह,

२७-५-'३५ बापू

अिस तरह काममे लेते रहे, तो हमे खुद रास्ते साफ कर देने चाहियें।" गांववालोने समझाने पर अेक न सुनी, अिसलिअे बापूने मुझसे कहा कि बालटी-फावडा सभालो और जो तुम्हारे साथ जानेको तैयार हो अुन स्वयसेवकोको ले कर सिन्दीके आसपास रोज सफाअी करने जाओ। मै दो-तीन मित्रोके साथ रोज जाती और पाखाना अुठाकर खेतमें अेक खाअीमे डाल देती। वह तीन-चार बालटियोसे कम न होता था। मगनवाड़ी आनेवाले सब यात्रियोको, जिनमे युरोपियन भी होते थे, बापू मेरे अिस प्रातःकालीन कार्यमे शरीक होनेको कहते और जहा तक मुझे याद है लगभग सब शरीक होते। ग्रामवासी अिसे विनोद समझकर मजा लेते और रोज गलिया खराब करते रहते।

* बचपनसे ही मुझे अेकान्त और प्रकृतिसे प्रेम रहा है। अिनके बिना मुझे कुछ न कुछ भूख रह ही जाती है। वर्धा पहला स्थान था जहां मुझे खुले प्रदेशमे अकेले घूमनेका मौका मिला।

२४३

चि० मीरा,

वहाकी ऋतुके तुम्हारे वर्णनकी तुलनामे बोरसद स्वर्ग मालूम होता है। सुबह-शाम सुहावनी ठण्ड पडती है। वर्धा तो दिनरात भट्टीकी तरह तपता होगा। कुछ भी हो, सब कुशल रहा तो हम लोग २ जूनको वहा पहुंच जायेंगे।

अमतुल सलामको अपने ही ढगसे विकास करने देना चाहिये। वह विलक्षण लडकी है — कुदरतकी मौज है। अगर वह दीर्घजीवी हुअी तो सभव है मानवजातिकी प्रथम श्रेणीकी सेविका बन जाय।

सस्नेह,

बोरसद, २९-५-'३५

बापू

२४४

[पिछले पत्र और अिस पत्रके बीचमे फिर अेक घटनापूर्ण काल बीत जाता है। कुछ समय तक मै मगनवाड़ीमे बापूकी सेवामे रही। बापूका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था और तेज रक्तचाप रहने लगा था। साथ ही मगनवाडीमे अनेक प्रकारके आश्रमवासियोकी भीड हो गअी थी। सिन्दी गावकी समस्या हल नही हो रही थी और बापूने अचानक घोषणा कर दी कि मेरा विचार बिलकुल अकेले सिन्दी जाकर रहनेका है और ग्रामवासी जो सहायता देंगे ले लूगा। अिस विचार पर, खास तौर पर बापूके स्वास्थ्यकी हालतको देखते हुअे, सब हक्के-बक्के रह गये। मैने बापूसे कहा कि आपके बजाय मै सिन्दी चली जाअू, तो आपको यह समझौता मंजूर होगा? बापू अनिच्छापूर्वक राजी हुअे। अेक छोटीसी अेक कोठरीवाली कुटिया बनाअी गअी और मै अुसमे रहने चली गअी। मुझे लगा कि सिन्दी कोअी गांव नही है, और

ग्रामजीवन सम्बन्धी हमारे अनुभव और प्रयोग दरअसल वहा नही किये जा सकते। अिसलिअे मैंने सुझाया कि ज्यो ही और कोअी सिन्दीमे रहनेको तैयार हो जायगा, मै किसी असली गावमे चली जाअूगी। नीचे लिखा पत्र मुझे सेगाव भेजा गया था। यही वह गाव था, जहा मै सिन्दीसे चली गअी थी।]

लिखाया हुआ

मगनवाडी
२९-११-'३५

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्रवाहकको जानेकी जल्दी है। तुम्हारा पत्र आते ही पढ़ा गया। पढते ही अुत्तर लिखाया जा रहा है। मगाअी हुअी चीजे कल जो आदमी कलका पत्र लेकर आयेगा अुसके साथ भेजी जायेंगी। गाय रखनेका विचार अच्छा है। वहा कोअी गाय न हो तो शायद मै यहासे अेक भेज सकू। वह तुम्हारे लिअे अच्छा साथी होगी और तुम्हे अुससे अच्छा काम मिल जायगा। तब तक जैसा दूध वहा मिले लेती रहो। वहा बकरिया भी है? हो तो तुम्हे कुछ बकरिया अुधार ले लेनी चाहिये। तुम्हें जितना घी लेना आवश्यक हो अुतना लेना चाहिये और मगनवाडीसे मंगाते रहना चाहिये। मुझे खुशी है कि तुम्हारा पहला अनुभव अितना सुखद रहा। यहा सब खैरियत है।

सस्नेह,

बापू

२४९

चि० मीरा,

तो तुम बीमार पड गअी।* आशा है जल्दी अच्छी हो जाओगी और अपना काम फिर करने लगोगी। पहाडियोंका अेकान्त-सेवन बेशक कर सकती हो। रक्तचापके बावजूद मै लगातार प्रगति कर

---

* मुझे फिर ज्वर आ गया था।

रहा हू। मरे खयालसे मौजूदा वृद्धिके कारणका मुझे पता लग गया है। लेकिन बुधवारको अधिक हाल मालूम होगा। चिन्ताकी कोअी बात नही है। मुझे विपुल व्यायाम और ठोस खुराककी अिजाजत है।

सस्नेह,

बापू

[जलवायु परिवर्तनके लिअे बापूको अहमदाबाद ले गये थे।]

२४६

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्रसे मेरी सारी चिन्ता मिट गअी। आशा है तुम पिछली भूलोकी चिन्ता न करके भविष्यकी आशा रखने और अुन्हे न दोहरानेका वचन पूरा करोगी। मुझे यकीन है कि अगर निर्णय करनेमे तुम कभी यह न सोचो कि दूसरे क्या कहेगे, तो तुम बिल्कुल ठीक निर्णय करोगी। अन्तर्यामीकी सलाह लोगी, तो वह तुम्हे हरगिज धोखा नही देगा। मेरी प्रगति बराबर जारी है। डॉक्टर कल आयेगे। अुनका मत तुम्हें मालूम हो जायगा।

सस्नेह,

अहमदाबाद, ८-२-'३६ बापू

२४७

[मेरे भीतर अेक जबरदस्त सघर्ष चल रहा था। मेरी सबसे बडी लालसा यह थी कि मै किसी गावमे बापूके साथ रहूं। साबरमतीके समयसे ही देहातमे पहुंचनेकी मेरी अिच्छा रही थी। लेकिन यही कशमकश चल रही थी कि देहातमे रहू या बापूके साथ रहू। अब मुझे आशा हो चली थी कि दोनो अिच्छाअे पूरी होनेका समय आ गया। परन्तु परिस्थिति बडी दुखद हो गअी। अगर सेगावमे रहनेका अर्थ यह हो कि मुझे सदा बापूसे अलग रहना पडे, तो मेरा स्वास्थ्य और ज्ञानतन्तु

अिसे बरदाश्त नही कर सकते थ। पहले ही अिस भारसे मेरी तदुरुस्ती गिर रही थी। अिस भाग्को और लोगोने मुझे यह कहकर बढा दिया कि अगर मै सेगावमे स्थायी तौर पर नही रहूगी, तो बापूका रक्तचाप वढ जायगा। जब बापूको पता चला कि मेरे ज्ञानतन्तु जवाब दे रहे है, तो अुन्होने कहा कि तुम सेगावमे नही रह सको तो मै खुद वहा चला जाअूगा। लेकिन जाअूगा अुन्ही शर्तो पर, जो मैने सिन्दीके लिअे सोची थी —— यानी अकेला रहूगा और किसी पुराने साथीको नही रखूगा। तुम किसी पासके गावमे जाना होगा। अिससे मेरा दिल लगभग टूट गया, लेकिन मैने किसी तरह काम चलाया। और जब बापूने सेगावमे आकर रहनेका आखिरी फैसला कर लिया, तो मै अपना दु ख अुनके लिअे कुटिया और गोशाला बनानेके सुखमे भूल गअी। अपने लिअे मैने अेक मील दूर बरोडा गावके पासकी पहाडी पर छोटीसी कुटिया बना ली और बापूके सेगावमे आकर रहने लगनेके अेक सप्ताहके भीतर मै पहाडी पर अपनी कुटियाके लिअे रवाना हो गअी। वहा मै अकेली रहती थी और मेरा टट्टू मेरा अेकमात्र साथी था। लेकिन दूसरे कार्यकर्त्ताओने सेगाव नही छोडा और बापू अकेले रहनेके अपने अुद्देश्यमे कभी सफल नही हुअे, अुलटे अुनकी कुटियामें अितनी ज्यादा भीड हो गअी कि कुछ समयके बाद स्वय बापूके लिअे कोअी जगह नही रही।]

चि० मीरा,

मै देखता हू कि तुम्हे सेगाव जानेमें डर लगता है। जी न चाहे तो न जाना। गीताका यह श्लोक जानती हो : 'निग्रह कि करिष्यति ?' बलात्कार करनेसे क्या लाभ ? यह अपने पर बलात्कार करना है। अेक हद तक दिलको रोकना धर्म है। जब प्रेरणा और अुल्लास न हो, तब वह बलात्कार हो जाता है। संयमसे जब तक बल मिलता हो, तब तक वह अच्छा ही है और लाजिमी है। जब आदमी हर प्रयत्नसे थक जाता है, तब विश्वास रखो कि वह बलात्कार है और अुससे वचना

चाहिये। तुम्हारे साथ खराबी यह है कि तुमने अपनी अिच्छाके विरुद्ध कुछ बाते करनेके लिअे अपने साथ जबरदस्ती की है। यह असत्य है। अिसलिअे अगर तुम्हे अैसा न लगता हो कि तुम्हे सेगाव जाना ही चाहिये और न जाओगी तो दुःख होगा, तो न जाना।

क्या यह बिलकुल स्पष्ट है? कान्ति और कनू बडी मेहनत और सावधानीसे मेरी सार-सभाल कर रहे है।

सस्नेह,

१३-२-'३६ बापू

२४८

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे खयालसे तुमने मेरा कथन सही तौर पर अुद्धृत नही किया। लेकिन अिससे तुम्हारे तर्क पर असर नही होता। मेरे कलके पत्रमे तुम्हारा अधिकाश तर्क पहले ही सोच लिया गया है और अुसका अुत्तर आ जाता है। मै नही समझता कि तुम्हे प्रायश्चित्तके तौर पर सेगाव जानेकी जरूरत है।* तुम्हे वहा गये बिना सुख न मालूम हो तो ही जाना चाहिये। जब तक मै मगनवाडीमे हू, तुम जितनी चाहो मेरी व्यक्तिगत सेवा कर सकती हो। सिर्फ बा जितना चाहे अुतना भाग अुसे लेने दिया जाय। जब मै सेगाव जाअू —— और जाना तो है ही —— अुस वक्त अगर तुम वहा न रहो, तो वर्तमान साथियोमे से कोअी भी मेरे साथ नही रह सकता। मुझे सेगांवमे नये मित्र और साथी बनाने पडेगे। तुम चाहो तो किसी और पडोसके गावमे बस सकती हो, ताकि मेरे नजदीक रहो। निकट भविष्यमे मेरा अिरादा बहुत सफर करनेका

---

* मै सेगावमे जमनालालजीके बगीचेमे अेक पुराने बैलोंके बाडेमे थोड़े दिनके लिअे ठहरी हुअी थी। जानेसे बापूका मतलब बस जानेसे था।

मार्गकी कठिनाअियोका भी पता चलता है। मेरा हृदय वही है। मै नही जानता, मेरे प्रयत्नका क्या परिणाम होगा।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

१४-३-'३६　　　　बापू

२५०

चि० मीरा,

तुम्हारा तीसरा पत्र पहुच गया। मुझे खुशी है कि तुम्हारे पास घोडा है। खर्चकी परवाह न करो। वे ठीक समझेगे अुस मदमें डाल देगे। तुम्हे हर काम धीमे-धीमे करना चाहिये और तेज धूप हो तब आराम लेना चाहिये। गरमीके दिनोमें सारा काम दस बजे सुबहसे पहले और ४ बजे शामके बाद हो। जितने फल ले रही हो अुससे अधिक लेने चाहिये। सिर पर ठण्डी पट्टी रखना जरूरी है। निरी गीली पट्टीसे मिट्टीमे ज्यादा देर तक ठण्डक रहती है।

मौसम बराबर गरम होता जा रहा है। अब तीसरे पहरके तीन बजनेवाले है और ओढनेको मेरे पास कुछ नहीं है। मै पखा सहन कर सकता हू।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

दिल्ली, १६-३-'३६　　　　बापू

२८१

[अब गरमीकी ऋतु आरभ हो गअी थी। अिन दिनो मै लौटकर बगीचेमे रहने लगी थी। कुछ वृक्षोकी छायामे ज्यादा रक्षाके लिअे कुछ चटाअिया लगा ली थी।]

चि० मीरा,

अिस बारका तुम्हारा पत्र आखे खोलनेवाला है। तुमने जमनालालजीके खेतके कुअेके बारेमे जो कुछ लिखा है, अुससे अशान्ति होती है।* परन्तु अिससे अितना ही मालूम होता है कि हमारे मार्गमे कितनी जबरदस्त कठिनाअिया है। तुम्हे अिन सबके बीचमे भी तदुरुस्त और शान्त रहना चाहिये, जैसे मै रहनेकी कोशिश कर रहा हू। कारण तुम कल्पना कर सकती हो कि मेरे लिअे यहाका काम भी बिलकुल आसान नही है। मुझे राजनैतिक और देहाती समझौते सम्बन्धी मामलोमे भी मुश्किल हो रही है।

* * *

सस्नेह,

दिल्ली, २०-३-'३६ बापू
४ बजे सुबह

२८२

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्रसे मुझे अनेक अर्थोमे अशान्ति हुअी। तुम अच्छी नही हो। अगर सेगावका जीवन तुम्हारे अनुकूल नही है, तो तुम्हे अुसे समय रहते छोड देना चाहिये, न कि बिहारकी तरह स्वास्थ्य बरबाद हो जाने पर। मुझे अपनी मर्यादाअे मालूम हो या न हो, तुम्हे तो बार-बार सावधान करनेकी जरूरत अवश्य है। तुम्हे जर्जरित नही हो

---

* सवर्ण हिन्दू ग्रामीणोको हरिजनोके कुअेको काममे लेने पर अेतराज था।

जाना चाहिये। और यह भी सभव है कि यह बीमारी भी मेरे वियोगके कारण हो, यद्यपि अिस बार पिछली मर्तबा जैसी पूर्व स्थिति नही है।

* * *

सस्नेह,

दिल्ली, २३-३-'३६ बापू

२९३

चि० मीरा,

तुम्हारे तमाम खत यहा यथाक्रम पहुच गये। ऋतु यहा भी अस्थिर रही है। आधी-मेह भी आये। आशा है कि बरसात शुरू होने तक मौसम स्थिर हो जायगा।

मैने तुम्हे जो तारीखे दी थी, वे कायम है। हम यहासे ७ तारीखको प्रयाण करके ८ ता० को प्रातःकाल लखनअू पहुचेगे।

आनन्दभवनमे मेरा वही कमरा है, आसपास वही सब चीजे है सिर्फ मोतीलालजी और कमला नही है — कितनी बडी कमी! बूढी माको ढाढस बंधाना लगभग असम्भव है। अुनका स्वास्थ्य नष्ट हो गया है। पर अुनकी बहादुरी कायम है।

कुछ भी हो जाय, तुम अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करो। मुझे बड़ी खुशी है कि सेजीला* तुम्हारे पास है। वह जरूर अेक देन सिद्ध होगा।

हा, तुम्हारे आजकलके जीवन पर मुझे अीर्ष्या है। मेरा शरीर शहरोमे मजा कर रहा है, मगर दिल देहातमें है।

सस्नेह,

अलाहाबाद, ५-४-'३६ बापू

---

* मेरा घोडा।

२५४

चि० मीरा,

*   *   *

सेगाव दिमागमे बसा हुआ है। जमनालालजीको आधा तो राजी कर लिया है। ×

यह जानकर कि सेजीलाको तुमने अेक वफादार और समझदार साथी पाया है मुझे बडी खुशी होती है। तुम्हारे रातके साहस मुझे डराते है।* मै जानता हू अिस तरह डरना बेजा है। हम सबका रक्षक भगवान है। परन्तु तुम्हारी तरफसे चिन्ता रहती है कि जो दुर्घटनाअे पहलेसे सोची जा सकती है, अुन सबसे बचना चाहिये। आशा है तुम मुझे मिलोगी तब तदुरुस्त और प्रसन्न होगी।

*   *   *

सस्नेह,

१३-४-'३६ बापू

आज हम सब अुपवास कर रहे हैं। मैंने अपना अुपवास अभी तोड़ा है।

२५५

चि० मीरा,

जमनालालजीने मकान बनानेका काम शुरू करनेका पूरा अधिकार दे दिया है। + तुम कल शामको या २३ ता० को सुबह आ जाओ, तो सब बाते समझा सकता हू। २३ ता० की शामको मैं नागपुर चला जाअूगा और वहासे २६ तारीखको सायंकाल या अधिकसे अधिक २७ तारीखको प्रात लौट आअूगा।

शेष मिलने पर।

सस्नेह,

२१-४-'३६ बापू

× बापूके वहा जानेके बारेमे।

* अंधेरेमे लम्बे देहाती रास्तोसे घर आना।

+ सेगावमे बापूके लिअे।

२५६

[बापूकी योजना यह थी कि वे वृक्षोंकी छायामें मेरे झोंपडे पर आकर कुछ दिन ठहरें, ताकि अपनी कुटियाका ठीक मौका पसन्द कर सकें और मुझे ब्यौरेवार सूचना दे सकें कि वह कैसे बनाओ जाय।]

चि० मीरा,

सभव है अुबालनेका बर्तन पत्रवाहकके साथ आ जाय। नही तो मेरे साथ आयेगा। बा बहुत अच्छी नही है। सेगावमें बकरिया है ?* हों तो मै अपने साथ नही लाना चाहता।

सस्नेह,

२७-४-'३६ बापू

२५७

चि० मीरा,

आवश्यक वस्तुअें साथ लेता आअूगा। कार्यसमितिकी बैठक + अभी तक हो रही है और जब तक सदस्य यहा है मैं नही आ सकता। वहां मुझे १० दिन अबाधित रूपमे किसी सूरतमें नही मिलेंगे। मुझे यहां रविवारको रहना ही पडेगा और अगर डॉ० आम्बेडकर × आये तो १ और २ मअीको भी रहना होगा।

सस्नेह,

२८-४-'३६ बापू

---

* अेक बकरी लाकर रखी गअी थी। अुसे मेरी गाय और घोडेके साथ साथ पेडोंके नीचे बाधा जाता था।

+ राष्ट्रीय कांग्रेसकी कार्यसमिति।

× डॉ० आम्बेडकर आये अवश्य, परन्तु वे बापूसे पेडोंकी छायामें सेगांवमें मिले।

२५८

चि० मीरा,

अीश्वरने चाहा तो कल आ रहा हू। पत्र भेजा जा रहा है। शेष मिलने पर। आशा है ७ बजे प्रात कालके करीब तुमसे आ मिलूगा।

सस्नेह,

वर्धा, २९-४-'३६

बापू

२५९

चि० मीरा,

तुम्हारा मधुर पत्र मिला। मै ६ बजे शामके बाद ग्राड ट्रक अेक्सप्रेससे रवाना होअूगा। गावमे होकर जानेवाली सड़कके बारेमे मेरी जमनालालजीसे लम्बी बात हुअी थी। वे अिस पर विचार कर रहे है। तुम पूरी तरह तंदुरुस्त और प्रसन्नचित्त रहो। मेरी झोपडी अधूरी रह जाय तो भी बूतेसे ज्यादा मेहनत न करो।* झुझलाना भी नही।

आशा है कूटनेके औजार तुम्हे मिल गये होंगे।

सस्नेह,

८-५-'३६

बापू

---

* कुटिया और गोशालाके मकानोका काम पूरे जोरके साथ हो रहा था। सिर्फ छः सप्ताहमे कुटिया, गोशाला, सडक और पहाडी पर मेरी झोपडी पूरी होनी थी। बलवन्तसिह, मुन्नालालभाअी और मैं खुद सुबहसे रात तक पूरी तेजीसे काम करते थे। अितने पर भी हमारा सारा काम पूरा होनेसे पहले ही बरसात शुरू हो गअी। परन्तु बापू जब १६ जूनको मूसलाधार मेहमें वहा रहनेके लिअे आ पहुंचे, तब तक घर रहने लायक बन गया था।

२६०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। हा, यहा बहुत बढिया मौसम है। मेरा व्यक्तिगत प्रेम तो यह चाहता है कि तुम मेरे साथ अिस मनोहर पहाडीकी शान्ति और अेकान्तका आनन्द लो, मेरा अवैयक्तिक प्रेम यह कहता है कि तुम जहा हो वही अच्छी हो, क्योकि वह कर्तव्य-स्थान है। . . .

डॉ० अन्सारीके देहान्तसे मुझे बडा आघात पहुचा। अभी तक अुसका असर मिटा नही है। कितनी ही बातोमे मुझे अुनकी अुपस्थितिकी आवश्यकता अनुभव होती है।

मुझे खुशी है कि झोपडेके काममे तुम्हारी अच्छी प्रगति हो रही है। सडकके बारेमे मैने तुम्हारा कथन समझ लिया। जो अुत्तम हो वही करो। अिन मामलोमे तुम्हारे निर्णय पर मुझे अटूट श्रद्धा है।

बलवन्तसिह और मुन्नालाल तुम पर किसी भी प्रकारसे भार न होने चाहिये। अुनके नामके पत्र साथमें है।

आशा है जब तक यह पत्र तुम्हारे पास पहुचेगा, वरगोडाकी जमीन ले ली जायगी। *

सस्नेह,

नन्दी पहाडी, १४-५-'३६

बापू

२६१

चि० मीरा,

आशा है नन्दीसे भेजे गये मेरे पत्र तुम्हे मिल गये होगे।

हा, डॉ० अन्सारीकी मृत्यु मेरे लिअे अेक भारी व्यक्तिगत हानि है। जन्म और मृत्यु दोनो ही महान रहस्य है। यदि मृत्यु दूसरे जीवनकी पूर्व स्थिति नही है, तो बीचका समय अेक निर्दय

* मेरी कुटियाके लिअे पहाड़ी परकी जमीन।

अपहाप है। हमे यह कला सीखनी चाहिये कि मृत्यु किसीकी और कभी भी हो, अुस पर हम हरगिज रज न करे। मेरे खयालमे अैसा तभी होगा, जब हम सचमुच अपनी मृत्युके प्रति अुदासीन होना सीखेगे, और यह अुदासीनता तब आयेगी, जब हमे हर क्षण यह भान होगा कि हमे जो काम सौपा गया है अुसे हम कर रहे है। लेकिन यह कार्य हमे कैसे मालूम होगा? वह औश्वरकी अिच्छाको जाननेसे होगा। औश्वरकी अिच्छाका पता कैसे चलेगा? वह प्रार्थना और सदाचरणसे चलेगा। असलमे प्रार्थनाका अर्थ ही सदाचरण होना चाहिये। हम रामायणसे पहले हर रोज प्रार्थनामे अेक गुजराती भजन गाते है, जिसकी टेक यह है "हरिने भजता हजी कोअीनी लाज जती नथी जाणी रे।" प्रार्थनाका अर्थ औश्वरके साथ अेक हो जाना है।

खुशी है कि मकान बनवानेमे प्रगति हो रही है। कमसे कम फिलहाल वरोडाकी जमीन और मकान बनानेके लिअे ३०० रुपये काफी होने चाहिये। मै चाहता हू कि तुम बाडको तग कर लो। अुसके लिअे मजदूरी देनेकी आवश्यकता न होनी चाहिये। तुम्हारी देखरेखमे बलवन्तसिह और मुन्नालालको बाड लगा लेनी चाहिये। सामान पर तो लगभग कुछ भी खर्च न होना चाहिये। बाड और थोडीसी छाया ही मुख्य चीज है। . . .

सस्नेह,

नन्दी पहाड़ी, १८-५-'३६ बापू

२६२

[मै मलेरियाके सख्त दौरेमे पडी हुअी थी। मेरा तापमान १०५ तक पहुच गया था और मौसमकी गरमी ११८ तक चली गअी थी। मै अब भी पेडोंकी छायामे रहती थी। अब बलवन्तसिह और मुन्नालाल-भाअी मेरे साथ थे। जब लोग मुझे वर्धा ले जाना चाहते थे, तब मैने जोरदार विरोध किया। क्योकि मुझे पेडो, घोडे और गायके साथ कही ज्यादा घरोपा महसूस होता था और किसी शहरी बगलेमे अुतना नही होता था।]

चि० मीरा,

मेरा शरीर यहां है, परन्तु हृदय तुम्हारे पास है। मुझे तुम्हारी तरफसे खबर मिलनेकी आशा थी, परन्तु मिली राधाकृष्णकी ओरसे। अुसके पत्रमें तुम्हें वर्धा ले आनेका अिरादा जाहिर होता है। आशा है अिसकी जरूरत न होगी। अवश्य ही जल्दी आराम होनेके लिअे जो भी करना आवश्यक समझा जाय वह करना ही चाहिये। तुम्हें मकान बनानेके कार्यक्रमसे या और किसी बातसे दिल ही दिलमें घुटना न चाहिये। अच्छे स्वास्थ्यके बिना तुम किसी कार्यक्रमका पालन नहीं कर सकती। आशा है कल अच्छी खबर आयेगी।

सस्नेह,

नन्दी पहाडी, २२-५-'३६ बापू

हम ३१ तारीखको यहांसे अुतरकर बंगलोर पहुंचेंगे।

२६३

चि० मीरा,

* * *

मैं चाहूंगा कि तुम पार्टीशन बनवानेमें खर्च न करो। तुम्हें याद होगा छोटेलालने मेरे स्नानघरके लिअे क्या व्यवस्था की थी। जरूरत हुअी तो मैं वैसा ही कामचलाअू अिन्तजाम कर लूंगा। अभी तो मुझे झोंपडेकी लागतसे डर लग रहा है। आशा है दीवानजी मेरी नियत की हुअी मर्यादाके भीतर ही खर्च कर रहे होंगे। कमसे कम कुर्सी, चार दीवारें और अैसी छत जिसमें से पानी न चूअे और खुला बरामदा और चारों तरफ बाडकी ही अनिवार्य रूपसे आवश्यकता है। लेकिन तुम तो मुझे अेक रसोअीघर, स्नानघर और गोशाला भी दे रही हो। बाकी बातोंको मेरे पहुंचने तक रहने दो।

सस्नेह,

२४-५-'३६ बापू

नीम
आम
नीम
उत्तर
आम
आम
अशोक
नया रास्ता
पीपल (बापू के हाथों लगाया जाने वाला)
नीम
नीम
गो शाला
ओलिन्द
ओलिन्द
ओलिन्द
ओलिन्द
मकान
नीम
नीम
नीम
दरवाजा
दरवाजा
बेर
नीम
नीम
नीम
इमली
नीम
बबूल

२६४
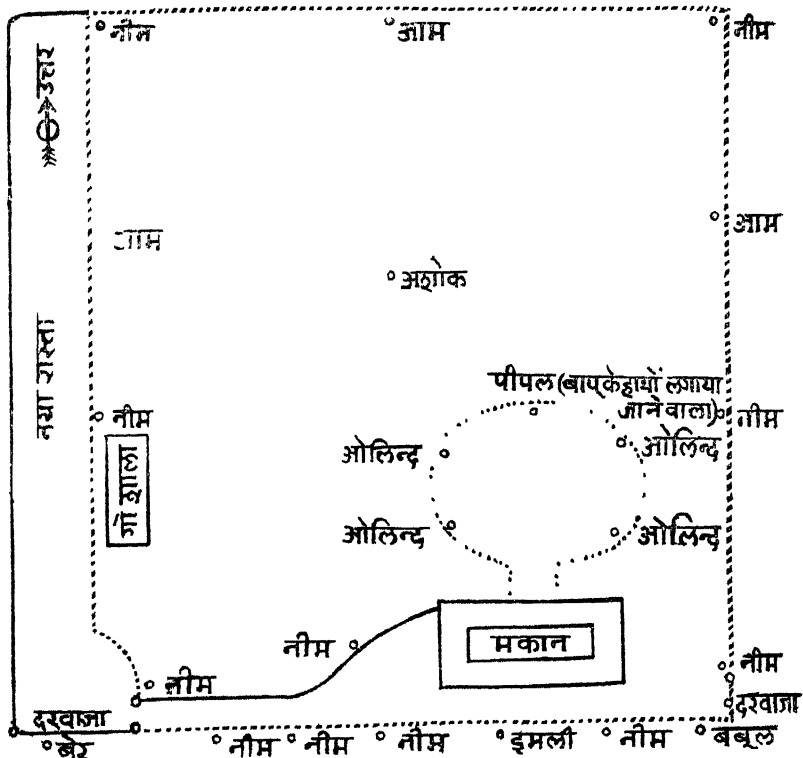
चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्र २३ और २४ तारीखके आज पहुचे।

बेशक अगर तुग सेगावमे अधिक सुखी और अच्छी रहती हो तो वहा चली जाओ। तुम्हे आराम और मनचाहा भोजन मिलना ही चाहिये। नकशे* लौटा रहा हू। शुद्धिया नही की गअी है। तुमने अिस चीजको सोचकर ठीक बनाया है और यही रहेगी।

आज और अधिक नही, क्योकि डाक जा रही है और अुसे पकडना है।

सस्नेह,

२६-५-'३६ बापू

२६५

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्रोका अुत्तर कल मैंने जल्दी-जल्दीमे दिया था। मैंने बाडवाले चौकके दोनो नकशे भी लौटा दिये थे। मैंने तुम्हारे नकशोको बारीकीसे नही देखा, क्योकि मै तुम्हारे निर्णयको अपनेसे श्रेष्ठ समझता हू। अिन मामलोके लिअे तुम्हारी शक्ति स्वाभाविक है।

मेरे खयालसे मै तुम्हे पहले ही बता चुका हू कि महादेवके झोंपड़ेका अभी विचार करनेकी जरूरत नही हे। पहले मै यह देख लेना चाहता हू कि मेरे पैर टिकते है या नही। अुसके बाद और अिमारतो पर खर्च करनेका विचार करूगा। धीरे-धीरे चलनेमे समझदारी है। साफ दिनोका अनुभव कहता है कि महादेव आदि मगनवाडीमें

---

* मैंने मकानो, प्रार्थना-भूमि और चौकके लिअे दो अलग-अलग तरहके नकशे बनाये थे। जो नकशा पसन्द किया गया, अुसकी हूबहू नकल पृष्ठ ३११ पर दी गअी है।

रहे, तो भी सम्पर्क कायम रखा जा सकता है। यह सिर्फ संभलकर क़दम अुठानेके समर्थनमे कहा है।

*   *   *

तुमने जिस तूफानका वर्णन किया है, अुससे विदित होता है कि वर्षाऋतुमे देहातमे क्या हाल हो सकता है। शायद सेगावमें तो फिर भी स्थिति बेहतर अिसलिअे रही कि पवनारकी तरह वह अूची जगह पर नही है। हरेक स्थितिमे सुविधाअे और असुविधाअे दोनो होती है। अिसलिअे जो वस्तुअे स्वयं अस्थिर है, अुनके बारेमे लम्बी-चौडी योजनाअे न बनाना ही बेहतर है।*

सस्नेह,

२७-५-'३६ बापू

२६६

चि० मीरा,

तो तुम सेगाव पहुच गअी। कोअी हर्ज नही। अगर जरूरी आराम वही मिले, तो तुम्हारी मनचाही जगह पर ही मिलेगे। अगर वर्षा हो जाय तो अवश्य ही मकान नही बन सकते। अिसलिअे जितने भी मजदूर काममे आ सकते है, अुन्हे दीवारो और छतके काममे लगा दो। अगर ये तैयार हो और दीवारे सूख गअी हो, तो बाकीका काम बरसातके बाद भी पूरा हो सकता है। लेकिन अिस सारे प्रयत्नके बावजूद भी अगर हमारे लौटने तक अिमारत रहनेके लिअे तैयार नही हो, तो मुझे चिन्ता नही होगी। तुम्हारे कमजोर शरीर पर भार नही पड़ना चाहिये।

सस्नेह,

२९-५-'३६ बापू

---

* जब मै बापूकी मिट्टीकी कुटिया बना रही थी, तब सयोगसे पवनारमे जमनालालजीके लिअे पक्का अीटोंका बंगला तैयार हो रहा था। अुपरोक्त सख्त तूफानमे मिट्टीकी कुटिया दृढ खड़ी रही और अीटोका बगला टूटकर गिर पड़ा।

२६७

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

तुम्हारा २८ ता० का पत्र मिला।

अलबत्ता तुम पाखानेका खर्च कर सकती हो। साबरमतीकी तरह अुसके साथ ही अेक स्नानघर भी खड़ा कर लेना अच्छा होगा।*

अगर नाममात्रकी पहाडी पर तुम्हारे झोपडेसे वही काम चल जाय, तो मै नही चाहूंगा कि तुम समुद्र तट पर जाओ।

आशा है १४ को नही तो सोमवार १५ जूनको हम ज़रूर वर्धा पहुंच जायगे। मेरी कोशिश यही होगी कि वहा किसी बोलनेके दिन पहुचू। वह रविवार ही हो सकता है। लेकिन अैसा न कर सका तो सोमवारको वहां पहुचनेमे भी मुझे सन्तोष होगा।

तुमने अब तक हरिलालके अिस्लाम धर्म स्वीकार कर लेनेके समाचार सुन लिये होगे। अगर अिसके पीछे अुसका कोअी स्वार्थपूर्ण अुद्देश्य न हो, तो अिस कार्रवाअीके खिलाफ मुझे कुछ नही कहना है। परन्तु मुझे बहुत अन्देशा है कि अिस कदमकी तहमे और कोअी हेतु नही है। देखे अब क्या होता है।

कल हम यहासे अुतरकर बंगलोर शहर चले जायंगे।

सस्नेह,

नंदी पहाड़ी, ३०-५-'३६　　　　बापू

---

* मेरी कुटियाके लिअे।

२६८

लिखाया हुआ

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

गुजराती पत्र हरिलालके पराक्रमोसे भरे हैं।

अगर तुम स्थानीय शिमले* मे रहोगी, तो वहा जानेको स्थानीय मार्ग भी होना चाहिये। और मुझे आकर्षित करनेको दोनो तापमानोमे अन्तर भी होना चाहिये!

सस्नेह,

बगलोर, १-६-'३६　　　　बापू

२६९

चि० मीरा,

*　　　　*　　　　*

मुझे वर्धासे पाखानेकी तिपाअी, पेशाबका बर्तन या चौकी लानेका विचार पसन्द नही है। कमोडके बजाय अेक तिपाअीके बीचमे छेद करके आधा पीपा या बाल्टी या अैसी ही और कोअी चीज रख दी जाय। पेशाबके लिअे कोअी बोतल या देहाती धातुका बर्तन काममे ले सकते हैं और चौकीके लिअे कोअी सेगांवकी बनाअी हुअी बिलकुल सस्ती और कामचलाअू चीज हो सकती है। अिन चीजोके बारेमे जल्दी करनेकी जरूरत नही है। मैं जो चाहता हूं वह अगर तुम्हारी समझमे अच्छी तरह न आया हो, तो मेरे लौटने तक ठहर सकती हो। लकड़ीकी खटिया लाअी जा सकती है और लोटा भी। तिपाअी वहा खडी कर ली जायगी। अेक गायकी और जरूरत हो सकती है। अिस बारेमे छोटेलालकी सलाह ले लेना।

*　　　　*　　　　*

---

* 'नाम मात्रकी पहाडी' पर बनी मेरी झोंपडी।

यह पत्र तुम्हारे पास पहुचेगा, अुस बीच लीलावतीके वहा पहुचनेकी आशा रख सकती हो। साथका पत्र अुसके लिअे है।

सस्नेह,

६-६-'३६ बापू

२७०

चि० मीरा,

तुम्हारा ३ तारीखका पत्र अभी मिला। हा, सेजीलाका अपना घर होना चाहिये, ताकि बरामदा तुम्हारे लिअे स्वतत्र रहे। अधिक विचार करने पर मुझे लगता है कि कमोड और पॉट युरोपियन अतिथियोके लिअे मगनवाडीसे ले आना बुद्धिमानी होगी। अिसलिअे यह मेरी बताअी हुअी योजनाके अतिरिक्त है।

मोरोको पकड लो तो कोअी हर्ज नही। मगर मुझे अुनकी आदतोंकी कोअी जानकारी नही है।

सस्नेह,

बापू

२७१

चि० मीरा,

यहांसे शायद यह मेरा आखिरी पत्र होगा। आशा है कि अिस महीनेकी १४ तारीखको हम वर्धा पहुच जायगे।

वहा गाड़ीवाले मजेमे मालूम होते है। अेक ही काममें ५० गाड़ियोका अेक साथ लगे रहना सेगावके लिअे अवश्य नअी बात होगी। आशा है वे सब वहीकी होगी। तुम्हें तंदुरुस्त और प्रसन्न देखनेकी अुम्मीद रखता हूं।

स्पष्ट है कि बलवन्तसिह और मुन्नालाल तुम्हारे लिअे औश्वरकी देन साबित हुअे। जब मुन्नालालका प्रस्ताव माननेको मेरा जी हुआ और बलवन्तसिहको मैंने सुझाया कि तुम्हारा सतत सत्संग प्राप्त करे, तब मुझे यह कल्पना नहीं थी कि तुम अुन्हें लगभग अैसे पाओगी जिनके बिना

काम ही नही चल सकता। खैर, तुम्हारी बीमारी और आराम होनेके दिनोमे अुनके तुम्हारे साथ होनेसे मुझे बडा सन्तोष रहा।

मद्रासके टोकरेमे मेब थे। तुम्हें मिले? सब जनाम्मलके भेजे हुअे थे।

सस्नेह,

बगलोर, ९-६-'३६ बापू

२७२

[१६ ता० के प्रात काल ही की बात है। मूसलाधार पानी बरस रहा था और हम तीनोको (बलवन्तसिह, मुन्नालालभाअी और मुझको) लगभग विश्वास था कि जब तक मेह कम न हो जायगा बापू नही आयेंगे। चूकि नवनिर्मित मिट्टीकी कुटिया अभी तक बहुत नम थी, अिसलिअे हम कोयलोकी अगीठी सुलगाकर अुस कोनेमे रखनेमे लग गये, जहा बापू आ कर बैठनेवाले थे। हम यह कर ही रहे थे कि अचानक बापू स्वय आ पहुचे। अुनका रोम रोम भीग गया था।]

चि० मीरा,

हम यहा रातके ८ बजे पहुंचे। गाडी लेट थी। तुम्हारा पत्र मिल गया। मेरा मन वहा है। मगर मेरे शरीरको 'हरिजन'के खातिर सोमवार तक यही रहना पडेगा। अगर मौसम अच्छा रहा तो आशा है मै मगलवारको प्रात. ७॥ बजेके करीब तुमसे आ मिलूगा। दूध रास्तेमे ले लूगा। पता नही कोअी मेरे साथ होगा या नही और होगा तो कौन होगा। देख लेगे। चिन्ता न करना। मै अच्छी तरह समझता हू कि जब तक सारी योजना निश्चित रूप न ले ले, तब तक तुम्हे सेगावमे रहना पडेगा। किसी भी बातकी फिक्र न करना। अगर फाटक पर मुझे ठीक रास्ता बतानेको कोअी मिल जाय तो अच्छा हो। गोविन्द या दशरथ* कोअी भी हो (अुस दूसरे भाअीका नाम यही है न?)।

---

* दो हरिजन ग्रामवासी।

लेकिन अगर कोअी न आ मके तो चिन्ता नही। कुछ फल अिम पत्रके साथ पहुचेगे। . .

सस्नेह,

१४-६-'३६ बापू

२७३

[अब बापू अपनी सेगावकी कुटियामे थे और मै अपनी पहाडी-वाली कुटियामे थी।]

चि० मीरा,

यह निरा प्रेमपत्र है। सिवाय अिसके कुछ नही कहना है कि मै तुम्हे आराम होनेके लिअे प्रार्थना कर रहा हू। अिस नये अनुभवसे यही पाठ सीखना है कि तुम कोअी प्रयोग न करो।*

२७४

चि० मीरा,

अगर दस्त साफ नही होता, तो अण्डीका तेल या समुद्री नमक क्यो न लिया जाय? और कोअी रेचक औषधि चाहिये तो भेज सकता हू। यहासे कोअी साग भेजू?

सस्नेह,

३०-६-'३६ बापू

२७५

चि० मीरा,

तुम्हारी रिपोर्ट अच्छी है। यहा वर्षा हो रही है। मै ५ तारीखको आनेकी कोशिश करूगा। असली तारीख ६ है।

सस्नेह,

१-७-'३६ बापू

---

* जहा तक मुझे याद है, मैने पवार नामक अेक जगली पौधा खाकर देखा था। अिसका साग बनानेकी ग्रामवासियोंने सिफारिश की थी।

२७६

चि० मीरा,

कोओी नही समझता कि पत्रवाहक क्या सन्देशे लाया है। लीलावती अितनी लापरवाह है कि समझती नही। मै बोल नही सकता।* मुन्नालाल अधमरा-सा है। बलवन्तसिहका भी यही हाल होता दीखता है। अैसी परिस्थितिमे तुम्हें जो चाहिये सो लिख दिया करो तो वेहतर है। आशा तो थी कि यहा आश्रम बनेगा, मगर यह अेक अस्तव्यस्त गृहस्थी जैसी बन गओी है। मेरा भाग्य ही अैसा है! मुझे अपना आश्रम अपने भीतर ही खोजना पडेगा।

सस्नेह,

२०-७-'३६ बापू

२७७

चि० मीरा,

आशा है प्रगति जारी रहेगी।× अगर कोओी गडबड हो जाय, तो मुझे तुरन्त सूचना देना।

सस्नेह,

१०-८-'३६ बापू

---

* मौनवार होनेके कारण।

× मुझे बुखार आ रहा था।

२७८

चि० मीरा,

भोजनकी घण्टी बज गअी है। तुम आज बाहर न निकलना। मैं आ रहा हू। तुम कल सेगाव आ जाओगी।*

सस्नेह,

१६-९-'३६ बापू

२७९

[बाबू शिवप्रसाद गुप्तकी प्रार्थना पर बापू अुनके बनवाये हुअे भारतमाता मन्दिरका अुद्घाटन करने बनारस गये थे। मैं सेगावमें अच्छी हो रही थी।]

चि० मीरा,

अिससे पहले तुम्हे नही लिख सका। तुम दोनोके बारेमें अभी-अभी मुझे मुन्नालालसे अच्छे समाचार मिले हैं। आशा है तुम्हारा मन और शरीर दोनो अच्छे होगे। यह खुशीकी बात है कि हमारी कमजोरिया चेतावनीके रूपमें प्रगट होती है। अिसलिअे अन्तिम दिवसकी घटनासे तुम्हे हर्ष ही होना चाहिये।

सस्नेह,

काशी, २६-१०-'३६ बापू

---

* बार-बार बुखार आनेसे मेरी तदुरुस्ती बहुत बिगड़ गअी थी और बापू मुझे अेक बैलगाडीमे सेगाव ले आये थे। मेरी तन्दुरुस्ती सुधरने लगी, मगर थोडे ही दिनमें नाणावटी, जो वहां थे, मोतीजरेमें फस गये और बलवन्तसिहको मलेरियाका बहुत बुरा दौरा हुआ। मैने अुनकी सेवामे सहायता देना शुरू किया और मैं मोतीजरेमें पड गअी। यह काल, यद्यपि अुसमे दो सप्ताह तक तेज बुखार, सख्त सिर-दर्द और अुन्निन्द्रा रही, मेरी स्मृतिमे जीवनका अेक अत्यन्त विलक्षण

२८०

चि० मीरा,

प्रवासमे मेरा यह दूसरा पत्र है और वह यही बतानेके लिअे है कि तुम मेरे मनमे सदा बसी रहती हो। आशा है दोनोकी प्रगति जारी होगी।

दिल्लीमे मै सारा दिन चुपचाप काम करता रहा। बा हमारे साथ है। मनु देवदासके साथ रह गअी है। अभी तो दिल्लीमे बहुत अच्छी ठण्ड है। देवदास पहलेसे बहुत अच्छा है।

सस्नेह,

रेलमे, २८-१०-'३६ बापू

कल राजकोटमे होंगे। ३० ता० को अहमदाबादमे।

२८१

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्र मेरे सामने है। अगर तुम्हे अपने जीवनमें अहिंसाको व्यक्त करना है, तो तुम्हे गरमसे गरम मिजाजको भी निभा लेना होगा। वह गुस्सा खुद तुम पर निकले या तुम्हारे सरक्षितो या प्रिय मित्रो पर निकले, अिससे कोअी फर्क नही पडता। . . .

सस्नेह,

तिलकनगर, २६-१२-'३६ बापू

और सौभाग्यपूर्ण काल रहेगा। आश्रममे कोअी स्त्री नही थी और बापूकी किसीको बुलानेकी अिच्छा नही थी। अिसलिअे अुन्होने खुद मेरी सेवा करना शुरू कर दिया। आरभमे मैंने विरोध किया, परन्तु ज्वरने जल्द ही मुझे अशक्त बना दिया, और मैंने अुस असीम सार-संभाल और प्रेमके आगे आत्मसमर्पण कर दिया, जो बापू मुझ पर दिनरात बरसा रहे थे। अुस सेवाके कारण कोअी गड़बड नही हुअी और मैं १४ वे दिन बुखारसे मुक्त हो गअी।

२८२

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्र कल रातको कन्याकुमारी पर – पृथ्वीके छोर पर – मिले।* और तुम्हारे, शान्ताके तथा कुमारप्पाके बारेमे मेरी तार द्वारा की गअी पूछताछके अुत्तरमे तारसे जवाब मिला। आशा है तुमने अपना पैर सिविल सर्जनको दिखा दिया होगा। मुझे अुसकी चिन्ता है। तुम्हारे वहा कडाकेकी सर्दी है, हम यहा जरा-जरा सी बातमे पसीनेसे तर हो जाते है। आशा है तुम्हारे मनमे शान्ति होगी। . . .

सस्नेह,

कन्याकुमारी, १५-१-'३७

बापू

२८३

चि० मीरा,

तुम्हारे दो लम्बे पत्र मिले। तुमने अुनमे जो लिखा है सो मैंने समझ लिया। मै नही जानता कि देहातके कामको जितना समय मै दे रहा हूं, अुससे ज्यादा दे सकूगा। मेरे जीवनको अुसकी आश्चर्यजनक मर्यादाओके साथ स्वीकार करना पडेगा। यह काफी है कि मै गावमे रहता हू, और गांवकी दृष्टिसे विचार करता हू। काम तो मुझे वैसा ही करना होगा जैसा मौका मिल जाय।

हरिजन रसोअीघरमे काम करे, अिसमे मुझे कोअी अेतराज नही है। अलबत्ता, अुनके प्रति बर्ताव धीरे-धीरे वैसा ही बनाना पड़ेगा, जैसा अेक ही परिवारवालोके प्रति होता है। मुझे सन्तोष

---

* बापू मन्दिरप्रवेश प्रवास पर दक्षिण भारतमें थे।

है कि अैसा बर्ताव वहा विद्यमान है। अुस पर ज्यादा जोर देनेकी ही आवश्यकता है।

*   *   *

सस्नेह,

२०-१-'३७ बापू

२८४

चि० मीरा,

अभी तो यहा मौसम बहुत बढिया है। मार्चमे और अप्रैलके अेक भागमे यहा सदा अैसा ही रहता है।

आशा है तुम विजयाका हृदय जीत लोगी। मै अिससे अच्छी लडकी तुम्हे कभी नही दे सकूगा और तुम्हे कण्डू और दूसरे लड़कोंको* लाडले नही बनाना चाहिये। दुर्भाग्यसे मेरा और तुम्हारा है, वैसा अुनका भी नाजुक स्वभाव हो गया, तो अुनका जीवन बरबाद हो जायगा।

सस्नेह,

हरिजन निवास, किंग्सवे, बापू
दिल्ली, १५-३-'३७

२८५

चि० मीरा,

आशा है तुम्हे डलहौजी× पहुचनेमे दिक्कत नही हुअी होगी और तुम्हे अलग-अलग स्टेशनों पर लोग मिल गये होगे। मै कितना चाहता

---

* गावके हरिजन लडके।

× मैं डलहौजी गअी थी। स्वास्थ्य बिगड़ जानेके कारण बापूने मुझे वहां भेज दिया था। मै वहा डॉ० और श्रीमती धर्मवीरके यहां ठहरी थी। सुभाषबाबू भी अुन दिनों वही ठहरे हुअे थे।

हूं तुम किसी तरह पूर्ण स्वस्थ होकर और शरीरको फिरसे पूरी तरह ताजा बनाकर लौटो। जल्दी अच्छी होनेकी चिन्तामें अपने पर बहुत भार न डाल लेना।

आज अिससे अधिक नही।

सस्नेह,

सेगाव (वर्धा),
१३-६-'३७

बापू

२८६

चि० मीरा,

मैं कल्पना करता हूं कि तुम अभी-अभी डल्हौजी पहुंची होगी या पहुचनेवाली होगी। सुभाषबाबूने रास्ते, खर्च और समयके बारेमे काफी सूचनाअें दे दी हैं। वह पत्र सम्पूर्ण है। रायजादा हंसराजका तार है कि वे तुम्हे ठहराना चाहते हैं, लेकिन मैंने तार दे दिया है कि तुम सुभाषबाबूके साथ रहोगी। अुनके साथ तुम्हें डॉक्टरी सहायता भी अच्छी मिलेगी। आज तुम्हारी तरफसे तार मिलनेकी आशा रखूगा।

गरमी यहा अब भी बहुत सता रही है। मैंने रोटी बिलकुल छोड़ दी है।

सस्नेह,

१५-६-'३७

बापू

२८७

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र अभी आया है। आशा है पहाड़की हवासे तुम ठीक हो जाओगी। यह लो डॉ० धर्मवीरके नामका पत्र। सुभाषबाबूको मेरा आशिष कहना। अुन्हें अलग पत्र लिखनेको मेरे पास समय नही है।

तुम्हे यह जानकर दुःख होगा कि कल बरसात शुरू हो गअी, परन्तु अुसने नालेके पुलके पासका मिट्टीका काम नष्ट कर दिया[1] और दोनो तरफके घर लगभग बरबाद हो गये। बरसात पाच मिनट और रहती, तो घर बह जाते। अब मै सोच रहा हू कि क्या किया जाय।

खान साहब और मेहरताज[2] कल आये।

और बातोके लिअे अब वक्त नही है।

सस्नेह,

सेगाव, वर्धा, बापू
१९-६-'३७

२८८

चि० मीरा,

तुम्हारा डलहौजीका दूसरा पत्र अभी मिला। मैने यह आशा नही रखी थी कि डलहौजीमे कोअी जादू हो जायगा। परन्तु धीरज रखोगी तो वहा पूरा आराम हो जायगा। डॉक्टरकी राय दूसरी हो, तो अपनी बातका आग्रह न करो। अलबत्ता, व्रतोंकी बात दूसरी है। परन्तु मास और शराबके परहेजके सिवाय और कोअी व्रत तो है ही नही।

यहा अुल्लेखनीय वर्षा नही है। ऋतु जरा ठण्डी हो गअी है। बाके २४ तारीख तक लौट आनेकी आशा है। . . .

बलवन्तसिंहको मकान बनानेका खब्त है। गोशाला पूरी हो चुकी, परन्तु बडा चौक समय, जगह और रुपया खा रहा है। देखे क्या होता है।

सस्नेह,

सेगाव, वर्धा, बापू
२१-६-'३७

---

१. सेगांवमें अेक नाले पर छोटासा पुल बनाया गया था। अिससे अूपरके मेहके पानीका बहाव रुक गया और नालेके किनारेके कच्चे झोपड़े लगभग बह गये।

२. खान अब्दुल गफ्फारखाकी लडकी।

२८९

चि० मीरा,

तुम्हारी चित्रकारी* अच्छी है। यह अभ्याम जरूर जारी रखो। यह तुम्हारे लिअे अच्छा मनोरजन रहेगा।

डॉ० धर्मवीरने मुझे फिर चेतावनी दी है कि तुम्हे अपनी रफ्तार धीमी रखनी चाहिये। अुन्हे विश्वास है कि व तुम्हे पूर्ण स्वस्थ कर देगे।

*   *   *

ठीक तौर पर तो वर्षा कल आरम्भ हुअी। मौसम अब बिलकुल ठडा हो गया है। हवा तेज चल रही है।

*   *   *

बलवन्तसिह और पारनेरकर गायें खरीदने गये है। तीन थोडे दिनमे सूख जायगी।

मेरी बकरी बहुत थोड़ा दूध दे रही है। अिसलिअे हमे अेक बकरी भी जुटानी पडेगी। अिस प्रकार परिवार चारो ओरसे बढ़ रहा है।

सेगाव, वर्धा,   सस्नेह,
२९–६–'३७   बापू

२९०

चि० मीरा,

अिन दिनो मेरे पत्र न मिलनेका कारण तुम समझती होगी। तुम्हारी चित्रकारी मुझे बहुत पसन्द है। आशा है तुम मजेमे होगी।

.... कण्डू और ४–५ और लड़के + वरोड़ासे कातने आते है। अुन्हे नालवाडीवाले अपने हिसाबसे दाम दे रहे है। वे सुखी है। अिस

---

* मै अपने पत्रोंके साथ छोटे-छोटे रेखाचित्र भी बापूको भेजा करती थी।

\+ जिन देहाती लडकोको मै तालीम दे रही थी।

प्रकार तुम देख लो कि तुम्हारा बोया हुआ बीज फूट निकला है और शायद काफी फल देगा। आज और अधिक नही।

सेगाव, सस्नेह,
५–७–'३७ बापू

२९१

चि० मीरा,

अिन दिनो मै तुम्हे नही लिख सका हू। तुम्हारे पत्र और रेखाचित्र नियमपूर्वक आ रहे है। मैने अुन्हे नन्दलालबाबूके पास रायके लिअे भेजा है। आने पर तुम्हे मालूम हो जायगी।

* * *

मुझे खुशी है कि डॉक्टरने तुम्हे सादा भोजन पर रहनेकी अिजाजत दे दी। अखरोट वगैरा तुम्हारे लिअे नही है।

सेगांव, वर्धा, सस्नेह,
१०–७–'३७ बापू

२९२

चि० मीरा,

तुम्हारी लम्बी चिट्ठी मिली। यहा आनेके बारेमें तुम्हे चिन्ता नही करनी चाहिये। तुम्हे मलेरिया और दूसरी बीमारीके लिअे अभेद्य बन जाना चाहिये। मूसलाधार बरसात हो रही है। अलबत्ता, मै तो देहातके लिअे तरह-तरहकी बाते सोच ही रहा हू। परन्तु तुम्हें भी सोच लेना चाहिये।

* * *

सस्नेह,
१२–७–'३७ बापू

२९३

चि० मीरा,

तुम्हारा अशातिप्रद पत्र मिला। अगर तुम्हारा जी वहा रहनेको नही करता हो, तो तुम्हे २४ तारीख तक भी वहा रहनेकी आवश्यकता नही है। अगर तुम वहा सुखी नही रह सकती और अिसलिअे ठहरती हो कि यह बाहरसे लादा हुआ कर्तव्य है, तो तुम्हारा वहा रहना निश्चित रूपमे तुम्हारे लिअे हानिकारक है। तुमने बार-बार अैसा करके देख लिया और तुम हर बार असफल रही हो। अिसलिअे अिसकी कोअी परवाह नही कि नतीजा क्या होता है, परन्तु तुम्हे अपनी अिच्छानुसार ही करना चाहिये। अपनी मर्जीके अनुसार चलनेसे गलतियां होती हो, तो भी तुम गलती करके ही सीखोगी। . . . जहां तक मेरा सबन्ध है, अिस पत्रके अुत्तरमे चली आओ। मुझे दु ख नही होगा। बल्कि मुझे यह समझकर सुख होगा कि तुम अबाधित स्वतत्रता काममें लोगी*।

सेगाव, वर्धा,
१–८–'३७

सस्नेह,

बापू

२९४

कलकत्ता,
२२–३–'३८

चि० मीरा,

मूर्खता करके मै तो दावात लाया नही और कनूमे तुम्हारे जितना ही विचार और सावधानी नही है। अिसलिअे मैं तुम्हे पेंसिलका लिखा पत्र ही दे सकता हू।

* पुराना सघर्ष मुझ पर फिर सवार हो रहा था और मै सेवाग्राम लौट आअी।
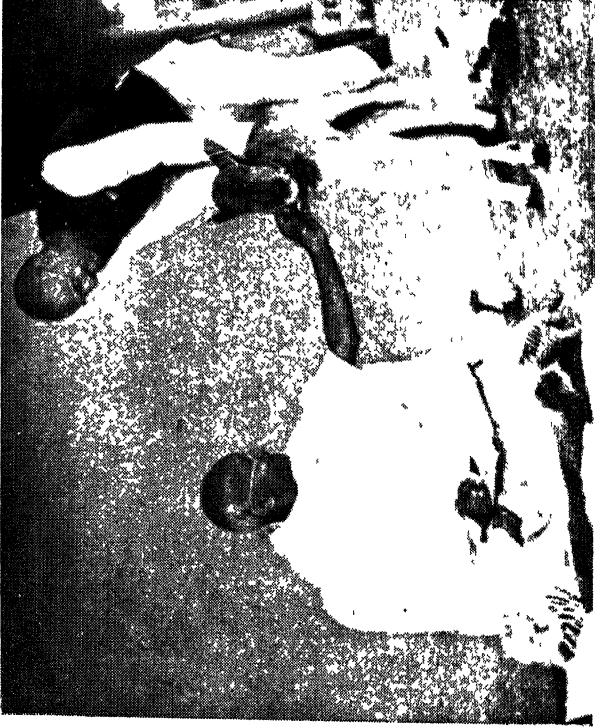
बलवन्तसिंह परिवारमें बढ़नेवाले नये सदस्यकी बापूसे
पहचान करा रहे हैं ।

पृ ठ ३२६

नहानेका बर्तन* बहुत अुपयोगी रहा। तुम्हारी सावधानी न होती तो कनूकी लापरवाहीके कारण तो वह मेरे साथ नही आया होता। अुसका अभी निर्माण हो रहा है।

मेरी तबीयत सचमुच असाधारण रूपमे अच्छी है। अेक भले आदमीके प्रेमके कारण मैने अेक प्रयोगकी जोखम अुठाअी है। अिससे रक्तचापमे गडबड हो गअी, मगर मुझे अुम्मीद है कि वह आज काबूमे आ जायगा। सुशीला चाहेगी तो अुस प्रयोगका वर्णन करेगी।

मुझे भय है कि सेगांवसे बाहर रहनेकी मियाद — शायद अेक सप्ताह बढ जायगी। मुझे कार्य-समितिकी बैठकके लिअे कलकत्ता वापस आना पडेगा। तुम्हे अशात हरगिज न होना चाहिये। तुम अपनेको अीश्वरकी अिच्छा पर छोड दो। जब तुम्हें मेरे साथ लाना अुपयोगी होगा तुम जरूर आओगी और अगर मै कही महीनोके लिअे जाअू तब तो तुम बेशक मेरे साथ रहोगी। आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। सलादकी पत्तियोका क्या हाल है?

सस्नेह,

बापू

२९८

चि० मीरा,

मुझे दुःख है कि मेरे लौटनेमे बेजा विलम्ब हो रहा है। विलम्ब तुम्हारे लिअे जरूर भयकर होगा। लेकिन तुम्हे अपना आधार मिल गया होगा, तो तुम घबराओगी नही। अखबारोमे या और जरियोंसे तुम्हें कुछ भी जान पड़े, विश्वास रखो कि मै बिलकुल अच्छा हूं। मेरे

---

* नहानेका अेक टीनका बरतन सफरमें जब और कोअी बरतन मिलनेकी संभावना नही होती तब साथ ले जाया जाता था। गरम पानीमे पडे रहना रक्तचापके अिलाजका अेक अग था।

दिलकी गहराओमे यह भाव जमा हुआ है कि मुझे आग जिस परिश्रममे से गुजरना है, अुसे मै बरदाश्त कर लूगा। लोग अुदारता-पूर्वक मुझे बचाते है। अगर मुझे यह मालूम हुआ कि तुम मेरे लौटनेमे देर होने या मेरे स्वास्थ्यके बारेमे चिन्ता नही कर रही हो तो मुझे सुख होगा। आखिर तो हम सब बातोमे ओश्वरके हाथमे है।

कलकत्ता, सस्नेह,
४–४–'३८
बापू

२९६

चि० मीरा,

आज अुपवासका दिन है, असलिअे मुझे तुम सबका खयाल आता है। मैने फिलहाल निश्चय किया है कि मेरा काम पूरा नही हुआ, तो भी मै यहासे रवाना होनेमे १२ तारीखसे ज्यादा देर नही करूगा। असिसे पहले भी रवाना हो सकता हू। आशा रखता हूं कि वहा पहुचनेमे १६ तारीखसे ज्यादा विलम्ब नही होगा। यह भी बहुत लम्बा समय है, परन्तु मै पूरी तरह लाचार हो गया हू। सेगावसे अेक दिन भी बाहर बीतता है तो वह व्यर्थ जाता है। परन्तु वह वहां है और मै यहा हू। भगवान जो चाहेगा वही होगा। . . .

* * *

सस्नेह,
६–४–'३८
बापू

२९७

चि० मीरा,

तुम्हारे बहनोओीका पत्र बहुत बढ़िया है। स्पष्ट है कि तुम्हारी बहन अेक बहुत श्रेष्ठ स्त्री थी — अनोखा नमूना थी। अैसी बहनके चले जाने पर तुम्हारे दु:खको मै समझ सकता हू। परन्तु अैसे वियोग हमारी श्रद्धाकी परीक्षा लेते है। जब तक हमारा यह दृढ विश्वास नही होगा कि भले आदमियोके लिअे मृत्यु अेक बेहतर

हालतमे जाना है और बुरोके लिअे लाभदायक बचाव है, तब तक हम मौतके रहस्य पर सन्तोष नही कर सकेंगे।

पेशावर, सस्नेह,
८–५–'३८
बापू

२९८

चि० मीरा,

यहा सूखा ही सूखा और वहा गीला ही गीला है। अिस तरह बरसातका समय बढना अेक नाशकारी वस्तु है। परन्तु हमे शिकायत नही करना चाहिये। यह औश्वरकी कृति है। बात अितनी ही है कि हम अुसे जानते नही है। शिकायत करना भी अेक विषय ही है। वह तब तक नष्ट नही होगा, जब तक हमे औश्वरके प्रत्यक्ष दर्शन नही हो जाते।

* * *

दिल्ली, सस्नेह,
२४–९–'३८
बापू

२९९

तार (नअी दिल्लीसे ३–१०–१९३८ को)
मीरा, मगनवाडी, वर्धा
कल रवाना हो रहा हूं। अुत्मन्जयी पत्र लिखो।

बापू

३००

चि० मीरा

मैंने तुम सबकी बात पहले ही सोच ली है। कारण मै युरोपके समुद्रमे कूद पडा हू। तुम लेखोके बारेमे अपनी प्रतिक्रियासे मुझे सूचित करना, क्योकि मैंने दूसरा भी लिखा है।

हम अभी अुत्मन्जयी पहुचे है।

अुत्मन्जयी, सस्नेह,
९–१०–'३८
बापू

३०१

चि० मीरा,

डा० बे०[1] के नामके पत्रका तुम्हारा मसौदा बिलकुल ठीक है। मै अेक शब्द भी नही बदल सकता। खाली जगह मैंने भर दी है।

बा अब भी दिल्लीमे बीमार है। हा, दे०[2] कहता है कि वह ठीक हो रही है।

महादेवको शिमला ठहरनेसे जरूर लाभ होगा। काम न होनेसे और मुझसे जुदा हो जानेसे वे अुदास तो रहेगे।

हम अेक दो दिनमे चल पडेगे।

आशा है बलवन्तसिह अपनी गायोके बीच सुखी होगा। बीमार बछड़ेका क्या हाल है?

अुत्मन्जयी,
१३–१०–'३८

सस्नेह,

बापू

३०२

चि० मीरा,

तुम्हारे सब पत्र मिल गये। यद्यपि डॉ० बेनेस लगभग निर्वासित कर दिये गये, तो भी तुम्हारा अुनके नामका पत्र गया न हो तो जाना चाहिये। अगर अुनमे यह वृत्ति आ जाय, तो निर्वासनसे कोअी हर्ज नही।

---

१. डॉ० बेनेस — जेकोस्लावाकियाको अुस समय हिटलर हड़प रहा था।

२. देवदास।

यहा मौसम बहुत बढिया है। तुम्हारे वहा असाधारण वर्षा हो रही है। यही हाल बम्बअीका हुआ है। मेरा अनुमान है कि फसल नष्ट हो गयी होगी।

* * *

पेशावर, सस्नेह,
१५–१०–'३८ बापू

३०३

चि० मीरा,

सब कुशल रहा तो हम महादेव सहित ११ तारीखको पहुच जायगे। अिन बीमारियोने मुझे तुम्हारे पास पहुंचनेको अधीर बना दिया है।

डॉ० बेनेसके नाम तुम्हारा दूसरा पत्र बिलकुल अच्छा था।

२–११–'३८ सस्नेह,

बापू

३०४

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

आशा है तुम्हें मेरा कलका पत्र मिला होगा। यह अिसलिअे लिख रहा हू कि तुम्हारे चले जाने पर * सब तुम्हारी गैरहाजिरी महसूस करते है। तुम्हारा कमरा जरूरतसे ज्यादा भर गया है। महादेव कमसे कम अभी तो कही नही जा रहे है। रक्तचाप १६०/९८ है।

सेंगाव, सस्नेह,
२६–११–३८ बापू

* मैं अुत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्तके लिअे रवाना हो गअी थी।

३०५

चि० मीरा,

पिछले तीन दिनसे, जहा तक लिखनेका सम्बन्ध है, मैंने तुम्हारी अुपेक्षा की है। काम अितना रहा कि तुम्हें लिख ही न सका। अिसलिअे यह पत्र प्रात.कालकी प्रार्थनाके पहले लिख रहा हूं। परन्तु तुम्हे लिख न सकू तो भी यहा काफी चीजे है जो रोज तुम्हारी याद दिलाती है।

पता नही तुम्हारे शरीर, मन और आत्माका क्या हाल है? तुम्हारे पत्रकी तीव्र प्रतीक्षा कर रहा हू।

मुझे शारदासे कहना पडेगा कि यहाके समाचार तुम्हे लिख दे।

सस्नेह,

५–१२–'३८ बापू

आखिर तुम्हारा पत्र पेशावरसे आ गया। मै बिलकुल अच्छा हू। रक्तचाप ठीक है। यहां सर्दी शुरू हो गयी है।

३०६

सेगाव, वर्धा,
२७-१२-'३८

चि० मीरा,

तुम्हारी रोजकी डाक अेक अैसी घटना है, जिसकी मै तीव्र प्रतीक्षा करता रहता,हू। मेरा हृदय और आत्मा तुम्हारे साथ है। आत्मा तुम्हारे चारो ओर मंडरा रही है। तुम्हें हार नही माननी चाहिये।... तुम्हे अपना स्वास्थ्य कायम रखना ही चाहिये और वही रहकर रखना चाहिये। वहीसे मतलब सीमाप्रान्तसे है। मै तुम्हारी मौतकी जोखम अुठानेको तैयार हू, परन्तु यह नही चाहूगा कि तुम जिन्दा

रहनेको सगाव लौट आओ।* तुम पेशावरमे बिलकुल ठीक हो जाओगी। अुत्मञ्जयीमें तबीयत ठीक न रहे, तो तुम सप्ताहके अन्तिम दिन पेशावरमे बिता सकती हो।

खैर, देख लो कि मेरा यह सुझाव तुम्हे पसन्द आता है या नही कि तुम्हे वहासे करके या मरके हटना है। अवश्य ही मै मार्चमे वहा रहूंगा। शायद मार्चके मध्यसे पहले अैसा न हो, क्योकि काग्रेसका अधिवेशन १० मार्चसे पहले नही होगा।......

सस्नेह,

बापू

३०७

सेगाव, वर्धा,
२९-१२-'३८

चि० मीरा,

... क्या मैंने तुम्हे खा० सा० + से कह देनेको लिखा था कि अगर गवर्नर अुन्हे बुलाये तो अुन्हे अिनकार न कर देना चाहिये? शायद तुम्हे भी बुलाया जाय। मुझे खुशी है कि अब तुम्हारे शिष्य काफी नियमित रूपमें आते हैं। यह अेक बडी बात की जा रही है। ×

* * *

सस्नेह,

बापू

---

* मै अपनी सारी ताकत लगाकर वही करनेकी कोशिश कर रही थी, जिसकी मै जानती थी कि बापू मुझसे आशा रखते होंगे। परन्तु जिन्दा रहनेके लिअे कभी सेगाव न लौटने सम्बन्धी बापूके शब्द, जिनका असलमे अर्थ यह था कि मै लौटकर कभी बापूके पास न रहूं, मुझे खाये डालते थे।

+ खान अब्दुल गफ्फारखा।

× मै खुदाअी खिदमतगारोको धुनना और कातना सिखा रही थी।

३०८

चि० मीरा,

तुम्हारे सारे पत्र, सक्षिप्त हो या लम्बे, कलात्मक होते है। .. अगर धीरज रखोगी तो तुम्हे पठानके लिअे आदर पैदा होगा। वह बहुत बढिया आदमी होता है—अेक बार अुसे भरोसा हो जाय तो खुले दिलसे काम लेता है।

मेरी तंदुरुस्तीकी तुम्हे चिन्ता करनेकी आवश्यकता नही है। जितनी सावधानी रख सकता हू, अुतनी रख रहा हू। जितना आराम संभव है ले रहा हू। रक्तचाप काबूमें है। मुझे डर है कि अगर मैं वनवासी न बन जाअू और समस्त बाह्य प्रवृत्तिया न छोड दू, तो वह जरूर घटता बढता रहेगा। लेकिन यह तो गलत होगा। मुझे अैसी कला खोज निकालनी पडेगी, जिससे मैं अन्त तक दीर्घजीवी होकर भी पूरा काम करता रहूं। युवावस्थामे अपनी बहुतसी जिन्दगी व्यर्थ गवानेके बाद मै पूरी तरह तो वह कला कभी नही सीख सकूगा। अीश्वर मेरे शेष जीवनमे जो कुछ प्रदान करता है, असके लिअे हमें आभारी होना पडेगा।

सस्नेह,

बारडोली, २०-१-'३९

बापू

३०९

मेगांव, वर्धा

२-२-'३९

चि० मीरा,

मैने कअी दिन तक तुम्हारी अपेक्षा की है, परन्तु सुशीलाको हिदायत है कि तुम्हें रोज लिखती रहे। मुझे शरीर-श्रमसे तो पूरा

आराम लेना पडता है, परन्तु मानसिक परिश्रमसे भी जहा तक हो सके विश्राम लेना चाहिये। चिन्ता न करना। अपने काममे डूबी रहो।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

बापू

३१०

सेगांव, वर्धा
३-२-'३९

चि० मीरा,

तुम्हारा पेशावरका पत्र समाचारोसे भरा है। तुम अब बीच खेतमे हो। तुम्हे हर सूरतसे अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करनी ही चाहिये। पैरोको अच्छी तरह ढंककर रखो। जिस खुराककी तुम्हे जरूरत हो, अुसका आग्रह रखो। अुसमे अति न करो। अपने बूतेसे बाहर भी न जाओ। फिर सब ठीक हो जायगा।

मेरी कोअी चिन्ता न करो। जब तक अीश्वरको मेरी जरूरत है, वह मुझे पृथ्वी पर रखेगा। मैं यहा होअू या और कही, दोनो ठीक है। हमारी नही, अुसकी अिच्छा पूरी होवे।

सस्नेह,

बापू

३११

चि० मीरा,

तुम्हारे सब पत्र अच्छे और कलापूर्ण है। मुलाकातका तुम्हारा वर्णन चित्रवत् है। हमें आशा रखनी चाहिये कि अिसका फल निकलेगा।

आशा है रुपया तुम्हे समय पर मिल गया होगा।

मै यथाशक्ति जल्दी आनेका प्रयत्न करूंगा।

बाकी सुशीला लिखेगी।

सस्नेह,

१३-२-'३९ (लिफाफा)　　　　बापू

३१२

विरमगांव
२७-२-'३९

चि० मीरा,

हम लगभग २ बजकर ५० मिनट पर सुबह राजकोट पहुचेंगे। गाड़ी जा रही है अिसलिअे राम राम।

सस्नेह,

बापू

३१३

तार (राजकोटसे २७-२-'३९ को)

मीराबहन, मार्फत बादशाहखान, चरसड्डा

सफर अच्छी तरह बरदाश्त किया । बातचीत शुरू हो गअी।

सस्नेह,

बापू

३१४

तार (राजकोटसे ३-३-'३९ को)

मीराबाअी, मार्फत बादशाहखान, चरसड्डा

प्रार्थना और अुत्सवके साथ अुपवास शुरू हुआ।* लम्बा होनेकी सभावना है। तुम्हे चिन्ता न करके कार्य जारी रखना चाहिये।

सस्नेह,

बापू

३१५

त-र (राजकोटसे ४-३-१९३९)

मीराबाअी, मार्फत ब्रादशाहखान, चरसड्डा तहसील

तबीयत अच्छी है। चिन्ता न करो। खानसाहबको सूचित कर दो।

बापू

---

* राजकोटके राजा द्वारा प्रजाको दिया हुआ पवित्र वचन भग कर देनेके कारण।

३१६

तार (राजकोटसे ७-३-१९३९को)

मीराबहन, मार्फत बादशाहखान, चरसड्डा

अीश्वरकी कृपासे अुपवास टूट गया।* डॉक्टर साहब और बादशाहखानको सूचित कर दो।

प्यारेलाल

३१७

चि० मीरा,

आशा है तुमने अुपवासको वीरतापूर्वक सहन किया होगा। अिससे मुझे पहलेके अुपवासोंसे अधिक लाभ हुआ है। मै बिलकुल सुखी हूं। शक्ति भी आ रही है। अभी तो अिससे अधिक नही।

सस्नेह,

राजकोट, ८-३-'३९

बापू

३१८

चि० मीरा,

दिनोदिन शक्ति आती जा रही है। अिसलिअे कोअी चिन्ता न होनी चाहिये। १५ ता० को दिल्ली पहुचूगा। पता नही कब तक वहा ठहरना पड़ेगा। यह भी सभावना है कि मुझे राजकोट वापस आना पडे। राजकोटका मामला ठीक न हो जाय, तब तक मुझे और किसी बातका विचार नही करना चाहिये।

सस्नेह,

११-३-'३९

बापू

---

* वाअिसरॉयने राजाकी स्वीकृतिसे यह सुझाव रखा था कि भारतके तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश सर मॉरिस ग्वायरसे पंच-फैसला करा लिया जाय। बापूने अिसे मंजूर कर लिया था।

३१९

कलकत्तेकी गाडीमे
२५-४-'३९

चि० मीरा,

अच्छा तो मै कुअेसे निकल कर खाओीमे गिर रहा हू।* मेरी कैसी परीक्षा हो रही है? तुमने मेरा राजकोटका वक्तव्य देखा होगा। अुससे तुम्हे मेरी मानसिक स्थितिकी झलक मिलेगी। जिस बम्बअी, जिससे बचनेकी मै कोशिश किया करता था, वहा रहना ताजी हवामे सास लेने जैसा था।

मै अगूरके रस और ग्लूकोज पर हू। अिसीसे मुझे बुखार नही आता और तबीयतमे गडबडी पैदा नही होती। पता नही मुझे कब तक फलाहार जारी रखना पड़ेगा।

तुम्हारा लम्बा पत्र बड़ा दिलचस्प है। तुम प्रगति कर रही हो। स्वास्थ्यकी रक्षा कर सकोगी तो कठिनाअियो पर विजय प्राप्त कर लोगी।

* * *

सस्नेह,

बापू

३२०

चि० मीरा,

आशा है तुम्हे मेरा पत्र या मेरे पत्र (मै भूल रहा हूं) मिल गये होंगे। खानसाहब यहां है और ७ तारीख तक रहेंगे। मै बनारस होता हुआ ८ तारीखको राजकोटके लिअे प्रस्थान करूंगा।

---

* बंगाल आर्डिनेंसके मातहत जो राजनैतिक कैदी जेलमें डाल दिये गये थे, अुनके बारेमें सधिवार्ता करनेके लिअे बापू फजलुल हक मंत्रिमंडलसे मिलने कलकत्ता जा रहे थे।

रास्तेमे मालवीयजीसे मिलनेके लिअे रात भर बनारस ठहरूगा। पता नही राजकोटमे कितने दिन ठहरना पड़ेगा।

खानसाहबने मुझे बताया कि तुम खुश हो और अपना काम कर रही हो।

यहा सारा गावका काम या देहाती वातावरण नही है। मोटरे और शहरी सहूलियते बहुत है। ये चीजे खटकती है। तुम्हे यह जानकर आश्चर्य होगा कि अिस छावनीमे मच्छर नही पाये जाते। अिसका कारण मनुष्यका प्रयत्न नही, परन्तु प्रकृतिका प्रबन्ध है।

वृन्दावन, चम्पारन, सस्नेह,
४-५-'३९ बापू

३२१

चि० मीरा,

आशातीत विलम्बके बाद तुम्हारा पत्र आज पहुचा। लेकिन मुझे फिक्र नही थी। यहा मेरे लिअे काम बहुत है। गरमी तुम्हारी शत्रु है। बदबू और भीडसे कठिनाअी और बढ जाती है। तुम्हारे तारसे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि तुम हजारामें खैरियतसे हो। आशा है वहा अधिक ठण्ड या कम गरमी है। मुझे अुम्मीद है कि मै ६ तारीखको बम्बअीसे सीमाप्रान्तके लिअे निकल जाअूगा। परन्तु सब कुछ अीश्वरके हाथ है।

सस्नेह,

राजकोट, २९-५-'३९ बापू

३२२

तार (राजकोटसे ता० २९-५-१९३९)
मीराबाअी, मार्फत मंगलसेन बैकर्स, अबोटाबाद

आशा है बम्बअीसे ६ जूनको रवाना हो जाअूंगा।

बापू

३२३

तार (बम्बअीसे ता० ६-६-१९३९)
मीराबहन, मार्फत पोस्टमास्टर, मनसेहरा

फिर अिस महीनेके अन्त तक रोक लिया गया।

बापू

३२४

[बापूके सीमाप्रान्त आनेमे बहुत देर होनेसे मेरे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा और अन्तमे मै सेवाग्राम लौट आअी। मै जानती थी बापू चाहते है कि मै स्वतत्र रूपमे काम करू, अिसलिअे मै साहस बटोरकर बिहार चली गअी। अिस बीचमे बापूकी सीमाप्रान्त यात्रा हुअी जो बहुत अरसेसे मुल्तवी हो रही थी और अिससे मेरे दिलका दु.ख और भी तीव्र हो गया।]

तार (अबोटाबादसे ता० ११-७-१९३९)
मीराबहन, मार्फत खादीभण्डार, मधुबनी

अगर स्वास्थ्य अच्छा रहता हो, तो तुम वही रह सकती हो।

बापू

३२५

चि० मीरा,

तुम्हारी समाचारोसे भरी पुस्तिका* मिली। बेशक बिहारी प्रेमी जीव है। अगर तुम तंदुरुस्त रह सको, तो मै तुम्हे अुनके पाससे हटाअूगा नही। जब तुम स्वस्थ न हो तब अपनेको यह धोखा न दो कि तुम अच्छी हो। अपनेको ध्यानसे देखती रहो और जो काम तुम्हारे सामने आ जाय अुसे करती रहो।

---

* लम्बी चिट्ठी।

राय बनानेमे जल्दबाजी न करो। तुम पूरी सामग्रीके बिना परिणाम निकाल लेती हो।

२५ तारीखको हम काश्मीरके लिअे रवाना हो रहे हैं और वहा अधिकसे अधिक ७ दिन ठहरेंगे।

सस्नेह,

अबोटाबाद, १७-७-'३९

बापू

३२६

[मैं सेवाग्राममे बिहार लौट आअी थी और बादमे पजाब चली गअी थी।]

सेगाव,
वर्धा, (सी० पी०)

चि० मीरा,

अिन दिनो तुम्हारा खयाल बराबर आता रहा। यह पत्र यह बतानेको लिख रहा हू कि मेरी आखोसे परे होनेके कारण तुम मेरे दिलसे दूर नही हो। मुझे तुम्हारी गैरहाजिरी खलती है। आशा है समय घाव भरनेका काम कर रहा है। पता नही पडित* आये या नही। तुम्हे मुझे नियमपूर्वक लिखते रहना चाहिये।

हम यहांसे ज्यादा सस्ती गाड़ीसे १५ तारीखको रवाना होगे। अुसी दिन शान्तिनिकेतन चले जायगे और १९ तारीखको लौटकर मलिकदाकी गाडी पकडेगे।

सस्नेह,

९-२-'४०

बापू

* पडित जगतराम।

३२७

सेवाग्राम, वर्धा
१२-३-'४०

चि० मीरा,

तुम्हारा दूसरा पत्र मिल गया। . . . तुम्हे आज्ञाभग नही करना है। अभी तक किसीके लिअे सविनयभग नही है। जब अुसकी घोषणा कर दी जायगी, तब भी रचनात्मक कार्यमे लगे हुअे लोगो पर अुसका कोअी असर नही पडेगा। तुम तो अिसीमे लगी हुअी हो। तुम मेरी आज्ञाकी पहलेसे क्यो कल्पना कर रही हो? पिछली बार तुम राजनैतिक काममे लगी हुअी थी। अिस बार अुसमे नही हो। सत्याग्रही दमनके लिअे तैयार तो हमेशा रहता है, परन्तु अुसकी राह नही देखता। वह अपने विरोधीकी नियत पर अिलजाम नही लगाता। यहासे बीचमे रुकावट आ गअी।

सस्नेह,

बापू

३२८

[अिस समय मै पालमपुर (कागडा) मे थी। मै ओयल आश्रममें तीन मास रह चुकी थी और कच्चे झोपड़े बनानेकी कलाका अधिक अनुभव ले चुकी थी। आश्रमवासी बहुत खर्च करके पक्के अीटके मकान बना रहे थे। अुन्हे करके दिखानेके लिअे मैने खुद दो-तीन ग्रामीणो और अेक बढअीकी मददसे अेक छोटीसी कुटिया १८ रुपयेमें बना ली। फिर मैने देहातका चक्कर लगाया और ७ रुपयेमे अेक गाय और बछडा खरीदा। अुन्हे मै अपने बरामदेके कोनेमे बाध देती थी। ये आखिरी सस्ते दिन थे!]

दिल्लीमें बापूके साथके मेरे अन्तिम दिनोंमें ।

[बापू अेक शरणार्थी कैम्पका मुआइना करनेके लिअे बिड़ला–भवनसे बाहर निकल रहे है ।]

पृष्ठ ३९३

सेवाग्राम, वर्धा
१८-५-'४०

चि० मीरा,

मुझे आश्चर्य हो रहा था कि अितने दिन तुम्हारा कोअी पत्र क्यो नही आया। हफ्तेभरसे जरा भी ज्यादा होना मेरे लिअे बहुत अधिक देर होगी। यद्यपि तुम्हारे वर्णनात्मक पत्र अच्छे लगते है (वे तुम्हारी विशेषता है), फिर भी जब तुम्हारे पास समय न हो तब अेक पोस्ट-कार्ड ही काफी होगा।

क्या मै यह समझ लू कि तुमने ओरल सदाके लिअे छोड़ दिया? छोड दिया हो तो मै कुछ खयाल नही करूंगा। मै यह चाहता हू कि तुम अपनेको स्वतत्र अनुभव करो और सुखी रहो।

तुम्हारा अपने नये स्थानका वर्णन आकर्षक है। मगर मै नही जानता कि मै वहा कभी पहुचूगा या नही। मेरे शिमला जानेकी कोअी सभावना नही है। हालाकि अिस समय सेवाग्राम अेक भट्ठी है, फिर भी बाहर जानेको जरा जी नही चाहता। मेरे सामने जो काम पडा है, वह मेरा सारा वक्त ले लेता है।

* * *

सस्नेह,

बापू

३२९

पोस्टकार्ड

चि० मीरा,

तुम्हारा बातूनी पत्र मिला। तुम्हारी दृश्यावली पर अीर्ष्या होती है। मगर मुझे तो तूफानके बीच ही रहना होगा। मैने कलसे शान्ति और कामकी खातिर अनिश्चित कालके लिअे मौन ले लिया है। वह कार्यसमिति या अकस्मात घटनाओके लिअे टूटेगा।

सस्नेह,

बापू

सेवाग्राम, वर्धा
२५-५-'४०

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम, वर्धा,
२८-५-'४०

चि० मीरा,

मेरे खयालसे तुम्हारा ओयलमें ठहरना बेकार नही गया। तुम्हें कीमती अनुभव मिल रहा है। और तुम्हारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा है। खर्चकी मुझे परवाह नही। जैसा आत्मा कहे वैसा करो। अगर पंडितजीको समझाकर अपने साथ शरीक कर सको तो अच्छा हो। पश्चिममें भयंकर घटनाओं हो रही है। ओश्वरकी जो अिच्छा।

सस्नेह,

बापू

३३१

[भीतरी संघर्ष संकटकी अवस्थाको पहुंच गया था और अैसे परेशानी और भ्रम पैदा करनेवाले कोहरे और बादल मेरे मार्गमें अिकट्ठे हो गये थे कि दु.खी होकर मैंने मौन और अेकान्तवास ले लिया, ताकि मैं ज्यादा अच्छी तरह ओश्वरसे सहायताकी प्रार्थना कर सकू। यह मौन सफरके लिअे कुछ दिन छोडकर १५ महीने रहा। कुछ समय तक मेरा नियम यह था कि दिनमें अेक बार जरूरत होने पर आध घण्टे बोलती थी, और बाकी अरसेमें, जब मैं सेवाग्रामके खेतोंमें बनी अेक कुटियामें रहती थी, सप्ताहमें दो बार शामको बापूसे मिलने जाया करती तब बोलती थी। मैं केवल वेद और पुराण ही पढती थी और रोज १००० गज सूत कातती थी। जब मैंने मौन छोड़ा तब ओश्वरने मुझे वह शक्ति दे दी थी, जो अुस वक्त तक ढूढनेसे भी मुझे नही मिली थी।]

सेवाग्राम,
वर्धा, सी० पी०, ७-९-'४०

चि० मीरा,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। अिससे मैं अुस संघर्षको समझ सकता हूं, जो तुम्हारे भीतर चल रहा है। तुम हर बातके लिअे भीतरकी तरफ देखनेकी कला अभी तक नहीं सीख सकी हो। अगर धुनाअीकी क्रियाको भी तुम अेक बार अीश्वरके साथ जोड लो, तो अुससे अुतनी ही शान्ति मिलनी चाहिये जितनी कताअीसे। फरहादको पहाड़ खोदनेमें ही अपना अीश्वर दिखाअी देता था। कहा जाता है कि वह अीश्वरकी दी हुअी ताकतसे लगातार भारी चोटें लगाता था। अुसने पहाड़को तोड़ दिया और अपने अीश्वरको, जिसे अेक खूबसूरत लड़कीका रूप दिया गया है, पा लिया। तुम साबरमती या और कहींकी दी हुअी पूनियोंसे कातोगी तो यह अेक विलास होगा। लेकिन संभव है तुम्हारे हाथ अितने कमजोर हों कि बहुत न धुन सको। मुमकिन है तुम्हारा शरीर अितना दुर्बल हो कि गति और मात्रासे सम्बन्ध रखनेवाली सारी क्रियाअें पूरी न कर सके। लेकिन तुम्हारे लिअे ये दोनों चीजें जरूरी नहीं हैं। जरूरी तो यह है कि तुममें अीश्वरके प्रति सर्वार्पणकी भावना हो। तुम्हारी बाहरी प्रवृत्ति कुछ भी क्यों न हो, सब अीश्वरकी खातिर होनी चाहिये। . . . .

अीश्वर तुम्हारी रक्षा करे।

सस्नेह,

बापू

३३२

सेवाग्राम,
वर्धा, सी० पी०, २१-९-'४०

चि० मीरा,

मैंने अिस बार तुम्हें कुछ रोज तक पत्रसे वंचित रखा है। परन्तु बम्बअीमें मुझे न समय मिला, न शान्ति। मैं गुरुवारको लौटा था, परन्तु तुम्हें आज (शनिचरको) ही लिख सका हूं।

कन्हैयालालने[1] मधुर अुत्तर भेजा है। वे स्थितिको समझते और अुसकी कद्र करते हैं। अिसलिअे तुम्हें कोअी कठिनाअी नहीं होगी।

पूनियों[2] के बारेमें तुम्हारी बात मैंने समझ ली। मैंने अब लक्ष्मीदासको सूचित कर दिया है कि तुम्हें अुत्तम पूनियां भेज दें, ताकि तुम बारीक सूत कात सको। जब मिल जायें तो मुझे बताना और तुम्हारी पूनियां खतम होने आयें तब समय रहते मुझे सचेत कर देना।

तुम्हारे पत्रके वर्णनात्मक अंश सदाकी भांति ताजे और मजेदार हैं। अिससे मैं यह निष्कर्ष निकालता हूं कि तुम्हें आन्तरिक शान्ति है। अगर तुम्हारी वहांकी साधनासे तुम्हारी शान्तिमें सतत वृद्धि नहीं होगी तो साधना व्यर्थ होगी। तुम्हारा पशु-पक्षी और पेड़-पत्थरोंसे प्रेम ही तुम्हारा सबसे बड़ा सहारा है। ये अैसे मित्र और साथी हैं, जो कभी धोखा नहीं देते।

सस्नेह,

बापू

---

१. लाला कन्हैयालाल बुतैल मेरे मेजबान थे। अुन्होंने अपने देवदारके जंगलमें मेरे लिअे झोंपड़ी बनवा दी थी।

२. मैंने बापूको समझाया था कि मैं कातनेके साथ-साथ जप कर रही हूं और मनकेकी जगह चरखेका चक्कर गिनती हूं। मैं बहुत चाहती थी कि धुनने और पूनियां बनानेके लिअे कताअीमें बाधा न पड़े, क्योंकि अिन चीजोंके साथ जपका आसानीसे मेल नहीं बैठाया जा सकता।

मुझे अुम्मीद है कि तुम यह नही चाहती कि मै तुम्हे राजनैतिक समाचार या आश्रमकी खबरे भी दू।*

३३३

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
१४-१०-'४०

चि० मीरा,

मुझे खुशी है कि तुम अपने नये आवास + मे हो। तुमने जो थोडीसी पक्तिया भेजी है, अुनमे विषादकी अेक रेखा है। मै चाहता हू कि तुम भीतरी प्रसन्नता और बल अनुभव करो। अीश्वर तुम्हारा साथ दे।

सस्नेह,

बापू

तुम्हारी खादी अब आ गअी है। तुमने अुसके बारेमे मुझे कोअी सूचनाअे दी हो, तो मै अुन्हें भूल गया हू। क्या खादी तुम्हारे लिअे रखू ?

३३४

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
२०-१०-'४०

चि० मीरा,

तुम्हारा बडा और अच्छा पत्र मिल गया। हा, मैने सविनयभग छोड दिया है। फिलहाल वह विनोबा तक ही सीमित है। मै कारावासको

---

* मैने तमाम अखबार ('हरिजन' तक) और बापूके सिवाय और सबके पत्र देखना बन्द कर दिया था।

+ देवदारके जंगलमे पहाड़ीकी बगलमे छोटी-सी अेकाकी झोंपड़ी।

निमत्रित नही कर रहा हू। विनोबा अभी तक आजाद है। तुम चाहोगी तो तुम्हें समाचार भिजवाऊगा। मै न तो तुम्हे लुभाऊगा और न छेड़ूंगा।

सस्नेह,

बापू

वि० आज प्रात ३ बजे गिरफ्तार हो गये। मुकदमा आज शुरू होगा। अनुगामी अभी मुकर्रर नही किया गया, क्योकि जल्दी करनेकी जरूरत नही।

प्या०*

३३९

सेवाग्राम,
११-११-'४०

चि० मीरा,

तुम्हारा अच्छा पत्र अभी पहुचा है। तुम्हारी तपस्या सच्ची है और अिसलिअे आनन्द अवश्य आयेगा। और आनन्दके साथ शरीर-बल भी जरूर आयेगा। पूनिया जब मगाओगी भेज दी जायगी। तुम्हारा खयाल सही है। मुझे किसी भी समय ले जा सकते है। पर अिससे क्या? आश्रम तो लबालब भरा है।

सस्नेह,

बापू

---

* प्यारेलाल।

३३६

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम, वर्धा,
२-१२-'४०

चि० मीरा,

तुम्हारा बढिया लम्बा पत्र अभी पहुचा है। तुमने जो लिखा वह सब मैंने समझ लिया है। केवल भगवान ही तुम्हारा मार्गदर्शन करे। मेरी तबीयत खराब नही है। मुझे विश्रामकी आवश्यकता है और वह मै ले रहा हूं। हां, मुझे चूहे सताते रहे है। वे सताते है तो मुझे नीद नही आती। अुनके काटनेसे जरूर जहर चढ़ सकता है। तुम्हारे पास खाट है? तुम्हारी मच्छरदानीके लिअे मजबूत चपटी छत होनी चाहिये। रातको तुम्हारी नीदमे कोअी गडबड नही होनी चाहिये*। मै जानबूझकर तुम्हे और कोअी समाचार या सन्देशा नही दे रहा हूं। मै तुम्हारे ध्यानमें कोअी खलल नहीं डालना चाहता।

सस्नेह,

बापू

---

* मैंने बापूको समझाया था कि छोटे-छोटे कअी चूहे जंगलसे, खास तौर पर रातको, झोंपड़ेमे आने लगे है। वे मेरे बिछौनेमे घुस जाते थे, कभी-कभी मेरे पैरोमे काट खाते थे, कभी मेरे दोनो ओर अूपर नीचे दौडते थे और कभी मेरे बालोमें अुलझ जाते थे। मुझे ज्यादा खयाल यही रहता था कि वे कही दब न जायं। कुछ तो अिस खयालसे और कुछ चूहोकी अुछल-कूदसे नीद अेक कठिन समस्या हो गअी। आखिर मुझे यह तरकीब सूझी कि मच्छरदानी लगा लू। यह पूरी तरह सफल साबित हुअी।

३३७

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
४-१२-'४०

चि० मीरा,

यह पत्र तुम्हारा पत्र पढनेके बाद तुरन्त लिखा जा रहा है। मैं पानीकी कठिनाअीके बारेमे तीन डॉक्टरोकी सलाह ले रहा हू, जो सयोग-वश यहा है। अुनमे से अेक सुशीला है। हमारा करार यह है कि तुम पहाड पर रहोगी, बशर्ते कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहे। हरेक भौतिक, नैतिक या आध्यात्मिक प्रयत्नके लिअे तदुरुस्त शरीर जरूरी है।

*　　　　*　　　　*

सस्नेह,

बापू

अेक गैलन पानीमे ६ ग्रेन फिटकरी मिलाओ। रातभर पानीको रहने दो। सुबह पानी निकाल लो। अिस पानीके अेक गैलनमे आधा छोटा चम्मच चूना मिलाओ और अुबाल कर काममे लो। परन्तु पालमपुरमे तुम्हे स्वच्छ किया हुआ पानी मिल जाना चाहिये। मिल जाय तो वही काममे लो।

३३८

सेवाग्राम,
२०-१२-'४०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। हां, सभी पुराण पढ़ने लायक है। वे समग्र कालका सच्चा अितिहास देते है। मुझे खुशी है कि तुम्हे अधिकाधिक शान्ति मिल रही है।

सस्नेह,

बापू

३३९

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम, वर्धा
२४-१-'४१

चि० मीरा,

तुम्हारा दूसरा पत्र अभी मिला। अगर आखिरी फैसला यह हो जाय कि तुम्हे बरोडा चले आना चाहिये, तो तुम्हारी अिच्छा ध्यानमे रखूगा। परन्तु मेरा अन्देशा यह है कि तुम बहुत समय तक वहा सुखी नही रहोगी। अगर तुम तदुरुस्त रहो तो तुम्हे अपनेको अिधर-अुधर करनेकी अुस समय तक जरूरत नही है, जब तक तुम यह अच्छी तरह न समझ लो कि मनुष्योके बीचमे रहकर तुम्हे शान्ति मिल सकती है।

सस्नेह,

बापू

३४०

तार (वर्धासे ता० ३०-१-'४१)
मीराबहन, पालमपुर

तुरन्त बरोडा चली आओ। प्यार। मै अच्छी तरह हू।

बापू

३४१

[मै पहाड परसे वापस आ गअी थी और अपने पहाडीवाले झोपडेमें रह रही थी।]

चि० मीरा,

मैने कल और आज तुमसे मिलनेकी पूरी अुम्मीद रखी थी। अुस हालतमें मै तुम्हारे साथ दिन नियत कर लेता। तुम्हे अनुकूल हो

तो बुधवार और शनिवारके दिन रातको ८। बजे समय मिल सकता है।* आज रातसे शुरू कर सकती हो।

सस्नेह,

१२-२-'४१

बापू

३४२

[पहाडीवाली झोंपडीमे अत्यन्त गरमी लगनेके कारण बापू मुझे समुद्रतट पर चोरवाड (जूनागढ राज्य) भेज रहे थे। मै रास्तेमे नासिक ठहर गअी थी।]

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
६-४-'४१

चि० मीरा,

मुझे डर था कि रेलमें तुम्हें कष्ट होगा। हा, तुम चोरवाड जा सकती हो। हरखचन्दभाअीका पत्र मिल गया है। अुन्हे तुम्हारे जा सकनेकी बड़ी खुशी है। मै तार नही दे रहा हू, क्योकि आज रविवार है और तार भी तुम्हे अिस पत्रसे पहले नही मिलेगा।

सस्नेह,

बापू

---

* बापूसे मिलने जानेके लिअे। अुस समय मै अपना मौन भग किया करती थी।

३४३

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम, वर्धा,
२१-४-'४१

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र सुन्दर वर्णनसे भरा है।* मुझे खुशी है कि तुम्हें अितनी शान्ति और हरखचन्दभाअीकी सद्भावपूर्ण संगति मिल रही है। . . .

सस्नेह,

बापू

३४४

सेवाग्राम, वर्धा,
१३-५-'४१

चि० मीरा,

तोडनेकी तुम्हारी योजना पढ़नेमें तो अच्छी है, मगर अुसमें सार बहुत कम है। गोशाला अलग है, परन्तु बलवन्तसिंह तो अलग नही है। दुग्धालय अलग है, परन्तु पारनेरकर तो अलग नही है। बात यह है कि दुनिया मुझसे अलग नही हो सकती। भंसाली अेक ही नही अनेक है। पर सबका व्यवहार अितना अच्छा नही है जितना भंसालीका है। लेकिन वे है तो सही। तुम अिस चीजकी गहराअीमें नही गअी। मुझे चिन्ता

---

* मैं २० अेकड़के अेक शानदार फलोंके बागके बीच अेक कच्ची कुटियामें ठहरी हुअी थी। अुस बागमें भड़कीले रंगके मोर भरे थे। अुनमें से कुछ कभी-कभी मेरे कातते समय मेरे सामने आकर नाचते थे।

रसोअीघरकी नही है। विकास अपने आप हुआ है और विनाश या पुनर्निर्माण भी अुसी तरह करना पडेगा। मै अिस क्रियामे सहायक ही हो सकता हू। हरेक जगह सयोग मुझ पर आ पडे है। राजकोटके घरकी जगह बम्बअीका घर बना। अुसके स्थान पर नेटालका घर बना, फिर बम्बअीमे, बादमे जो० ब०[1] मे दो, फिर फिनिक्स, टॉल्स्टॉय फार्म, फिर वापस फिनिक्स, बादमे कोचरब, साबरमती, मगनवाडी और सेवाग्राममे। मैने बीचके स्थान-परिवर्तन तो छोड ही दिये है। सब यथासमय हुअे। भगवान ही जाने अब वह मुझे कहा पटकेगा। नही, मेरी रक्षा अिसीमे है कि मै प्रार्थना और प्रतीक्षा करूं। "तू ही मुझे रास्ता बता।"

* * *

सस्नेह,

बापू

३४९

सेवाग्राम, वर्धा,
२२-५-'४१

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। लंदनसे पूछताछ हुअी है कि क्या यह खबर सच है कि तुमने मुझसे सब सम्बन्ध तोड दिया है और मुझसे दूर रहती हो!!! अिच्छा किस तरह विचारोकी जनक होती है!

जैसा तुम कहती हो, अगर कोअी कठोर कार्रवाअी होगी, तो वह किसी तुच्छ दीखनेवाले बहानेसे भी हो सकती है।[2]

* * *

---

१. जोहानिस्बर्ग।

२. हम सेवाग्राम आश्रमके विषयमे अब भी पत्र-व्यवहार कर रहे थे कि अुसके बारेमें क्या किया जाय।

तुम अखबारोमे जो समाचार पढती हो, अुनमे से अधिकाश निरे झूठे और बिक्री बढ़ानेके लिअे गढ़े हुअे होते हैं। मै न अहमदाबाद जा रहा हू और न दौरे पर या शिमले ही जा रहा हू। फिर भी अभी कोअी आशा न होनेके बावजूद अिनमे से कोअी भी बात हो सकती है। परन्तु ये अखबारवाले कह देंगे, "देख लो, हमने ठीक कहा था न।"

*　　　　*　　　　*

युद्धके समाचार सनसनीखेज बन रहे है। अिग्लैडकी बरबादीके समाचार हृदयविदारक है। पार्लियामेण्ट भवन, अेबे और बडा गिरजा तो अमर प्रतीत होते थे। और अभी तो कोअी अन्त ही नही है। . . .

सस्नेह,

बापू

३४६

[मै चोरवाड़से लौट आअी थी और सेवाग्रामसे कोअी आधा मील दूर अेक नये लगाये हुअे बगीचेमे कुअेके पास अेक कुटियामे रह रही थी।]

सोमवार,
२३-६-'४१

चि० मीरा,

मैने साथकी सामग्री पढ ली। यह अच्छा संग्रह है।* अिन सब मंत्रोंके तुम्हे जितने अर्थ मालूम हुअे है, अुनसे अधिक किये गये है। परन्तु हमारे लिअे शब्दार्थ काफी हैं।

सस्नेह,

बापू

---

* ऋग्वेदके मंत्रोंका।

३४७

सेवाग्राम,
१-७-'४१

चि० मीरा,

रामदास कहता है कि अुसके पास अभी अेक भी आदमी फालतू नही है। क्या तुम्हारी देखरेखमे अुद्रूसे काम चल जायगा? क्या तुम्हे वरोड़ासे मजदूर मिल सकते है? तुम्हारी कठिनाअी सच्ची है। परन्तु मै लाचार हू। अिस तरहके अनुभवोसे जाहिर होता है कि रुपयेसे श्रम बड़ा है। . . यदि मै वर्धासे मजदूर जुटाअू, तो यह तुम्हे पसन्द होगा?

सस्नेह,

बापू

३४८

१२-७-'४१

चि० मीरा,

साथकी सामग्री अन्तिम है।* यह बडी दिलचस्प है। देवताओं और मनुष्योके अेकसे पाप-पुण्य है और वे आपसमें सुपरिचित मित्र हैं और अकसर परस्पर लड़ते रहते है। केवल अेक अदृश्य शक्ति ही अैसी है, जो सर्वोपरि और अबद्ध है।

तुम कठिनाअीमे होकर अपना रास्ता तैयार कर रही हो। तुम ज्वारके आटेकी चपातिया आसानीसे बना सकती हो। कोशिश करो तो कामयाब हो जाओगी।

सस्नेह,

बापू

---

* मै बापूको वेदमंत्र चुन-चुनकर नियमपूर्वक भेजती रहती थी।

३४९

चि० मीरा,

अिन्हे मैंने कल रातको 'पुस्तकालय' मे समाप्त किया। अन्तमें यह संग्रह अच्छा रहेगा।

सस्नेह,

३१-७-'४१

बापू

३५०

सेवाग्राम, वर्धा,
२०-११-'४१

चि० मीरा,

काम अितना अधिक है कि अभी अिससे ज्यादा कुछ नही कहूंगा: सत्यरूपी ओीश्वर, न कि असत्यरूपी, तुम्हारा मार्गदर्शन करे। कारण ओीश्वर सत्य भी है और असत्य भी। अगर तुम्हे यह भाषा समझमें न आये, तो अिसका अर्थ देनेके लिअे मुझसे कहना।

सस्नेह,

बापू

३५१

बारडोली,
१३-१२-'४१

चि० मीरा,

यह पत्र यही कहनेको लिख रहा हूं कि तुम मेरे दिलसे कभी दूर नही होती। मै लिखनेके काममे डूबा हुआ था और वह अभी पूरा हुआ हैं। आशा है तुममे अधिक शक्ति आ रही है और तुम्हें अधिक आन्तरिक शान्ति मिल रही है।

सस्नेह,

बापू

मैं खूब मजेमें हूं।

३५२

[मैंने अपना मौन अब छोड दिया था और आशादेवीके यहा ठहरी हुअी थी, ताकि मै अुनकी सहायतासे चुने हुअे वेद-मंत्रोंके मेरे अंग्रेजी अनुवादको दुरुस्त और पूरा कर सकू। जिस कुटियामें मैंने मौनके पिछले मासोमें निवास किया था, अुसमें मैंने कमसे कम ५२ विच्छू पकडे और खेतोमें छोडे थे। वहा अेक दो साप भी रहते थे। आशादेवीके घरमे मैंने चूहे पकडना शुरू किया और अेक सप्ताहके भीतर तीससे ज्यादाको अेक दूरकी पहाडी पर छोडा।]

स्वराज्य आश्रम, बारडोली
३–१–'४२

चि० मीरा,

तुम बिच्छू, चूहे और साप पकड रही हो। थोडे दिनमें तुम्हारा अेक अजायबघर बन जायगा ! ! ! मुझे खुशी है कि तुम्हारा संग्रहका काम पूरा होने आ रहा है।

तुम सबको प्यार,

बापू

३५३

सेवाग्राम,
२५–१–'४२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा करुण पत्र काशीमें मिल गया था। मेरी समझमें नही आया कि मेरे जानेके समय हमारे न मिलनेका तुम्हे अितना दुःख क्यों हुआ।* तुम मुझसे सुबह मिली थी। नही मिली?

* अिन तमाम वर्षोंमे कभी अैसा नही हुआ था कि बापू प्रवासके लिअे रवाना हुअे हों और मैंने अुनके पैर न छुअे हो, परन्तु अिस अवसर पर मुझे पता लगे कि क्या हो रहा है अुससे पहले वे चल दिये।

लेकिन न मिलती तो भी तुम्हे अब स्नेहके अिन बाहरी प्रदर्शनोंसे अूपर अुठना चाहिये। क्योंकि स्नेह तो अेक स्थायी वस्तु है, जो बाहरी प्रदर्शनसे स्वतत्र है। तुम्हे अपने काममे ही डूबे रहना चाहिये।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

मै बिलकुल अच्छा हू।

सस्नेह,

बापू

३५४

सेवाग्राम,
१५–३–'४२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। हर्ष है कि तुमने असत्यको समझ लिया। खतरा अभी दूर नही हुआ है। परन्तु अीश्वर तुम्हारा विश्वसनीय गुरु और हितैषी है। अुस पर पूरा भरोसा रखो। तुम्हारा शरीर तुम्हारे लिअे अच्छा सूचक है।

आश्रममे बहुत भीड़ हो गअी है, परन्तु वह चल रहा है।

सस्नेह,

बापू

३५५

[मै कमलादेवी और मृदुलाबहनको स्त्रियोका कैम्प तैयार करने और चलानेमें सहायता देनेके लिअे नवसारीके पास अेक गांवमे गअी हुअी थी।]

सेगाव,
११–४–'४२

चि० मीरा,

मैने तुम्हे कल पत्र लिखा था। मै जानता हू कि तुम कैम्पके लिअे अधिकसे अधिक परिश्रम करोगी। दूसरे कामके बारेमें मेरे ध्यानमे अभी तो

कोओी बात नही है और शायद आगे भी कभी न हो। लेकिन कोओी नही जानता कि दूसरे ही क्षणमे क्या हो जायगा।

सस्नेह

बापू

३५६

[ठीक अिसी समय बापू 'हरिजन' के लिअे 'विदेशी सिपाही' शीर्षक अपना अग्रलेख लिख रहे थे। लगभग अिसी समय मैंने बापूको अेक लम्बा खत लिखा होगा, जिसमे मैंने लगभग वही भाव प्रगट किये थे। मैंने यह भी लिखा था कि बापू सहमत हो तो मैं थोडे ही दिनमें अलाहाबादमे होनेवाले महासमितिके अधिवेशनमे जाना चाहूगी और वहां पर्देके पीछे रहकर नेताओको समझाअूगी कि जापानियोका राष्ट्रव्यापी अहिसक विरोध सगठित किया जाय। अिस पत्रका अुत्तर बापूने अेक तारमें दिया: "तुम्हारे जीमे हो तो तुरन्त चली आओ।" साथ ही अुन्होने यह पत्र लिखा:]

सेगांव,
२०–४–'४२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अेक बार यहां आ जाओ, फिर देखें क्या किया जा सकता है। तुम अैसे कामका बीडा अुठा रही हो, जिसमे और किसी विचारकी गुजाअिश ही नही है। मैंने तुम्हे अेक तार भेजा है। पता नही वह तुम्हारे पास पहुचेगा या नही। आजकल सभी बातें बड़ी अनिश्चित हो गयी है।

सस्नेह,

बापू

३५७

[मैं दूसरी ही गाडीसे सेवाग्राम चली गयी। ज्यो ही बापूके पास पहुची, अुन्होने टाअिप किये हुअे कागजके दो पन्ने मुझे सौपते हुअे कहा: "अिन्हे पढ लो। अगर तुम्हे जचते हो, तो दूसरी गाडीसे अिन्हें अलाहाबाद ले जाओ। तब तक मै तुमसे घटे भर तक बात करके अपनी मन:स्थिति पूरी तरह समझा दूगा, जो तुम्हे कार्यसमितिके सदस्योको साफ तौर पर बतानी होगी।" यह कागज, जो बापूने मुझे दिया, अुनके 'भारत छोडो' प्रस्तावका मूल मसौदा था। मै दूसरी गाडीसे अलाहाबादके लिअे रवाना हो गयी। साथमे बापूके दो पत्र ले गयी, अेक पडित जवाहरलालके नाम और दूसरा मौलाना साहबके नाम। साथमे प्रस्तावकी प्रतिया भी थी।

अलाहाबादमे बापूके मूल मसौदेके अनुसार सशोधित रूपमे प्रस्ताव पास होनेके बाद मैं राजेन्द्रबाबू, डॉ० प्रफुल्ल घोष और शंकरराव देवके साथ सीधी सेवाग्राम लौट आअी। हमने प्रस्ताव बापूके सामने रखा और अुनसे कूचकी आज्ञा मागी, जो अुन्होने साफ और निश्चित शब्दोमें दे दी और हरेक व्यक्तिको अुसके प्रातमे भेज दिया। मुझसे अुन्होने कहा, "तुम्हे तीन कामोमे से कोअी अेक चुननेका अधिकार देता हूं: (१) मद्रास जाकर राजाजीको समझाओ, (२) दिल्ली जाकर वाअिसरॉय और दूसरे बड़े अग्रेज अफसरोको समझाओ, (३) अुडीसा जाकर वहाके आम लोगोंको पूर्वी समुद्रतट पर सभावित जापानी हमलेका अहिसात्मक असहयोगके ढग पर विरोध करनेके लिअे तैयार करनेमे सहायता दो। क्षण भर भी हिचकिचाये बिना मैने तीसरा काम पसन्द कर लिया और अिसलिअे अिस समय मै अुडीसामें थी।]

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
१८-५-'४२

चि० मीरा,

तुम्हारा पहला पत्र बम्बअीमे मिला था। तुम मुझे खबर देती रहो। सब ठीक चलता है।

सस्नेह,

बापू

३५८

सेवाग्राम,
२३-५-'४२

चि० मीरा,

तुम्हे मेरे पोस्टकार्ड या पत्र मिल गये होंगे। याद नही क्या थे। अगर तुम्हे 'हरिजन' मिलना हो, तो वह मेरे साप्ताहिक पत्रसे अधिक है।

मैंने तुम्हारे सवालोकी गोपबाबूसे पूरी चर्चा कर ली है। फिर भी तुम्हारे सारे महत्त्वपूर्ण प्रश्नोके अुत्तर 'हरिजन' मे दे रहा हूं। अुसकी अेक नकल पहलेसे ही तुम्हारे पास भेज रहा हू। 'हरिजन' मे निकलनेसे पहले ये अुत्तर प्रकाशित नही होने चाहिये।

तुम्हारा पत्र आशा, महादेव और किशोरलालको भी पढा दिया है। तुम्हारी वर्णनशक्ति अुच्च कोटिकी है। अिससे तुम्हारे पत्रोको पढनेमे आनन्द आता है।

मेरे अुत्तरोसे तुम देख लोगी कि मै धीमी रफ्तारसे चलना चाहता हू। मै जल्दबाजी नही करना चाहता। हमारे कदम दृढ किन्तु क्रमशः हो, ताकि लोग अुन्हे जहा तक सभव हो समझ सके। अेक समय अैसा जरूर आयेगा, जब मामला काबूसे बाहर हो जायगा। हमे अुसे जानबूझकर काबूसे बाहर नही होने देना चाहिये। समझमे आ गया?

सस्नेह,

बापू

[निम्न लिखित रिपोर्ट, जो मैंने बापूको भेजी थी, पूरी अुद्धृत की जाती है; क्योंकि अिसमे वह स्थिति ठीक-ठीक समझाअी गअी है, जो अुस वक्त अुडीसामे हमारे सम्मुख अुपस्थित थी। अिससे मेरे प्रश्नोके बापूके अुत्तरोंका पूरा अर्थ भी स्पष्ट हो जाता है। बापूके अुत्तर अगले पत्रमें दिये गये है।]

जापानियोंके हमले और कब्जेका सवाल

हम यह मान ले कि जापानी अुडीसाके तट पर कही न कही अुतरेंगे। बहुत करके अुतरनेके समय कोअी बमवर्षा या गोलाबारी नही होगी, क्योकि अुस तट पर रक्षाके अुपाय नहीं किये गये है। समुद्रके किनारेसे वे समतल और सूखे चावलके खेतोमे होकर तेजीसे आगे बढेगे, क्योकि यहा अेकमात्र रुकावट नदियों और खाअियोकी होगी, जो आजकल अधिकाश सूख गयी है और अुन्हे कही भी पार करना असम्भव नही है। जहा तक हम समझ सके है, जापानियोंकी प्रगतिको अुस वक्त तक रोकनेका गम्भीर प्रयत्न नही किया जायगा, जब तक वे अुडीसाकी रियासतोके पहाडी 'और जगलवाले प्रदेशमें न पहुच जाय। रक्षक सेना, जो भी है, अिस प्रदेशके जगलोंमें छिपी हुअी बताते है। सभव है कि जमशेदपुरकी सडकको बचानेका डटकर प्रयत्न किया जाय. लेकिन अुसके सफल होनेकी आशा बहुत थोड़ी ही होगी। अिसका अर्थ यह हुआ कि हम अुडीसाके अुत्तर पश्चिममे कोअी लडाअी लडी जानेकी अुम्मीद रख सकते है। अिसके बाद जापानी फौज आगे बढ़कर बिहारमें चली जायगी। अुस समय संभावना यह है कि जापानी देशमे बिखर नही जायगे, बल्कि समुद्र और अपनी आगे बढती हुअी सेनाके बीचके यातायात मार्ग पर केन्द्रित रहेंगे। ब्रिटिश शासन अिससे पहले ही घटनास्थलसे गायब हो जायगा।

अिन घटनाओंके होनेकी हालतमे हमारे सामने समस्या यह होगी कि हम क्या करें?

जापानी सेनाअे खेतो पर और गावोमे होकर झपटेगी — लोगोके खुले शत्रु बनकर नही, बल्कि ब्रिटिश और अमरीकी युद्ध-प्रयत्नका पीछा करने और अुसको नष्ट करनेवालोंकी हैसियतसे झपटेगी। लोगोका तो यह हाल है कि अुनकी भावनाअे अनिश्चित है। सबसे प्रबल भावना डर और अंग्रेजोंके अविश्वासकी है; और अुनके साथ जो बर्ताव हो रहा है, अुसके कारण यह भावना बढ रही है।

अिसलिअे जो भी चीज अंग्रेजोकी नही है, अुसका किसी न किसी तरह स्वागत होता है। अेक मजेदार अुदाहरण लीजिये। कुछ अिलाकोमे देहाती कहते है — "अरे, जो हवाअी जहाज बहुत शोर मचाते है वे अंग्रेजोके है, परन्तु शात वायुयान भी है और वे महात्माजीके है।" मेरे खयालसे अिन भोलेभाले और निर्दोष लोगोंके लिअे अेक ही चीज सीखना सभव है, और वह है तटस्थताका रवैया। क्योकि वास्तवमे अुनके लिअे यही स्थिति तर्कसिद्ध बनाअी जा सकती है। अंग्रेज न सिर्फ अुन्हें भाग्यके भरोसे छोडते है और बमवर्षा वगैरासे खुदकी रक्षा करनेकी शिक्षा नही देते, बल्कि अैसी आज्ञाये जारी करते है जिन्हे माना जाय तो लडाअीका दिन आनेसे पहले ही वे मारे जाय। जो जापानी अिस घृणित राज्यका पीछा कर रहे है, अुनको अुत्साहपूर्वक रोकनेको वे कैसे तैयार हो सकते है, विशेषत. जब जापानी यह कह रहे है कि, "हम तुमसे लडने नही आये है।" परन्तु मैंने देखा है कि देहाती लोग तटस्थताकी स्थिति स्वीकार करनेको तैयार है। अर्थात् वे जापानियोको अपने खेतो और गावोसे गुजर जाने देगे और जहा तक हो सकेगा अुनके सपर्कमे नही आयेगे। वे अपने खाद्य-पदार्थ और रुपया-पैसा छिपा लेंगे और जापानियोकी सेवा करनेसे अिनकार कर देंगे। परन्तु कुछ क्षेत्रोमे अितना विरोध भी कराना कठिन होगा, क्योकि अंग्रेजी राज्यसे अितनी ज्यादा घृणा है कि अंग्रेजोके विरुद्ध किसी भी चीजका हाथ फैलाकर स्वागत किया जायगा। मुझे लगता है कि हमे कोशिश करके अुस अधिकसे अधिक विरोधका अन्दाज लगाना पडेगा, जिसको करने और कायम रखनेकी साधारण ग्रामवासीसे आशा रखी जा सकती है। और अिसीको हमे अपनी निश्चित स्थिति बना लेना पडेगा। अेक स्थिर, देर तक कायम रखी हुअी स्थिति भले ही सोलहो आने विरोधकी न हो, तो भी जल्दी टूट जानेवाले सख्त रवैयेसे वह अन्तमे अधिक कारगर होगी।

यह अधिकसे अधिक कायम रहने लायक स्थिति, जिसकी हम साधारण लोगोसे आशा रख सकते है, बहुत करके यह होगी :

(१) जापानी कोअी जमीन, मकान या जगम सम्पत्ति जबरन ले, तो अुसका दृढतापूर्वक और अधिकतर अहिसासे विरोध किया जाय।

(२) जापानियोकी कोअी बेगार न की जाय।

(३) जापानियोकी हुकूमतमे किसी भी तरहकी नौकरी न की जाय।

(कुछ प्रकारके शहरी लोगों, सरकारी मौकापरस्तो और दूसरे भागोसे लाये हुअे हिन्दुस्तानियोके सम्बन्धमे अिसे रोकना कठिन हो सकता है।)

(४) जापानियोसे कोअी चीज न खरीदी जाय।

(५) अुनके सिक्के और राज कायम करनेके अुनके किसी भी प्रयत्नको न माना जाय।

(कार्यकर्ताओंके और समयके अभावसे यह काम बहुत ही कठिन है, परन्तु हमें ज्वारको रोकनेकी कोशिश करनी ही पडेगी।)

अब लीजिये कुछ कठिनाअिया और प्रश्न जो पैदा होते है

(१) सभव है जापानी लोग मजदूरी, खुराक और सामानके दाम अग्रेजी चलनके नोटोमे देनेको तैयार हो जायं, तो क्या लोगोको अच्छे दामों पर बेचने या अच्छी मजदूरी पर काम करनेसे अिनकार करना चाहिये? कअी महीनोके लगातार विरोधके लिअे शायद अिसे रोकना मुश्किल हो। जब तक वे खरीदने या सेवा लेनेसे अिनकार करते है, तब तक दुरुपयोग करनेका खतरा नही रहता।

(२) जिन पुलो और नहरो वगैराको अग्रेज बारूदसे अुड़ा देगे, अुनको फिरसे बनानेके बारेमे क्या किया जाय? हमे भी पुलों और नहरोकी आवश्यकता होगी। अिसलिअे क्या हमे अुन्हें फिरसे बनानेका काम शुरू कर देना चाहिये, भले ही अिसका मतलब जापानियोके साथ काम करना ही हो, या हमे जापानी पुल-निर्माताओके आने पर हट जाना चाहिये?

(३) यदि जो भारतीय सैनिक सिंगापुर और बर्मामें कैद कर लिये गये है, वे जापानकी आक्रमणकारी सेनाके साथ अुतरे, तो अुनके प्रति हमारा क्या रवैया होना चाहिये? हमे अुनके साथ वही तटस्थताका व्यवहार करना चाहिये जो जापानियोके साथ करना है, या अुन्हे अपने विचारके बनानेका प्रयत्न करना चाहिये?

(४) (आनेवाले जापानियोंके सामने) ब्रिटिश राज चला जाय, तो अुसके बाद हमे सिक्केके बारेमें क्या करना चाहिये?

(५) लड़ाअिया हो चुकने और जापानी फौजके आगे बढ जानेके बाद रणक्षेत्र लाशो और घायलोसे बिछ जायगा। मेरे खयालसे हमे मुर्दोंको जलाने व गाडनेके और घायलोंको अुठाकर अुनकी सेवा करनेके काममे निःसंकोच होकर जापानियोको सहयोग देना चाहिये। संभावना यह है कि जापानी अपने मामूली घायल हुअे लोगोकी देखभाल करेंगे और अपने दुश्मनके मामूली घायल हुअे लोगोंको कैद कर लेंगे, परन्तु बाकीके लोगोको शायद छोड देंगे। तब हमारा पवित्र कर्तव्य होगा कि हम अुनकी देखभाल करे। अिसके लिअे हम अभीसे स्थानीय डॉक्टरोकी देखरेखमे स्वयसेवकोको तालीम देनेकी योजना बना रहे है। अुनकी सेवाओका अुपयोग भीतरी गडबड और महामारी वगैराकी हालतमे भी किया जा सकता है।

(६) संभव है लड़ाअीके मैदानमे मुर्दो और घायलोके सिवाय कुछ बन्दूके, तमंचे और दूसरे छोटे हथियार भी पडे रह जायं और जापानी अुन्हें अुठा न ले जायं। अगर हम अिन चीजोको जमा नही करें, तो संभव है वे डाकुओं, चोरो और दूसरे बदमाशोके हाथोंमे पड जायं जो समरक्षेत्रको लूटनेके लिअे हमेशा बाजकी तरह टूट पडते है। भारत जैसे नि.शस्त्र देशमे अिससे बड़ी गडबड पैदा होगी। हम अिन हथियारो और गोला-बारूदको जमा कर ले, तो अुनका हमे क्या करना चाहिये? मेरा दिल तो यह कहता है कि अुन्हे समुद्रमे ले जाकर डुबो देना चाहिये। कृपा करके बताअिये, हमें आपकी क्या सलाह है।

मीरा

३५९

[अुन दिनो सलाहकार-शासनके दो अूचे अग्रेज अधिकारियोसे मेरी मुलाकात हो चुकी थी। चूकि हमे यह हकीकत मालूम थी कि सरकारी कर्मचारी जापानी लोगोके आनेका समाचार मिलते ही चालीस-पचास मील भीतरकी ओर पहाडियोमे चले जायंगे और जो फाअिले वे अपनी मोटरोमे नही ले जा सकेगे वे जला दी जायगी और तमाम पुल अुडा दिये जायगे, अिसलिअे अिस मुलाकातसे मेरा अुद्देश्य अुनसे यह अनुरोध करना था कि वे व्यवस्थित ढगसे हटे और शासनतत्र हमारे हाथोमे छोड जाय। मैने अुन्हे खास तौर पर समझाया कि जेलकी चाबिया हमे सौप दे और नागरिक अस्पतालोके डॉक्टरो और दवाओ वगैराको भी न ले जाय।]

सेवाग्राम,
वर्धा (सी० पी०) होकर,
३१-५-'४२

चि० मीरा,

तुम्हारा सम्पूर्ण और ज्ञानप्रद पत्र मिला। मुलाकातकी रिपोर्टमें कोअी कसर नही और तुम्हारे अुत्तर सीधे, असदिग्ध और साहसपूर्ण थे। मुझे कोअी आलोचना नही करनी है। मै अितना ही कह सकता हूं कि 'जैसा कर रही हो किये जाओ'। मैने साफ समझ लिया है कि तुम ठीक वक्त पर ठीक जगह चली गअी हो। अिसलिअे मुझे और कुछ न करके सीधे तुम्हारे प्रश्नो पर ही आनेकी जरूरत है। प्रश्न सब अच्छे और अुपयुक्त हैं।

(१) मेरे खयालसे हमें लोगोंको बता देना चाहिये कि अुन्हे क्या करना है। वे अपनी शक्तिके अनुसार करेंगे। अगर हम अुनकी शक्तिका अन्दाज लगाकर अुसके अनुसार सूचनाअें देंगे, तो हमारी सूचनाअें दोषभरी और समझौता करनेकी वृत्तिवाली होगी। अैसा हमे हरगिज नही

करना चाहिये। असलिअे तुम मेरी हिदायतोको अिस दृष्टिसे पढना। याद रखो कि हमारा रवैया जापानी सेनाके साथ पूर्ण असहयोगका है। अिसलिअे हमे अुन्हे किसी तरहकी कोअी मदद नही देनी चाहिये और न अुनसे लेनदेन करके फायदा अुठाना चाहिये। अिसलिअे हम अुन्हे कोअी चीज बेच नही सकते। अगर लोग जापानियोंकी सेनाका सामना करनेमे असमर्थ होगे, तो वे वही करेंगे जो सशस्त्र सैनिक करते है, यानी जब अधिक शक्ति देखेगे तो पीछे हट जायगे। और अगर वे अैसा करते है तो जापानियोके साथ कोअी व्यवहार करनेका सवाल ही अुठाता नही और अुठाना भी नहीं चाहिये। लेकिन अगर लोगोमे जापानियोका मरते दम तक मुकाबला करनेकी हिम्मत नही है और जापानियोका जिस प्रदेश पर आक्रमण हो अुसे खाली करनेका साहस और सामर्थ्य भी नही है, तो अिन सूचनाओको ध्यानमे रखकर जो कुछ अुनसे हो सकता है सो करेंगे। अेक बात अुन्हे कभी नही करनी चाहिये—यानी राजीखुशीसे जापानियोंकी बात मानना। यह कायरताका काम होगा और स्वतत्रताप्रेमी लोगोको शोभा नही देगा। अुन्हे अेक आगसे बचनेके लिअे दूसरीमे, जो शायद अधिक भयकर होगी, नही पडना चाहिये। अिसलिअे अुनका रवैया तो सदा यही होना चाहिये कि वे जापानियोका विरोध करे। अिसलिअे अग्रेजी चलनके नोट या जापानी सिक्के स्वीकार करनेका सवाल पैदा नही होता। वे जापानियोकी किसी चीजको हाथ नही लगायेगे। जहा तक हमारे अपने ही लोगोके साथ व्यवहार करनेका प्रश्न है, वे या तो चीजोका अदला-बदला करेंगे या जो ब्रिटिश सिक्का अुनके पास होगा अुसे काममे लेंगे। अुन्हे यह आशा होगी कि ब्रिटिश सरकारका स्थान जो राष्ट्रीय हुकूमत ले सकती है, वह अपनी शक्तिके अनुसार लोगोंसे सारे ब्रिटिश सिक्के ले लेगी।

(२) पुल बनानेमे सहयोग देनेके सवालका जवाब अपर आ जाता है। अिस तरहके सहयोगका कोअी प्रश्न नही हो सकता।

(३) अगर भारतीय सिपाहियोका हमारे लोगोसे सम्पर्क हो और अुनका सद्भाव हो, तो हमें अुनसे भाअीचारेका बरताव करना चाहिये और अुनके लिअे सभव हो तो अुन्हे राष्ट्रका साथ देनेको कहना चाहिये। बहुत करके अुन्हे यह वचन देकर लाया जायगा कि वे देशको विदेशी जुअेसे छुडाये। विदेशी जुआ नही रहेगा तो अुनसे आशा रखी जायगी कि वे जनताके मित्र बने और ब्रिटिश सरकारके बजाय जो राष्ट्रीय सरकार कायम हो अुसकी आज्ञा माने। अगर अग्रेज भारतीयोके हाथोमे कारबार छोड कर व्यवस्थित ढगसे चले जायगे, तब तो सारी बाते खूबीके साथ हो सकेगी और सभव है जापानियोके लिअे भारत या अुसके किसी भी हिस्सेमे शातिसे बस जाना मुश्किल कर दिया जाय; क्योकि अुन्हे अैसी आबादीसे पाला पडेगा, जो दिलमे नाराज और मुकाबलेके लिअे तैयार होगी। क्या क्या हो सकता है, यह कहना कठिन है। अगर लोगोको विरोधकी ताकत पैदा करनेकी तालीम दे दी जाय, भले ही सत्ता जापानियोकी हो या अग्रेजोकी, तो अितना काफी होगा।

(४) न० (१) मे आ गया।

(५) सभव है अैसा अवसर ही न आये और अगर आया तो सहयोग किया जा सकता है और वह जरूरी भी होगा।

(६) रास्तेमे पडे हुअे पाये गये शस्त्रास्त्रके बारेमे तुम्हारा अुत्तर अत्यत आकर्षक और पूरी तरह तर्कसंगत है। अिसके अनुसार किया जा सकता है। परन्तु यह कल्पना भी की जा सकती है कि भले आदमी अुन्हे ढूढ ले जाय और सभव हो तो सुरक्षित स्थान पर जमा रखे। अगर अुन्हें जमा करके रखना और शरारती लोगोसे बचाये रखना असभव हो, तो तुम्हारी योजना आदर्श है।

सस्नेह

बापू

३६०

[जब बरसात शुरू हो जानेके कारण जापानियोंका तुरन्त हमला होनेका खतरा कम हो गया, तब मैं हरिकृष्ण मेहताबके साथ अुडीसासे कार्यसमितिकी बैठकके समय सेवाग्राम चली गअी। जब समितिने 'भारत छोडो' प्रस्ताव पास कर दिया, तो अुसके बाद बापूने मुझे वाअिसरॉयको अपनी अन्दरूनी विचारधारा समझानेके लिअे सीधे अुनके पास भेज दिया। लार्ड लिनलिथगोने अपने निजी मंत्री (लेथवट)के द्वारा मुझसे मिलनेमें असमर्थता प्रगट कर दी। परन्तु चूंकि वे बापूके विचार जानना चाहते थे अिसलिअे यह सुझाया गया कि मैं लेथवटसे मिलूं। मैं मिली और पूरे अेक घंटे तक अुनसे बातें कीं।]

सेवाग्राम,
२१–७–'४२

चि० मीरा,

तुम मेरे दिये हुअे प्रमाणपत्रको सही साबित कर रही हो—वर्णनात्मक ढंगके पत्र लिखनेमें तुम जन्मसे ही सिद्धहस्त हो। लेथवटके साथकी तुम्हारी बातचीतका तुम्हारा खींचा हुआ चित्र हूबहू है।

तुमसे मिलनेमें वाअिसरॉयको संकोच होना मेरी समझमें आता है और मैं अुसकी कद्र भी कर सकता हूं। लेकिन लेथवटसे तुम्हारी बातचीतसे काम चल जायगा।

सुशीलाने मुझे तुम्हारी मौलाना साहब* और जवाहरलालके साथ हुअी मुलाकातका हाल बताया है। अच्छा हुआ दोनों दिल्लीमें थे। मौलाना साहब अब भी वहीं हों, तो मेरा प्यार कहना और यह भी कहना कि मुझे अुम्मीद है वे फिर पूरी तरह तन्दुरुस्त हो गये होंगे।

---

* मौलाना अबुल कलाम आजाद।

आशा है तुम्हारी हरियानामे अच्छी गुंजरी होगी। जरूरतके मुताबिक तुम यहा लौट आना या मुझसे बम्बअीमे मिलना। मुझे अुम्मीद है कि मै यहासे २ तारीखको रवाना होकर ३ तारीखको बम्बअी पहुचूगा। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। प्यारेलाल बीमार हो गया था। अब निश्चित रूपमे अच्छा हो रहा है।

सस्नेह,

बापू

३६१

[पिछले और अिस पत्रके बीचमे दो अविस्मरणीय वर्ष बीत गये। दिल्लीसे मै अगस्त १९४२ मे बापूसे बम्बअीमे जा मिली। ९ अगस्तको बापू, महादेव और मै सुबहके पाच बजे बिड़ला भवनमे गिरफ्तार कर लिये गये। हम तीनो, सारी कार्यसमिति और बम्बअीके सभी प्रमुख काग्रेसियो और कार्यकर्ताओको अेक स्पेशल गाडीमे ले जाया गया। कार्यसमितिके सदस्योको, श्रीमती नायडुको छोड़कर, अहमदनगरके किलेमें ले गये और बाकी सबको पूनाके बाहर अेक छोटेसे स्टेशन पर अुतार दिया गया। बापू, श्रीमती नायडू, महादेव और मुझको मोटरसे आगाखां महलमें ले गये। शेषको यरवदा जेल ले गये। तीसरे दिन बा और सुशीला भी आगाखा महलमें हमारे साथ शरीक हो गअी। महलके चारों तरफ काटेदार तारोकी अेक बडी बाड लगा दी गअी और अुस पर भी दिनरात बहुतसे सशस्त्र पुलिसोका पहरा रहने लगा। हमारी कैदके पहले दिनसे लेकर आखिरी दिन तक अेकके बाद दूसरी महत्त्वपूर्ण और भयंकर घटनाअे होती रही। हमारे पहुचनेके पाच दिनके भीतर महादेव हृदयकी गति बन्द हो जानेसे चल बसे। (अब सरकारने प्यारेलालको हमारे साथ रहनेको भेज दिया।) छ. महीने बाद बापूने अपना २१ दिनका अुपवास किया, जिससे वे मृत्युके किनारे पहुच गये। अुपवासके थोड़े दिन बाद श्रीमती नायडूको खतरनाक मलेरियाकी बीमारी हुअी और वे भयावह स्थितिमे छोडी गयी। अब बाका

मुझे अपने पर भी लेना होगा। काश, मैं अुसे सुधारनेका श्रेय भी ले सकू। दिनशा या शिवशर्मासे अिलाज करा कर क्यो न देख लो? दोनो आजकल यही है। . .

मुझे बताओ गायोको कसाअीके हाथसे कैसे बचाया। मेहरबानी करके पहले अपने शरीरको ठीक कर लो, फिर आश्रमके बनाने और चलानेकी गम्भीर जिम्मेदारी अुठाओ।

मेरी बातचीत* लम्बी होती जा रही है। अुसका अन्त अीश्वरको ही मालूम है। अेक बात अच्छी है। मै अिस परिश्रमको अच्छी तरह सहन कर रहा हू। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। . . यह भी अच्छा है कि हम अेक-दूसरेसे थोडी ही दूर है।

आज मौनवार है और अिसे मै बकाया काम निपटानेमे लगा रहा हू।

सस्नेह,

बापू

३६३

सेवाग्राम,
३–१२–'४४

चि० मीरा,

तो तुम्हे अपनी पसन्दकी जमीन मिल गअी। परमात्मा करे तुम्हारा सारा सपना पूरा हो। अगर मै दिल्ली गया और समय मिला, तो मुझे तुम्हारे स्थान पर मोटरसे आनेमे अवश्य बडी खुशी होगी। मेरी चिन्ता न करना। मुझे तो मामूली कामोसे आराम चाहिये, प्रेमपत्र लिखनेसे भी, तो अब वर्षके अन्त तक यह मेरा आखिरी पत्र होगा। यह पत्र लिखनेका अन्तिम दिवस है।

सस्नेह,

बापू

---

* कायदे आजम जिन्नाके साथ।

३६४

सेवाग्राम,
१८-१-'४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। आशा है अिससे पहले मेरा खासा लम्बा पत्र मिल गया होगा।

ब० सिह[1] यहा नही है। वह सतीशबाबूके साथ है। मुझे आशा नही कि वह तुम्हारे पास आयेगा। अगर अुसका कुछ भी दिल हुआ, तो मै अुसे प्रोत्साहन दूगा। मै जानता हू कि तुम्हारे कामका वही आदमी है। खैर, तुम्हें आकर देख लेना चाहिये कि तुम किसीको स्थायी तौर पर या कुछ समयके लिअे चुन सकती हो या नही। यहा बहुत लोग है। अिसलिअे जब आ सको तुम्हे आ जाना चाहिये।

फरवरीके अन्तमे मेरे दिल्ली आनेकी बहुत ही कम सभावना दिखाओी देती है। तुम्हे आना हो तो जितनी जल्दी आओ अुतना अच्छा। कारण मौसम दिनोदिन गरम होता जा रहा है।

सस्नेह,

बापू

३६५

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
२७-२-'४५

चि० मीरा,

तुम किसान आश्रम[2] रख सकती हो। लेकिन यह रखो तो मजदूर या अुसीका समानार्थक क्यो नहीं? किसान तो करोड़पति

---

१. बलवन्तसिंह।

२. मैंने छोटेसे आश्रमका नाम किसान आश्रम सुझाया था।

हो सकता है, मगर मजदूर या श्रमजीवी नही हो सकता। लेकिन तुम्हे किसान अधिक पसन्द हो, तो मुझे कोअी हर्ज नही मालूम होता।

सस्नेह,

बापू

३६६

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
२५-३-'४५

चि० मीरा,

बिलकुल पत्र न लिखनेसे तो अेक पोस्टकार्ड ही अच्छा। खुशी है कि तुम कठिनाअियोके होने पर भी प्रगति कर रही हो। . . अक्तूबरमें मेरे आनेकी आशा रखो। . . . मेरी हलचलोके बारेमे कोअी बात निश्चित नही है सिवाय अिसके कि अिस मासकी ३१ तारीखको बम्बअी जा रहा हूं। गरमी यहा खूब पड़ने लगी है। तो भी तबीयत अच्छी है।

सस्नेह,

बापूके आशीर्वाद

३६७

पोस्टकार्ड

बम्बअी,
७-४-'४५

चि० मीरा,

तुम्हारा लम्बा और सुखद पत्र मिला। मै तुम्हारे पास रामप्रसाद या मुन्नालाल किसी न किसीको भेजनेकी जी-तोड़ कोशिश कर रहा हूं।[1] मेरी तरफसे बिलकुल नि:शक मत रहना। मैंने अपनी अिच्छा प्रगट की है। लेकिन अीश्वरके सिवाय किसे मालूम कब क्या हो जाय? तुम्हारा

---

[1] मुझे सच्चे कार्यकर्ता मिलनेमें बड़ी कठिनाअी हो रही थी।

पशुप्रेम, और अुसमें भी गोप्रेम, असीम है। मैं अधिकतर अिस बातसे सहमत हूं कि अगर हमे वास्तवमे परिणाम पैदा करना है, तो व्यक्तिगत रूपसे ध्यान दिया जाना चाहिये।[1] मै यहां २० तारीख तक हूं। फिर महाबलेश्वर चला जाअूगा।

सस्नेह,

बापू

३६८

पोस्टकार्ड

शिमला,
२७–६–'४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। खबरदार, कही बूतेसे ज्यादा काम न करना और न मौसमके विरुद्ध चलना, क्योंकि तुम अिसके लिअे नही बनी हो। मै शिमलामें[2] होअू या न होअू, तुम जरूर चली आना। मैं किसी भी दिन रवाना हो सकता हूं। मुझे खुशी है कि तुम्हे दो सहायक मिल गये। . . .

सस्नेह,

बापू

३६९

पोस्टकार्ड

सेवाग्राम,
२५–७–'४५

चि० मीरा,

अगर मुझे लिखना ही है तो संक्षेपमे लिखना पडेगा। अगर तबीयत अच्छी न रहे, तो तुम्हें किसी ठंडी जगह भाग जाना चाहिये।

---

१. गाय पर।

२. मै शिमला गअी और कुछ दिन बापूके साथ रही। यह शिमला परिषदके समयकी बात है।

मेरी यात्रा कुशलतापूर्वक हो गअी। जब यह पत्र तुम्हे मिलेगा, अुस वक्त ब० सिह तुम्हारे पास पहुच जायगा। . . . यहा मौसम अच्छा है। यदा कदा पानी गिर जाता है। परन्तु पहलेसे कीड़े-मकोड़े ज्यादा हैं। . .

सस्नेह,

बापू

३७०

पोस्टकार्ड

पूना,
९–१०–'४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। जब अुस तरफ आअूगा, तब तुम्हें नही भूलूगा। अभी जो व्यवस्था सोची गअी है, अुसके अनुसार मेरा अुधर जनवरीसे पहले आना नही होगा। लेकिन जब तक मै सेवाग्रामसे निकल नही पड़ता, तब तक कोअी बात निश्चित नही है। आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। . . .

सस्नेह,

बापू

३७१

पूना,
२९–१०–'४५

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र अभी मिला और मालिशके लिअे जानेसे पहले अुत्तर लिख रहा हूं।

मै सेवाग्राम नही छोड रहा हू। अितनी अधिक संस्थाओंका केन्द्र स्थापित करनेके बाद छोड़ना भी नही चाहिये।* अब मुझे अिस

* अैसी अफवाह अड़ाअी गअी थी कि बापू सेवाग्राम छोड़ रहे है।

खबरका खडन और सशोधन करना पड़ेगा। मै सरदारको बीचमें नही छोड़ सकता। तुम्हारे पास मुझे सीमाप्रान्तको निपटानेके बाद या वहां जाते समय आना चाहिये। सब बाते महीने भरके लिअे स्थगित हो गअी।

हम विश्वास रखे कि अीश्वर हमे मार्ग दिखायेगा। शायद अुसे यही मंजूर हो कि अन्तमे मुझे तुम्हारे साथ रहना पडे। अुसकी अिच्छानुसार चलनेके सिवाय कुछ न चाहो। . . . . .

सस्नेह,

बापू

३७२

सरनीमा,
आसाम,
१०-१-'४६

चि० मीरा,

यह पत्र सिर्फ तुम्हे यह बतानेके लिअे है कि तुम्हारे हिमालय सम्बन्धी दृश्योंकी चित्रकारीका कल ही अध्ययन कर सका हू ।* मै जितना अध्ययन कर सका, अुससे अधिककी जरूरत थी। परन्तु अपने कार्यमें तुमने जितना प्रेम पूरा है, अुसे समझने और अुसकी कद्र करनेमें मुझे कठिनाअी नहीं हुअी । पीछेकी तरफ तुम्हारी सूचनाअें बहुत ही ध्यानपूर्वक दी हुअी है।

आशा है तुम्हारे लम्बे पत्रके जवाबमें मेरा पहलेका पत्र तुम्हे मिल गया होगा। मै अवश्य चाहता हूं कि तुम्हें मनुष्यों और पशुओंसे कम कष्ट हो। यहां मुझे जो विलक्षण अनुभव हो रहे है, अुनका हाल और लोग तुम्हें जरूर लिखेंगे।

सस्नेह,

बापू

---

* हृषीकेशके आसपासके अुन पहाड़ोंके दृश्य, जो अब पशुलोकके भाग हैं।

३७३

तार (पूनासे ता० २३–२–'४६)

मीराबहन, मार्फत पोस्ट मास्टर, बहादराबाद, ज्वालापुर।

दिल्लीकी कोअी आशा नहीं। २० मार्चके बाद कभी भी तुम पूना आ सकती हो।

बापू

३७४

तार (पूनासे ता० २२–३–'४६)

मीराबहन, किसान आश्रम, बहादराबाद, ज्वालापुर।

कोअी आशा नही। जब मैं दिल्ली जाअूं तो वहां आ जाओ।

बापू

३७५

शिमला,
१३–५–'४६

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्रोंसे पता लगता है कि तुम बहुत काम कर रही हो। भगवान तुम्हारे प्रयत्न सफल करें।

. . . आमकी गुठलीके बारेमें भी अेक दिलचस्प टिप्पणी देखोगी। यह मूल्यवान लगती है। तुम अिस चीजको तुरन्त आजमा सकती हो। मैंने गुठलीको भूनकर खाया है। परन्तु मुझे कभी यह मालूम नही था कि अिसमे वे खाद्य गुण है जो बताये जाते है।

हम कल दिल्लीके लिअे रवाना हो सकते है।

सस्नेह,

बापू

३७६

[अप्रैलमे मै 'अधिक अनाज अुपजाओ' आन्दोलनके सिलसिलेमें युक्तप्रांतीय सरकारकी अवैतनिक सलाहकार बन चुकी थी। अिससे गरमीके मौसममे बहुत दौरे करने पडे थे और अिस समय मै तन्दुरुस्ती ठीक करनेके लिअे मसूरीमे थी।]

सेवाग्राम,
१९–८–'४६

चि० मीरा,

यह पत्र सिर्फ तुमसे यह पूछनेके लिअे है कि तुम आश्रम और गावके लिअे पाखानोंकी कैसी व्यवस्था करोगी। भूगर्भ पानी सतहसे निकट होनेके कारण कल जो डॉक्टर यहा जमा हुअे थे, अुन्होने सेप्टिक टैककी राय दी है। मुझे मालूम है कि तुम्हे यह विचार नापसन्द है। तुम अपनी खुदकी राय और खाद तैयार करनेका वर्णन लिखकर भेज दो। मै भूल गया हू कि अिन्दौरवालोकी तरह तुम अुसमे पाखाना भी मिलाती हो या नही। खैर, मुझे ठीक वर्णन छापने या डॉक्टर मित्रोको बतानेके लिअे भेज दो।

बिलकुल स्वस्थ न हो जाओ, तब तक काम शुरू न करना। मसूरीमे तुम्हे बहुत कुछ करना है।

यह लिखते समय मेह बरस रहा है।

सस्नेह,

बापू

श्रीरामपुर,
'रामगंज होकर, पूर्व बंगाल
१-१२-'४६

चि० मीरा,

तुम्हारा ३ नवम्बरका पत्र आज ही मिला। मेरा बंगालसे लिखा हुआ पत्र तुम्हे मिल गया होगा। मेरे जुकाम और खांसी मिट गये है। मैं 'गधे भाअी' (शरीर) को बहुत तेज नही चला रहा हूं। अिसलिअे अिस बारेमें चिन्ता न करना। देखो, मैं कांग्रेस या कार्यसमितिमें नही जा सका, अिसकी मैंने कोअी चिन्ता नही की। यहासे गया भी तो अभी कुछ समय तक तो जानेकी कोअी संभावना नही है।

मै देखता हूं कि तुम बराबर आगे बढ़ रही हो। आशा है यह सारी प्रगति ठोस होगी। मसूरीके भगियों पर तुम्हारा लेख ज्योंका त्यों 'हरिजन'मे चला जायगा।

तुमने पढ लिया होगा कि दिल्लीसे मै जितने साथी लाया था, वे सब नोआखालीके भिन्न-भिन्न गावोंमे बिखर गये है। बापा*ने मेरा साथ दिया है। अिसलिअे वे भी अेक गांवमें है। आभा अुनके साथ है। मेरे साथ प्रो० निर्मलकुमार बोस और परशुराम है। अेक स्थानसे दूसरे स्थान तक पैदल जाना पड़ता है। देहाती नावोंके सिवाय कोअी सवारी नही मिल सकती। और वे दस दिनके भीतर चलनी बन्द हो जायगी, क्योंकि नहरोंमे काफी पानी नही रहेगा। मै तीन-चार मील भी पैदल चलनेके योग्य नही हूं। मुझे यह अेकान्तवास पसन्द है, परन्तु तुम कल्पना कर सकती हो कि जो गरीब लोग भयभीत रहते है अुन पर क्या बीतती होगी।

मुझे खुशी है कि आत्मा मुझे यहा ले आअी। देखें आगे क्या होता है।

बापूके आशीर्वाद

---

* ठक्करबापा।

श्रीरामपुर,
जिला नोआखाली,
४ दिसम्बर, १९४६

चि० मीरा,

तुम्हारा १८ नवम्बरका पत्र मेरे पास कल ही पहुंचा। तुम जानती हो कि मै तुमसे भी अधिक दुर्गम स्थान पर हू। दूरी अितनी अधिक नहीं है, परन्तु गाडियोंका रास्ता भी यहां नही है। जब बरसाती नहरोंका पानी लगभग दस दिनमें सूख जायगा, तब अिधर अुधर जानेके लिअे पैदल चलनेके सिवाय और कोअी अुपाय नही रहेगा। डाक हरकारे ले जाते है, जैसा कुछ ही वर्ष पहले काठियावाडमें होता था और कही-कही अब भी होता है।

मेरी चिन्ता न करना। अीश्वर पर श्रद्धा और विश्वास रखना। मै अुसके हाथोमे सुरक्षित हूं। वही मुझे बनायेगा या बिगाड़ेगा। अुसके लिअे सब बनाना ही है, बिगाड़ना कभी है ही नही।

यहां अखबार नियमपूर्वक नही आते। जब आते है तो पुराने हो जाते हैं। और वे भी स्थानीय अखबार ही आते है। अिसलिअे यहा मालूम नही पडता कि अखबारोंमें क्या निकलता है। मेरा नुस्खा यह है कि 'जो अखबारोंमें छपता है, अुस पर भरोसा न करो'। याद रखो कि खबर न मिलना खुशखबरी है। तुम्हें मालूम है कि अे० जी० बेलफोर जब प्रधान मंत्री थे, तो शेखी मारा करते थे कि अुन्होंने कभी अखबार नही पढे और अुससे कुछ नही खोया।

तो मेरे खयालसे तुम्हे मालूम है कि मेरे सब साथी अलग-अलग गावोंमें बाट दिये गये हैं। प्यारेलाल मुझसे अकसर मिलता रहता है, परन्तु मेरे साथ नही है। वह अेक गावमें अकेला है और अुसका मददगार अेक बंगाली दुभाषिया है। मेरे साथ परशुराम है और अिसलिअे मैं अुसे लिखा सकता हूं। मूल कल्पना यह थी कि

मुझे अेक बंगाली दुभाषियेके सिवाय किसीकी सहायता चाहनी या लेनी नही चाहिये। परशुराम सदा प्यारेलालको मदद देता था, मगर यहा अुसे अकेला किसी गावमे नही रखा जा सकता था। अुसकी बड़ी अिच्छा थी कि वह सीधा मेरे साथ रहे, परन्तु जब मुझे और सब सहायता मिल रही थी और मै दूसरे प्रकारका काम कर रहा था, तब वह मेरे साथ नही रह सकता था। अब चूकि वह यहा है अिसलिअे मेरी निजी देखभाल रखनेके अलावा वह मेरा शीघ्रलिपिका काम भी कर देता है। अिससे मै वह काम भी कर लेता हू, जिसकी मैने आशा नही रखी थी या जिसके लिअे मै तैयार नही था। और बगाली सहायक अेक प्रोफेसर है, जिन्होने वर्षों तक मेरी रचनाओका गहरा अध्ययन किया है। अिसलिअे बहुत ही अच्छी सहायता मिल रही है। परन्तु ये लोग अखबारोका काम नही कर सकते। अिसलिअे मेरा बाहरका काम बहुत ही कम कर दिया गया है।

यहांका काम नया, बहुत सुखद और अुतना ही सख्त है। मेरी अहिंसाकी परीक्षा हो रही है। अिसके बारेमें फिर कभी लिखूगा। यह तो मेरी तरफकी सारी चिन्तासे तुम्हे मुक्त करनेके लिअे है। अब मै सदाकी भांति खुराक ले रहा हूं या लेनेकी कोशिश कर रहा हू। परन्तु २१ दिनके त्यागके* बाद अिसकी आदत होनेमें कुछ समय लग सकता है। यथासंभव शीघ्र गतिसे मै साधारण शक्ति प्राप्त कर रहा हू। जल्दी करनेका साहस नही होता।

अब मै देखता हूं कि तुमने जहा काम १८ नवम्बरको छोड़ दिया था, वहासे २२ तारीखको फिर शुरू कर दिया है। तुम्हारी समस्याअें असाधारण है परन्तु वे सब तुम्हारी अपनी ही पैदा की हुअी है। अिसलिअे तुम्ही अुन्हें अितनी कम कर सकती हो कि

---

* हालमें ही बापूने २१ दिनका अर्ध अुपवास किया था। अुन दिनोंमें अुन्होने फलोंके रसके सिवाय कुछ नही लिया था। अिसका कारण बिहारके हिन्दू-मुस्लिम दंगे थे।

तुम्हारे बसकी हो जाय। यह तुम्हारा कर्तव्य है। तुम्हे आदमी ढूढनेसे नही मिलेगा या नही मिलेगे। जिस ढगके कामके लिअे तुम्हे आदमी चाहिये, वह अीश्वर तुमसे कराना चाहता होगा, तो आदमी तुम्हारे पास आ जायगा या आ जायेगे। अिसलिअे मै तुमसे कहूगा कि अुसकी प्रार्थना करो और जो कुछ कर सकती हो आत्माको सताये बिना करो। . . आश्रमकी कल्पना बिलकुल तुम्हारी ही मौलिक कल्पना है। अगर वर्तमान स्थान तुम्हारे लिअे अनुकूल नही है, तो तुम्हे अुसका जो अुपयोग हो सकता है कर लेना चाहिये। मै खुद तो यह कहूगा कि अपने सिवाय दूसरोके लिअे तुम आश्रम-जीवनका विचार छोड़ दो। फिर तुम्हे अैठन महसूस नही होगी और तुम विश्वके समान अूची और विशाल बन सकती हो। तुम्हें मालूम है कि मैने साबरमतीमे आश्रम तोड दिया और वह अेक हरिजन सस्था बन गअी। मूल तो सत्याग्रह आश्रम था। वह सदाके लिअे मिट गया। अिसलिअे अपनी कल्पनाका आश्रम और किसीको सौप देनेका विचार कभी न करो। वर्तमान स्थानमे विवाहितो या कुवारोंको, या जो भी तुम्हारे शुरू किये हुअे कामोंको अच्छी तरह करें अुन्हीको रख लो। अन्यथा, तुम्हे मौसम कितना ही आदर्श मिल जाय, तो भी तुम्हारी तन्दुरुस्ती चूर-चूर हो जायगी। याद रखो कि मैने अब तक जो कुछ लिखा है, अुस सबमे तुम्हारी आश्रमकी कल्पनाकी पूरी गुजाअिश रखी है। और चूकि मैने अैसा किया है, अिसलिअे मैने तुम्हे सलाह दी है कि आश्रमका आदर्श तो अपने तक ही सीमित रखो और जितने भी योग्य आदमी मिल सके, अुन्हे अुस वक्त तक साथी बना लो, जब तक अुनकी अुपस्थिति या आचरण तुम्हें खटके नही या अुनसे तुम्हारे अपने विकासमें बाधा न पडे।*

---

* अिस पत्रसे मैने स्पष्ट निश्चय कर लिया कि किसान आश्रमको ब्रह्मचारी आश्रम रखनेका विचार छोड़ दिया जाय और वहां विवाहित पुरुषोको परिवारसहित रखा जाय। बापूकी यह सलाह कि अपनी कल्पनाका

आशा है, मैंने तुम्हे अपना सारा मतलब समझा दिया है। अैसी बात हो तो मेरा काम पूरा हुआ।

यह मैंने सैरको निकलनेसे पहले लिखाया है यानी सुबहके ७॥ बजे बाद जितना भी जल्दी हो सकता था अुतना जल्दी। मैं स्टैण्डर्ड टाअिमके ४ बजेसे और लोकल टाअिमके ५ बजेसे काम कर रहा हू। अिसमे रोजकी प्रार्थनाका समय शामिल है। प्रार्थना परशुराम कराता है।

बापूके आशीर्वाद

३७९

काजिरखिल, पोस्ट रामगज,
जिला नोआखाली

मुकामः चंडीपुर
४–१–१९४७

चि० मीरा,

तुम्हारा रजिस्टर्ड पत्र मेरे सामने है। अिस पत्रके साथ परशुराम तुम्हें समाचार देगा। मै सिर्फ अितना ही लिखवा देता हू कि तुमने जो स्थिति बताअी है वही ठीक है। सब बाते मनुष्यकी मन, वचन और कर्मकी शुद्धि पर निर्भर हैं। यहां 'शुद्धि' शब्दका अत्यत व्यापक अर्थमे अुपयोग किया गया है। फिर तो शायद सिर दुखने तकका कारण भी न रहे। सिर्फ अिसी मूल बातको पकड़ लो। हम अकसर 'शुद्धि' शब्दका निश्चित अर्थमे अुपयोग नही करते और तरह-तरहकी नैतिक भूलोको क्षम्य

आश्रम मुझे अपने तक ही सीमित रखना चाहिये, मैंने पूरी तरह मान ली और चूकि मैं अुस समय हृषीकेशके नजदीकके सुरक्षित जंगलोंमें पशु-विकासकी अेक योजना सरकारके लिअे बना रही थी, अिसलिअे मैंने चरागाहोके बीच गगातट पर अेक छोटीसी कुटियामें बसकर अुसे अपना आश्रम बनानेका फैसला कर लिया।

मान लेते है। यह भी चिन्ता न करो कि यहा मेरा क्या हाल है या मै क्या कर रहा हू। अगर मै अपने अहको पूरी तरह निकाल दू, तो ओीश्वर मुझमें आ बसेगा। फिर मै जानता हू कि सब बाते सच्ची होगी। लेकिन यह अेक गंभीर प्रश्न है कि मै शून्यवत् कब बनूंगा। 'मै' और '०' (शून्य) को पास-पास रखकर सोचोगी, तो तुम्हे दो चिन्होंमें जीवनकी सारी समस्या समाओी हुओी मालूम होगी। अिस क्रियामे तुमने मेरी बहुत मदद की है, क्योकि दूर रहकर भी तुम अपने कार्यक्षेत्रमें अपना कर्तव्य पूरी तरह अदा करती हुओी दिखाओी देती हो।

यह चार दिन पहले लिखवाया था, जब मै बिस्तरमें आराम कर रहा था। परन्तु यह टाअिप नही हो सका था। अिस बीचमें तुम्हारा दूसरा पत्र और खादीके नमूने मिल गये। क्या तुम्हारे पास बिक्रीके लिअे कुछ फालतू खादी है? यह बात मैं शरणार्थियोकी खातिर पूछ रहा हूं। अति न करना। बूतेसे ज्यादा काम न करना। किसी बातकी चिन्ता न करना। पैदल यात्रा कल आरम्भ होगी, फिर शायद तुम्हें कोओी पत्र न दिया जाय। तुम्हारे पास अेक बुलेटिन भेजा जायगा। यह मै तडके ही घसीट रहा हूं। 'जो कोओी आशा नही रखते वे धन्य है।'

सस्नेह,

बापू

३८०

भंगी बस्ती,
नओी दिल्ली, २५ मओी, '४७

चि० मीरा,

तुम्हारा बढ़िया पत्र अभी यानी ५ बजे मिला। यह पत्र कातते हुअे लिखवा रहा हू। बीचमें आरामके लिअे थोड़ा समय छोड़कर सारा दिन लोगोंसे मिलनेमें बीता है। वाअिसराअिनसे मिलनेके लिअे तुम्हे प्रतीक्षा करनेकी जरूरत नहीं है। परन्तु जरूरतके मुताबिक तुम्हें

अुत्तर काशी या मसूरी चले जाना चाहिये। तुम्हारा अेकान्त, मसूरी या अुत्तर काशीमें मिलनेवाली स्वास्थ्यप्रद वायु और अुसके फलस्वरूप पैदा होनेवाले स्पष्ट विचार तुम्हारे बड़े आदमियोसे मिलने या मेरे अितने निकट दिखाअी देनेके कारण मुझसे मिलने आनेकी अपेक्षा मेरे लिअे अधिक मूल्यवान् है; यह तो दीखनेकी ही बात है। शरीरसे तुम और मै चाहे जहा रहे तो भी मै तुम्हारे पास ही हूं। तुम्हारे पत्रकी शेष बातोको छूना भी मेरे लिअे अनावश्यक है। मुझे तुम्हारा सारा कार्यक्रम पसन्द है। गरमीके मारे तो झुलस रहे है, मगर तबीयत बिलकुल अच्छी है। मै मसूरी या अैसे ही किसी और जलवायुका विचार तक नही कर सकता। मेरा काम आज तो पीड़ित क्षेत्रोमें है। अगर अीश्वर मुझसे अपना काम कराना चाहता है, तो वह प्रतिकूल जलवायुमें भी मुझे तंदुरुस्त रखेगा।

सस्नेह,

बापू

श्रीमती मीराबहन,
पोस्ट हृषीकेश,
जिला देहरादून

३८१

कलकत्ता,
२९–५–'४७
२–५० प्रातः

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्र कल मिले। मुझे प्रसन्नता है कि तुम पहलेसे अच्छी हो।

संयमी जीवनके लिअे तुम्हारे ५५ वर्ष कुछ नही है। परन्तु तुम्हें किसी बातकी चिन्ता नहीं है। खैर, ये बातें तो मिलने पर करेंगे, जब 'बाहरी मामलोंकी' चर्चा हो सकेगी।

मेरा जाना आना अनिश्चित हो गया है।

अखबारोसे तुम्हें मालूम हो जायगा कि दूसरे दिन मै कहा होअूगा। 'चिडियोको देखो', अुन्हे पता नही होता कि अगले क्षण वे क्या करेंगी। भविष्यका विचार न करके जिस समय जो काम करते हों, अुसीका हमे खयाल करना चाहिये।

सस्नेह,

बापू

३८२

नअी दिल्ली,
१५-६-'४७

चि० मीरा,

तुम्हारा दूसरा लम्बा परन्तु दिलचस्प पत्र मिल गया।

तुम्हारी बीमारीका मुझे दु:ख है। तुम्हे अुत्तरकाशीमें लम्बे अरसे तक रहना पड़े, तो भी तुम्हें अिससे पिंड छुड़ा ही लेना चाहिये।

मै खुद अुत्तरकाशी जानेका विचार कर रहा हू, परन्तु ये सब तो सपनेकी बाते है। अिसलिअे अिस पर कोअी कल्पना न बनाना। परन्तु मुझे वहाकी सब बाते लिख सकती हो।

अभी तो मै धर्मपाल*का खयाल नही कर सकता। मेरे साथ जो है, वे ही बहुत अधिक है। मै चाहता तो हू अकेला रहना, परन्तु मैं जानता हूं कि नही रह सकता। मेरे जाने आनेकी बात बिलकुल अनिश्चित है।

सस्नेह,

बापू

---

* जो शायद बापूके साथियोमे शरीक हो जाता।

३८३

लिखाया हुआ

नअी दिल्ली,
२९/३०-६-'४७.

चि० मीरा,

तुम्हारे दो तार और अुत्तरकाशीके तुम्हारे अनुभवोंका सजीव वर्णन करनेवाले दो पत्र मिले। दूसरे पत्रसे चिन्ता हुअी। लिखवाना शुरू करनेके बाद मुझे अूघ आने लगी और मैं अूघ गया। अूघ मिटने पर तुम्हारा तीसरा पत्र मिला, जिसमे तुमने अपने धनौल्टी जानेका हाल लिखा है। आशा है तुम अपनी जर्जर अवस्थामे शरीरको कोअी हानि हुअे बिना सफर कर सकी होगी।* अिस विचारसे दुःख होता है कि अुत्तरकाशी जैसे पवित्र स्थानमे भी तुम्हारे शरीरको कोअी लाभ नही हुआ और तुम्हे वहाका पानी बहुत भारी और वायुमंडल दमघोंटू मालूम हुआ। आशा है यह नअी जगह तुम्हे अनुकूल साबित होगी। मेरे अुत्तरकाशी जानेकी बात तो तुमने खतम कर दी और 'दूधका जला छाछको फूक-फूककर पीता है' के सिद्धातके अनुसार मै हिमालयके हरेक स्थानको सन्देहकी दृष्टिसे देखूगा। परन्तु मै तो अीश्वरके हाथमें हूं। मैं न यह चाहूंगा, न वह। मेरे लिअे तो आजकी भलाअी काफी है। बुराअीका विचार मुझे नही करना चाहिये। कौन जानता है कि दर-असल क्या भला है और क्या बुरा है। अिसलिअे हमे भलाअीके सिवाय

---

* तग घाटीकी गीली गरमीमे पैदल और घोड़े पर लम्बा सफर करनेसे मेरी तदुरुस्ती पर बहुत जोर पड़ा था। अधिक ठंडे जलवायुमें पहुंचनेके लिअे सौभाग्यसे मैं प्रतापनगर (धनौल्टीके बजाय) चली गअी। वहां मै जो काम अपने साथ लाअी थी अुसमे लग गअी। वह काम था मेरे नाम बापूके तमाम पत्रोको पढ जाना और अुनमे से चुनाव करना।

कुछ सोचना ही नही चाहिये। अब ससारकी बातो पर आये। जब मैं यहासे मुक्त हो जाऊगा, तब मुझे बिहार और नोआखाली जाना होगा और शायद तुरन्त मुझे काश्मीर जाना पडे। तारीखका फैसला मेरे खयालसे अेक सप्ताहके भीतर हो जायगा। हरद्वारमे कुछ ही घण्टोके लिअे शरणार्थियोको देखने गया था। गरमी अितनी ज्यादा थी कि बहुत घूमना फिरना असभव था।

*　　　　*　　　　*

बापूके आशीर्वाद

३८४

[मैंने बापूको लिखा था कि मैंने दिल्ली जाकर अपने हृदयकी परीक्षा करानेका निश्चय किया है, क्योंकि हिमालय यात्राके परिश्रमसे मेरा स्वास्थ्य बहुत असन्तोषजनक हो गया था।]

कलकत्ता,
२०-८-'४७

चि० मीरा,

तुम्हारे दो पत्र मिले और तार भी मिला। आशा है मेरा पत्र तुम्हें प्रतापनगरमें मिल गया होगा। तुम्हारे सब पत्र मिल गये थे।

तो तुम्हे हिमालय पर्वत पर रहनेसे कोअी लाभ नही हुआ। स्पष्ट है कि तुम अपने शरीरको बनानेमें असमर्थ हो।

मेरा सुझाव है कि गोपालन सहित तुम सब प्रवृत्तिया छोड़ दो।

तुमने जो मकान बनाये हैं और जमीन ली है अुसका क्या होगा? तुम अवश्य वापस मेरे पास आकर जब तक चाहो रह सकती हो। जब तक तुम्हारा शरीर असली फौलादकी तरह न बन जाय, तब तक कोअी काम हाथमें न लो। मेरी रायमें अगर सारी शर्तें पूरी की जायं, तो वैसा शरीर बन सकता है।

आशा है तुम्हारे हृदयकी परीक्षा सन्तोषजनक साबित होगी।

अभी तो मै यहा रुका हुआ हू। बादमे नोआखाली जानेका अिरादा है। वह समय कब आयेगा सो मुझे पता नही।

अिस चिट्ठीको पूरा करनेमे मुझे दो घण्टे लगे है। बीच-बीचमे कअी काम आ गये।

मैने पाकिस्तानमे अपने दिन बितानेका अिरादा जाहिर किया था, कोअी वचन नही दिया था।

सस्नेह,

बापू

श्री मीराबहन,
बिडला-भवन,
नअी दिल्ली

३८५

[पिछले पत्र और अगले पत्रके बीच ये घटनाये घटी :

मै अपने हृदयकी परीक्षा कराने दिल्ली आअी हुअी थी। थोड़े ही दिनमे मुझे बिडला-भवनमे मलेरियाका बुरा दौरा हुआ। ठीक अिसी समय दिल्लीमें दगे छिड गये। बापू अुस वक्त कलकत्तेमे थे और ठीक आगके बीचमे रहकर अुस परेशान नगरमें शान्ति स्थापित कर रहे थे। ज्यो ही अुन्हे कलकत्तेकी जनतासे यह आश्वासन मिल गया कि वे शान्ति कायम रखेंगे, वे सीधे दिल्ली आ गये और अुनके पहुचते ही दिल्लीके दगोका जोर कम होने लगा। बापूकी अिच्छा भगी बस्तीमे ठहरनेकी थी, परन्तु वहाके कोने-कोनेमे शरणार्थी भरे थे। अिसलिअे मन्त्रियो और दूसरे लोगोकी प्रार्थना पर अुन्होने बिड़ला-भवनमे ठहरना मजूर कर लिया। अिस प्रकार अितने लम्बे अरसेके बाद मै फिर बापूके साथ हो गअी और तीन अत्यन्त कीमती महीनोसे अधिक अुनके साथ दिल्लीमे रही। १८

दिसम्बरको मैंने बापूसे बिदा ली और हृषीकेशके पास अपने काम पर वापस चली गअी।]

बिडला-भवन,
नअी दिल्ली,
१६-१-'४८

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र कल मिला। मालूम होता है जब तुमने यह लिखा, तब तुम्हे मेरे जिस सबसे बड़े अुपवासका पता नही था।[1] अन्तमे वह अैसा साबित होगा या नही, यह मेरे या तुम्हारे सोचनेकी बात नही है। हमारे सोचनेकी बात तो कर्म ही है, कर्मका फल नही। अुपवास सदाकी भाति प्रार्थनाके साथ शुरू हुआ। अुसका अेक भाग था, "जब मै देखता हू।"[2] सुशीलाने अुसे अच्छा गाया। प्रार्थनाके समय कुछ भले मित्र मौजूद थे। वे लोग अपने आप ही अेकत्र हो गये थे। किसीको बुलाया नही गया था। मै यह पत्र ३।। बजे सुबहकी प्रार्थनाके तुरन्त बाद लिखा रहा हू और साथ ही अपना वह भोजन भी कर रहा हू, जो अेक निश्चित भोजनवाला अुपवासी कर सकता है। अिसमे दिल पर आघात न लगने देना। भोजन आठ औंस गरम पानी है, जो मुश्किलसे चुस्की भर पिया जाता है। पीते समय तो जहर लगता है, मगर हम अच्छी तरह जानते है कि अिसका परिणाम अमृततुल्य होगा। अिसे जब कभी लेता

---

१. "यह तब खतम होगा जब और अगर मुझे सन्तोष हो जायगा कि बिना किसी बाहरी दबावके तमाम जातियोंके दिल कर्तव्यभावना जागृत होनेके कारण फिर मिल गये है।" (बापूके १२ जनवरी, १९४८ के वक्तव्यसे।)

२. "जब मै अुस अद्‌भुत सूलीको देखता हू" यह बापूका प्रिय भजन था, जो मै अुन्हे आगाखा महलमे गाकर सुनाती थी और सुशीलाको भी सिखाया था।

हूं, प्राण वापस आ जाते है। आश्चर्यकी बात है कि अिस बार मै यह स्वादमे विष जैसा परन्तु अमृततुल्य भोजन आठ मरतबा ले सकता हूं। फिर भी मै यह दावा करता हूं कि अुपवास कर रहा हू और भोलेभाले लोग अुसे मान लेते है! कैसा विचित्र ससार है!

* * *

तुम्हारा वर्णन . . .। वह वैभवकी जननी गायको अिस देशमे, जिस पर गोपूजाका दोष लगाया जाता है, न्याय दिलानेके बारेमे मनुष्यको निराश करनेके लिअे काफी है। अैसे देशमे स्वराज्य नही हो सकता।

तुम्हारे आश्रमको 'पशुलोक'[1] नाम देना अेक भव्य कल्पना है। वह कवित्वमय है। कभी पशुलोक आश्रम न लिखो। आश्रम — पशुलोक, यानी बीचमे डैश लगाकर लिखना अच्छा है। अब चूंकि अिस पर कुछ अधिक गहरा विचार कर रहा हू, अिसलिअे मालूम होता कि शायद पशुलोक आश्रमसे तुम्हारी कल्पना अधिक अच्छी तरह व्यक्त होती है। परन्तु चूंकि यह बढिया कल्पना तुम्हारी है, अिसलिअे अुसी पर अमल होना चाहिये। तुम्हारी पसन्द अन्तिम रहेगी।

* * *

मेरे अुपवास करनेके कारण यहा दौडकर न चली आना। मैने अिसे यज्ञ कहा है, अिसलिअे अुसका तकाजा है कि सभी लोगोको, चाहे वे कही हो, अपना-अपना काम करना चाहिये। अगर काफी लोग अैसा करेंगे, तो मै अिस अग्निपरीक्षाके बाद जरूर जीवित रहूंगा। अीश्वर पर भरोसा रखो और जहा हो वही रहो। . . .

२

---

१. बापूका मतलब अुस प्रदेशसे है, जिसकी आश्रम द्वारा सेवा की जाती थी।

२. यह पत्र टाअिप होनेके बाद कही अिधर अुधर हो गया दीखता है। कुछ दिन बाद जब मिल गया, तब हस्ताक्षरोके लिअे बापूके सामने रखे बिना ही जल्दीमे मेरे पास भेज दिया गया।

३८६

पोस्टकार्ड

नओी दिल्ली,
१९-१-'४८

चि० मीरा,

तुम्हारा पुर्जा मिला। सब चिन्ता दूर हुआी। आशा है अुपवासके दिनोंमे लिखाया हुआ मेरा पत्र तुम्हें मिल गया होगा। मैं बहुत तेज रफ्तारसे काम कर रहा था। ह०* के लिअे तुम्हारी टिप्पणी पर ध्यान दिया जायगा।

सस्नेह,

बापू

* 'हरिजन'।

[३० जनवरीको शामके साढे सात बजे पशुलोकमें मुझे बापूकी हत्याकी खबर मिली। मै बरामदेमें निकल आअी थी। जब मैंने वे शब्द सुने, तो मै स्तब्ध रह गअी और आकाशकी तरफ देखा तो वनके वृक्षोके अूपर तारे चमक रहे थे। मैंने अपने दिलमे अितना ही कहा: "बापू, बापू, आखिर यह हुआ!" अिसके साथ ही शान्तिका अैसा भाव छा गया कि अुसने अंधकार पैदा करनेवाले आघात पर भी विजय पाली।

कुछ दिनके बाद मैंने अखबारोमें जो लेख लिखा था, वह नीचे दिया जाता है:]

वे अेक हो गये

मेरे लिअे अीश्वर और बापू दो ही थे। अब वे अेक हो गये है!

जब मैंने यह खबर सुनी तो मेरे दिलकी बहुत गहराअीमे कोअी चीज खुल गअी — काराबद्ध आत्माका द्वार खुल गया — और बापूकी आत्माका अुसमे प्रवेश हो गया। अुसी घडीसे शाश्वतताकी अेक नअी भावना मेरे साथ है।

यद्यपि अब बापूका प्रिय शरीर हम लोगोके बीचमे नही रहा, फिर भी अुनकी पवित्र आत्मा पहलेसे ज्यादा नजदीक है। कभी-कभी बापू मुझसे कहा करते थे कि, "जब यह शरीर न रहेगा तब वियोग नही होगा और मै तुम्हारे अधिक निकट रहूंगा। शरीर बाधक है।" मै श्रद्धापूर्वक सुन लेती थी। अब मुझे अनुभवसे ज्ञात हो गया है कि वे दैवी शब्द कितने सच थे।

बापूको मालूम था कि क्या होनेवाला है? दिसम्बरमें अेक दिन शामको दिल्लीसे हृषीकेशके लिअे रवाना होनेसे पहले मैंने अुनसे कहा था "बापू, मार्चमें जब गोशाला बन जायगी और कार्य संगठित हो जायगा, तब क्या अिसकी कुछ भी संभावना है कि आप अुद्घाटन-क्रियाके लिअे समय निकालें और गरीब, पीडित भारतीय गायको अपना आशीर्वाद दें?" बापूने अुत्तर दिया "मेरे आनेका विचार मत करो।" और फिर मानो अपने आपसे कुछ कह रहे हों, अिस तरह यह भी बोले: "मुर्दे पर आधार रखनेसे क्या फायदा?" ये शब्द अितने भयंकर थे कि मैंने किसीसे नहीं कहे, परन्तु चुपचाप अपने दिलमें रख लिये और भगवानसे प्रार्थना की। अुपवास आया और चला गया और मैंने आशा रखी कि अुस बातका अर्थ भी अुसके साथ ही चला गया। परन्तु वह बात तो भविष्यवाणी थी और भविष्यवाणी पूरी हुअी।

अुस अभागी रातमें जब मैं सीधी और स्तब्ध होकर ध्यानमें बैठी, तो मुझे महसूस हुआ कि सारी दुनियाके दिल पर साप लोट रहा है। मानव-जातिके अुद्धारके लिअे फिर अेक अवतारका बलिदान हुआ है और पृथ्वी अेक घातक पापके बोझ और भयंकरतासे कराह रही है।

यह पाप किसी अेक आदमीका नहीं है। यह वह पाप है जिसकी युग-युगमें सारी दुनिया पर बाढ आती है और अुसे अीश्वरके प्यारेकी कुरबानीके सिवाय और किसी तरह नहीं रोका जा सकता।

अब हमें आकाश-पाताल अेक करके अुस कामको पूरा करना होगा, जो बापू हमारे लिअे छोड़ गये हैं। बापू हम सबके लिअे — हरअेक पुरुष, स्त्री और बच्चेके लिअे — जिये और हमारे ही लिअे मरे। वे जीतेजी अविश्रात रूपमें काम करते रहे और अेक शहीदकी मौत मरे, ताकि हम घृणा, लालच, हिंसा और झूठके कुमार्गसे विमुख हो जायं। अगर हमें अपने पापोंका प्रायश्चित्त करना है और बापूके पवित्र कार्यकी सेवा

करनी है, तो हर प्रकारके सम्प्रदायवादको और बहुतसी दूसरी चीजोको भी मिटाना पडेगा। चोरबाजारी, भ्रष्टाचार, पक्षपात, ओीर्ष्या-द्वेष और असत्य तथा हिंसाके अनेको दूसरे बुरे रूपोसे मजबूत अिरादे और अचूक हाथोके साथ निपटना पडेगा। बापू प्रेम और कोमलताकी मूर्ति थे, परन्तु बुराअीसे लडनेमे वे वज्रके समान कठोर थे।

बापू बाहरी बुराअीके साथ अिस कारण लड सके कि अुन्होंने भीतरी बुराअीको जीत लिया था।

भगवान हमे अिस प्रकार शुद्ध करे कि हमारे सामने जो महान कार्य है अुसके योग्य हम सिद्ध हो।

मीरा

अिति।